किशोर साहित्य पुस्तकमाला

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва
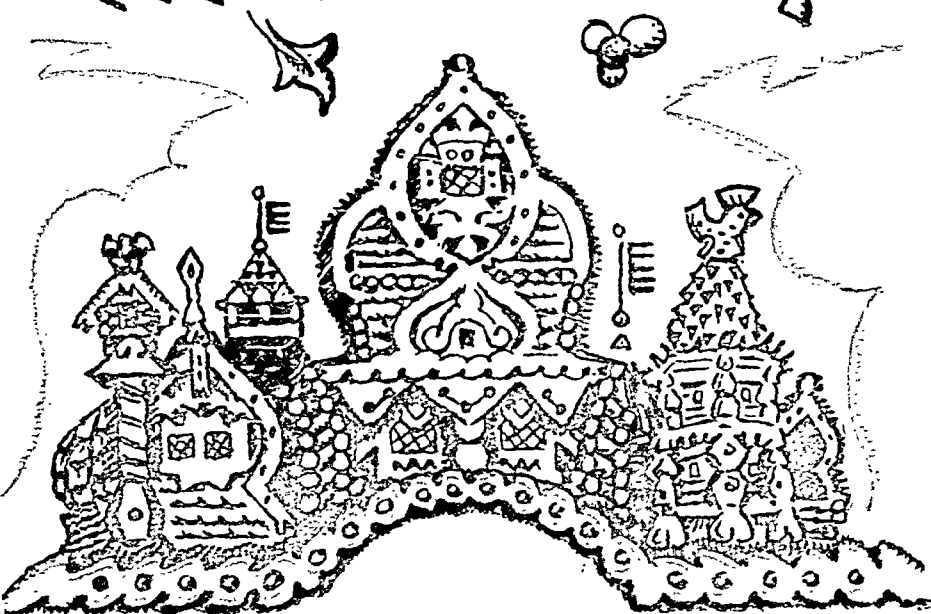
विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

अनुवादक: मदनलाल "मधु",
ओमप्रकाश संगल
चित्रकार : क० कुज़्नेत्सोव, त० माव्रिना
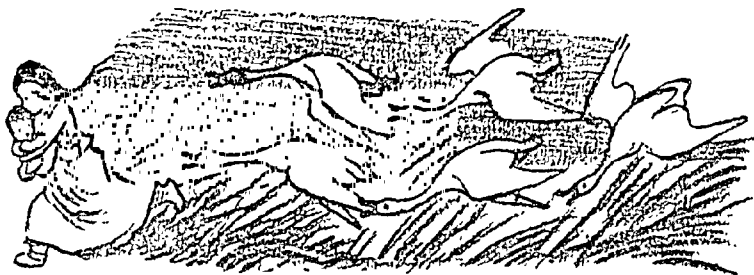
विषय-सूची

	पृष्ठ
रूसी लोक-कथाएं। ए० पोमेरान्त्सेवा	७
गुलगुला। अनु० संगल	१३
मुर्गा और सेम का दाना। अनु० संगल	२१
नन्हा मुर्गा–सुनहरी कलगी। अनु० संगल	२५
लोमड़ी और भेड़िया। अनु० संगल	३२
लोमड़ी और सारस। अनु० 'मधु'	३६
लकड़ी की टांगवाला रीछ। अनु० 'मधु'	४२
किसान और भालू। अनु० संगल	४६
जानवरों का जाड़े का घर। अनु० 'मधु'	४६
चालाक किसान। अनु० संगल	५८
सात बरस की बिटिया। अनु० संगल	६५
कुल्हाड़ी का दलिया। अनु० संगल	७३
सिपाही और मौत। अनु० संगल	७६
गप हांकनेवाली बीवी। अनु० 'मधु'	१००
किसान और जागीरदार। अनु० 'मधु'	१०८
मुसीबत। अनु० 'मधु'	१११

हिमदेवता। अनु० 'मधु' १२२
नन्ही लड़की और हंस। अनु० संगल १२६
खवरोशेचका। अनु० 'मधु' १३६
अल्योनुशका और भाई इवानुशका। अनु० 'मधु' १४३
मेंढ़की रानी। अनु० संगल १५०
बुद्धिमती वासिलीसा। अनु० संगल १६५
सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़। अनु० 'मधु' १६८
भूरा घोड़ा। अनु० 'मधु' २१५
शाहज़ादा इवान और भूरा भेड़िया। अनु० 'मधु' २२७
जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे। अनु० 'मधु' २४२
बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान। अनु० 'मधु' २७८
येमेला और मछली। अनु० संगल ३२३
निकीता खटीक। अनु० संगल ३३८
इल्या मूरोमवासी की पहली मुठभेड़। अनु० संगल ३४३
इल्या मूरोमवासी और सीटीबाज़ डाकू। अनु० संगल ३५१
दोब्रीन्या निकीतिच और ज़्मेइ गोरीनिच। अनु० 'मधु' ३६०
अल्योशा-पोपोविच। अनु० 'मधु' ३७७
मिकूला हलवाहा। अनु० संगल ३८४
रूसी शब्दों की व्याख्या ३६१

रूसी लोक-कथाएं

हर देश के लोगों की अपनी लोक-कथाएं हैं। इन कहानियों की रचना सदियों पहले, अज्ञात कहानीकारों ने की। मगर ये आज भी ज़िंदा हैं। एक पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी से, और एक समय की जनता, दूसरे समय की जनता से, ये कहानियां उत्तराधिकार में प्राप्त करती आयी है। इनकी अमरता का रहस्य, इनके नैतिक गुणों में, इनकी व्यापक मार्मिकता और इनके वास्तविक कलात्मक रूप में निहित है। इसीलिए, बच्चों को ये कहानियां सदा ही बहुत पसन्द आती हैं और बड़ों को भी दिलचस्प लगती हैं। प्रेरणा से ओत-प्रोत, हर देश के लेखकों, कलाकारों और स्वरकारों ने अपनी रचनाओं के लिए इनसे प्रेरणा प्राप्त की है। महान रूसी कवि पुश्किन भी, अपनी दाई से, परियों की कहानियां बड़े चाव से सुनते थे। उनकी दाई को इस कला में कमाल हासिल था। "क्या ग़ज़ब की हैं ये कहानियां! हर एक अपने में एक कविता है," उन्होंने बाद में लिखा।

लोक-कथाओं के अपने इस अमूल्य खज़ाने को संग्रहीत और प्रकाशित करना, हर देश के लिए राष्ट्रीय गौरव की बात है। हर देश की लोक-कहानियां दूसरे देशों की लोक-कहानियों से अलग होती हैं। हर देश के लोगों का इतिहास, उनके रहन-सहन का ढंग, उनके श्रम की परिस्थितियां और उनकी कलात्मक और नैतिक आकांक्षाएं इन कहानियों की राष्ट्रीय विशिष्टता निर्धारित करती हैं। मगर साथ ही साथ, विभिन्न राष्ट्रों की लोक-कथाओं में बहुत कुछ समानता भी है। पहली समानता है— सामाजिक तत्त्वों और विषय-वस्तु की। इसका कारण यह है कि इन रचनाओं की

सृष्टि, श्रमजीवी लोगों ने की है और इनमें सामान्य रूप से, प्रकृति और अपने शत्रुओं के विरुद्ध, साधारण लोगों के अथक संघर्ष की झलक मिलती है। इन कहानियों में इन साधारण लोगों की आशाओं और इच्छाओं, उनके आशावाद और अन्याय पर न्याय और भलाई की विजय का अमिट विश्वास व्यक्त किया गया है। भिन्न भिन्न देशों की लोक-कथाओं के लोक-नायकों और विषयों की समानता का एक अन्य कारण, उनकी आर्थिक, ऐतिहासिक और सामाजिक स्थितियां और जन-साधारण की विचारधारा की एक-रूपता भी है।

शब्द 'लोक-कथा' में कई तरह की कहानियां शामिल हैं। ये कहानियां विषय-वस्तु और आकार, दोनों दृष्टियों से एक-दूसरे से भिन्नता रखती हैं। इनमें शामिल हैं शिक्षाप्रद और मनोरंजक पशुओं की कहानियां, जादू की कहानियां, व्यंग्यात्मक और साहसिक कथाएं। इन सभी कहानियों में एक बात समानरूप से पायी जाती है—जादू से भरपूर, अवास्तविकता का पुट। यही अवास्तविकता, परियों की कहानियों का मुख्य तत्त्व है।

रूसी लोगों ने परियों की बहुत-सी सुन्दर कहानियां रची हैं। सफ़ेद सागर के तट पर अपने जालों की मरम्मत करते हुए माहीगीर, जाड़े की लम्बी-लम्बी रातों में ये कहानियां सुनाते हैं। साइबेरिया के घने जंगलों में पशुओं को पकड़नेवाले और शिकार करनेवाले शिकारी, दक्षिणी रूस की बड़ी-बड़ी स्तेपियों के सामूहिक किसान खेतों में इन कहानियों का रस लेते हैं। मध्य रूस के गांवों में, लट्ठों के अपने मकानों के सामने बेंचों पर बैठकर, ये कहानियां सुनानेवाले बूढ़े लोग, बच्चों की भीड़ से घिरे रहते हैं।

अब तो सोवियत संघ के दूर तक के कोनों में पुस्तकें और समाचारपत्र पहुंचते हैं! इसलिए परियों की कहानियां अब आम तौर पर बच्चों को ही सुनाई जाती हैं। फिर भी बहुत-से ऐसे लोग हैं जो बहुत ही मनोरंजक ढंग से कहानियां सुनाते हैं। उनके सुनानेवालों की संख्या अब भी बहुत बड़ी होती है और उनमें सभी तरह के लोग होते हैं। सफ़ेद सागर का माहीगीर कोरगूयेव, साइबेरिया का शिकारी सोरोकोविकोव, गोर्की क्षेत्र का सामूहिक किसान कोवाल्योव और वोरोनेज की अद्भुत कहानी कहनेवाली नानी कुप्रियानिखा और ऐसे ही दूसरे बहुत-से लोग हैं जिन्हें सोवियत काल में इस कला

में कमाल हासिल है। इनके नाम काफ़ी विख्यात हो गये हैं। विद्वान लोग इन कहानियों को लिखकर पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर चुके हैं। सबसे अच्छे कहानी कहनेवाले सोवियत-लेखक-संघ के सदस्य हैं।

हर साल सोवियत संघ के विभिन्न भागों में, बहुत-से विद्वान लोक-साहित्य की खोज में जाते हैं। वे लोग, अपने साथ बहुत बड़ी सामग्री, सैकड़ों अनजानी लोक-कथाएं और महान कहानी कहनेवालों के नाम लेकर लौटते हैं।

रूसी-लोक-कथाओं की इस छोटी-सी पुस्तावली में—जानवरों, जादू की कहानियों और प्रतिदिन के जीवन की कहानियों को प्रमुखता दी गयी है।

जादू की कहानियां, बेहद कवित्वपूर्ण हैं। वे अपने पाठक को कल्पना की दुनिया में ले जाती हैं—अनजानी, बिन-पहचानी दुनिया में। इन्हें पढ़कर ऐसा लगेगा, कि इनमें कोरी कल्पना ही कल्पना है।

जुल्म और अत्याचार की शक्तियों के विरुद्ध लड़ाई लड़नेवाले सभी नायकों का जीवन-चरित्र, परियों की कहानियों के बिल्कुल अनुरूप है। यह लड़ाई कभी भयानक बारह सिरवाले सांप से और कभी दुष्टा जादूगरनी से लड़ी जाती है। इन कहानियों में मनुष्य के सुखद सपने ही व्यक्त किये जाते हैं।

परियों की कहानी का नायक, राष्ट्रीय आदर्श के प्रतीक के रूप में हमारे सामने आता है। वह साहसी, निडर, उदार और ऊंचे आदर्शोंवाला व्यक्ति होता है और हमेशा ही अन्याय पर विजय प्राप्त करता है। ऐसे नायकों का साथ देती हैं अलौकिक शक्ति रखनेवाली कुमारियां जैसे कि बुद्धिमती वासीलीसा और मोहिनी येलेना इत्यादि। "फ़ीनिस्त—सुनहरा बाज़" नामक कहानी की नायिका, अपने प्रेमी की जान बचाने के लिए "लोहे के जूतों की तीन जोड़ियां, लोहे की तीन छड़ियां और लोहे की तीन टोपियां तोड़ती है"। इसी भांति एक दूसरी कहानी की नायिका, एक दयालु बहन अल्योनुश्का, अपने भाई की जान बचाती है और मेहनती छोटी ख़ाव्रोशेच्का तथा दूसरी नायिकाएं भी वफ़ादार, मेहनती, नेक और रहमदिल हैं।

नायकों की सहायता के लिए अलौकिक जीव आते हैं, जैसे कि भूरा घोड़ा, भूरा भेड़िया, बिल्ला, कुत्ता और स्चूका-मछली इत्यादि। जादू की चीज़ें भी उनकी सहायता करती हैं, जैसे कि जादू की दरी, सात मील के बूट और अदृश्य टोपी—ये तमाम चीज़ें

प्रकृति पर विजय प्राप्त करने, और अपने आस-पास की चीज़ों को अधीन करने के मनुष्य के सपनों को प्रतिबिंबित करती हैं।

रूसी कथा कहनेवाले, चुटकलों और क़िस्सों के लिए ख़ास तौर पर मशहूर हैं।

ये कहानियां सदियों पहले रची गयी थीं। उस ज़माने में ज़मींदार अपने किसानों का पूरी तरह स्वामी होता था। वह उन्हें बेच सकता था, ज़िन्दगी भर के लिए सेना में भेज सकता था, और एक कुत्ते के बदले में उन्हें दे सकता था। फिर भी इन कहानियों में लालची और बदमाश ज़मींदार और उसकी क्रोधी और बद-दिमाग़ पत्नी के विरुद्ध संघर्ष करनेवाला ग़रीब किसान या सिपाही ही अन्त में विजय प्राप्त करता है।

इस पुस्तक के अन्त में, इन कहानियों के अतिरिक्त, कुछ पुरानी रूसी वीर-गाथाएं भी हैं। सोवियत संघ के उत्तरीय भागों में इनकी अद्‌भुत और धीमी-धीमी लोक-माधुरी का अब भी रसपान किया जा सकता है। इन वीर लोक-गाथाओं में बहुत पुराने ज़माने के उन रूसी बहादुरों का वर्णन है जो बड़ी अनुरक्ति, भक्ति और वीरता के साथ अपनी मातृभूमि के लिए लड़े थे।

ए० पोमेरान्त्सेवा
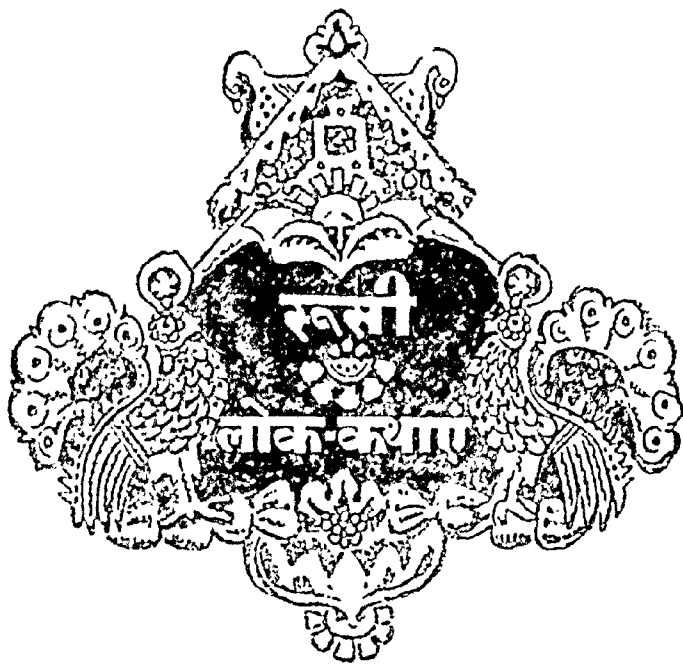
गुलगुला

एक समय की बात है कि एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था।

अब एक रोज़ बुड्ढे ने अपनी बीवी से कहा:

"उठ री, बुढ़िया, चल, ज़रा आटे के कुठार को खुरच कर और अनाज के कुठार को झाड़-बुहार कर थोड़ा-सा आटा निकाल और एक गुलगुला बना दे।"

सो बुढ़िया ने बतख़ का एक पंख लेकर आटे के कुठार को खुरचा और अनाज के कुठार को झाड़ा-बुहारा और किसी तरह दो मुट्ठी आटा निकाला।

आटे को उसने दही डाल कर गूंधा, एक गोल-गोल गुलगुला बनाया, उसे घी में तला और ठंडा होने के लिए खिड़की में रख दिया।

कुछ देर तक तो गुलगुला चुपचाप पड़ा रहा, मगर फिर वह उठा और लुढ़कने लगा। खिड़की से लुढ़क कर वह बेंच पर आया, बेंच से लुढ़क कर फ़र्श पर, और फ़र्श पर लुढ़कता लुढ़कता वह दरवाज़े तक पहुंचा, फिर उछल कर दहलीज़ के बाहर निकल गया, और सीढ़ियों से उतर कर आंगन में और आंगन के फाटक को पार करके बाहर सड़क पर निकल आया।

वह दूर, और भी दूर, सड़क पर लुढ़कता ही चला गया। रास्ते में मिला एक ख़रगोश।

"गुलगुले, ओ गुलगुले, मैं तुझे खा जाऊंगा," ख़रगोश ने कहा।

"नहीं, नहीं, मुझे न खाओ, ख़रगोश। मैं तुम्हें एक गाना सुनाये देता हूं:

मैं हूं गोल गुलगुला,
ख़स्ता और भुरभुरा,
आटे के कुठार को
खुरच, खुरच, खुरच कर,
अनाज के कुठार को
झाड़ कर, बुहार कर
जितना आटा मिल सका,
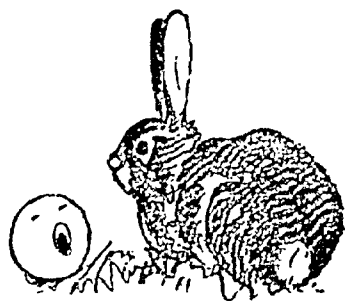
दही उसमें डाल कर
गूंध-गूंध कर बना,
गोल-गोल गुलगुला,
घी में सेंक-भून कर
ख़स्ता और भुरभुरा।
ठंडा करने के लिए
खिड़की में धरा गया;
मैं नहीं हूं बेवकूफ़
वहां से मैं लुढ़क चला।
बाबा को नहीं मिला,
दादी को नहीं मिला,
ओ मियां ख़रगोश राम,
तुम को भी नहीं मिला!"

और ख़रगोश पलक भी न मार पाया कि गुलगुला लुढ़कता हुआ आगे निकल गया।

वह लुढ़कता गया, लुढ़कता गया। रास्ते में मिला एक भेड़िया।

"गुलगुले, ओ गुलगुले, मैं तुझे खा जाऊंगा," भेड़िये ने कहा।

"नहीं, नहीं, भूरे भेड़िये, मुझे न खाओ। मैं तुम्हें एक गाना सुनाये देता हूं:

बाबा को नहीं मिला,
दादी को नहीं मिला,
न मिला खरगोश को,
भेड़िये को भी न मिला।
ओ सुनो, हे रीछ राम!
तुमको भी नहीं मिला!"

और रीछ पलक भी न मार पाया कि गुलगुला लुढ़कता हुआ आगे निकल गया।

वह लुढ़कता गया, लुढ़कता गया। रास्ते में मिली एक लोमड़ी।

"गुलगुले, ओ गुलगुले, तुम कहां लुढ़कते जा रहे हो?"

"देखती नहीं हो, सड़क पर जा रहा हूं!"

"गुलगुले, ओ गुलगुले, मुझे एक गीत सुनाओ!"

और गुलगुला गाने लगा:
"मैं हूं गोल गुलगुला,
ख़स्ता और भुरभुरा,
आटे के कुठार को
खुरच, खुरच, खुरच कर,
अनाज के कुठार को
झाड़ कर, बुहार कर,
जितना आटा मिल सका,

दही उसमें डाल कर,
गूंध-गूंध कर बना,
गोल-गोल गुलगुला;
घी में सेंक-भून कर,
ख़स्ता और भुरभुरा।
ठंडा करने के लिए
खिड़की में धरा गया;
मैं नहीं हूं वेवकूफ़
वहां से मैं लुढ़क चला।
बाबा को नहीं मिला,
दादी को नहीं मिला,
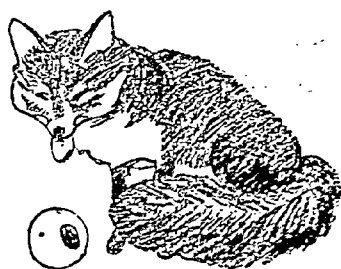
न मिला ख़रगोश को,
भेड़िये को न मिला,
रीछ को भी न मिला।
ओ सुनो, बी लोमड़ी!
तुम को भी नहीं मिला!"

और लोमड़ी बोली:

"वाह! कितना सुन्दर गीत है! पर क्या करूं, मुझे ठीक तरह सुनाई नहीं देता। मेरी नाक पर चढ़ जाओ, प्यारे में गुलगुले, और ज़रा ज़ोर से गाओ; तब शायद मैं सुन पाऊं!"

वह चिल्लाया: "मुर्ग़ी, दया करके जाओ और नदी से कहो कि मुझे थोड़ा-सा पानी पीने के लिए दे दे।"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती नदी के पास पहुंची।

"नदी, नदी, मुर्ग़े के पास ले जाने के वास्ते मुझे थोड़ा-सा पानी दे, क्योंकि मुर्ग़े के गले में सेम का दाना अटक गया है।"

मगर नदी ने कहा:

"पहले लीपा के पेड़ के पास जाओ और उससे एक पत्ती मांग कर लाओ। तब मैं तुम्हें पानी दूंगी।"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती लीपा के पेड़ के पास पहुंची।

"लीपा के पेड़, लीपा के पेड़, मुझे एक पत्ती दे! मैं पत्ती नदी के पास ले जाऊंगी और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा-सा पानी देगी, क्योंकि मुर्ग़े के गले में सेम का दाना अटक गया है।"

मगर लीपा के पेड़ ने कहा:

"पहले किसी लड़की के पास जाओ और उससे एक धागा मांग कर लाओ!"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती एक लड़की के पास पहुंची।

"अरी लड़की, लड़की, मुझे एक धागा दे! मैं धागा लीपा के पेड़ के पास ले जाऊंगी। लीपा का पेड़ मुझे नदी के लिए एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि मुर्ग़े के गले में सेम का दाना अटक गया है।"

लड़की ने कहा :

"पहले कंघी बनानेवालों के यहां जाओ और उनसे एक कंघी मांग कर लाओ। तब मैं तुम्हें धागा दूंगी।"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती कंघी बनानेवालों के यहां पहुंची।

"कंघी बनानेवालो, कंघी बनानेवालो, मुझे एक कंघी दो! मैं कंघी लड़की के पास ले जाऊंगी। लड़की लीपा के पेड़ के लिए मुझे एक धागा देगी। लीपा का पेड़ नदी के लिए मुझे एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि उसके गले में सेम का दाना अटक गया है।"

कंघी बनानेवालों ने कहा:

"पहले नानबाई के पास जाओ और हमारे लिए कुछ नान लाओ, तब हम तुम्हें कंघी देंगे।"

सो बेचारी मुर्ग़ी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती नानबाई के पास पहुंची।

"नानबाई, नानबाई, मुझे कुछ नान दे। मैं नान कंघीवालों के पास ले जाऊंगी। कंघीवाले लड़की के लिए मुझे एक कंघी देंगे। लड़की लीपा के पेड़ के लिए मुझे एक धागा देगी। लीपा का पेड़ मुझे नदी के लिए एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि उसके गले में सेम का दाना अटक गया है।"

नानबाई ने कहा :

वह चिल्लाया : "मुर्ग़ी, दया करके जाओ और नदी से कहो कि मुझे थोड़ा-सा पानी पीने के लिए दे दे।"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती नदी के पास पहुंची।

"नदी, नदी, मुर्ग़े के पास ले जाने के वास्ते मुझे थोड़ा-सा पानी दे, क्योंकि मुर्ग़े के गले में सेम का दाना अटक गया है।"

मगर नदी ने कहा :

"पहले लीपा के पेड़ के पास जाओ और उससे एक पत्ती मांग कर लाओ। तब मैं तुम्हें पानी दूंगी।"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती लीपा के पेड़ के पास पहुंची।

"लीपा के पेड़, लीपा के पेड़, मुझे एक पत्ती दे! मैं पत्ती नदी के पास ले जाऊंगी और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा-सा पानी देगी, क्योंकि मुर्ग़े के गले में सेम का दाना अटक गया है।"

मगर लीपा के पेड़ ने कहा:

"पहले किसी लड़की के पास जाओ और उससे एक धागा मांग कर लाओ!"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती एक लड़की के पास पहुंची।

"अरी लड़की, लड़की, मुझ एक धागा दे! मैं धागा लीपा के पेड़ के पास ले जाऊंगी। लीपा का पेड़ मुझे नदी के लिए एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि मुर्ग़े के गले में सेम का दाना अटक गया है।"

लड़की ने कहा :

"पहले कंघी बनानेवालों के यहां जाओ और उनसे एक कंघी मांग कर लाओ। तब मैं तुम्हें धागा दूंगी।"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती कंघी बनानेवालों के यहां पहुंची।

"कंघी बनानेवालो, कंघी बनानेवालो, मुझे एक कंघी दो! मैं कंघी लड़की के पास ले जाऊंगी। लड़की लीपा के पेड़ के लिए मुझे एक धागा देगी। लीपा का पेड़ नदी के लिए मुझे एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि उसके गले में सेम का दाना अटक गया है।"

कंघी बनानेवालों ने कहा:

"पहले नानबाई के पास जाओ और हमारे लिए कुछ नान लाओ, तब हम तुम्हें कंघी देंगे।"

सो बेचारी मुर्ग़ी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती नानबाई के पास पहुंची।

"नानबाई, नानबाई, मुझे कुछ नान दे। मैं नान कंघीवालों के पास ले जाऊंगी। कंघीवाले लड़की के लिए मुझे एक कंघी देंगे। लड़की लीपा के पेड़ के लिए मुझे एक धागा देगी। लीपा का पेड़ मुझे नदी के लिए एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि उसके गले में सेम का दाना अटक गया है।"

नानबाई ने कहा :

"पहले लकड़हारों के पास जाओ और हमारे लिए कुछ जलाने की लकड़ी लाओ!"

सो मुर्ग़ी बेचारी क्या करती? वह दौड़ती दौड़ती लकड़हारों के पास पहुंची।

"लकड़हारो, लकड़हारो, नानबाई के लिए मुझे कुछ जलाने की लकड़ी दो। नानबाई मुझे कंघीवालों के लिए कुछ नान देगा। कंघीवाले मुझे लड़की के लिए एक कंघी देंगे। लड़की मुझे लीपा के पेड़ के लिए एक धागा देगी। लीपा का पेड़ मुझे नदी के लिए एक पत्ती देगा, और नदी मुर्ग़े के वास्ते मुझे थोड़ा पानी देगी, क्योंकि उसके गले में सेम का दाना अटक गया है।"

लकड़हारों ने मुर्ग़ी को कुछ जलाने की लकड़ी दे दी।

मुर्ग़ी जलाने की लकड़ी लेकर नानबाई के पास गयी। नानबाई ने उसे कंघीवालों के लिए कुछ नान दे दिये। कंघीवालों ने उसे लड़की के लिए एक कंघी दे दी। लड़की ने उसे लीपा के पेड़ के लिए एक धागा दे दिया। लीपा के पेड़ ने उसे नदी के लिए एक पत्ती दे दी; और नदी ने उसे मुर्ग़े के वास्ते थोड़ा पानी दे दिया।

मुर्ग़े ने पानी पिया तो सेम का दाना गले के नीचे उतर गया।

"कुकड़ू-कूं!" मुर्ग़े ने ख़ुश हो कर बांग दी।
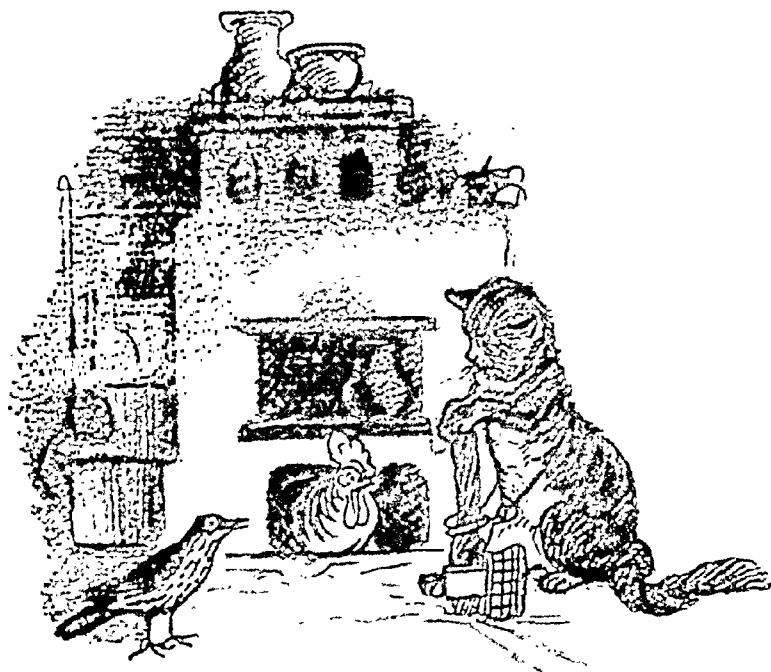
नन्हा मुर्ग़ा-सुनहरी कलग़ी

एक समय की बात है कि किसी जंगल में एक छोटा-सा घर था और उस घर में एक बिल्ला, एक चिड़िया और एक नन्हा-सा मुर्ग़ा रहते थे। चिड़िया और बिल्ला रोज़ लकड़ी काटने दूर जंगल में चले जाते थे और नन्हे मुर्ग़े को घर पर छोड़ जाते थे। जाने के पहले वे नन्हे मुर्ग़े को ख़ूब समझा जाते थे कि:

"देखो, हम बहुत दूर जा रहे हैं; और तुम यहीं ठहरो और घर की रखवाली करो। लेकिन, शोर मत करना और अगर लोमड़ी आये तो खिड़की से झांकना मत।"

जब लोमड़ी ने यह देखा कि चिड़िया और बिल्ला चले गये हैं, तो वह जल्दी-जल्दी उस छोटे-से घर के पास पहुंची और खिड़की के नीचे बैठ कर गाने लगी:

"नन्हा मुर्ग़ा,
सुन्दर कलग़ी,
कलग़ी तेरी लाल
और चिकने तेरे बाल।
निकल ज़रा बाहर तो, भैया,
दूंगी तुझको मटर के दाने।"

नन्हे मुर्ग़े ने खिड़की के बाहर झांका तो लोमड़ी ने झपट्टा मार कर उसे पकड़ लिया और उसे अपने बिल में उठा ले चली।

नन्हा मुर्ग़ा चिल्लाया:

"लोमड़ी आयी, मुझे ले गयी
गहरी नदियों के उस पार,
ऊंचे-ऊंचे पर्वत पार,
बिल्ले आओ, चिड़िया दौड़ो,
दोस्तो, आकर मुझे बचाओ!"

बिल्ले और चिड़िया ने नन्हे मुर्गे की आवाज़ सुनी तो वे लोमड़ी के पीछे दौड़े और नन्हे मुर्गे को उससे छीन लिया।

इसके बाद जब चिड़िया और बिल्ला फिर लकड़ी काटने को गये तो वे नन्हे मुर्गे को भली प्रकार समझा गये कि :

"देखो, मुर्गे, इस बार खिड़की के बाहर मत झांकना। आज हम बहुत दूर जा रहे हैं और तुम्हारा चिल्लाना हमें सुनाई न दे सकेगा।"

जब वे चले गये, तो लोमड़ी जल्दी-जल्दी उस छोटे-से घर के पास खड़ी होकर गाने लगी :

"नन्हा मुर्गा,
सुन्दर कलगी,
कलगी तेरी लाल,
और चिकने तेरे बाल,
निकल ज़रा बाहर तो, भैया,
दूंगी तुझको मटर के दाने!"

नन्हा मुर्गा चुपचाप बैठा रहा। तब लोमड़ी ने फिर गाया :

"लड़की-लड़के दौड़ गये,
पथ पर गेहूं छोड़ गये,
मुर्गी आयी खाने को,
नहीं मिलेगा मुर्गे को!"

नन्हा मुर्ग़ा खिड़की के बाहर झांक कर बोला:

"कुड़क-कुड़क-कुड़क!
लोमड़ी बताओ तो!
मुर्ग़ी नहीं देगी क्यों
अनाज मुझे खाने को?"

तब लोमड़ी ने झपट्टा मार कर नन्हे मुर्ग़े को पकड़ लिया और वह उसे अपने बिल की ओर ले चली। नन्हा मुर्ग़ा चिल्लाया:

"लोमड़ी आयी, मुझे ले गयी,
गहरी नदियों के उस पार,
ऊंचे-ऊंचे पर्वत पार
बिल्ले आओ, चिड़िया दौड़ो,
दोस्तो, आकर मुझे बचाओ!"

चिड़िया और बिल्ले ने नन्हे मुर्ग़े की आवाज़ सुनी तो वे लोमड़ी के पीछे दौड़े। चिड़िया उड़ रही थी और बिल्ला भाग रहा था। जब वे लोमड़ी के पास पहुंच गये तो बिल्ला उसे नोचने-खसोटने लगा और चिड़िया चोंच मारने लगी, और दोनों ने नन्हे मुर्ग़े को छुड़ा लिया।

बिल्ले और चिड़िया ने एक रोज़ फिर दूर जंगल में जाकर लकड़ी काटने की तैयारी की। इस बार उन्होंने बहुत समझा कर नन्हे मुर्ग़े से कहा कि:

"देखो, लोमड़ी की बात मत सुनना और खिड़की के बाहर मत झांकना। आज हम लोग बहुत दूर जायेंगे और अगर तुम चिल्लाओगे तो हमें सुनाई नहीं देगा।"

सो चिड़िया और बिल्ला दूर जंगल में लकड़ी काटने चले गये। उधर से आयी लोमड़ी, वह खिड़की के नीचे बैठ कर गाने लगी:

"नन्हा मुर्ग़ा,
सुन्दर कलग़ी,
कलग़ी तेरी लाल,
और चिकने तेरे बाल,
निकल ज़रा बाहर तो, भैया,
दूंगी तुझको मटर के दाने!"

नन्हा मुर्ग़ा चुपचाप बैठा रहा। तब लोमड़ी ने फिर गाया:

"लड़की-लड़के दौड़ गये,
पथ पर गेहूं छोड़ गये,
मुर्ग़ी आयी खाने को,
नहीं मिलेगा मुर्ग़े को!"

नन्हा मुर्ग़ा चुपचाप बैठा रहा। तब लोमड़ी ने फिर गाया:

"लोग बहुत-से आये थे,
पथ पर मेवा छोड़ गये,

मुर्ग़ी आयी खाने को,
नहीं मिलेगा मुर्ग़े को।"

नन्हा मुर्ग़ा खिड़की के बाहर झांक कर बोला:

"कुड़क-कुड़क-कुड़क,
लोमड़ी बताओ तो!
मुर्ग़ी नहीं देगी क्यों
मेवा मुझे खाने को?"

लोमड़ी ने झपट्टा मार कर नन्हे मुर्ग़े को पकड़ लिया और वह उसे गहरी नदियों और ऊंचे पर्वतों के पार अपने बिल में उठा ले चली।

नन्हा मुर्ग़ा बहुत चिल्लाया, बहुत चिल्लाया, मगर उसकी आवाज़ चिड़िया और बिल्ले को नहीं सुनाई दी। जब वे घर लौटे तो नन्हे मुर्ग़े का कहीं पता न था।

चिड़िया और बिल्ला लोमड़ी के पैरों के निशान देखते हुए उसके पीछे चले। बिल्ला दौड़ रहा था और चिड़िया उड़ रही थी ... आख़िर वे लोमड़ी के बिल के पास पहुंच गये। बिल्ला गूसली* बजा कर गाने लगा:

"मीठी तान बजाऊंगा,
गा गा तुम्हें रिझाऊंगा।

---

*कुछ विशेष रूसी वस्तुओं की व्याख्या पुस्तक के अन्त में दी गयी सूची में देखिये।

गयी घूमन का वहना,
या भाया घर में रहना।"

लोमड़ी ने गीत सुना तो अपने मन में कहा:

"यह कौन है जो इतनी अच्छी गूसली बजा रहा है और इतना मीठा गीत गा रहा है? चल कर देखना चाहिए।"

लोमड़ी अपने बिल के बाहर निकली। चिड़िया और बिल्ले ने झट से उसे पकड़ लिया और लगे उसे मारने। उन्होंने उसे खूब मारा, खूब मारा, आखिर वह जितनी तेज़ी से भाग सकती थी, भाग गयी।

चिड़िया और बिल्ले ने नन्हे मुर्गे को एक टोकरी में रखा और उसे घर ले आये।

और आज तक वे तीनों जंगल के अन्दर अपने उस छोटे-से मकान में हंसी-खुशी से रहते हैं।
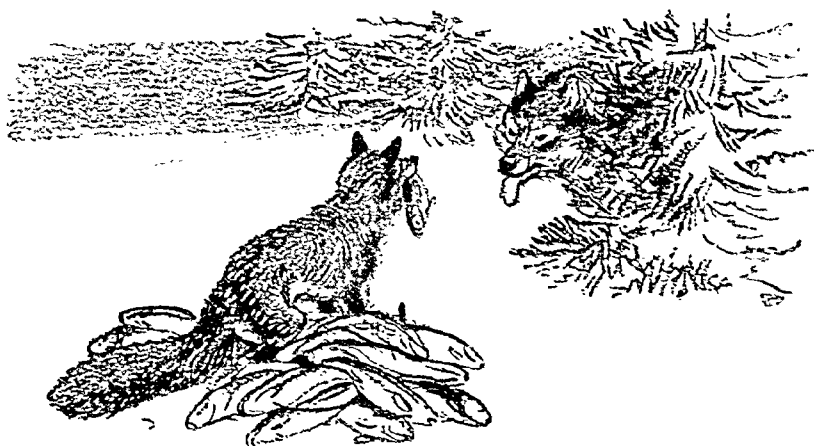
लोमड़ी और भेड़िया

एक बार की बात है कि एक बुड्ढा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। बुड्ढे ने अपनी बीवी से कहा:

"मालकिन, मैं घोड़ों को स्लेज-गाड़ी में जोतकर मछली पकड़ने जा रहा हूं और तुम इतने में कुछ समोसे बना लो।"

बुड्ढे ने उस रोज़ बहुत-सी मछलियां पकड़ीं। पूरी गाड़ी भर गयी। घर लौटते समय उसने रास्ते में यकायक देखा कि एक लोमड़ी गेंद की तरह गुड़-मुड़ हो कर सड़क के बीचोंबीच पड़ी है।

तब बुड्ढे की समझ में आया कि वह लोमड़ी मरी हुई न थी। उसे बहुत दुख हुआ। मगर अब क्या करता! जो कुछ होना था, वह तो हो चुका था।

इस बीच, लोमड़ी ने सड़क पर बिखरी हुई सारी मछलियों को जमा करके एक ढेर बनाया और भोजन करने बैठ गयी।

उधर से निकला एक भेड़िया।

"ख़ूब मज़े से खाओ, बहना! भोजन कर रही हो न?"

"अपना खाना खाती हूं, किसी को नहीं बुलाती हूं! धन्यवाद!"

"कुछ मछलियां मुझे भी दो न!"

"नहीं, मैं नहीं दूंगी। जाओ, अपने लिए खुद मछली पकड़ लाओ!"

"पर मैं तो मछली पकड़ना जानता नहीं।"

"छि:! मैं पकड़ सकती हूं तो तुम भी पकड़ सकते हो। नदी तक जाओ, भाई; बर्फ़ में कहीं सूराख़ देखो तो उसमें अपनी पूंछ लटका कर बैठ जाओ और कहते जाओ: 'कस के पकड़ री मछली! छोटी और बड़ी मछली! बाहर निकल री मछली! छोटी और बड़ी मछली!' और मछली तुम्हारी पूंछ कस कर पकड़ लेगी। जितनी देर तुम वहां बैठे रहोगे, उतनी ही मछलियां आकर फंसती जायेंगी।"

सो भेड़िया नदी पर पहुंचा और वहां बर्फ़ में एक सूराख़ देख कर उसमें अपनी पूंछ लटका कर बैठ गया। वह बैठा था और कहता जाता था:

"कस के पकड़ री मछली,
बाहर निकल री मछली,
छोटी-बड़ी री मछली!"

और लोमड़ी भेड़िये के चारों ओर घूम-घूम कर गाती जाती थी:

"चमको, चमको, तारे,
धुंधले, पीले सारे!
भेड़िये की पूंछ को
बर्फ़ में ही जमा दो!"

"बहना, यह तुम क्या बड़बड़ा रही हो?" भेड़िये ने लोमड़ी से पूछा।

"मैं भगवान से प्रार्थना कर रही हूं कि तुम्हारी पूंछ में बहुत-सी मछलियां आकर फंस जायें," लोमड़ी ने जवाब दिया, और वह फिर घूम-घूम कर गाने लगी:

"चमको, चमको, तारे,
धुंधले, पीले सारे!
भेड़िये की पूंछ को
बर्फ़ में ही जमा दो!"

सारी रात भेड़िया बर्फ़ के उसी सूराख़ पर बैठा रहा और सचमुच उसकी पूंछ बर्फ़ में जम गयी। सुबह होने पर जब उसने उठना चाहा तो वह उठ नहीं सका। "बाप रे, कितनी सारी मछलियां आ कर फंस गयी हैं मेरी पूंछ में," उसने अपने मन में सोचा। "मुझसे उनको बाहर भी नहीं निकाला जाता।"

उसी समय एक औरत पानी भरने के वास्ते डोल लिए हुए वहां आयी। भेड़िये को देख कर वह चिल्लायी:

"भेड़िया! भेड़िया! मारो भेड़िये को!"

अब भेड़िये ने भागने की बहुत कोशिश की, मगर वह अपनी पूंछ बाहर न निकाल सका। और औरत अपने डोल फेंक कर डोल लटकाने के डंडे से उसे मारने लगी। उसने भेड़िये को ख़ूब मारा, ख़ूब मारा। उधर भेड़िये ने ख़ूब ज़ोर लगा कर अपनी पूंछ खींची, ख़ूब खींची, और आख़िर उसकी पूंछ उखड़ गयी और वह वहां से भाग खड़ा हुआ।

उसने अपने मन में सोचा:

"ठहर जा, लोमड़ी बहना, तूने जो कुछ किया है, एक रोज़ तुझे उसके लिए रोना पड़ेगा।"

अब लोमड़ी एक औरत के झोंपड़े में घुस गयी। वहां परात में गूंधा हुआ आटा रखा था। लोमड़ी ने पेट भर कर गूंधा हुआ आटा खाया, कुछ अपने सिर पर लगा लिया। वह सड़क पर भाग गयी और वहीं पड़ कर कराहने लगी।

उधर से आया भेड़िया। वह बोला:

"लोमड़ी बहना, तुम ने मछली पकड़ने का अच्छा ढंग सिखाया था मुझे! देखो, मेरे सारे बदन पर निशान पड़ गये हैं।"

और लोमड़ी ने जवाब दिया:

"अरे, भैया, तुम्हारी तो पूंछ ही गयी, सिर तो सही-सलामत है, पर मुझे देखो, मेरा तो पूरा सिर चकनाचूर हो गया है। मार-मार कर उन्होंने मेरा भेजा निकाल दिया है। अब तो मेरे लिए चलना भी दूभर हो गया है।"

"हां, यह तो मैं देख रहा हूं, बहना," भेड़िये ने कहा। "आओ, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें उठा कर ले चलूंगा।"

सो लोमड़ी भेड़िये की पीठ पर सवार हो गयी और दोनों चल पड़े।

लोमड़ी भेड़िये की पीठ पर चढ़ी हुई थी और धीरे-धीरे यह गीत गुनगुनाती जाती थी:

"जो पिटा और कुटा वह है घोड़ा बना,
न पिटा न कुटा वह सवारी करे!
जो पिटा और कुटा वह है घोड़ा बना,
न पिटा न कुटा वह सवारी करे!"

"बहना, यह तुम क्या बड़बड़ा रही हो?" भेड़िये ने पूछा।

"भैया, मैं एक मंत्र पढ़ रही हूं जिससे तुम्हारा सारा दर्द ग़ायब हो जायेगा," लोमड़ी ने जवाब दिया और वह फिर गुनगुनाने लगी:

"जो पिटा और कुटा वह है घोड़ा बना
न पिटा न कुटा वह सवारी करे!
जो पिटा और कुटा वह है घोड़ा बना,
न पिटा न कुटा वह सवारी करे!"
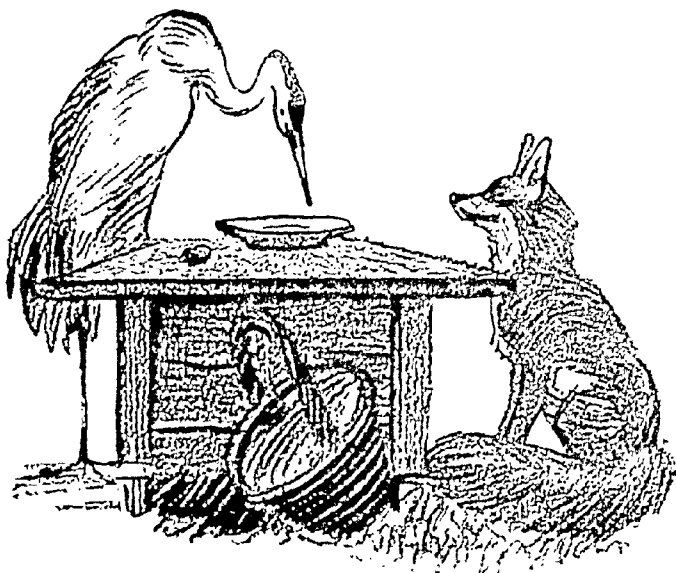
लोमड़ी और सारस

एक बार एक लोमड़ी और एक सारस अच्छे मित्र बन गये। एक दिन लोमड़ी ने सारस को खाने पर बुलाने का फ़ैसला किया।

"मेरे प्यारे मित्र, तुम कल मेरे पास आओ," लोमड़ी ने कहा। "मैं तुम्हें बहुत मज़ेदार खाना खिलाऊंगी।"

सो दूसरे दिन सारस दावत खाने के लिए गया। लोमड़ी ने सूजी का थोड़ा-सा दलिया बनाया और एक तश्तरी में डाल कर रख दिया। दलिया पेश करते हुए उसने अपने मेहमान से कहा :

"लो, खाओ, मेरे प्यारे। मैंने खुद इसे तैयार किया है।"

सारस ने बार-बार उस तश्तरी में अपनी चोंच मारी, मगर वह थोड़ा-सा दलिया भी न खा सका। और उतनी देर में लोमड़ी उस दलिये को चाटते चाटते चट कर गयी।

तब उसने कहा:

"मुझे बहुत अफ़सोस है मेरे प्यारे मित्र, पर मेरे पास तुम्हारे सामने पेश करने के लिए अब और कुछ नहीं है।"

सारस ने जवाब दिया:

"इसके लिए भी तुम्हारा शुक्रिया। कल तुम मेरे हां आना।"

दूसरे दिन लोमड़ी सारस के घर पहुंची। सारस ने खाने के लिए कुछ शोरबा बनाया और एक तंग मुंह की सुराही में डाल कर पेश किया और लोमड़ी से कहा:

"शुरू करो मेरी प्यारी, मेरे पास तो बस, यही कुछ है।"

लोमड़ी ने सुराही में मुंह डालने की कोशिश की, मगर सफल न हो सकी। तब उसने एक तरफ़ से सुराही पर नजर डाली, और दूसरी तरफ़ से उसे घूरा। फिर चाटा और सूंघा। लेकिन किसी तरह भी वह शोरबा न खा सकी। सुराही के मुंह की तुलना में उसकी थूंथनी कहीं बड़ी थी।

लेकिन सारस बड़े मज़े से खाता रहा यहां तक कि सुराही में कुछ भी बाक़ी न रहा।

"मुझे बहुत अफ़सोस है, मेरी प्यारी, मगर मेरे पास तुम्हारे सामने पेश करने के लिए और कुछ भी नहीं है।"

लोमड़ी को मन ही मन बहुत ग़ुस्सा आया। उसने सोचा था कि वह इतना खा लेगी कि हफ़्ते भर की छुट्टी हो जायेगी। मगर वह अपना-सा मुंह ले कर लौट गयी। जैसे को तैसा मिला।

और इसके बाद लोमड़ी और सारस की दोस्ती ख़त्म हो गयी।
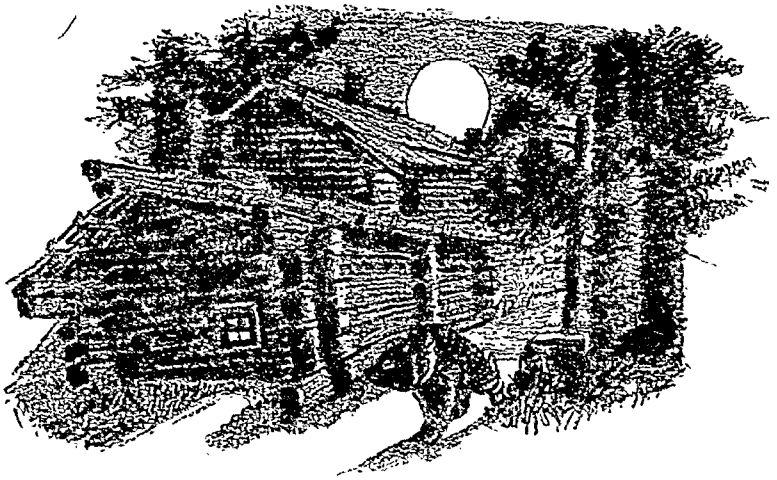
लकड़ी की टांगवाला रीछ

एक बार एक बूढ़ा और उसकी बीवी कहीं रहते थे। उन्होंने कुछ शलजम उगाये। एक दुष्ट रीछ उन्हें चुराने लगा। एक दिन बूढ़ा अपने शलजमों को देखने के लिए गया और लो – शलजम टुकड़े-टुकड़े हुए इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

बस, वह घर आया और उसने बुढ़िया को इसके बारे में बताया।

"भला, यह सब कौन कर सकता है?" उसने कहा। "अगर किसी इन्सान ने ये शलजम निकाले होते तो वह उन्हें अपने साथ ले कर नौ दो ग्यारह हो गया होता। शायद यह किसी रीछ की करतूत है। बूढ़े मियां, जाओ, और चोर की तलाश करो।"

बूढ़े ने एक कुल्हाड़ा लिया और रात भर पहरा देने के लिए खेत में जा पहुंचा। वह बेंत की बाड़ के नज़दीक चुपचाप लेट गया। अचानक ही एक रीछ आया और शलजम निकाल-निकाल कर फेंकने लगा। उसने काफ़ी सारे शलजम निकाले और बाड़ पर चढ़ने लगा।

बूढ़ा उछल कर उठ खड़ा हुआ; उसने ज़ोर से कुल्हाड़ा फेंका और रीछ की एक टांग काट डाली। इसके बाद वह झाड़ियों में छिप गया।

रीछ दर्द से कराहता हुआ, तीन टांगों के सहारे लंगड़ाता लंगड़ाता जंगल में चला गया।

बूढ़ा कटी हुई टांग उठा कर घर लौट आया।

"लो बुढ़िया," उसने कहा। "इसे पका लो।"

उसने रीछ की टांग को साफ़ किया और उसे उबलना रख दिया। इसके बाद उसने खाल से ऊन उतारी और रीछ की खाल पर बैठ कर ऊन कातने लगी।

इसी बीच रीछ ने लकड़ी की टांग बनायी और बूढ़े तथा बुढ़िया से बदला लेने चल दिया।

जब वह चलता तो लकड़ी की टांग चर-चर करती और वह बार-बार यह दोहराता:

"गुर्र, गुर्र, गुर्र, गुर्र
गुर्र, गुर्र, गुर्र, गुर्र

लकड़ी की टांगवाला, आया रीछ काला,
आया रीछ काला, आफ़त का परकाला।
निंदिया की गोद में तो सभी लोग सोये,
प्यारे-प्यारे मीठे सब सपने संजोये।
जागती है बूढ़ी एक, नींद को भगाये,
कातती है बाल मेरे, खाल को बिछाये।
बालों से बनाये ऊन, मांस को पकाये,
मांस मेरा मज़े मज़े, मर्द उसका खाये।"

बूढ़ी ने यह सुना तो बूढ़े से कहा:

"बाहर जाकर दरवाज़े को सांकल लगा दो, रीछ आ रहा है।"

लेकिन रीछ तो दालान में पहुंच भी चुका था। उसने दरवाज़ा खोला और गुर्राया:

"गुर्र, गुर्र, गुर्र, गुर्र
गुर्र, गुर्र, गुर्र, गुर्र

लकड़ी की टांगवाला, आया रीछ काला,
आया रीछ काला, आफ़त का परकाला।
निंदिया की गोद में तो सभी लोग सोये,
प्यारे-प्यारे मीठे सव सपने संजोये।
जागती है बूढ़ी एक, नींद को भगाये,
कातती है बाल मेरे, खाल को विछाये।

वालों से बनाये ऊन, मांस को पकाये,
मांस मेरा मजे मज़े, मर्द उसका खाये।"

बूढ़ा और बूढ़ी दोनों बेहद डरे। बूढ़ा ऊंचे पलंग पर और बुढ़िया अलावघर पर चढ़ गयी।

रीछ झोंपड़ी में आ कर बूढ़े-बूढ़ी की खोज करने लगा। खोजते खोजते वह तहखाने में जा गिरा।

तभी पड़ोसी दौड़ कर भीतर आये और उन्होंने रीछ को मार डाला।
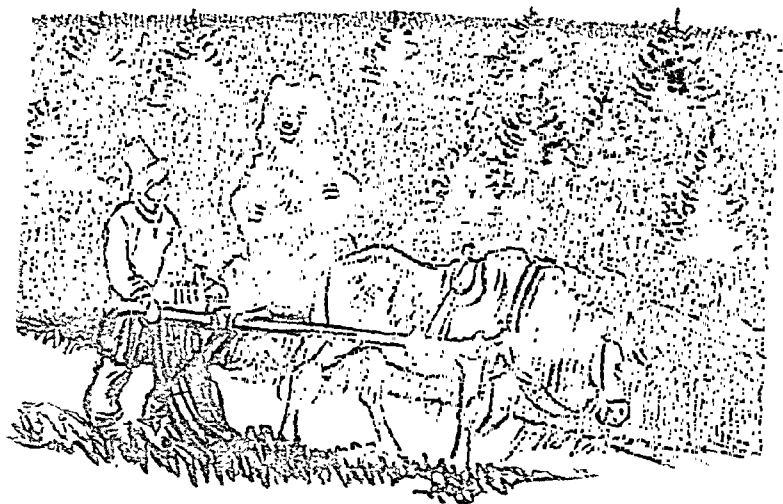
किसान और भालू

एक किसान शलजम बोने के लिए जंगल में गया। वह हल चला रहा था कि इतने में एक भालू आया और बोला:

"किसान, मैं तेरी हड्डी-पसली तोड़ डालूंगा।"

"नहीं, रीछ भाई, दया करके मेरी हड्डियां न तोड़ो। उसके बजाय शलजम बोने में मेरी मदद करो। उसकी जड़ें मैं ले लूंगा और पत्ते तुम ले लेना।"

"अच्छा," भालू ने कहा। "लेकिन, खबरदार, अगर मेरे साथ धोखा किया तो फिर मुझे कभी दिखाई न देना!"

यह कह कर वह जंगल में चला गया।

शलजम बड़े हो गये। पतझड़ का मौसम आया तो किसान शलजम निकालने के लिए गया। और भालू जंगलों में से निकल कर उससे बोला:

"आओ, किसान, हम शलजम का बंटवारा कर लें।"

"बहुत अच्छा, रीछ भाई। पत्ते तुम्हारे हैं और जड़ें मेरी हैं।"

किसान ने सारे पत्ते भालू को दे दिये, और शलजम अपनी गाड़ी में लाद कर बेचने के लिए शहर चल दिया।

रास्ते में उसे भालू मिला।

"किसान, तुम कहां जा रहे हो?" भालू ने पूछा।

"मैं शहर जा रहा हूं, रीछ भाई। इन जड़ों को बेचने के लिए।"

"देखूं, तुम्हारी जड़ों का स्वाद कैसा है।"

किसान ने उसे एक शलजम दे दिया। भालू उसे चखते ही गरज कर बोला:

"अहा!, तुमने मेरे साथ धोखा किया है! तुम्हारी ये जड़ें तो मेरे पत्तों से बहुत मीठी हैं। खबरदार, जो अब कभी लकड़ी काटने के लिए मेरे जंगल में पैर रखा मैं तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ डालूंगा।"

अगले साल किसान ने उसी जगह पर गेहूं बोया। जब

वह फ़सल काटने को पहुंचा तो देखा कि वहां भालू खड़ा उसका इन्तज़ार कर रहा है।

"इस बार मुझे धोखा नहीं दे पायेगा तू," भालू ने कहा। "ला, मेरा हिस्सा दे।"

और किसान ने कहा:

"अच्छा, यही सही। इस बार, रीछ भाई, जड़ें तुम ले लो, और मैं पत्तों से ही सन्तोष कर लूंगा।"

दोनों ने फ़सल काटी। किसान ने सारी जड़ें भालू को दे दीं और अनाज अपनी गाड़ी में लाद लिया और उसे अपने घर ले गया।

भालू ने जड़ों को ख़ूब चबाया, ख़ूब चबाया; मगर वह तो लकड़ी चबाने के बराबर था।

भालू को किसान पर बहुत ग़ुस्सा आया; और उस वक़्त से ही भालू और किसान एक दूसरे के दुश्मन बन गये हैं।
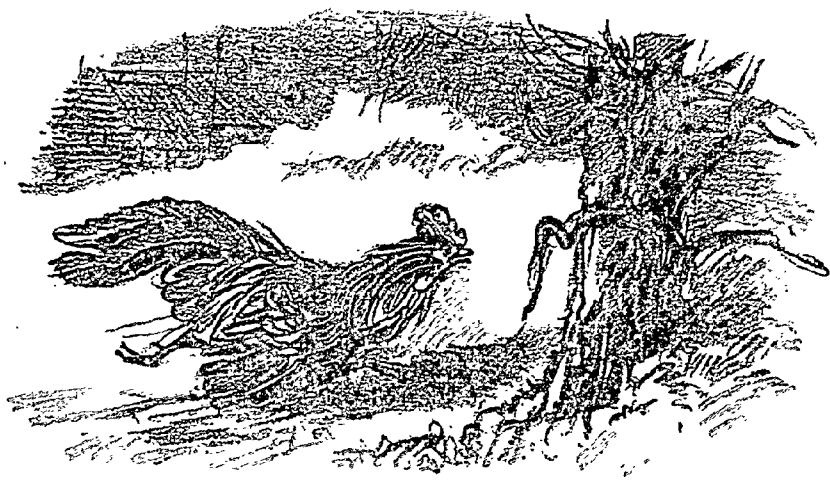
जानवरों का जाड़े का घर

किसी समय एक बूढ़ा और उसकी बीवी रहते थे। उनके पास बैल, मेढ़ा, हंस, मुर्ग़ और एक सूअर था।

एक बार बूढ़े ने अपनी बीवी से कहा:

"बीवी, मुर्ग़ को रखने से क्या फ़ायदा? आओ, इसे त्योहार की दावत में खा-पी कर ख़त्म कर डालें।"

"ठीक है," बूढ़ी ने कहा।

मुर्ग़ ने यह सुना तो रातों रात जंगल में भाग गया। अगली सुबह बूढ़े ने सभी जगह खोज की, मगर मुर्ग़ न मिलना था न मिला। संध्या समय उसने अपनी बीवी से कहा:

"मुर्ग़ा तो गया, चलो सूअर ही सही।"

"ठीक है, सूअर पर ही छुरी चलाओ," बुढ़िया ने कहा।

सूअर ने यह सुना और जब रात आयी तो वह भी जंगल में भाग गया।

बूढ़े ने सभी जगह ढूंढा, मगर सूअर कहीं न मिला।

"हमें मेढ़े को मारना होगा" उसने कहा।

"बहुत अच्छा, इसे ही मारो," उसकी बीवी ने कहा।

मेढ़े ने यह सुना और हंस से कहने लगा:

"आओ हम दोनों बनों में भाग चलें, वरना ये हम दोनों को मार डालेंगे।"

इस तरह मेढ़ा और हंस दोनों बनों में दौड़ गये।

बूढ़ा चौपाल में आया और लो – मेढ़ा और हंस दोनों ग़ायब हैं। उसने जहां तहां उन्हें ढूंढा मगर पा न सका।

"अजीब बात है! सभी जानवर भाग गये, सिर्फ़ बैल रह गया। अब तो हमें इसे ही खाना होगा।"

"ऐसा ही सही, इसे ही ज़बह कर डालो," बुढ़िया ने कहा।

बैल ने यह सुना तो वह भी जंगल में भाग गया।

गर्मी के दिनों में तो जंगल में बहुत मजा रहता है। और भगोड़े वहां ख़ूब मौज मनाते रहे। मगर जब गर्मी बीती

और जाड़ा आया तब बैल मेढ़े के पास गया और कहने लगा :

"अच्छा, मेरे भाई, मेरे दोस्त, तुम्हारा क्या ख़्याल है, जाड़ा आ रहा है, हमें अवश्य ही लकड़ी की झोंपड़ी बना लेनी चाहिए?"

लेकिन मेढ़े ने जवाब दिया :

"मेरे पास तो पोस्तीन का कोट है, मुझे जाड़े का कोई डर नहीं।"

तब बैल सूअर के पास गया।

"सूअर, आओ अपने रहने के लिए लकड़ी की झोंपड़ी बना लें," उसने कहा।

"मैं अपने लिए ज़मीन खोद लूंगा और झोंपड़ी के बिना ही वहां मज़े से रहूंगा।"

अब बैल हंस के पास गया।

"हंस, आओ चल कर अपने लिए एक झोंपड़ी बना लें।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा। मेरा एक पंख कम्बल का काम देता है और दूसरा बिछौने का, मुझे सर्दी का कोई डर नहीं," हंस ने जवाब दिया।

तब बैल मुर्ग़ के पास गया।

"आओ, अपने लिए एक झोंपड़ी बना लें" बैल ने कहा।

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा। मैं किसी देवदार वृक्ष के नीचे बैठ कर सर्दी भी बिता सकता हूं।"

इस तरह बैल ने देखा कि अकेले उसे ही वह काम करना होगा।

"बहुत अच्छा," उसने कहा, "तुम्हें जो पसन्द हो वही करो, मगर मैं तो अपने लिए लकड़ी की झोंपड़ी बनाऊंगा।"

और उसने अपने लिए लकड़ी की झोंपड़ी बनायी। जब झोंपड़ी बन गयी तो वह अंगीठी के पास लेट कर गर्मी का मज़ा लेने लगा।

उस जाड़े में पाला बहुत ज़ोर से पड़ा। मेढ़ा इधर-उधर दौड़-दौड़ कर अपने को गर्माता रहा फिर भी ठिठुरता।

आख़िर वह बैल के पास गया।

"में... ए... ए... में... ए... ए... मुझे अपनी झोंपड़ी में आ जाने दो!"

"नहीं, मेढ़े! मैंने तुम्हें इसे बनाने के लिए मदद करने को कहा था, पर तुमने कोरा जवाब दे दिया था कि तुम्हारे पास पोस्तीन है और सर्दी की तुम्हें कोई परवाह नहीं है।"

"मुझे भीतर आने दो वरना मैं दरवाज़ा तोड़ डालूंगा और तुम सर्दी में ठिठुरते रहोगे।"

बैल ने इस पर विचार किया: "अगर मैं इसे भीतर नहीं आने दूंगा तो यह मुझे सर्दी में ठिठुरने के लिए मजबूर कर देगा।"

इसलिए उसने कहा :

"अच्छा, भीतर आ जाओ।"

मेढ़ा झोंपड़ी में आ गया और अंगीठी के सामने वाली बेंच पर लेट गया।

कुछ समय बाद सूअर दौड़ता दौड़ता आया :

"खुर्र खुर्र! बैल, मुझे अन्दर आ कर गर्म होने दो।"

"नहीं सूअर! मैंने तुम्हें झोंपड़ी बनाने के लिए मदद देने को कहा था, तब तुमने शेख़ी मारी थी कि चाहे जितनी भी सर्दी हो जाये तुम्हें उसकी परवाह नहीं। तुम अपने लिए ज़मीन खोद कर उसमें रह लोगे।"

"मुझे भीतर आ जाने दो वरना मैं अपनी थूथनी से सभी कोने खोखले कर डालूंगा और तुम्हारी झोंपड़ी ज़मीन से आ लगेगी।"

बैल ने इस पर विचार किया : "सूअर झोंपड़ी को गिरा देगा।"

उसने कहा : "अच्छा, आ जाओ।"

सूअर झटपट अन्दर घुस गया और तहख़ाने में आराम से रहने लगा।

इसके बाद हंस आया।

"हां... की... हां! बैल, मुझे भीतर आ कर गर्म होने दो।"

"नहीं, हंस, मैं नहीं आने दूंगा। तुम्हारे दो पंख हैं—एक बिछावन का काम देता है और दूसरा कम्बल का। झोंपड़ी के बिना भी तुम्हारा काम चल सकता है।"

"मुझे भीतर आने दो वरना मैं तख़्तों के बीच से सारी मिट्टी बाहर निकाल दूंगा और दरारों से ठंड अन्दर जाने लगेगी।"

बैल ने इस पर विचार किया और हंस को भीतर आने की इजाज़त दे दी। हंस भीतर जा कर चिमनी वाले कोने में डट गया।

कुछ समय बाद मुर्ग़ वहां पहुंचा।

"कुकड़ूं-कूड़ूं! मुझे झोंपड़ी में आने दो, बैल!"

"नहीं, मैं नहीं आने दूंगा। देवदार के नीचे अपने बिस्तर पर जाओ।"

"मुझे भीतर आने दो, नहीं तो मैं उड़ कर छत पर जा बैठूंगा और छत में सूराख़ करके ठंड अन्दर आने का रास्ता बना दूंगा।"

बैल ने मुर्ग़ को भी भीतर आने दिया। मुर्ग़ उड़ कर झोंपड़ी में आ गया और एक शहतीर पर उसने अपना डेरा लगा लिया।

और इस तरह वे पांचों एक साथ रहने लगे। मगर एक भेड़िये और एक रीछ को इसका पता चल गया।

"आओ, झोंपड़ी में चलें" उन्होंने आपस में सलाह की।

"इन सबको डकार जायें और ख़ुद वहां आराम से रहने लगें।"

यह सलाह करके वे वहां गये।

"पहले तुम भीतर जाओ, तुम तो खूब हट्टे-कट्टे हो," भेड़िये ने रीछ से कहा।

"नहीं, मैं बहुत भारी और सुस्त हूं; तुम मुझसे कहीं अधिक चुस्त हो। पहले तुम भीतर जाओ।"

इस तरह भेड़िया झोंपड़ी में गया। ज्यों ही वह भीतर पहुंचा, बैल ने उसे सींगों के बीच कर लिया और दीवार में दे मारा। मेढ़ा भेड़िये पर झपटा और उसे दायें बायें ज़ोर-ज़ोर से मारने लगा—"धम, धम!"

तहख़ाने से सूअर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा:

"खुर्र-खुर्र-खुर्र
खुर्र-खुर्र-खुर्र!
मेरे चाकू की तेज़ तेज़ धार है।
यह कुल्हाड़ा इधर तैयार है।
खाल लूंगा उतार, खाल लूंगा उतार,
चाहे कैसी भी पतली हो, लूंगा उतार।"

हंस ने उसके दायें-बायें चिमटियां मारनी शुरू कीं और मुर्ग चिल्लाने लगा:

"कू-कू-कू
कुकड़ू-कड़ू!

मुझ को रोको, मुझ को पकड़ो!
वरना कुछ कर डालूंगा ।
पांच गिनोगे जब तक तुम सब,
इससे छुट्टी पा लूंगा।"

रीछ ने जो यह शोर सुना तो वहां से भाग खड़ा हुआ। भेड़िया बड़ी मुश्किल से जान बचा कर भागा और रीछ के पास पहुंच कर कहने लगा:

"बड़ी मुश्किल से जान बचा कर आया हूं! उन्होंने तो मार-मार कर मेरा हुलिया ही बिगाड़ दिया। एक बहुत बड़े आकारवाले ने, जिसने मोटा काला कोट पहन रखा था, एक तेज़ कांटे की मदद से मुझे दीवार में दे मारा। तब एक और भूरे कोट और छोटे क़दवाले ने हथौड़ों से मेरे दायें-बायें चोटें लगानी शुरू कीं। मैंने तो सोचा कि वह मेरी सभी हड्डी-पसलियां तोड़ डालेगा। और तभी एक अन्य छोटे प्राणी ने जो सफ़ेद छोटा कफ़्तान पहने हुए था, मेरे दायें-बायें चिमटियां मारनी शुरू कीं। और उनमें जो सबसे छोटा था तथा लाल कफ़्तान पहने था, एक शहतीर पर इधर-उधर नाचने और चिल्लाने लगा:

'कू-कू-कू
कुकड़ू-कड़ू!
मुझ को रोको, मुझ को पकड़ो!
वरना कुछ कर डालूंगा।

पांच गिनोगे जब तक तुम सब,
इससे छुट्टी पा लूंगा।'

और तहख़ाने में न जाने कौन शोर मचाने लगा:

'खुर्र-खुर्र-खुर्र
खुर्र-खुर्र-खुर्र!
मेरे चाकू की तेज़ तेज़ धार है।
यह कुल्हाड़ा इधर तैयार है।
खाल लूंगा उतार, खाल लूंगा उतार,
चाहे कैसी भी पतली हो लूंगा उतार।'"

उस दिन के बाद भेड़िया और रीछ कभी उस झोंपड़ी के पास नहीं फटके।

और बैल, मेढ़ा, हंस, मुर्ग़ और सूअर आज तक वहीं रह रहे हैं और ख़ूब मज़े कर रहे हैं।

चालाक किसान

एक बार एक बुढ़िया थी जिसके दो बेटे थे। एक बेटा मर गया, और दूसरा दूर किसी देश को चला गया। उसको गये हुए अभी तीन दिन नहीं हुए थे कि एक सिपाही बुढ़िया के पास आकर बोला :

"मुझे रात भर यहीं रहने दो, दादी!"

"अन्दर आ जाओ, भाई। तुम कहां से आ रहे हो?"

"मैं तो दूसरी दुनिया का रहने वाला हूं।"

"सचमुच! मेरे लड़के को मरे कुछ दिन हुए हैं। उसकी तुम से वहां भेंट तो नहीं हुई थी, क्यों?"

"हां, हां, क्यों नहीं? वह और मैं तो एक ही कमरे में रहते थे।"

"सचमुच!"

"अब तो दादी, वह दूसरी दुनिया में सारस पालता है।"

"बेचारा लड़का, यह तो बहुत कठिन काम होगा?"

"और नहीं तो क्या? आप तो जानती हैं, दादी, कि सारसों की कैसी आदत होती है: हमेशा कांटेदार झाड़ियों की तरफ़ ही भागते हैं।"

"और उसके कपड़े और जूते भी तो सारे फट गये होंगे?"

"अरे, दादी, उसके चिथड़े देखोगी तो हैरान रह जाओगी।"

"भाई, मेरे पास कोई चालीस गज़ कपड़ा है, और क़रीब दस रूबल के पैसे हैं। यह सब तुम मेरे बेटे के लिए ले जाओ!"

"ख़ुशी से ले जाऊंगा, दादी।"

कुछ दिन बाद बुढ़िया का बेटा सफ़र से लौट आया।

"नमस्ते, अम्मां।"

"नमस्ते, बेटा। तुम नहीं थे तो दूसरी दुनिया से एक आदमी यहां आया था। उसने मुझे तुम्हारे स्वर्गीय भाई का पूरा हाल बताया। दूसरी दुनिया में वह तुम्हारे भाई के साथ एक ही कमरे में रहता था। मैंने थोड़ा-सा कपड़ा और दस रूबल उसके साथ तुम्हारे भाई के लिए भेज दिये हैं।"

"अच्छा, अगर यह बात है तो, अम्मां, फिर नमस्ते!" उसके बेटे ने कहा। "मैं चला, देखूंगा कि इस लम्बी-चौड़ी दुनिया में कोई तुमसे भी बड़ा मूर्ख है या नहीं। कोई मिल जायेगा तो लौट आऊंगा, वरना वहीं रह जाऊंगा।"

वह मुड़ा और चला गया।

चलते चलते वह एक गांव में पहुंचा और ज़मींदार के खलियान के पास रुक गया। वहां एक सुअरी अपने बच्चों के साथ घूम रही थी। किसान सुअरी के सामने घुटने टेक कर बैठ गया और ज़मीन से माथा छू कर सुअरी को नमस्कार करने लगा। ज़मींदारिन ने अपनी खिड़की से यह देखा तो अपनी नौकरानी से बोली:

"जाओ, ज़रा उस किसान से पूछो कि ज़मीन पर माथा क्यों टेक रहा है।"

नौकरानी बाहर आकर बोली:

"ओ, किसान, यहां घुटनों के बल क्यों बैठे हो, और हमारी सुअरी के सामने माथा क्यों टेक रहे हो?"

"भलीमानस, जाकर अपनी मालकिन से कह दे कि उनकी सुअरी है चितकबरी और इसलिए वह है मेरी घरवाली की बहिन। मैं उसे अपने लड़के की शादी में बुलाने के लिए आया हूं। शादी कल होनी है। ज़रा अपनी मालकिन से पूछ कर आ कि क्या वह अपनी सुअरी को मेरे यहां

जाने देंगी? उसे वहां व्याह का सारा काम-काज संभालना होगा और उसकी वच्चियों को दुलहिन की सहेलियां वनना पड़ेगा।"

ज़मींदारिन ने यह सव सुना तो वह अपनी नौकरानी से वोली:

"कैसा वेवकूफ़ आदमी है यह, कि सुअरी और उसके बच्चों को शादी में वुलाने आया है! अच्छा, लोगों को हंसने दो उस पर। सुअरी को मेरा रोएंदार कोट पहना दो और गाड़ी में घोड़ों की जोड़ी जुड़वा दो। ये सव ख़ूव ठाठ के साथ गाड़ी में वैठ कर शादी के लिए जायेंगे।"

सो गाड़ी में घोड़े जोत दिये गये। उस पर सुअरी और बच्चों को विठा कर किसान गाड़ी में चढ़ वैठा। वह गाड़ी पर वैठ कर घर की तरफ़ रवाना हो गया।

जव ज़मींदार घर लौटा (वह शिकार खेलने गया हुआ था) तो उसकी वीवी उसको मिली। मारे हंसी के ज़मींदारिन का वुरा हाल था। वह वोली:

"ओ, हो! कैसे मज़े की वात तुम नहीं देख पाये! यहां एक किसान आया था और हमारी सुअरी के सामने वैठा माथा टेक रहा था। वोला: 'आपकी सुअरी है चितकवरी और इसलिए वह है मेरी घरवाली की वहिन।' और इसलिए, उसने हम से कहा, कि सुअरी को उसके लड़के की शादी में जाने की इजाज़त दे दी जाय जिससे कि वह व्याह का सारा

काम-काज संभाल सके और सुअरी की बच्चियां दुलहिन की सहेलियां बन सकें।"

"मैं जानता हूं, तुमने क्या किया होगा," ज़मींदार बोला। "तुमने बच्चों सहित सुअरी उसे दे दी, है न?"

"हां, मैंने दे दी। मैंने सुअरी को अपना रोएंदार कोट पहनाया और इसके अलावा घोड़ों की जोड़ी के साथ एक गाड़ी भी किसान को दे दी।"

"वह किसान कहां का रहने वाला था?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम।"

"तो इसका मतलब यह है कि वह किसान नहीं बल्कि तुम मूर्ख हो।"

ज़मींदार अपनी बीवी से बहुत नाराज़ था कि उसने अपने को इस तरह बेवकूफ़ बन जाने दिया। वह फ़ौरन घर से बाहर निकला, कूद कर घोड़े पर चढ़ गया और किसान का पीछा करने के लिए चल पड़ा। किसान ने अपने पीछे घोड़े की टाप सुनी तो उसने घोड़ा-गाड़ी को एक घने जंगल में छिपा दिया और अपनी टोपी ज़मीन पर रख कर रास्ते के किनारे बैठ गया।

"अरे, ओ दाढ़ीवाले," ज़मींदार ने चिल्ला कर उससे कहा। "क्या इधर कहीं पर तुमने घोड़ा-गाड़ी के साथ एक किसान को देखा है जिसकी गाड़ी में एक सुअरी और उसके बच्चे बैठे हैं?"

"हां, मालिक मैंने देखा है। कई घण्टे हुए वह इधर से गुज़रा था।"

"वह किस तरफ़ को जा रहा था? मुझे उसे पकड़ना है।"

"उसे पकड़ना तो काफ़ी मुश्किल काम है। अब तो वह बहुत दूर निकल गया होगा। और हो सकता है, आप रास्ता भूल जायें। इस इलाक़े को आप अच्छी तरह जानते तो हैं न?"

"सुनो, भले आदमी, तुम जाओ और उस किसान को पकड़ कर ले आओ।"

"नहीं, मालिक, यह तो मैं नहीं कर सकता। मेरी टोपी के नीचे एक बाज़ बैठा हुआ है।"

"तो क्या हुआ! तुम्हारे पीछे मैं तुम्हारे बाज़ की रखवाली करूंगा।"

"मगर इसका ख़्याल रखियेगा कि वह टोपी के नीचे से निकल न जाये। बहुत क़ीमती बाज़ है। मुझसे खो गया तो मेरा मालिक मेरा जीना दूभर कर देगा।"

"क्या क़ीमत है इस बाज़ की?"

"पूरे तीन सौ रूबल।"

"अच्छा तो घबराओ नहीं। मुझसे बाज़ खो गया तो मैं तुम्हें उसके दाम दे दूंगा!"

"कोरी बातों से रोटी नहीं चुपड़ी जाती, मालिक!"

"तुम मेरा यक़ीन नहीं करते! अच्छा, यह लो तीन सौ रूबल। अब तो हो गया तुमको भरोसा?"

किसान रुपये लेकर ज़मींदार के घोड़े पर सवार हो गया और यह जा और वह जा। देखते देखते वह घने जंगलों में ग़ायब हो गया। इधर ज़मींदार खाली टोपी की रखवाली करने लगा। इन्तज़ार करते करते उसे घण्टों बीत गये। सूरज छिपने का वक़्त हो गया; लेकिन किसान का अभी कहीं पता न था।

"देखूं, इस टोपी के नीचे कोई बाज़ है भी या नहीं। अगर है तो वह ज़रूर लौटेगा; अगर नहीं है तो फिर इन्तज़ार करना बेकार है।"

उसने टोपी उठा कर देखा; वहां बाज़-वाज़ कुछ न था।

"बदमाश, बेईमान! मालूम पड़ता है, यह वही किसान था जिसने मेरी बीवी को धोखा दिया था।"

खिन्न हो कर उसने ज़मीन पर थूका और फिर पैदल ही लड़खड़ाता-सा अपने घर के लिए रवाना हो गया। मगर उसके घर पहुंचने के घण्टों पहले ही किसान अपने घर पहुंच गया था।

"अच्छा मां," उसने बुढ़िया से कहा, "हम लोग साथ-साथ ही रहेंगे। दुनिया में तू ही सबसे ज़्यादा बेवकूफ़ नहीं है। देख, मैं कुछ लोगों से तीन घोड़े, एक गाड़ी, तीन सौ रूबल, और मय बच्चों के एक सुअरी ले आया हूं... और सब मुफ़्त में!"

सात बरस की बिटिया

दो भाई सफ़र को निकले। उनमें से एक ग़रीब था, और दूसरा अमीर। दोनों के पास एक-एक सवारी थी। ग़रीब भाई एक घोड़ी पर सवार था, और अमीर भाई एक घोड़े पर। चलते चलते रात हो गयी तो वे एक जगह आराम करने को रुक गये।

रात को ग़रीब भाई की घोड़ी ने बच्चा दिया। बच्चा लुढ़क कर अमीर भाई की गाड़ी के नीचे आ गया।

सो सुबह को अमीर ने अपने ग़रीब भाई को जगा कर कहा :

"उठ, भैया, देख, रात को मेरी गाड़ी ने एक बच्चा जना है।"

ग़रीब भाई ने उठ कर कहा :

"गाड़ी कैसे बच्चा जन सकती है? यह तो मेरी घोड़ी ने जना है।

अमीर भाई बोला :

"घोड़ी ने जना होता तो बच्चा उसके पास पड़ा होता।"

सो दोनों भाइयों में झगड़ा हो गया और वे अदालत की शरण में गये। वहां पैसे वाले भाई ने हाकिम को रिश्वत दे कर अपनी तरफ़ मिला लिया। ग़रीब भाई के पास हाकिम को रिश्वत देने के लिए सचाई को छोड़ कर और कुछ न था।

आख़िर में, मामला ख़ुद ज़ार महाराज के सामने पहुंचा।

ज़ार ने दोनों भाइयों को अपने दरबार में बुलवा कर चार पहेलियां उनको बूझने के लिए दीं :

"दुनिया में सबसे ताक़तवर और सबसे तेज़ चलने वाली कौनसी चीज़ है, सबसे मोटी चीज़ कौनसी है, सबसे कोमल कौन है, और सबसे प्यारी चीज़ क्या है?"

और ज़ार ने उन्हें सोचने के लिए तीन दिन दे दिए।

"चौथे रोज़ आ कर मुझे अपने जवाब सुनाना," ज़ार ने कहा।

पैसे वाला भाई कुछ देर तक सोचता रहा। तभी उसे अपनी बुढ़िया दोस्त की याद आयी और वह उससे सलाह लेने के लिए चला गया।

वह अपनी बुढ़िया दोस्त के घर पहुंचा तो उसने बड़ी आवभगत के साथ उसे बैठाया और फिर पूछा :

"इतने उदास क्यों दिखाई देते हो, दोस्त?"

"क्या बताऊं, ज़ार ने मुझे चार पहेलियां बूझने को दी हैं और केवल तीन दिन का समय दिया है।"

"तो मुझे बताओ, कौनसी पहेलियां हैं?"

"अच्छा, तो सुनो! पहली पहेली यह है–दुनिया में सबसे ताक़तवर और सबसे तेज़ चलने वाली चीज़ कौनसी है?"

"अरे, यह भी कोई पहेली है! मेरे पति की भूरी घोड़ी–उससे तेज़ और कौन चल सकता है? ज़रा हण्टर से छू भर दो, वह खरगोश से आगे निकल जायेगी।"

"दूसरी पहेली सुनो–दुनिया में सबसे मोटी चीज़ कौनसी है?"

"अरे, वह सूअर का बच्चा जिसे हम दो साल से पाल रहे हैं। वह अभी से इतना मोटा हो गया है कि अपने पैरों के बल खड़ा नहीं हो सकता।"

"तो तीसरी पहेली सुनो–दुनिया में सबसे कोमल चीज़ क्या है?"

"परों का बिछौना। ज़ाहिर है, उससे अधिक कोमल और किस चीज़ की कल्पना की जा सकती है?"

"अच्छा, तो अब यह आखिरी पहेली भी सुन लो – सारी दुनिया में सबसे प्यारी कौनसी चीज़ है?"

"मेरा पोता, इवानुश्का। वही है सबसे प्यारा।"

"भगवान तुम्हारा भला करे! मैं आजीवन तुम्हारा आभारी रहूंगा – तुमने मुझे मार्ग दिखाया है।"

उधर ग़रीब भाई फूट-फूट कर रोता हुआ अपने घर पहुंचा। दरवाज़े पर ही उसकी सात साल की बिटिया उसे मिली। उसका परिवार बस यही एक लड़की थी। सात बरस की बिटिया बोली:

"पिता जी, आप रो क्यों रहे हैं और इतनी लम्बी-लम्बी आहें क्यों भर रहे हैं?"

"रोऊं नहीं और लम्बी आहें न भरूं तो और क्या करूं, बेटी! ज़ार ने मुझे चार पहेलियां बूझने को दी हैं, और मैं अपनी पूरी ज़िन्दगी भर उनको न बूझ पाऊंगा।"

"मुझे बताओ, कैसी पहेलियां हैं?"

"तो सुनो, बेटी! दुनिया में सबसे ताक़तवर और सबसे तेज़ चलने वाली चीज़ कौनसी है, सबसे मोटी चीज़ कौनसी है, सबसे कोमल क्या है, और सबसे प्यारी कौनसी चीज़ है?"

"पिता जी आप ज़ार के पास जाइये और उससे कहिये कि सब चीज़ों से ज़्यादा ताक़तवर और तेज़ हवा है; सबसे मोटी चीज़ धरती है, क्योंकि दुनिया की तमाम जानदार चीज़ों का वही पालन-पोषण करती है; सबसे कोमल अपना हाथ है;

क्योंकि आदमी नरम से नरम विस्तर पर लेट जाये, फिर भी वह अपने सिर के नीचे अपना हाथ ही रखता है; और दुनिया में सबसे प्यारी चीज़ नींद है।"

फिर दोनों भाई, अमीर भी और ग़रीब भी, ज़ार के सामने हाज़िर हुए। ज़ार ने उनके जवाब सुने और तब ग़रीब भाई से कहा:

"तुमने पहेलियां ख़ुद बूझी थीं, या किसी से मदद ली थी?"

"जहांपनाह, मेरी एक बिटिया है सात बरस की। उसी ने मुझे पहेलियों के जवाब बताये थे।"

"अगर तुम्हारी बेटी इतनी बुद्धिमती है तो लो, रेशम का यह धागा उसके पास ले जाओ और उससे कहो कि कल सुबह तक इस धागे से मेरे लिए एक कामदार तौलिया बुन दे।"

ग़रीब भाई ने रेशम का वह ज़रा-सा धागा ले लिया और जब वह घर पहुंचा तो फिर उसके चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी और वह चिन्ता और शोक के सागर में डूबा हुआ था।

"हमारा तो भाग्य ही फूट गया है, बेटी," उसने कहा। "ज़ार ने तुम्हारे लिए हुक्म दिया है कि रेशम के इस ज़रा-से धागे से उसके लिए एक तौलिया बुन कर दो।"

"पिता जी, आप चिन्ता न कीजिये," सात बरस की बिटिया ने जवाब दिया।

और उसने झाड़ू से एक सींक निकाल कर अपने बाप को दी और बोली:

"इस सींक को ज़ार के पास ले जाइये, और उससे कहिये कि पहले कोई ऐसा कारीगर खोज कर निकाले जो इस सींक से करघा बना दे। मैं उस करघे पर ही ज़ार के लिए तौलिया बुनूंगी।"

सो उसका बाप ज़ार के पास गया और उसने ज़ार को बताया कि उसकी लड़की क्या चाहती है। ज़ार ने उसे डेढ़ सौ अण्डे दिये और कहा:

"ये अण्डे अपनी बेटी को देना और उससे कहना कि कल सुबह तक इन डेढ़ सौ अण्डों से चूज़े तैयार कर दे।"

ग़रीब आदमी घर लौटा तो पहले रोज़ से भी ज़्यादा दुखी और निराश मालूम होता था।

"अब क्या होगा, बेटी? एक मुसीबत जाती है तो दूसरी झट से आ कर खड़ी हो जाती है।" और उसने अपनी लड़की को सारा हाल सुना दिया।

"दुखी न होइये, पिता जी," सात बरस की बिटिया ने कहा।

और उसने सारे अण्डे पका कर दोनों वक़्त के खाने के लिए रख दिये। और इसके बाद उसने फिर अपने बाप को ज़ार के पास भेज दिया। वह बोली:

"ज़ार से कहना कि मुर्ग़ियों के बच्चों के लिए एक ही

दिन में उगा कर तैयार किया गया दाना चाहिए। सो खेत जोत कर उसमें दाना बोना होगा, उसे काट कर गाहना होगा और यह सारा काम एक दिन के अन्दर पूरा हो जाना चाहिए, वरना बच्चे उसे छुएंगे तक नहीं।"

ज़ार ने ग़रीब भाई की बात सुन कर उससे कहा:

"अगर तुम्हारी लड़की इतनी बुद्धिमती है तो उससे कहना कि कल सुबह को वह ख़ुद यहां आये ... मगर इसका ख़्याल रखे कि वह न तो नंगी हो और न कपड़े पहने हो, न तो पैदल हो और न ही घोड़े पर सवार हो, और न तो कोई भेंट लेकर आये और न ही बिना भेंट के आये।"

ग़रीब आदमी ने सोचा: "बस, अब की बार सब ख़त्म हो जायेगा! यह काम तो मेरी बेटी भी नहीं कर पायेगी।"

लेकिन उसकी सात बरस की बिटिया ने कहा:

"दुखी न होइये, पिता जी। ज़रा शिकारियों के पास जा कर उनसे मेरे लिए एक ज़िन्दा ख़रगोश और एक ज़िन्दा तीतर ख़रीद लाइये।"

सो उसका बाप गया और एक ख़रगोश और एक तीतर ख़रीद लाया।

अगले दिन सुबह को तड़के ही सात बरस की लड़की ने अपने सारे कपड़े उतार दिये और मछली पकड़ने का जाल ओढ़ लिया, और तीतर हाथ में लेकर और ख़रगोश की पीठ पर सवार हो कर ज़ार के महल की ओर चल दी।

ज़ार उसे महल के फाटक पर मिला। लड़की ने झुक कर उसे सलाम किया और फिर वह बोली :

"ज़ार, यह आपके लिए भेंट लायी हूं।" और यह कह कर उसने तीतर आगे को बढ़ाया। मगर ज़ार उसे लेना ही चाहता था कि वह फुर से उड़ गया।

"बहुत ठीक," ज़ार ने कहा। "मैंने जैसा हुक्म दिया था, तुमने हू-ब-हू वैसा ही कर दिखाया। अब मुझे यह बताओ कि तुम्हारा बाप तो बहुत ग़रीब है, फिर तुम लोग अपना पेट कैसे भरते हो?"

"मेरा बाप सूखी ज़मीन पर मछलियां पकड़ता है; वह पानी में जाल नहीं लगाता। मैं अपने पल्ले में भर कर मछलियां घर ले आती हूं और फिर उनका शोरबा बनाती हूं।"

"मूर्ख लड़की, सूखी ज़मीन पर मछलियां किसने देखी हैं? वे तो पानी में रहती हैं। नहीं क्या?"

"और आप बड़े बुद्धिमान हैं! आपने क्या कभी गाड़ी को घोड़े का बच्चा जनते देखा है? गाड़ी नहीं, घोड़ी बच्चा जनती है।"

उसके बाद ज़ार ने घोड़ी का बच्चा ग़रीब भाई को दिलवा दिया।
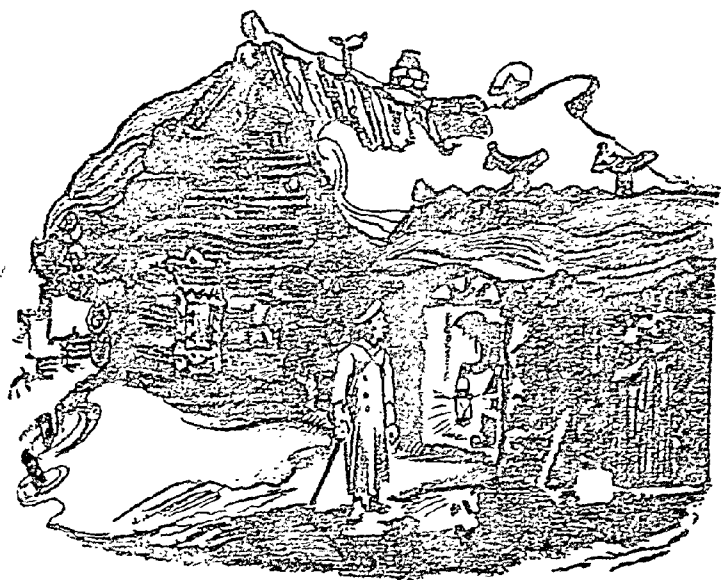
कुल्हाड़ी का दलिया

एक बूढ़ा सिपाही छुट्टी पर घर जा रहा था। चलते चलते वह थक गया और उसे भूख लगी। रास्ते में एक गांव पड़ा तो उसने पहले ही झोंपड़े के दरवाज़े को खटखटा कर पूछा:

"क्या यात्री अन्दर आकर थोड़ी देर आराम कर सकता है?"

एक बुढ़िया ने दरवाज़ा खोला।

"हां, आ जाओ, सिपाही भाई," उसने कहा।

" कुछ खाने को दोगी मुझे, भलीमानस?"

बुढ़िया के पास हर चीज़ बहुतायत से थी, लेकिन वह बहुत कंजूस थी और इसलिए उसने बहाना बना दिया कि वह बहुत ग़रीब है।

"अरे, भैया, मैंने तो ख़ुद कल से कुछ नहीं खाया है।"

"अच्छा, अगर तुम्हारे पास कुछ नहीं है, तो न सही, तब क्या किया जा सकता है?" सिपाही ने कहा।

तभी उसे बेंच के नीचे एक बिना मूठ की कुल्हाड़ी पड़ी हुई दिखाई दी।

"और कुछ नहीं है तो चलो, इस कुल्हाड़ी का ही दलिया बन जायेगा," सिपाही ने कहा।

बुढ़िया उसका मुंह ताकती रह गयी।

"कुल्हाड़ी का दलिया?"

"क्यों नहीं? ज़रा मुझे एक बर्तन तो दो।"

सो बुढ़िया एक बर्तन ले आयी। सिपाही ने कुल्हाड़ी को ख़ूब धो-धो कर बर्तन में रखा और कुछ पानी डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दिया।

अचम्भे से बुढ़िया की आंखें मानों निकली पड़ रही थीं।

सिपाही एक चमचा ले कर बर्तन में चलाने लगा। फिर उसने थोड़ा-सा पानी चमचे में निकाल कर चखा।

"बहुत जल्दी तैयार हो जायेगा," सिपाही ने कहा। "मगर क्या करूं, मेरे पास नमक तो है ही नहीं।"

"मेरे पास है थोड़ा-सा," बुढ़िया बोली। "लो, यह डाल दो!"

सिपाही ने नमक डाल कर उसे फिर चखा।

"थोड़ा-सा अधकुटा गेहूं और होता तो बस, मज़ा आ जाता।"

बुढ़िया कुठियार में से दलिये से भरी एक थैली निकाल लायी।

"लो, जितनी ज़रूरत हो डाल दो!"

सिपाही ने दलिया बर्तन में डाल दिया और चलाता रहा। अन्त में, उसने उसे फिर चखा।

बुढ़िया टकटकी बांधे उसे देख रही थी।

"अहा, बड़ा बढ़िया दलिया तैयार हुआ है," सिपाही बोला। "बस, ज़रा-सा मक्खन और होता तो फिर क्या कहने थे।"

बुढ़िया थोड़ा-सा मक्खन भी ले आयी।

और दलिये में मक्खन भी डाल दिया गया।

"अब एक चमचा निकाल लाओ, भलीमानस।"

और दोनों ने दलिया खाना शुरू कर दिया। वे खाते जाते थे और तारीफ़ करते जाते थे।

"भाई, वाह!" बुढ़िया ने आश्चर्य के साथ कहा। "कुल्हाड़ी का दलिया इतना मज़ेदार बनता है, यह तो मैंने कभी न सोचा था!"

और सिपाही मन ही मन हंसता हुआ दलिया खा रहा था।

सिपाही और मौत

एक सिपाही को पच्चीस बरस तक फ़ौज में काम करने के बाद नौकरी से अलग कर दिया गया।

"तुम्हारी नौकरी की मियाद पूरी हो गयी है। अब तुम आज़ाद हो। जहां चाहो जा सकते हो।"

सो सिपाही बेचारा चल दिया। वह सोचता था: "मैंने पच्चीस बरस तक ज़ार की सेवा की और इस के लिए मुझे पच्चीस गांठें शलजम की भी नहीं मिलीं। बदले में मुझे क्या

मिला? बस, रास्ते के लिए तीन सुखारी मिली हैं। अब मैं क्या करूं? कहां जाऊं? सिपाही के लिए सिर टेकने को भी कौनसी जगह है? ख़ैर, अब घर चलूं, देखूं मेरे मां-बाप अभी ज़िन्दा हैं या मर गये। मर गये होंगे तो कम से कम थोड़ी देर उनकी क़ब्र के पास बैठ आऊंगा।"

सो सिपाही घर की तरफ़ रवाना हो गया। वह चलता गया, चलता गया। दो सुखारी उसने खा लीं, और उसके पास बस एक ही रह गयी, हालांकि अभी उसे बहुत दूर जाना था।

रास्ते में उसे एक भिखारी मिला। वह बोला :

"सिपाही दादा, इस कंगले और बूढ़े को भी कुछ देते जाओ।"

सिपाही ने अपनी आख़िरी सुखारी निकाल कर बूढ़े भिखारी को दे दी। उसने सोचा : "मैं तो ठहरा सिपाही – जैसे तैसे वक़्त काट ही लूंगा। मगर यह बेचारा कंगला बुड्ढा क्या करेगा?"

सो उसने अपने पाइप में तम्बाकू भरा, एक दम लगाया, और आगे चल दिया। वह चलता जाता था और दम लगाता जाता था।

वह चलता गया, चलता गया। यहां तक कि सड़क के किनारे एक झील रास्ते में मिली। उसमें कुछ जंगली बत्तखें किनारे के बिल्कुल नज़दीक तैर रही थीं।

सिपाही धीरे-धीरे चल कर उनके पास पहुंचा और फिर मौक़ा देख कर उसने तीन बत्तख़ों को मार डाला।

"चलो, खाने का तो कुछ इन्तज़ाम हो गया।"

और उसने फिर अपनी राह पकड़ ली। थोड़ी ही दूर चलने के बाद वह एक शहर में पहुंच गया। उसने एक भटियार-ख़ाना तलाश किया, और तीनों बत्तख़ें भटियारे को देकर कहा:

"ये तीन बत्तख़ें हैं। एक मेरे लिए भून दो। दूसरी तुम्हारी मेहनत के बदले में है। तीसरी के बदले में मुझे खाने के साथ थोड़ी-सी शराब दे देना।"

जब तक सिपाही ने अपना झोला वग़ैरा खोला और थोड़ा आराम किया तब तक खाना तैयार हो गया।

भुनी हुई बत्तख़ के साथ एक बड़ी बोतल शराब की भी थी। सिपाही ने खाना शुरू किया ... वह पहले एक घूंट शराब की भरता था और फिर एक टुकड़ा भुनी हुई बत्तख़ का मुंह में डाल लेता था। खाना बुरा नहीं रहा!

उसने ख़ूब धीरे-धीरे, मज़ा ले-लेकर खाया और फिर भटियारे से पूछा:

"गली के उस पार वह नया मकान किसका है?"

"शहर के सबसे धनी सौदागर ने यह मकान अपने रहने के लिए बनाया था। मगर वह लाख चाहते हुए भी उसमें रह नहीं सकता," भटियारे ने जवाब दिया।

"यह क्यों?"

"मकान में भूतों का वासा है। बस, समझो कि वह भूतों और प्रेतों से भरा हुआ है। रात को वे चीखते चिल्लाते हैं, नाचते हैं, और भयानक शोर मचाते हैं। अंधेरा हो जाने के बाद मकान के पास जाने में भी लोगों को डर लगता है।"

सिपाही ने भटियारे से पूछा कि उस सौदागर से कहां भेंट हो सकती है।

"मैं उससे मिल कर दो बातें करना चाहता हूं। हो सकता है, उसकी कुछ मदद कर सकूं।"

खाना खाने के बाद वह थोड़ी देर सोने के लिए लेट गया, और जब सांझ हो गयी तो उठ कर बाहर चला गया। सौदागर से मिला। उसने पूछा:

"भाई, क्या चाहते हो?"

"मैं राहगीर हूं। आपके नये मकान में रात बिताने की इजाज़त चाहता हूं। मैंने सुना है कि वह एकदम खाली पड़ा है।"

"तुम पागल तो नहीं हो गये हो?" सौदागर ने कहा। "या ज़िन्दगी से ऊब गये हो? जाओ, कोई और मकान देखो। शहर में बहुत से मकान हैं। मेरे नये मकान में तो, जब से मैंने उसे बनवाया है, तभी से भूतों का वासा है, और कोई उन्हें वहां से नहीं निकाल पाता।"

"हो सकता है, मैं ही उन्हें निकाल दूं। कौन जानता है? मुमकिन है, ये भूत-प्रेत एक बूढ़े सिपाही का कहना मान जायें।"

"दूसरे भी बहुत-से बहादुर लोग इसकी कोशिश करके

देख चुके हैं, मगर सब बेकार! कुछ नहीं हो सकता। पिछले साल एक मुसाफ़िर आया था। तुम्हारी तरह उसने भी भूतों को मकान से भगाने की कोशिश की थी। उसने तो यहां तक हिम्मत की थी कि एक रात उसी मकान में रह गया था। लेकिन सुबह को उसकी सिर्फ़ हड्डियां मिलीं। भूतों ने उसकी जान ले ली।"

"रूसी सिपाही को न तो आग जला सकती है और न ही पानी गला सकता है। मैंने पच्चीस बरस तक फ़ौज में नौकरी की है और तरह-तरह की लड़ाइयों और चढ़ाइयों में हिस्सा लिया है और मैं अभी तक अपना क़िस्सा सुनाने के लिए ज़िन्दा हूं। इसलिए मैं कहता हूं, इन भूतों से मैं निपट लूंगा।"

"अच्छा भाई, तुम जानो," सौदागर ने कहा। "तुम नहीं डरते तो जाओ। अगर तुमने भूतों को मकान से भगा दिया तो मैं तुम्हें ख़ूब इनाम दूंगा।"

"इस वक़्त तो तुम मुझे कुछ मोमबत्तियां, थोड़े-से भुने हुए अखरोट, और एक भुना हुआ बड़ा-सा शलजम दिलवा दो।"

"जाओ, दूकान में से जो चाहो ले लो।"

सिपाही दूकान के अन्दर गया। वहां से उसने एक दर्जन मोमबत्तियां और डेढ़ सेर भुने हुए अख़रोट उठा लिए। फिर वह सौदागर के रसोईघर में गया और वहां उसे जो सबसे बड़ा भुना हुआ शलजम मिला उसे लेकर नये मकान की तरफ़ रवाना हो गया।

रात को बारह का घंटा बजते ही यकायक हड़बड़ी शुरू हो गयी। दरवाज़े फटाफट बन्द होने लगे। फ़र्श के तख़्ते चरमराने लगे। और लगा जैसे बहुत-से पागल एक साथ नाच रहे हों। उनकी चीख़-पुकार और चिल्लाहट ऐसी थी कि मुर्दे भी सुनते तो क़ब्रों से बाहर आ जाते। पूरे मकान में मानों भूचाल आ गया था।

लेकिन सिपाही इस तरह शान्त बैठा हुआ अख़रोट खा रहा था और अपने पाइप पर दम लगा रहा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं है।

यकायक दरवाज़ा खुला और एक भूतड़े ने कमरे के अन्दर सिर डाल कर सिपाही को देखा और देखते ही वह चिल्लाया :

"यहां तो एक आदमी बैठा है! आ जाओ, दोस्तो, आज तो हमारी दावत का सामान तैयार है!"

और सारे भूत-प्रेत धम-धम करते उसी कमरे में घुस आये जिसमें सिपाही बैठा था। वे दरवाज़े के पास भीड़ लगाये खड़े थे, सिपाही को देख रहे थे और एक दूसरे को कोहनी मार-मार कर कह रहे थे :

"इसे हम चीर डालेंगे! कच्चा खा जायेंगे!"

"बहुत बढ़-बढ़ कर न बोलो!" सिपाही ने कहा। "मैं तुम जैसे बहुत-से बदमाशों से निपट चुका हूं और एक-एक के मिज़ाज दुरुस्त कर चुका हूं। ज़रा संभल कर खाना मुझे! कहीं ऐसा न हो कि गले में अटक जाऊं।"

इस पर सबसे बड़ा भूत – जो शायद भूतों का सरदार था – दूसरों को धक्का देकर रास्ते से हटाता हुआ आगे बढ़ा और बोला :

"तो आओ फिर, हमारी-तुम्हारी ताक़त का इम्तहान हो जाये।"

"बहुत अच्छा, आ जाओ!" सिपाही ने कहा। "बोलो, क्या तुम लोगों में से कोई भी पत्थर को मुट्ठी में दबा कर उसका सत निकाल सकता है?"

भूतों के सरदार ने हुक्म दिया कि गली से एक पत्थर उखाड़ कर ले आओ। एक भूतड़ा फ़ौरन भाग कर गया और एक पत्थर ले आया। उसने सिपाही को पत्थर देकर कहा :

"लो, देखें, कैसे दबाते हो!"

"पहले तुममें से कोई दबाये। मेरी बारी बाद में सही।"

भूतों के सरदार ने लपक कर पत्थर ले लिया और फिर उसे इतने ज़ोर से दबाया कि उसका चूरा हो गया।

"देखा तुमने!"

सिपाही ने अपने झोले में से वह शलजम निकाला।

"देखो, मेरा पत्थर तुम्हारे पत्थर से बड़ा है।"

और उसने शलजम को दबा कर उसका रस निकाल दिया।

"देखा तुमने!"

सब भूतड़े मानों झोले पर टूट पड़े और जल्दी-जल्दी एक दूसरे को धक्का देते हुए झोले में घुस गये। एक मिनट के अन्दर पूरा मकान खाली हो गया। अब सारे भूत झोले में बन्द थे।

सिपाही ने झोले का मुंह बन्द करके उसके फ़ीते, क्रास का निशान बनाते हुए कस कर बांध दिये और ऊपर से बक्सुआ लगा दिया।

"अब मैं चैन से सो सकता हूं," उसने कहा।

वह सिपाहियों के ढंग से अपने बड़े कोट को आधा बिछा कर और आधा ओढ़ कर लेट गया और लेटते ही उसे नींद आ गयी।

अगले रोज़ सौदागर ने अपनी दूकान के नौकरों से कहा:

"जाओ, ज़रा देखो कि वह सिपाही ज़िन्दा है या मर गया। मर गया हो तो उसकी हड्डियां उठा लाना।"

नौकर आये तो उन्होंने देखा कि सिपाही अपने पाइप पर दम लगाता हुआ कमरों में टहल रहा है।

"नमस्ते, सिपाही भैया। हमें तो इसकी उम्मीद न थी कि तुम ज़िन्दा मिलोगे। देखो, हम तो तुम्हारी हड्डियां बटोरने के लिए यह बक्स भी ले आये थे।"

सिपाही ने हंस कर जवाब दिया:

"मुझे मारना हंसी-खेल नहीं है। लो, ज़रा इस झोले को उठा कर किसी लुहारखाने तक ले चलो। क्या लुहारखाना यहां से बहुत दूर है?"

"नहीं, बिल्कुल दूर नहीं है," दूकान के नौकरों ने जवाब दिया।

और वे लोग झोले को उठा कर लुहारखाने तक ले गये। सिपाही ने लुहारों से कहा:

"अच्छा, छोकरो, ज़रा इस झोले को अहरन पर रख कर ज़ोर से हथौड़ा तो चलाओ!"

लुहार और उसके शागिर्दों ने झोले को अहरन पर रख कर धड़ाधड़ घन और हथौड़ा चलाना शुरू कर दिया।

अब उन भूतों का क्या हाल हुआ होगा, यह आप ख़ुद सोच सकते हैं।

"हम पर दया करो, सिपाही भैया, अब छोड़ दो हमें!" वे एक आवाज़ से चिल्लाये।

लेकिन लुहार थे कि अपना घन और हथौड़ा बजाते ही जाते थे और सिपाही उनको बढ़ावा देता जाता था:

"ख़ूब पीटो, ख़ूब मरम्मत करो उनकी। आज इन्हें मालूम हो जाना चाहिए कि कैसे तंग किया जाता है लोगों को!"

"अब हम जब तक ज़िन्दा रहेंगे कभी उस मकान में पैर नहीं रखेंगे," भूत फिर चिल्लाये। "और दूसरे सब भूतों से भी कह देंगे कि इस शहर से हमेशा दूर रहें। और अगर हमारी जान बख़्श दोगे तो तुम्हें बहुत-बहुत इनाम देंगे।"

"अब अक़्ल आयी ठिकाने! लगता है, अब किसी रूसी सिपाही से टक्कर लेने की हिम्मत नहीं करोगे!"

उसने लुहारों से कहा कि घन बजाना बन्द कर दें। फिर उसने झोले के फ़ीते ढीले किये और सारे भूतों को एक-एक करके बाहर निकल जाने दिया, बस अकेला भूतों का सरदार उसमें रह गया।

"अब इसको तब छोड़ूंगा जब तुम इनाम ले आओगे।"

उसके पाइप का तम्बाकू अभी खत्म नहीं हुआ था कि एक भूतड़ा एक पुरानी झोली हाथ में लटकाये आता हुआ दिखाई दिया।

"लो यह रहा तुम्हारा इनाम," भूतड़े ने कहा।

सिपाही ने झोली हाथ में ली तो वह बहुत हल्की मालूम हुई। उसने उसे खोल कर अन्दर झांका तो मालूम हुआ कि वह बिल्कुल ख़ाली है।

"मुझे बेवक़ूफ़ बनाने की कोशिश कर रहे हो?" सिपाही भूतड़े पर चिल्लाया। "ठहरो ज़रा, तुम्हारे सरदार के सिर पर दो हथौड़े लगेंगे तो सब अक़्ल ठिकाने आ जायेगी।"

उस पर भूतों का सरदार झोले के अन्दर से चिल्लाया:

"मुझे मारो नहीं, सिपाही दादा, मुझे और मत पीटो। मेरी बात सुनो। यह झोली देखने में जैसी लगती है, असल में वैसी नहीं है। यह अद्भुत झोली है। यह हर इच्छा पूरी करनेवाली झोली है और दुनिया में ऐसी झोली दूसरी नहीं है। जो चाहो मन में इच्छा करो और फिर झोली के अन्दर देखो—तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी। या मान लो तुम कोई चिड़िया

पकड़ना चाहते हो, या कोई और चीज़ हासिल करना चाहते हो, बस, झोली को हिला कर दो शब्द कहो: 'चल अन्दर!' और वह चीज़ झोली के अन्दर पहुंच जायेगी।"

"अच्छा, अभी देखे लेते हैं कि तुम सच बोल रहे हो या झूठ," सिपाही ने कहा।

फिर अपने मन में यह इच्छा की: "मैं चाहता हूं कि मेरी झोली में शराब की तीन बड़ी बोतलें आ जायें।" उसका यह सोचना था कि झोली भारी हो गयी। उसने उसका मुंह खोला तो क्या देखता है कि सचमुच शराब की तीन बड़ी बोतलें झोली में आ गयी हैं। उसने तीनों बोतलें लुहारों को दे दीं।

"लो, थोड़ी शराब पियो, यारो!"

उसने लुहारखाने से बाहर निकल कर इधर-उधर देखा। छत पर एक गौरैया बैठी हुई थी। उसने अपनी झोली हिला कर कहा:

"चल अन्दर!"

और उसके मुंह से शब्द निकले नहीं थे कि गौरैया उड़ती हुई सीधे उसकी झोली में दाखिल हो गयी।

सिपाही लुहारखाने में लौट आया और बोला:

"तुम ने सच कहा था। मुझे धोखा नहीं दिया। ऐसी झोली एक बूढ़े सिपाही के काफ़ी काम आ सकती है।"

सो उसने अपने झोले को खोल कर भूतों के सरदार को भी छोड़ दिया।

"अब, भागो यहां से। मगर यह याद रखना कि अगर फिर कभी मुझे दिखाई दिये तो जो कुछ बीतेगी उसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारे सिर पर होगी।"

भूतों का सरदार और सारे भूतड़े पल भर में ग़ायब हो गये। सिपाही ने अपना झोला और वह अद्भुत झोली उठायी, लुहारों से विदा ली और सौदागर से मिलने के लिए चल पड़ा।

"अब आप अपने नये मकान में रह सकते हैं," उसने कहा। "अब आपको कोई तंग नहीं करेगा।"

सौदागर टकटकी बांधे सिपाही को देख रहा था और उसको अपनी आंखों पर यक़ीन नहीं आ रहा था।

"सचमुच, रूसी सिपाही को न तो आग जला सकती है और न ही पानी गला सकता है। मुझे बताओ तो कि तुमने भूतों को कैसे हराया और जीते-जागते बच कर कैसे निकल आये।"

सिपाही ने जो कुछ हुआ था सब सुना दिया। दूकान के नौकरों ने उसकी बात की तसदीक़ की। सौदागर ने सोचा: "मकान में रहना शुरू करने के पहले एक-दो दिन देख लेना चाहिए कि सचमुच वहां सब शान्ति हो गयी है या नहीं, और भूत-प्रेत फिर तो नहीं लौट आये।"

उस रोज़ शाम को उसने दूकान के उन नौकरों से, जो सुबह को उस सिपाही को लेने के लिए नये मकान पर गये थे, कहा कि वे सिपाही के साथ उसी मकान में जा कर रहें।

"आज रात वहीं बिताओ," उसने उनसे कहा। "कोई गड़बड़ हुई तो यह सिपाही तुम्हारी रक्षा करेगा।"

रात भर वे सब चैन से नये मकान में सोये और अगले रोज़ सुबह को भले-चंगे और बहुत खुश सौदागर के पास लौट आये।

तीसरी रात सौदागर ने भी हिम्मत करके उनके साथ बितायी। फिर खूब चैन से वक़्त गुज़रा। सब लोग शान्ति के साथ सोये। उसके बाद सौदागर ने मकान को अच्छी तरह साफ़ कराया और गृहप्रवेश की दावत का इन्तज़ाम किया। अच्छी-अच्छी चीज़ें उबाल कर, भून कर या अलावघर* में पकायी गयीं। जब मेहमान आये तो मेज़ों पर खाने की चीज़ों और शराब की बोतलों का इस तरह अम्बार लगा हुआ था कि मेज़ें टूटी जा रही थीं। जो चाहो सो खाओ, और जो मन में आये सो पियो!

सौदागर ने सिपाही को सब से ऊंचे स्थान पर बैठाया और अपने सब से प्यारे अतिथि के रूप में उसका आदर-सत्कार किया।

"अच्छी तरह खाओ, दोस्त," उसने कहा। "तुमने मेरा एक ऐसा काम किया है जिसे मैं जब तक ज़िन्दा रहूंगा याद रखूंगा।"

---

*अलावघर – रूस के देहाती घरों में ईंटों की कमरानुमा अंगीठियां होती हैं जिन की छतों पर लोग सोते हैं।

दावत ख़त्म होते होते सुबह हो गयी। थोड़ी देर सो कर सब लोग उठे तो सिपाही फिर सफ़र की तैयारी करने लगा। सौदागर ने उससे थोड़ा और ठहरने को कहा:

"ऐसी क्या जल्दी है तुम्हें? हमारे साथ रहो! कम से कम एक हफ़्ता तो और ठहरो!"

"नहीं, धन्यवाद! मुझे बहुत देर हो गयी है। अब मुझे घर पहुंचना चाहिए।"

सौदागर ने सिपाही के झोले को चांदी से भर दिया।

"यह इसलिए दे रहा हूं जिस से तुम ख़ुद अपने पैरों पर खड़े हो जाओ।"

लेकिन सिपाही ने कहा:

"मुझे तुम्हारी चांदी नहीं चाहिए। मैं अकेला आदमी हूं और मेरे हाथ-पैर और दिमाग़ अभी दुरुस्त हैं। मैं ख़ुद अपने लिए कमा सकता हूं।"

सौदागर से विदा लेकर उसने अपनी अद्भुत झोली और ख़ाली झोला कंधे पर लटकाया और वहां से चल पड़ा।

वह बहुत चला या थोड़ा, दूर तक चला या नज़दीक ही यह कहना मुश्किल है, लेकिन आख़िर वह अपने इलाक़े में पहुंच गया। एक पहाड़ी के ऊपर से उसने अपना गांव देखा और उसका दिल ख़ुशी से नाच उठा। वह इधर-उधर देखते हुए जल्दी-जल्दी चलने लगा। वह अपने मन में सोच रहा था: "यहां चारों ओर कितना सुन्दर है! मैं बहुत-से देशों

में घूम आया हूं, बहुत-से शहर और गांव देख चुका हूं, मगर दुनिया में कोई जगह इतनी सुन्दर नहीं जितना अपना घर!"

सिपाही अपने झोंपड़े पर पहुंचा। ड्योढ़ी की सीढ़ियां चढ़ कर उसने दरवाज़ा खटखटाया। एक बहुत ही बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला। सिपाही बड़े प्यार के साथ उसके गले लिपट गया। बुढ़िया ने अपने बेटे को पहचाना। खुशी के मारे वह एक साथ हंसने और रोने लगी।

"बुड्ढा तो हर घड़ी तुम्हारी ही बात किया करता था, बेटा। मगर अफ़सोस कि वह यह दिन देखने के लिए ज़िन्दा न रहा। उसे मरे अब पांच साल हो गये हैं।" कहते कहते बुढ़िया चुप हो गयी और अपने काम में लग गयी। सिपाही उसको ढाढ़स बंधाता रहा:

"अब तुम्हें किसी बात की फ़िक्र नहीं रहेगी। अब तुम्हारी ज़रूरतों का और तुम्हारे आराम का मैं ख़्याल किया करूंगा।"

उसने अपनी झोली खोली और मन में इच्छा की कि वह तरह-तरह की जायक़ेदार खाने की चीज़ों से भर जाये।

और फिर खाने की सब चीज़ों को निकाल कर उसने मेज़ पर चुन दिया और अपनी मां से कहा:

"लो जितना मन करे, खाओ पियो!"

अगले दिन उसने अपनी झोली खोली और इच्छा की कि वह चांदी से भर जाय। फिर वह काम में लग गया। उसने

एक नया घर तैयार किया, एक गाय और एक घोड़ा और घर की ज़रूरत का सारा सामान ख़रीदा। फिर उसने एक लड़की से प्रेम किया। दोनों का विवाह हो गया और सिपाही अपनी खेती की देखभाल करने लगा। उसकी बूढ़ी मां अपने पोतों को पालती थी और अपने बेटे के सौभाग्य पर ख़ुशी से फूली न समाती थी।

कोई छः या सात बरस इसी तरह बीत गये। फिर एक रोज़ सिपाही बीमार पड़ गया। तीन दिन तक वह बिस्तर पर पड़ा रहा, न कुछ खा सका, न कुछ पी सका। उसकी हालत बराबर बिगड़ती ही गयी। तीसरे दिन उसने देखा कि उसके बिस्तर के पास खड़ी मौत अपनी दरांती को तेज़ कर रही है और रह-रह कर सिपाही की तरफ़ देखती जाती है।

"चलो, सिपाही दादा," मौत ने कहा। "मैं तुम्हें लेने आयी हूं और अपने साथ ले चलूंगी।"

"जल्दी क्या है?" सिपाही ने कहा। "मुझे कोई तीस साल तो और ज़िन्दा रहने दो। अभी तो मुझे अपने बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा करना है, अपने बेटे-बेटियों का शादी-ब्याह करना है और फिर अपने पोतों को देखना है और कुछ दिन उनके साथ रहना है। उसके बाद तुम मुझे लिवा ले जा सकती हो। पर अभी तो मैं नहीं मर सकता।"

"नहीं, सिपाही दादा, अब तो मैं तुम्हें तीन घण्टे भी और ज़िन्दा नहीं छोड़ सकती।"

"अच्छा, अगर मुझे तीस साल और नहीं मिल सकते तो कम से कम तीन साल तो और ज़िन्दा रहने दो। मुझे अभी बहुत सारा काम करना है।"

"मैं तुम्हें तीन मिनट भी नहीं दे सकती," मौत ने जवाब दिया।

सिपाही ने उसकी ख़ुशामद करना बन्द कर दिया। मगर वह मरना हरगिज़ नहीं चाहता था। किसी तरह उसने अपनी अद्भुत झोली अपने तकिये के नीचे से निकाल ली और फिर उसे हिलाते हुए वह चिल्लाया:

"चल अन्दर!"

और उसके मुंह से ये शब्द निकले नहीं थे कि वह अच्छा होने लगा। उसने उस तरफ़ देखा जहां मौत खड़ी थी। पर उसका वहां अब पता न था। तब उसने अपनी झोली के अन्दर देखा और सचमुच मौत वहां बैठी थी।

सिपाही ने झोली को कस कर बन्द कर दिया और उसकी तबीयत बिल्कुल अच्छी हो गयी। यहां तक कि उसे भूख भी लग आयी।

वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया। उसने रोटी का एक टुकड़ा काटा और उसे नमक लगा कर खा गया। उसके बाद उसने क्वास का एक कटोरा पिया और उसकी तबीअत पहले जैसी चंगी हो गयी।

"हूं, तू मुझसे समझौता करना नहीं चाहती थी, नकटी

कहीं की! ख़बरदार! जो अब किसा रूसी सिपाही से टक्कर लेने की हिम्मत की!"

"अब तुम मेरे साथ क्या करनेवाले हो?" झोली के अन्दर से आवाज़ आयी।

"झोली न रहने का मुझे अफ़सोस तो होगा, मगर दूसरा चारा नहीं है," सिपाही ने जवाब दिया। "मैं तुझे कीचड़ भरे दलदल में डुबो देनेवाला हूं और वहां से तू जब तक ज़िन्दा रहेगी कभी न निकल पायेगी।"

"मुझे छोड़ दो, सिपाही दादा। मैं तुम्हें तीन बरस की ज़िन्दगी और दिये देती हूं।"

"नहीं, नहीं, अब मैं तुम्हें हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा।"

"मुझे छोड़ दो, दादा," मौत गिड़गिड़ायी। "मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें तीस बरस और ज़िन्दा रहने दूंगी।"

"अच्छा," सिपाही ने कहा, "मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकता हूं – तुम वादा करो कि अगले तीस साल तक किसी की जान नहीं लोगी।"

"ऐसा वादा मैं नहीं कर सकती," मौत ने कहा। "किसी की भी जान नहीं लूंगी तो फिर मैं ज़िन्दा कैसे रहूंगी?"

"तीस बरस तक जड़ें, पेड़ के ठूंठ और पत्थर खा कर ज़िन्दा रहना।"

मौत ने कोई जवाब नहीं दिया। सो सिपाही ने अपने कपड़े और जूते पहने और कहा:

"तुझे मेरा सुझाव मंजूर नहीं है, इसलिए अब मैं तुझे उस कीचड़ भरे दलदल में ले चलता हूं।"

और यह कह कर उसने झोली पीठ पर डाल ली।

इस पर मौत बोल पड़ी :

"अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी। अगले तीस साल मैं किसी की जान नहीं लूंगी और जड़ें, पेड़ के ठूंठ और जंगलों के पत्थर खा कर जिन्दा रहूंगी। बस तुम मुझे छोड़ दो!"

"खबरदार, जो मुझसे धोखा किया," सिपाही ने कहा।

वह मौत को गांव के बाहर ले गया और वहां पहुंच कर उसने झोली का मुंह खोल दिया।

"जा, भाग जा, कहीं ऐसा न हो कि मेरा इरादा बदल जाये!" उसने कहा।

मौत अपनी दरांती लेकर जंगलों में भाग गयी, जहां वह जड़ों, पेड़ों के ठूंठ और पत्थरों की तलाश करने लगी, ताकि उन्हें खा कर जिन्दा रह सके। अब और चारा ही क्या था!

लोग कभी इतने खुश नहीं रहे थे। न कभी कोई बीमार पड़ता था, न मरता था।

लगभग तीस बरस तक यही हालत रही।

इस बीच सिपाही के बच्चे बड़े हो गये। उसके बेटे-बेटियों का ब्याह हो गया। उसका परिवार बहुत बढ़ गया। परिवार के एक आदमी को मदद की ज़रूरत थी तो दूसरे को सलाह चाहिए थी, और तीसरे को डांट-फटकार कर ठीक करना ज़रूरी

था, और ज़िन्दगी में पैर जमाने के लिए तो हरेक को ही कुछ सहारा चाहिए था।

सो सिपाही को सदा कुछ न कुछ काम लगा रहता था और वह चौबीसों घण्टे ख़ुश रहता था। हर मामले में मानों उसकी तक़दीर खुल गयी थी और ज़िन्दगी की गाड़ी मानों दौड़ी जा रही थी। वह इतनी मेहनत करता था कि देख कर कोई यह नहीं सोच सकता था कि इस आदमी को कभी मौत का भी ख़्याल आता है।

लेकिन एक रोज़ मौत फिर आ धमकी।

"आज तीस बरस पूरे हो जायेंगे। तुम्हारी मियाद ख़त्म हो गयी है। सिपाही दादा, उठो। मैं तुम्हें लेने के लिए आ गयी हूं।"

सिपाही ने इस बार बहस नहीं की।

"मैं हूं सिपाही—हुक्म मिलते ही चल पड़ने को तैयार रहता हूं। अगर मेरी मियाद पूरी हो गयी है तो जाओ, एक ताबूत ले आओ।"

मौत बलूत की लकड़ी का एक ताबूत ले आयी जिसके गिर्द लोहे के घेरे बंधे हुए थे। उसने ढक्कन खोल कर कहा:

"चलो अन्दर, सिपाही दादा!"

सिपाही मानों गुस्से से बरस पड़ा:

"तुझे यह भी नहीं मालूम कि ये सब काम कैसे किये

जाते हैं? एक वृद्ध सिपाही ऐसी हड़बड़ी में कोई काम नहीं कर सकता। फ़ौज में जब कभी सार्जेण्ट-मेजर हमें कोई नया काम सिखाना चाहता था तो पहले खुद वह काम करके हमें दिखाता था, और तब हम उसका हुक्म होने पर वही काम करते थे। तुझे भी यही करना चाहिए। पहले मुझे खुद करके दिखा, फिर हुक्म दे।"

मौत खुद तावूत में लेट गयी।

"देखो, सिपाही दादा; तुम्हें इस तरह लेट जाना है—टांगें फैली रहनी चाहिएं और हाथ छाती पर बांध लेने चाहिएं।"

इसी का तो सिपाही इन्तज़ार कर रहा था। उसने झट से ढक्कन बन्द कर दिया और घेरे जड़ दिये।

"तू ही लेट वहां," उसने कहा। "मैं तो यहां खूब आराम से हूं।"

और वह तावूत को एक गाड़ी में लाद कर इस को लुढ़काता हुआ नदी के एक वहुत ढालू किनारे ले गया और वहां से उसने तावूत को नदी में फेंक दिया।

नदी की धार ताबूत को समुद्र में बहा ले गयी, और बरसों तक मौत समुद्र में ही डूबती-उतराती रही।

लोग फिर बड़ी ख़ुशी के साथ ज़िन्दगी बिताने लगे। वे सिपाही की तारीफ़ करते कभी न अघाते थे। और सिपाही खुद भी और बूढ़ा नहीं हुआ। उसने अपने पोते-पोतियों की शादियां कीं और अपने पड़-पोतों को बैठा कर सीख दी। सुबह

से शाम तक वह सदा घर पर और खेत पर कुछ न कुछ करता ही रहता था और लगता था कि वह किसी काम में नहीं थक सकता।

अब एक रोज़ समुद्र में बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया। लहरों ने ताबूत को उठा कर एक पहाड़ी की चोटी पर पटक दिया। ताबूत चकनाचूर हो गया। मौत रेंगती रेंगती किनारे पर पहुंची। देखने में वह ज़िन्दः से ज़्यादा मुर्दा लगती थी। वह इतनी कमज़ोर हो गयी थी कि हवा के झोंके से ही हिल-हिल जाती थी।

कुछ देर तक वह समुद्र के किनारे पर ही पड़ी रही। जब कुछ सांस में सांस आयी तो वह लड़खड़ाती हुई उस गांव में पहुंची जहां वह सिपाही रहता था। और सिपाही के अहाते में जाकर छिप गयी। वह सोच रही थी कि सिपाही बाहर निकलेगा तो वह झट से उस पर टूट पड़ेगी।

उधर सिपाही खेत बोने के वास्ते बाहर जाने के लिए तैयार हो रहा था। उसने एक ख़ाली बोरा लिया और खलिहान में से बीज निकालने के लिए चल पड़ा। वह खलिहान में घुसा ही था कि मौत जहां दुबकी हुई थी वहां से बाहर निकल आयी।

"इस बार तुम मुझसे नहीं बच सकते," उसने दांत निकाल कर कहा।

सिपाही ने देखा कि इस बार वह बुरा फंस गया है। उसने अपने मन में सोचा:

"अच्छा कोई बात नहीं, जो होना है सो तो होगा ही;

अगर इस नकटी से मैं छुटकारा नहीं पा सकता तो कम से कम उसे डरा तो सकता हूं।"

और अपने चोगे के नीचे से ख़ाली बोरा निकाल कर वह ज़ोर से चिल्लाया :

"अच्छा तो तू फिर झोली में बन्द होना चाहती है, क्यों? उस कीचड़ भरे दलदल का फिर स्वाद चखना चाहती है?"

मौत ने सिपाही के हाथ में ख़ाली बोरा देखा तो वह उसे अद्भुत झोली समझी और इतनी डर गयी कि फ़ौरन वहां से भाग खड़ी हुई।

मौत को इस वक़्त केवल यह फ़िक्र थी कि कहीं वह सिपाही को फिर न दिखाई दे जाये। "उसने मुझे देख लिया तो फिर उस कीचड़ भरे दलदल से मुझे कोई नहीं बचा सकता," वह मन ही मन सोच रही थी।

और उस दिन से मौत को जब किसी की जान लेनी होती है तो वह सदा छिप कर आती है।

सिपाही उसके बाद से हमेशा ख़ुश रहा, और लोग कहते हैं कि वह अब भी ज़िन्दा है और जीवन का आनन्द ले रहा है।

गप हांकनेवाली बीवी

किसी ज़माने में एक किसान और उसकी बीवी रहते थे। बीवी को गप हांकने का बहुत शौक़ था। वह कोई बात अपने पेट में न पचा सकती थी। ज्यों ही वह कोई बात सुनती, सारे गांव में उसका ढिंढोरा पीट आती।

एक दिन किसान जंगल में गया। उसने भेड़िये फंसाने के लिए गढ़ा खोदना शुरू किया तो वहां दबा हुआ एक ख़ज़ाना पाया।

किसान ने अपने आप से कहा: "अब मैं क्या करूं?

जैसे ही मेरी बीवी को इस ख़ज़ाने का पता चलेगा, वह सभी जगह यह खबर फैला देगी। ज़मींदार भी इसके बारे में सुनेगा और तब यह ख़ज़ाना मुझसे छिन जायेगा – मेरी पूंजी लुट जायेगी।"

उसने बहुत सोचा, बहुत विचारा और आख़िर उसे एक तरकीब सूझी। उसने ख़ज़ाने को दबाकर वहां निशान लगाया, और घर की तरफ़ चल दिया। नदी-तट पर पहुंच कर उसने अपने जाल पर नज़र डाली। उसने उसमें एक रचूका-मछली तड़पती देखी। उसने मछली बाहर निकाली और आगे चल दिया। शीघ्र ही वह अपने लगाये हुए फंदे के पास पहुंचा और उसमें एक खरगोश को फंसा पाया।

किसान ने खरगोश को फंदे से बाहर निकाल कर उसकी जगह मछली को और खरगोश को मछली के जाल में रख दिया।

अंधेरा होने के बाद वह घर लौटा।

"अच्छा तत्याना, चूल्हा जलाकर जल्दी-जल्दी बहुत-सी पूरियां बना दो।"

"किसलिए? क्या कभी किसी ने रात के समय चूल्हा जलाने की बात सुनी है? और किसलिए यह सब झंझट किया चाहते हो?"

"बहस मत करो, वही करो जो मैंने करने को कहा है। सुनो, तान्या, मैंने एक दबा हुआ ख़ज़ाना पाया

है और आज रात हमें अवश्य ही उसे घर ले आना चाहिए।"

उसकी बीवी बेहद ख़ुश हुई। उसने पलक झपकते सब कुछ कर डाला, चूल्हा जलाया और पूरियां तलने लगी।

"स्वामी, इन्हें गर्म गर्म ही खा लो," उसने कहा।

किसान ने एक पूरी खायी और बीवी की आंख बचाकर दो तीन अपने थैले में डाल लीं। और फिर एक पूरी खायी और दो तीन थैले में डाल लीं।

"आज तो तुम पूरियां हड़पते जा रहे हो! मैं तो इतनी जल्दी बना भी नहीं सकती," उसकी बीवी ने कहा।

"हमें बहुत दूर जाना है और ख़ज़ाना भारी है, इसलिए मुझे पेट भर कर खा लेना चाहिए।"

किसान ने वह थैला पूरियों से ठसाठस भर लिया और बोला :

"अच्छा, मैंने तो खूब छककर खा लिया। अब तुम कुछ खा लो तो चलें। हमें जल्दी करनी चाहिए।"

बीवी ने जल्दी से खाया और वे दोनों चल पड़े।

इस वक़्त तक काफ़ी अन्धेरा हो चुका था। किसान, अपनी बीवी से आगे-आगे चल रहा था, उसने थैले में से पूरियां निकाल-निकाल कर पेड़ों की टहनियों पर लटकानी शुरू कर दीं।

कुछ देर बाद बीवी ने पूरियां देखीं।

"देखो, दरख़्तों पर पूरियां हैं!"

"तो इसमें हैरानी की क्या बात है?" उसके पति ने कहा। "क्या तुमने अभी अभी पूरियों की बरसात नहीं देखी?"

"नहीं, मेरी आंखें नीचे की ओर लगी हुई थीं ताकि मैं कहीं जड़ों से ठोकर न खा जाऊं।"

"मैंने यहां ख़रगोशों के लिए फंदा लगाया था," किसान ने कहा। "चलो, ज़रा उसे भी देख लें।"

इस तरह वे फंदे के पास गये। किसान ने उसमें से मछली निकाली।

"प्यारे, इस फंदे में मछली कैसे फंस सकती है?" उसकी बीवी ने पूछा।

"तुम्हें यह मालूम नहीं था? ऐसी मछलियां भी होती हैं जो ज़मीन पर चलती हैं।"

"लो, ज़रा ग़ौर करो! मैं इस बात पर कभी विश्वास न करती, यदि मैंने इसे अपनी आंखों से न देखा होता।"

वे नदी-तट पर आये।

"तुम्हारा जाल यहीं कहीं लगा हुआ है," उसकी बीवी ने कहा। "उसे भी देखते चलें।"

उन्होंने जाल को खींच कर बाहर निकाला तो उसमें एक ख़रगोश दिखाई दिया।

"मुझ पर रहम करो," उसकी बीवी हाथ पटक कर चिल्लायी। "यह कैसा अजीब दिन है! मछली पकड़ने के जाल में ख़रगोश!"

"तुम किसलिए बड़बड़ा रही हो? जैसे कि तुमने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी पानी के खरगोश देखे ही नहीं!" किसान ने कहा।

"सचमुच, मैंने पहले कभी नहीं देखे।"

इस वक़्त तक वे उस जगह पहुंच चुके थे जहां ख़ज़ाना दबा हुआ था। किसान ने खोदकर सोना निकाला और जितना जितना वे उठा सकते थे, उठा कर घर की ओर चल दिये।

सड़क ज़मींदार के घर के पास से हो कर जाती थी। जब वे उसके समीप आये तो उन्होंने भेड़ों का मिमियाना सुना: "मैं-मे-मे..."

"हाय, यह क्या है, मेरी तो डर के मारे जान निकली जा रही है!" औरत फुसफुसायी।

"जल्दी से भाग चलो, ये शैतान हैं जो हमारे मालिक का गला घोंट रहे हैं। यही ख़ैर मनाओ कि वे हमें न देखें!"

और वे बेतहाशा घर की ओर भागे।

किसान ने सोना छिपा दिया और वे बिस्तर में लेट गये।

"देखना, तुम इस सोने का किसी से ज़िक्र नहीं करना, तत्याना, वरना समझ लो कि मुसीबत आ जायेगी।"

"भगवान का नाम लो स्वामी, मेरी ज़बान से एक शब्द भी नहीं निकलेगा!"

अगली सुबह वे देर से सोकर उठे। औरत ने चूल्हा जलाया, डोल उठाये और कुएं से पानी लेने चली।

कुएं पर पड़ोसिनों ने पूछा:

"आज तुमने अपना चूल्हा इतनी देर से क्यों जलाया, तत्याना?"

"हां, सचमुच बड़ी देर से, क्योंकि मैं रात भर घर से बाहर घूमती रही, इसलिए जल्दी उठ न सकी।"

"तुम रात भर बाहर क्या करती रहीं?"

"मेरे पति को एक दबा हुआ ख़ज़ाना मिला था। पिछली रात हम उसे लाने गये थे।"

उस दिन गांव भर में यही चर्चा होती रही:

"तत्याना और उसके पति ने एक दबा हुआ ख़ज़ाना पाया है और वे धन के दो बोरे भरकर घर लाये हैं।"

उसी शाम ज़मींदार के पास यह ख़बर पहुंची। उसने किसान को बुला भेजा।

"तुम्हें मुझसे ख़ज़ाना छिपाने की हिम्मत कैसे हुई?"

"ख़ज़ाना? मैंने तो कभी कोई ख़ज़ाना देखा-सुना ही नहीं," किसान ने जवाब दिया।

"सच सच बताओ!" मालिक चिल्लाया। "मैं सब कुछ जानता हूं–ख़ुद तुम्हारी बीवी ने इसके बारे में सबको बताया है।"

"ओह, तो यह बात है! लेकिन उसका तो दिमाग़ ठीक नहीं है। वह तो आपको ऐसी ऐसी बातें बता सकती है जिनकी कभी आपने कल्पना भी न की हो।"

"हम ख़ुद इसकी जांच-पड़ताल करेंगे।"

और मालिक ने तत्याना को बुलवाया।

"क्या तुम्हारे पति को ख़ज़ाना मिला है?"

"जी हुज़ूर, मिला है।"

"तुम दोनों रात के वक़्त इस ख़ज़ाने को लेने गये थे?"

"जी हां, गये थे।"

"मुझे इसके बारे में विस्तार से बताओ।"

"पहले हम जंगल में से गये और वहां सभी पेड़ों पर पूरियां थीं।"

"पूरियां! जंगल में पूरियां?"

"हां, जनाब! पूरियों की बरसात हुई थी। तब हमने ख़रगोश के फंदे को देखा और उसमें एक श्चूका-मछली दिखाई दी। हमने वह मछली निकाल ली और आगे चल दिये। हम नदी-तट पर पहुंचे। ज्यों ही जाल बाहर निकाला तो उसमें एक ख़रगोश फंसा हुआ पाया। हमने ख़रगोश बाहर निकाल लिया। और नदी के नज़दीक ही मेरे पति ने ख़ज़ाने को खोद निकाला। हमने सोने का एक एक थैला भरा और लौट पड़े। जिस समय शैतान आपका गला दबा रहे थे, उसी समय हम आपके घर के पास से गुज़रे थे।"

इस पर मालिक अपने गुस्से को संभाल न सका। उसने ज़ोर से ज़मीन पर पांव पटका और चिल्लाया:

"जा, री मूर्ख औरत, यहां से निकल जा!"

"हां तो," उसके पति ने कहा, "अब आपने देखा कि यह पागलों की-सी बातें करती है। और इसने ज़िन्दगी भर मुझे किसी न किसी मुसीबत में फंसाये रखा है।"

"अब मुझे यक़ीन हो गया है। तू जा!" मालिक ने निराशा से हाथ झटकते हुए कहा।

किसान घर चला गया। वह आज भी मज़े की ज़िन्दगी बिता रहा है। मालिक के साथ उसने जो मज़ाक किया था, उसे याद करके मन ही मन हंसा करता है।

किसान और जागीरदार

त्योहार के एक दिन, कुछ किसान एक चबूतरे पर बैठ कर अपने अपने बारे में इधर-उधर की हांक रहे थे।

गांव का दूकानदार उनके पास आया और शेख़ी बघारने लगा :

"मैं यह हूं, वह हूं, ऐसा हूं, वैसा हूं और यह कि मैं जागीरदार की बैठक तक जा आया हूं।"

उनमें से एक किसान जो सबसे ग़रीब था यों ही मज़ाक में कह उठा :

"छिः यह तो कुछ भी बात नहीं। अगर मैं चाहूं तो जागीरदार के साथ खाना भी खा सकता हूं।"

"क्या कहा? तुम जागीरदार के साथ खाना खा सकते हो? मैं यह कभी मानने को तैयार नहीं हो सकता।" धनी दूकानदार चिल्लाया। "अगर यह बात है तो मैं खा कर ही दिखाऊंगा।"

"नहीं, तुम नहीं खा सकोगे।"

वे बहस करते रहे। अन्त में ग़रीब किसान ने कहा:

"अच्छा तो इसी बात पर कुछ शर्त लग जाये। अगर मैं जागीरदार के साथ खाना खा लूं तो तुम्हारा भूरा और काला, दोनों घोड़े मेरे हो जायेंगे, वरना मैं तीन बरस तक, तुम्हारा मुफ़्त काम करूंगा।"

दूकानदार बेहद खुश हुआ।

"बहुत अच्छा, मैं अपने दोनों घोड़ों को दांव पर लगाता हूं और इसके अलावा तुम्हारे जीत जाने पर तुम्हें बछेरा भी साथ में दूंगा! ये भले लोग हमारे गवाह होंगे।"

और उन्होंने इसी शर्त पर गवाहों के सामने हाथ मिलाये।

ग़रीब किसान जागीरदार के पास गया।

"हुज़ूर, मैं आपसे एकान्त में यह जानना चाहूंगा कि मेरी टोपी के आकार के स्वर्णपिंड की क्या क़ीमत होगी?"

जागीरदार ने कोई उत्तर न दिया। उसने सिर्फ़ ताली बजायी।

"ओ, सुनो! इस किसान के लिए और मेरे लिए शराब और नाश्ता लाओ। जल्दी करो! और इसके बाद खाना भी लगा दो। बैठो बैठो, भले आदमी, आराम से बैठो। जो कुछ भी मेज़ पर है, उसे खाओ।"

जागीरदार ने उसके साथ एक सम्मानित मेहमान की तरह बर्ताव किया। जागीरदार सोने का पिंड पाने के लिए मन ही मन बहुत बेचैन हो रहा था।

"अच्छा भैया, अब तुम जल्दी से वह स्वर्णपिंड ले आओ। मैं इसके बदले में तुम्हें एक मन आटा और पचास कोपेक दूंगा।"

"मगर मेरे पास तो कोई स्वर्णपिंड है ही नहीं। मैं तो सिर्फ़ यह पूछ रहा था कि मेरी टोपी के आकार के स्वर्णपिंड का क्या मूल्य होगा?"

जागीरदार को बहुत ग़ुस्सा आया।

"निकल जाओ, उल्लू!"

"मैं उल्लू कैसे हो सकता हूं, जब कि आपने मेरे साथ एक सम्मानित मेहमान का-सा बर्ताव किया। और इसी के लिए ही दूकानदार को मुझे दो घोड़े और एक बछेरा देना होगा।"

इसके बाद किसान बहुत खुश-खुश घर लौट गया।

मुसीबत

किसी समय की बात है कि एक छोटे-से गांव में दो किसान भाई रहते थे। एक ग़रीब था और दूसरा अमीर। अमीर गांव छोड़कर नगर में चला गया। वहां उसने अपने लिए एक बड़ी हवेली बनवायी और सौदागरी करने लगा। लेकिन ग़रीब भाई के पास कभी कभी तो खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा भी न होता और उसके छोटे-छोटे बच्चे भूख से बिलखते रहते। ग़रीब आदमी सारा दिन कड़ी मेहनत करता, मगर बहुत सिर मारने पर भी उसे कुछ हासिल न होता।

अब, एक दिन उसने अपनी बीवी से कहा –

"मेरे ख़्याल में मुझे नगर में जाकर अपने भाई से सहायता की प्रार्थना करनी चाहिए।"

और वह अपने अमीर भाई के पास पहुंचा।

"ओह, प्यारे भाई," उसने कहा, "मुसीबत के वक़्त मेरी मदद करो। मेरे पास बीवी बच्चों को खिलाने के लिए रोटी तक नहीं है और वे कई कई दिन तक भूखे पेट रहते हैं।"

"एक सप्ताह मेरा काम करो और तब मैं कुछ मदद करूंगा!"

बेचारा ग़रीब किसान इसके सिवा और कर भी क्या सकता था? उसने काम करना शुरू कर दिया। वह लकड़ी चीरता, पानी भर कर लाता, घोड़ों की सफ़ाई करता और आंगन में झाड़ू लगाता।

हफ़्ता पूरा होने पर अमीर भाई ने उसे एक पाव-रोटी दी।

"यह रही तुम्हारे काम की मज़दूरी," उसने कहा।

"शुक्रिया, भाई, न होने से थोड़ा बेहतर है।" ग़रीब भाई ने झुक कर प्रणाम किया। वह चलने ही वाला था कि अमीर भाई ने उसे बुलाया: "ठहरो! कल तुम मेरे मेहमान होना और अपनी बीवी को भी साथ लेते आना। तुम जानते हो, कल मेरा जन्मदिन है।"

"ओ भाई, यह कैसे हो सकता है! तुम तो ख़ुद ही

समझ सकते हो—तुम्हारे जन्मदिन के सिलसिले में बड़े बड़े व्यापारी, बढ़िया बूट और सुन्दर फ़रकोट पहन कर आयेंगे और मैं तो फटे हाल रहता हूं।"

"इसकी कोई बात नहीं! तुम आ जाना, तुम्हारे लिए भी जगह हो जायेगी," अमीर भाई ने कहा।

"अच्छा, प्यारे भाई। मैं आ जाऊंगा" ग़रीब ने जवाब दिया।

ग़रीब किसान ने घर आकर बीवी को पाव-रोटी दी और कहा:

"बीवी, सुनती हो, कल हमें जन्मदिन के समारोह में भाग लेने के लिए बुलाया गया है।"

"कैसा समारोह? किसका जन्मदिन?"

"मेरे भाई का जन्मदिन है और उसने हमें भी बुलाया है।"

"अच्छा, तो चलेंगे।"

अगली सुबह वे उठे और शहर की तरफ़ चल दिये और अमीर के घर पहुंचे। उसे बधाई दी और एक बेंच पर बैठ गये। बहुत-से अमीर लोग पहले से ही मेज़ पर जमे थे और मेज़बान उन्हें अच्छी तरह खिला-पिला रहा था। मगर ग़रीब भाई और उसकी बीवी को उसने एक बार भी याद न किया और उन्हें खाने के लिए भी कुछ न दिया। वे दोनों वहीं बैठे-बैठे दूसरों को खाते-पीते देखते रहे।

जब खाना ख़त्म हुआ मेहमान, मेज़बान और उसकी बीवी को धन्यवाद देकर, जाने लगे। ग़रीब किसान भी उठ खड़ा हुआ और उसने अपने भाई को झुक कर प्रणाम किया।

अमीर मेहमान, पिये हुए, शोर मचाते और गाते हुए घोड़ों पर सवार हो कर ख़ुशी-ख़ुशी चले गये।

उधर ग़रीब आदमी ख़ाली पेट ही वापिस चल दिया।

"आओ, हम भी गाना शुरू करें" उसने अपनी बीवी से कहा।

"अहमक़ कहीं के! लोग इसलिए गा रहे हैं कि उन्होंने ख़ूब अच्छी तरह खाया और बहुत पी है। पर तुम्हें यह सनक क्यों सवार हो रही है?"

"क्यों, क्या मैं अपने भाई का जन्मदिन नहीं मनाकर आया हूं? बिना गाते हुए जाना मेरे लिए शर्म की बात है। अगर मैं गाऊंगा तो लोग यह समझेंगे कि दूसरों की भांति मुझे भी खिलाया-पिलाया गया है..."

"अच्छा, अगर चाहो तो तुम गा सकते हो, मगर मैं नहीं गाऊंगी।"

इस तरह किसान ने गाना शुरू कर दिया। परन्तु उसे ऐसा लगा कि वह दो आवाज़ें सुन रहा है। वह चुप हो गया।

"सुनो बीवी," उसने कहा "क्या मेरी आवाज़ के साथ दूसरी पतली आवाज़ तुम्हारी थी?"

"आज तुम्हें हुआ क्या है? मैंने तो ऐसा करने का कभी सोचा तक नहीं।"

"तब वह आवाज़ किसकी थी?"

"मैं क्या जानूं?" औरत ने कहा। "फिर गाओ और मैं सुनूंगी।"

और किसान ने फिर से गाना शुरू किया।

उसे यह यक़ीन था कि वह अकेला गा रहा है, मगर फिर भी उसे दो ही आवाज़ें सुनाई दीं। तब उसने फिर एक बार रुक कर पूछा:

"मुसीबत, मुसीबत, क्या तुम साथ गा रही हो?"

"हां, मालिक," मुसीबत ने उत्तर दिया। "मैं हूं।"

"तब ठीक है, हमारा साथ दो।"

"अच्छा, तो मैं साथ दूंगी, मालिक! और कभी साथ नहीं छोड़ूंगी।"

किसान घर पहुंचा। मुसीबत उसे शराबख़ाने की ओर बुलाने लगी।

"नहीं।" उसने कहा। "मेरे पास रुपया नहीं है।"

"क्यों, किसान भाई, हमें रुपये की क्या ज़रूरत है? भेड़ की खाल के अपने उस कोट की तरफ़ देखो। निश्चय ही तुम्हें अब उसकी ज़रूरत नहीं है। गर्मी आ रही है, और अब तो तुम उसे पहनने से रहे। चलो शराबख़ाने की ओर चलें और वहां उसकी शराब लेकर पियें..."

इस तरह किसान और मुसीबत शराबख़ाने की ओर चल दिये और वहां उन्होंने भेड़ की खाल का कोट देकर शराब पी।

अगले दिन नशा उतरने के बाद, मुसीबत सिरदर्द से कराही और बड़बड़ायी। और उसने अपने मालिक को एक बार फिर शराबख़ाने की ओर बुलाया।

"पैसा नहीं है," किसान ने कहा।

"क्यों, हमें पैसे की क्या ज़रूरत है?" मुसीबत ने कहा। "अपनी बैलगाड़ी और स्लैज-गाड़ी ले लो। हमारे लिए यही काफ़ी होंगी।"

इसके सिवा और हो ही क्या सकता था! किसान मुसीबत से मुक्ति नहीं पा सकता था। इसलिए वह बैलगाड़ी और स्लैज को शराबख़ाने में ले गया और वहां उसने और मुसीबत ने उनके बदले में शराब पी डाली।

अगली सुबह मुसीबत और भी अधिक कराही तथा बड़बड़ायी। उसने फिर अपने मालिक को सिर का दर्द दूर करने के लिए पुकारा। नतीजा यह हुआ कि इस बार किसान ने अपना हेंगा और लकड़ी का हल शराब की नज़र कर डाला। उसके पास जो कुछ था उसने एक महीने में बरबाद कर दिया। यहां तक कि उसने अपनी झोंपड़ी भी पड़ोसी के पास गिरवी रख कर रुपया शराबख़ाने को दे डाला। मगर फिर भी मुसीबत ने उसका पीछा न छोड़ा और उस पर दबाव डालती रही।

"चलो शराबख़ाने! चलो शराबख़ाने!"

"नहीं, मुसीबत, तुम जो चाहो कहो, मेरे पास पीने के लिए अब और कुछ नहीं रहा।"

"क्यों नहीं है? क्या तुम्हारी बीवी के पास दो सराफ़ान नहीं हैं? तुम उसके लिए एक छोड़ दो, मगर दूसरा तो हमें शराब पीने के लिए ज़रूर ही ले लेना चाहिए।"

किसान ने सराफ़ान ले लिया और उसकी भी शराब पी गया। इसके बाद उसने सोचा:

"अच्छा, अब मेरे पास और मेरी बीवी के पास तो तन ढकने के कपड़े तक भी नहीं रहे। बिल्कुल कंगाल हो गये हैं हम।"

सुबह होने पर मुसीबत ने देखा कि किसान के पास अब और कुछ बाक़ी नहीं रहा।

"मालिक," वह बोली।

"क्या है, मुसीबत?"

"मैं कहती हूं, पड़ोसी के पास आओ और उससे उसकी गाड़ी और बैलों की जोड़ी मांग लाओ।"

तो वह पड़ोसी के पास गया और कहा:

"थोड़ी देर के लिए मुझे अपनी बैलगाड़ी और बैलों की जोड़ी दे दो। ऐसा करने पर मैं सप्ताह भर तुम्हारा मुफ़्त काम करने को तैयार हूं।"

"तुम्हें किसलिए इसकी ज़रूरत है?" पड़ोसी ने पूछा।

"जंगल से कुछ लकड़ी लाने के लिए।"

"अच्छा, तो ले जाओ, मगर बहुत अधिक बोझ नहीं लादना।"

"यह आप क्या कह रहे हैं, अन्नदाता!"

और किसान ने बैलों को अपनी झोंपड़ी के पास ले जा कर खड़ा कर दिया। वह और मुसीबत बैलगाड़ी में जा बैठे और खुले मैदान की तरफ़ चल दिये।

"मालिक," मुसीबत ने पूछा, "इस मैदान के ठीक बीच में जो पत्थर है, क्या तुमने उसे देखा है?"

"हां, मैंने देखा है।"

"अच्छा तो गाड़ी को सीधे वहां ही ले चलो।"

इस तरह वे उस जगह पहुंच कर रुक गये। वे बैलगाड़ी से नीचे उतरे और मुसीबत ने किसान को पत्थर उठाने के लिए कहा। किसान ने ज़ोर लगाया, मुसीबत ने सहायता की और अन्त में उन्होंने उसे उठा लिया। और उस पत्थर के नीचे क्या दिखाई दिया?—सोने से भरा एक गड्ढा।

"इस तरह मुंह बाये मत खड़े रहो," मुसीबत ने कहा। "जल्दी करो और इसे बैलगाड़ी में लाद लो।"

किसान अपने काम में जुट गया। उसने बैलगाड़ी को सोने से भर दिया और उस गड्ढे में एक सिक्का तक नहीं छोड़ा। जब उसने गड्ढे को ख़ाली देखा तो मुसीबत से कहा:

"एक बार फिर देख लो, मुसीबत! मेरा मन कहता है कि यहां अभी कुछ धन और बाक़ी रह गया है।"

और मुसीबत देखने के लिए झुकी।

"कहां? मुझे तो कुछ दिखाई नहीं देता।"

"उधर देखो, वहां उस कोने में वह चमक रहा है।"

"मुझे तो कुछ दिखाई नहीं देता।"

"गड्ढे में उतरो तो दिखाई देगा।"

मुसीबत गड्ढे में उतरी और ज्योंही उसने ऐसा किया कि किसान ने झटपट पत्थर ऊपर रख दिया।

"ऐसा करना ही अच्छा होगा," किसान ने कहा। "वरना ओ! मुसीबत, अगर मैं तुम्हें अपने साथ ले चलता तो शायद बहुत जल्दी तो नहीं, मगर अन्त में तुम इस सारे धन को भी शराब में उड़ा देतीं। बस, अब तुम यहीं पड़ी सड़ती रहो!"

इसके बाद वह घर लौट आया। उसने सारा धन तहखाने में गाड़ दिया और पड़ोसी की बैलगाड़ी और बैल लौटा दिये। तब वह सोचने लगा कि किस तरह अपना घर-बार बसाए। उसने कुछ लट्ठे-शहतीर खरीदे और अपने लिए एक बढ़िया मकान बनवा लिया। तब वह उसमें अपने भाई से कहीं ज़्यादा शान-शौकत के साथ रहने लगा।

वक़्त गुज़रता गया। फिर एक दिन वह किसान अपने अमीर भाई और भाभी को अपने जन्मदिन पर आमंत्रित करने के लिए शहर में गया।

"यह तुम मुझसे क्या कह रहे हो?" अमीर भाई ने उस से कहा। "जब तुम्हारे पास तो अपने खाने के लिए भी कुछ नहीं है, तो मेहमानों को क्या खिलाओगे? तुम अपना जन्मदिन कैसे मना सकते हो?"

"कोई वक़्त था जब कुछ नहीं था, मगर भगवान की कृपा से अब सब कुछ है। जितना तुम्हारे पास है उससे कुछ कम नहीं है। ख़ुद आकर देख लो।"

"अच्छा, तो मैं आऊंगा!"

अगले दिन अमीर भाई और उसकी बीवी तैयार होकर अपने भाई का जन्मदिन मनाने के लिए गये। वहां जाकर उन्होंने क्या देखा कि उनका वह नंगा-भूखा भाई एक बहुत सुन्दर और नये मकान में रहता है। हर कोई व्यापारी ऐसे आलीशान मकान का मालिक होने का सपना नहीं देख सकता था! किसान ने उन्हें छत्तीस प्रकार के भोजन खिलाये और सभी प्रकार के गोश्त और शराबों से उनकी ख़ातिरदारी की।

और तब अमीर भाई ने अपने भाई से पूछा:

"बताओ तो भाई, तुम्हें इतनी दौलत मिली कहां से?"

और किसान ने उसे सब कुछ सच-सच बता दिया। कैसे उस पर मुसीबत ने दबाव डाला और कैसे उसने ग़म ग़लत करने के लिए शराबख़ाने में अपनी आख़िरी कौड़ी तक दे डाली। अन्त में सिर्फ़ उसके पास उसकी जान ही बाक़ी रह गयी थी। तब मुसीबत ने उसे मैदान में वह ख़ज़ाना दिखाया। कैसे वही ख़ज़ाना हासिल करके उसने मुसीबत से छुटकारा पा लिया।

ईर्ष्या से जलते हुए उस अमीर भाई ने सोचा: "उस मैदान में जाकर, पत्थर उठाकर, मैं मुसीबत को मुक्त कर दूंगा ताकि

वह मेरे भाई को फिर से बरबाद कर दे। तब वह मेरे सामने अपनी अमीरी की कभी डींग न हांकेगा।"

ऐसा सोच कर उसने अपनी बीवी को घर भेज दिया और ख़ुद उस मैदान की तरफ़ गया। वह पत्थर के पास पहुंचा, उसे एक तरफ़ खिसकाया और मुसीबत को बाहर निकाल दिया।

"जाओ मेरे भाई के पास, जाओ," उसने कहा, "और उसकी आख़िरी कौड़ी तक बरबाद करवा डालो।"

"नहीं, भले आदमी," मुसीबत ने जवाब दिया। "अब मैं उसके पास फिर नहीं जाऊंगी। मैं तुम्हारे पास रहना अधिक बेहतर समझती हूं। तुम बहुत दयावान इन्सान हो, तुमने मुझे बाहर निकाला है, जबकि उस दुष्ट ने मुझे ज़मीन के अन्दर बन्द कर दिया था!"

थोड़े ही अरसे में ईर्षालु भाई बरबाद हो गया। वह एक अमीर आदमी के बजाय, एक नंगा-भूखा भिखारी बन कर रह गया।

हिम-देवता

एक बार एक बूढ़ा अपनी दूसरी बीवी के साथ रहता था। दोनों की एक एक बेटी थी। एक बेटी बूढ़े की थी और एक उसकी बीवी की।

हर कोई जानता है कि सौतेली माताएं कैसी होती हैं। चाहे तुम काम बिगाड़ो चाहे संवारो, पिटाई तो तुम्हारी होगी ही। अपनी बेटी चाहे जो करे उसकी सदा सराहना की जाती है और शाबाशी दी जाती है।

बूढ़े की बेटी प्रतिदिन पौ फटने से पहले उठती। वह पशुओं की देख-रेख करती, आग जलाने के लिए लकड़ी और पानी लाती, चूल्हा जलाती और फ़र्श पर झाड़ू लगाती... तो भी उसकी सौतेली मां हर काम में से दोष ढूंढ निकालती, बात बात पर कलह मचाती और उसे दिन भर डांटती।

तेज़ हवा एक बार ज़ोर से सांय सांय करती है और फिर शान्त हो जाती है। पर अगर कोई बुढ़िया एक बार छिड़ जाती है तो जल्द ही चुप होने का नाम नहीं लेती है। सौतेली मां ने सौतेली बेटी से छुटकारा पाने का निश्चय कर लिया।

"बुड्ढे, इसे यहां से ले जाओ," उसने अपने पति से कहा, "यह मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती। इसे जंगल में ले जाओ और जाड़े-पाले में ठिठुर कर मरने को छोड़ आओ।"

बूढ़ा दुखी हुआ और रोया, मगर वह कुछ नहीं कर सकता था। जैसे बीवी नचाती थी उसे नाचना पड़ता था। इसलिए उसने अपने घोड़े जोते और बेटी को पुकारा:

"आओ, मेरी प्यारी बेटी, स्लेज में बैठ जाओ।"

बूढ़ा बाप बे-मां की लड़की को जंगल में ले गया और वहां उसे बर्फ़ के बीच एक बड़े देवदार के पेड़ के नीचे फेंक कर, गाड़ी आगे भगा ले गया।

बेहद सर्दी थी। लड़की देवदार के नीचे बैठी हुई ठिठुर रही थी। अचानक उसने हिमदेवता को एक से दूसरे पेड़ पर फांदते और वृक्षों की शाखाओं के बीच चटख़-पटख़ की आवाज़

करते सुना। पलक झपकते ही वह उस पेड़ के ऊपर आ पहुंचा जिसके नीचे वह लड़की बैठी हुई थी।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?" उसने ऊपर से पुकार कर पूछा।

"नहीं, हिमदेवता!"

तब हिमदेवता और नीचे आ गया और वह पहले से कहीं अधिक चटख-पटख करने लगा।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?" उसने फिर पूछा। "क्या तुम गर्म हो, मेरी सुन्दर बिटिया?"

लड़की बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी, मगर उसने कहा:

"हां, मैं बहुत गर्म हूं, हिमदेवता!"

हिमदेवता और भी नीचे आ गया। उसकी चटख-पटख की आवाज़ पहले से कहीं अधिक ऊंची हो गयी थी।

"लड़की, क्या तुम गर्म हो?" उसने पूछा। "क्या तुम गर्म हो, सुन्दर बिटिया? क्या तुम गर्म हो, मेरी माधुरी?"

लड़की के अंग जमे जा रहे थे और वह बड़ी मुश्किल से ज़बान हिला पा रही थी, पर फिर भी उसने कहा:

"मैं गर्म हूं, प्यारे हिमराज!"

हिमदेवता को लड़की पर रहम आ गया और उसने उसे पोस्तीन और रोयेंदार कंबल से लपेट दिया।

इसी बीच बुढ़िया मातमी दावत की तैयारी कर रही थी

और अपनी सौतेली बेटी की याद में पूरियां पका रही थी, उसने अपने पति से कहा :

"अबे ओ बूढ़े खूसट, जंगल में जाओ और अपनी बेटी को दफ़नाने के लिए वापस ले आओ!"

बूढ़ा जंगल में गया और वहां, उसी जगह पर उसने अपनी बेटी को पहले से अधिक खुश बैठे पाया।

लड़की के गालों पर सुर्ख़ी थी। वह काला पोस्तीन पहने थी और सोने-चांदी के ज़ेवरों से लदी थी। उसके पीछे उपहारों से भरी एक बड़ी टोकरी रखी थी।

बूढ़े की खुशी का कोई ठिकाना न था। उसने बेटी को बर्फ़-गाड़ी में बिठाया, बड़ी टोकरी उसके पीछे रखी और घर की ओर चल दिया।

इधर वह बुढ़िया अभी भी पूरियां तल रही थी तब उसने अचानक मेज़ के नीचे से अपने छोटे-से कुत्ते को यह कहते सुना :

"भौं-भौं-भौं

लदकर सोने-चांदी से बूढ़े की बिटिया आयेगी

और बनेगी वह सुकुमारी, दुल्हन प्यारी-प्यारी।

किन्तु रहेगी बुढ़िया की बेटी तो सदा कुमारी।"

बुढ़िया ने कुत्ते की ओर एक पूरी फेंकी और कहा :

"तू ग़लत कह रहा है कुत्ते! तुझे कहना चाहिए :

'बुढ़िया की बेटी के होंगे बड़े चाहनेवाले

और किसी के दिल की वह बन जायेगी पट-रानी

मरी-खपी बूढ़े की बेटी, किस्सा ख़त्म कहानी।'"

कुत्ते ने पूरी खा ली मगर फिर भी उसने यही कहा:

"भौं-भौं-भौं
लदकर सोने-चांदी से बूढ़े की बिटिया आयेगी
और बनेगी वह सुकुमारी, दुल्हन प्यारी-प्यारी।
किन्तु रहेगी बुढ़िया की बेटी तो सदा कुमारी।"

बुढ़िया ने कुत्ते की ओर कई पूरियां फेंकीं और उसे मारा भी, मगर कुत्ते ने बार-बार वही पहली बात दोहरायी।

अचानक फाटक चरमराया, दरवाज़ा खुला और बूढ़े की बेटी ने भीतर प्रवेश किया। वह सोने-चांदी के ज़ेवरों से लदी चमचम कर रही थी। उसके पीछे उसका बाप क़ीमती उपहारों से भरी हुई एक बड़ी टोकरी लिये हुए अन्दर आया। बुढ़िया ने यह सब कुछ देखा तो जल-भुन कर कोयला हो गयी।

"अरे बूढ़े खूसट! घोड़ों को गाड़ी में जोतो!" उसने कहा। "मेरी बेटी को जंगल में ले जाओ और उसी जगह छोड़ आओ जहां अपनी बेटी को छोड़ आये थे..."

बूढ़े ने बुढ़िया की बेटी को स्लेज में बिठाया, उसे जंगल में उसी जगह पर ले गया और लम्बे देवदार पेड़ के नीचे बर्फ़ के ढेर में फेंक कर घर लौट आया।

अब बुढ़िया की बेटी वहां बैठी थी। इतनी अधिक सर्दी थी कि उसके दांत बज रहे थे।

हिमदेवता एक के बाद दूसरे पेड़ पर कूदता फांदता और शाखाओं के बीच चटख़-पटख़ की आवाज करता हुआ और कभी बीच-बीच में बुढ़िया की बेटी पर बार बार नजर डालता हुआ पूछता :

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?"

लड़की ने जवाब में कहा :

"हाय हाय, मुझे बेहद सर्दी लग रही है! इस तरह चटख़-पटख़ मत करो, हिमदेवता!"

हिमदेवता और नीचे आ गया और अधिक ज़ोर से चटख़-पटख़ करने लगा।

"क्या तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?" उसने पुकार कर पूछा। "क्या तुम गर्म हो, सुन्दरी?"

"अरे नहीं," उसने कहा, "मैं तो जमी जा रही हूं। जाओ यहां से, हिमदेवता..."

मगर हिमदेवता और नीचे आ गया तथा पहले से भी कहीं ऊंची आवाज़ में चटख़-पटख़ करने लगा। उसकी सांस भी पहले से अधिक ठंडी हो गयी थी।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की? क्या तुम गर्म हो, सुन्दरी?"

"हाय, मैं तो जम भी चुकी हूं! जाओ, भाग जाओ यहां से, दुष्ट हिमदेव!"

इसपर हिमराज को इतना अधिक गुस्सा आया कि

उसने अपनी सारी शक्ति से बुढ़िया की बेटी को अपनी पकड़ में ले लिया और उसे ठंड से मार डाला।

दिन मुश्किल से निकला ही था कि बूढ़ी ने अपने पति से कहा:

"जल्दी करो, घोड़े जोतो, बूढ़े खूसट! जाओ, सोने-चांदी से चमचम करती मेरी बेटी को घर ले आओ..."

बूढ़ा आदमी गाड़ी ले कर चला गया। तब मेज़ के नीचे से छोटा कुत्ता भौंका:

"भौं-भौं-भौं

बहुत जल्द बूढ़े की बेटी, दुल्हन भी बन जायेगी।

ठिठुर मरी बुढ़िया की बेटी, कभी न अब उठ पायेगी।"

बुढ़िया ने कुत्ते की तरफ़ समोसे का एक टुकड़ा फेंका और कहा:

"तू ग़लत कहता है। कह:

'बुढ़िया की बेटी लद आयेगी सोने-चांदी से...'"

लेकिन कुत्ते ने वही पहली बात दोहरायी:

"ठिठुर मरी बुढ़िया की बेटी, कभी न उठ पायेगी।"

तभी फाटक चरमराया और बुढ़िया अपनी बेटी से मिलने के लिए दौड़ी। उसने चटाई हटायी तो उसके नीचे अपनी बेटी की लाश पायी।

बुढ़िया ज़ोर ज़ोर से रोने लगी, मगर अब हो ही क्या सकता था!

चिड़ियां तो चुग खेत चुकी थीं।
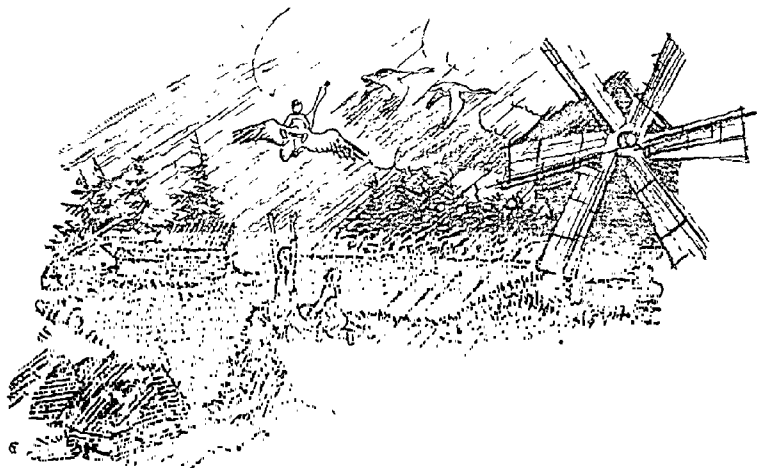
नन्ही लड़की और हंस

एक बार एक किसान था और उसकी बीवी थी। उनकी एक नन्ही लड़की और एक नन्हा लड़का था।

"बेटी," मां ने अपनी नन्ही लड़की से कहा। "हम लोग काम पर जा रहे हैं, इसलिए तू अपने छोटे भाई की देखभाल कर। अगर तूने अच्छी लड़की की तरह यह काम किया और घर के बाहर नहीं गयी तो हम तुझे एक नया रूमाल ख़रीद देंगे।"

मां-बाप काम पर चले गये, लेकिन नन्ही लड़की भूल गयी कि उसकी मां उससे क्या कह गयी थी। उसने अपने नन्हे

भाई को खिड़की के पास घास पर बैठा दिया और ख़ुद अपनी सहेलियों के साथ खेलने चली गयी।

यकायक हंसों का एक झुंड उड़ता हुआ आया। हंसोंने ज़मीन पर झपट्टा मारा, नन्हे भैया को उठा लिया और उसे पीठ पर बैठा कर आकाश में उड़ चले।

नन्ही लड़की घर लौटी, मगर अफ़सोस! – नन्हा भैया ग़ायब था। वह हक्की-बक्की रह गयी, इधर दौड़ी, उधर दौड़ी, मगर कहीं उसका निशान तक न था।

उसने भैया को आवाज़ दी। रोते रोते उसकी हिचकियां बंध गयीं। उसने पुकार कर कहा कि भैया जल्दी आ जाओ वरना मेरी बड़ी पिटाई होगी। मगर उसके नन्हे भाई ने कोई जवाब नहीं दिया।

तब वह बाहर खुले मैदान में दौड़ गयी, लेकिन वहां भी उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। हां, घने जंगलों से भी बहुत दूर कुछ हंस ज़रूर आसमान में उड़ रहे थे। यकायक उसके मन में विचार आया कि हो न हो, उसके भैया को ये हंस ही उठा ले गये हैं। उसने लोगों को कहते हुए सुना था कि हंस बहुत बुरे पक्षी होते हैं जो अक्सर छोटे बच्चों को चुरा ले जाते हैं।

सो लड़की ने आव देखा न ताव और दौड़ पड़ी उन पक्षियों के पीछे। वह दौड़ती गयी, दौड़ती गयी और एक अलावघर के पास जा पहुंची।

"अलावघर, अलावघर, मुझे यह वताओ कि हंस कहां उड़ कर गये हैं?"

"मेरी काली रोटी खाओ तव मैं तुम्हें वता दूंगा," अलावघर ने कहा।

"क्या कहा, मैं और काली रोटी खाऊं? अपने वाप के यहां मैं गेहूं की रोटी तक तो खाती नहीं!"

सो अलावघर ने उसे नहीं वताया। नन्ही लड़की फिर दौड़ने लगी। कुछ दूर आगे उसे सेव का एक पेड़ मिला।

"सेव के पेड़, सेव के पेड़, मुझे यह वताओ कि हंस कहां उड़ कर गये हैं?"

"मेरा एक जंगली सेव खा लो, मैं वता दूंगा," पेड़ ने कहा।

"मेरे बाप के यहां तो वग़ीचे के सेव भी नहीं खाये जाते!"

सो सेव के पेड़ ने उसे नहीं वताया। नन्ही लड़की फिर दौड़ने लगी। कुछ दूर आगे उसे दूध की नदी मिली जिसके किनारे फलों की मिठाई के वने थे।

"मिठाई के किनारे वाली दूध की नदी, मुझे यह वताओ कि हंस कहां उड़ कर गये हैं?"

"दूध के साथ मेरी थोड़ी मिठाई खाओ, मैं वता दूंगी।"

"मेरे वाप के यहां तो मलाई के साथ भी मिठाई नहीं खाई जाती।"

सो दूध की नदी ने भी उसे नहीं वताया।

नन्ही लड़की दिन भर जंगलों और मैदानों में दौड़ती रही।

जब शाम हो आयी तो बेचारी को घर लौट जाना पड़ा। और क्या करती? तभी यकायक उसे क्या दिखाई दिया कि एक छोटी-सी झोंपड़ी है जिसके मुर्ग़ी जैसे पंजे हैं और एक नन्ही-सी खिड़की है और वह झोंपड़ी इस तरह गोल-गोल घूम रही है जैसे लट्टू घूमता हो।

झोंपड़ी के अन्दर बाबा-यगा नाम की एक बूढ़ी चुड़ैल बैठी सन कात रही थी। और उसके सामने बेंच पर लड़की का नन्हा भैया बैठा चांदी के सेबों से खेल रहा था।

नन्ही लड़की झोंपड़ी के अन्दर चली गयी।

"नमस्ते, दादी!"

"नमस्ते, लड़की। तुम किस लिए आयी हो यहां?"

"मैं कीचड़ और काई में घूमती रही हूं। इसलिए मेरा फ़्राक भीग गया है, सो उसे सुखाने आयी हूं।"

"तो बैठ जाओ और कुछ सन कातो!"

चुड़ैल ने चर्खा लड़की को दे दिया और वह बाहर चली गयी। नन्ही लड़की वहां बैठी कात रही थी कि इतने में यकायक चूल्हे के नीचे से निकल कर एक चूहा दौड़ता हुआ आया और बोला:

"लड़की, लड़की, मुझे कुछ दलिया दे तो मैं तुझे एक अच्छी बात बताऊं।"

नन्ही लड़की ने उसे कुछ दलिया दे दिया। तब चूहा बोला:

"चुड़ैल ग़ुसलख़ाने में आग जलाने गयी है। वह तुम्हें

नहला-धुला कर अलावघर में भूनेगी और फिर खा जायेगी, और तुम्हारी हड्डियों पर सवारी करेगी।"

नन्ही लड़की डर के मारे रोने और थर-थर कांपने लगी, लेकिन चूहा कहता गया:

"जल्दी करो, अपने नन्हे भैया को साथ लेकर भाग जाओ, और तुम्हारी जगह सन में कातता रहूंगा।"

सो नन्ही लड़की अपने नन्हे भैया को गोद में लेकर भाग गयी। चुड़ैल कभी-कभी खिड़की के पास आकर पूछ जाती:

"लड़की, कात रही है न?"

और चूहा उसे जवाब दे देता:

"हां, दादी, कात रही हूं।"

ग़ुसलख़ाने में आग जला कर चुड़ैल नन्ही लड़की को लेने आयी तो उसने देखा कि झोंपड़ी खाली है। चुड़ैल चिल्लायी:

"उड़ कर जाओ, हंसो, उड़ कर जाओ और दोनों को पकड़ कर लाओ! बहिन अपने नन्हे भैया को उठा ले गयी है।"

बहिन अपने नन्हे भैया के साथ भागते भागते दूध की नदी के पास पहुंची, और तभी उसने क्या देखा कि हंस उसे और उसके भैया को पकड़ने के लिए उड़ते आ रहे हैं।

"नदी मां, नदी मां, मुझे छिपा लो, जल्दी!" नन्ही लड़की चिल्लायी।

"मेरी फलों की मिठाई खानी पड़ेगी!"

लड़की ने थोड़ी मिठाई खा ली और कहा: "धन्यवाद!"

सो दूध की नदी ने उसे और उसके भैया को फलों की मिठाई के अपने किनारे की छाया में छिपा लिया।

और हंसों ने उनको नहीं देखा और वे उड़ते हुए आग चले गये।

लड़की नन्हे भैया के साथ आगे बढ़ी। लेकिन उधर हंस भी लौट पड़े थे और सीधे उसी की तरफ़ उड़ते आ रहे थे। लगता था कि अभी उनकी नज़र उस पर पड़ी कि पड़ी। अब वह क्या करे? वह दौड़ कर सेब के पेड़ के पास पहुंची।

"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे छिपा लो, जल्दी!"

"मेरा जंगली सेब खाना पड़ेगा!"

नन्ही लड़की ने जल्दी-जल्दी एक सेब खा कर कहा: "धन्यवाद!" सेब के पेड़ ने उसे अपने पत्तों और टहनियों में छिपा लिया।

हंसों ने उसे नहीं देखा और आगे चले गये।

नन्ही लड़की ने अपने भैया को उठा कर फिर दौड़ना शुरू कर दिया। वह घर के बिल्कुल नज़दीक पहुंच गयी थी कि हंसों की उस पर नज़र पड़ गयी। उन्होंने उसे देखते ही चीख़ना और पंख फड़फड़ाना शुरू कर दिया। एक मिनट और बीतता तो वे झपट्टा मार कर नन्हे भैया को लड़की के हाथों से छीन ले जाते।

पर नन्ही लड़की दौड़ कर अलावघर के पास पहुंच गयी।

"अलावघर, अलावघर, मुझे छिपा लो, जल्दी!"

"मेरी काली रोटी खानी पड़ेगी!"

लड़की ने जल्दी से रोटी का एक टुकड़ा तोड़ कर मुंह में डाल लिया और अपने भैया को लेकर अलावघर में घुस गयी।

हंस कुछ देर तक चीखते और चिल्लाते हुए अलावघर के चारों ओर चक्कर काटते रहे; फिर थक कर वे वापिस चुड़ैल के पास चले गये।

नन्हीं लड़की ने अलावघर को धन्यवाद दिया और अपने भैया को लेकर वह घर दौड़ गयी।

और थोड़ी ही देर बाद उसके मां-बाप भी घर लौट आये।

ख़वरोशेचका

दुनिया में भले लोग हैं और बुरे भी। कुछ ऐसे ढीठ भी हैं जिन्हें अपनी दुष्टता के लिए भी कभी शर्म नहीं आती।

छोटी ख़वरोशेचका दुर्भाग्यवश ऐसे ही लोगों के बीच जा फंसी। वह यतीम थी और उन्होंने काम लेने की ग़र्ज़ से अपने घर में रख लिया। काम कर-करके उसकी बुरी हालत हो गयी। वह सूत कातती, बुनती और घर का सारा धन्धा करती। बात बात पर उसकी जवाब तलबी भी होती।

अब, घर की मालकिन की तीन बेटियां थीं। सबसे बड़ी एक आंख वाली, दूसरी दो आंखों वाली और तीसरी सबसे छोटी तीन आंखों वाली थी।

तीनों बहनें दिन भर कुछ काम न करके फाटक पर बैठी रहतीं और गली में होनेवाला तमाशा देखा करतीं। दूसरी ओर छोटी खबरोशेचका उनके लिए सिलाई करती, सूत कातती तथा कपड़ा बुनती और बदले में कभी दो मीठे शब्द भी सुनने को न मिलते।

छोटी खबरोशेचका बाहर खेत में जाती और अपनी चितकबरी गाय के गले में बांहें डाल देती और अपना दुख-दर्द कह सुनाती।

"मेरी प्यारी गौ-माता," वह कहती, "वे मुझे पीटते और डांटते हैं, मुझे भूखों मारते हैं और फिर रोने भी नहीं देते। मुझे कल तक पांच पूद पटसन कात, बुन, धो और लपेट कर देना है।"

और गाय जवाब में कहती:

"मेरी नन्ही गुड़िया, तुम्हें सिर्फ़ मेरे एक कान में दाखिल होकर दूसरे से बाहर निकलना भर है और बस, तुम्हारा सब काम हो जायेगा।"

गाय ने जैसा कहा था वैसा ही हुआ। छोटी खबरोशेचका एक कान में दाखिल होकर दूसरे में से बाहर निकल आई। और लो! वह रखा है कपड़ा—कता, धुला और लिपटा हुआ।

छोटी ख़वरोशेचका तब कपड़े के थानों को अपनी मालकिन के पास ले जाती। मालकिन उन्हें देखकर बड़बड़ाती और सन्दूक़ में बन्द करके छोटी ख़वरोशेचका को पहले से भी अधिक काम दे देती।

छोटी ख़वरोशेचका फिर चितकबरी गाय के पास जाती, उसके गले में बांहें डालकर थपथपाती, एक कान में दाख़िल होकर दूसरे में से निकल आती और फिर तैयार कपड़ा लेकर मालकिन के पास पहुंच जाती।

एक दिन बुढ़िया ने अपनी एक आंखवाली बेटी को अपने पास बुलाया और कहा:

"मेरी अच्छी बेटी, मेरी सुन्दर बेटी, जाओ और जाकर देखो कि इस यतीम लड़की की इसके काम में कौन मदद करता है। यह पता लगाओ कि कौन कातता और कपड़ा बुनकर लपेटता है?"

एक आंख वाली लड़की, छोटी ख़वरोशेचका के साथ जंगल में गयी और उसके साथ-साथ खेत में भी।

मगर वह अपनी मां का आदेश भूल गयी और धूप से परेशान हो कर घास पर लेट रही। ख़वरोशेचका बड़बड़ायी:

"सोओ, छोटी आंख, सोओ!"

लड़की ने अपनी आंख बन्द की और सो गयी।

जब वह सो रही थी, गाय ने तभी कपड़ा बुना, धोया और लपेट दिया।

मालकिन को कुछ भी मालूम न हो सका, इसलिए उसने अपनी दूसरी दो आंखोंवाली वेटी वुलायी।

"मेरी अच्छी वेटी, मेरी प्यारी सुन्दर विटिया, जाओ और जाकर देखो कि इस यतीम लड़की की इसके काम में कौन मदद करता है।"

दो आंखों वाली, छोटी ख़वरोशेचका के साथ गयी, मगर वह अपनी मां की वात भूल गयी और धूप से परेशान हो कर घास पर लेट गयी। छोटी ख़वरोशेचका ने लोरी गायी:

"सोओ, नन्ही आंख! सोओ, दूसरी आंख, सोओ।"

दो आंखों वाली ने अपनी आंखें वन्द कीं और सो गयी।

जब वह सो गयी तो गाय ने कपड़ा वुना, धोया और लपेट कर तैयार कर दिया।

वूढ़ी मालकिन वेहद नाराज़ हुई और तीसरे दिन उसने तीन आंखों वाली अपनी तीसरी वेटी को, छोटी ख़वरोशेचका के साथ जाने को कहा। उस दिन उसने ख़वरोशेचका को पहले से अधिक काम करने के लिए दिया।

तीन आंखों वाली देर तक धूप में खेलती और कूदती फांदती रही। अन्त में वह परेशान होकर घास पर लेट गयी। तव छोटी ख़वरोशेचका ने गाया:

"सोओ, नन्ही आंख! सोओ, दूसरी आंख, सोओ।"

मगर वह तीसरी आंख के वारे में विल्कुल भूल गयी।

तीन में से दो आंखें सो गयीं, मगर तीसरी देखती रही

और उसने सब कुछ देखा। उसने देखा कि छोटी ख़वरोशेचका गाय के एक कान में प्रवेश करके दूसरे से बाहर निकली और तैयार कपड़ा लेकर घर को चल दी।

तीन आंखों वाली ने घर आकर मां को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था। बुढ़िया बेहद ख़ुश हुई और अगले दिन ही उसने अपने पति से कहा:

"जाओ, जाकर चितकबरी को मार डालो।"

बूढ़ा बहुत हैरान हुआ और उससे तर्क करने की कोशिश करने लगा।

"क्या तुम्हारा सिर फिर गया है, बुढ़िया?" उसने कहा। "गाय बहुत अच्छी और छोटी उम्र की है।"

"बहस की ज़रूरत नहीं, बस, इसे मार डालो!" बीवी ने ज़ोर देकर कहा।

बूढ़े के लिए इसके सिवा कोई चारा न था और उसने अपनी छुरी तेज़ करनी शुरू की।

छोटी ख़वरोशेचका ने यह हाल देखा तो दौड़ी खेत की तरफ़। वहां पहुंचकर उसने अपनी बांहें चितकबरी के गले में डाल दीं।

"गाय-माता, गाय-माता," उसने कहा, "वे तुम्हें मारने की तैयारी कर रहे हैं।"

गाय ने जवाब दिया:

"दुखी मत होवो, मेरी प्यारी गुड़िया! जैसा मैं कहती

हूं वैसा करना। तुम मेरा मांस मत खाना, मेरी हड्डियां ले कर रूमाल में बांध लेना और उन्हें बग़ीचे में दबा कर हर रोज़ पानी से सींचना। मुझे कभी मत भूलना।"

बूढ़े ने गाय को मार डाला और छोटी ख़वरोशेचका ने वही कुछ किया जो गाय ने उसे करने के लिए कहा था। वह भूखी रही, मगर मांस नहीं छुआ। उसने हड्डियां बग़ीचे में दबा दीं और उन्हें हर रोज़ सींचती रही।

कुछ समय बाद उन हड्डियों में से सेब का एक पेड़ उग आया। वह एक अद्भुत पेड़ था। इसके सेब गोल और रसदार थे। इसकी झुकी हुई टहनियां चांदी की और सरसराते हुए पत्ते सोने के थे। जो कोई सवारी करता हुआ उधर से गुज़रता, देखने के लिए रुक जाता और जो कोई पैदल चलता हुआ आता, आंखें फाड़-फाड़ के देखता रह जाता।

इसी तरह बहुत या कम वक़्त गुज़रा। एक दिन वे तीनों बहनें बाहर बग़ीचे में घूम रही थीं! तभी अचानक एक युवक घुड़सवार उधर आ निकला। उसके सुन्दर घुंघराले बाल थे, वह बलवान और अमीर था। जब उसने रसदार सेब देखे तो रुक गया और लड़कियों से हंसी-मज़ाक करते हुए कहने लगा:

"रूपसियो! मैं उसी से शादी करूंगा जो सबसे पहले उस पेड़ का सेब लाकर देगी।"

वे तीनों बहनें तेज़ी से सेब के पेड़ की ओर दौड़ीं। हरेक दूसरी से आगे निकलने की कोशिश कर रही थी।

लेकिन वे सेब जो कि बहुत नीचे लटक रहे थे और लगता था कि आसानी से तोड़े जा सकते हैं अब ऊंचे हो गये और बहनों के सिरों के ऊपर लटकते दिखाई देने लगे।

बहनों ने सेब झाड़ने की कोशिश की। सेवों की जगह सारे पत्ते नीचे आ गिरे जिससे उनकी आंखें अन्धी हो गयीं। उन्होंने पेड़ पर चढ़ना चाहा मगर शाखाएं उनकी चोटियों में उलझ गयीं। उनके बाल बिखर गये। उन्होंने हर तरह सेबों तक पहुंचने की कोशिश की मगर सफल न हो पायीं और हाथों को घायल करके ही रह गयीं।

तब छोटी खवरोशेचका पेड़ के पास गयी। उसके जाते ही शाखाएं झुक गयीं और सेब उसके हाथ में आ गये। उसने उस धनी और सुन्दर युवक को एक सेब दिया। युवक ने उससे शादी कर ली। उस दिन के बाद खवरोशेचका ने कभी कोई दुख नहीं जाना और वह सदा सुखी जीवन बिताती रही।

अल्योनुशका और भाई इवानुशका

एक वक़्त का ज़िक्र है कि कहीं एक बूढ़ा और उसकी बीवी रहते थे। उनकी एक बेटी अल्योनुशका और नन्हा-सा बेटा इवानुशका था। अचानक बूढ़ा और बूढ़ी चल बसे और अल्योनुशका और इवानुशका इस बड़ी दुनिया में अकेले रह गये।

अल्योनुशका अपने छोटे भाई को साथ लेकर, काम की खोज में घर से निकल पड़ी। उन्हें बहुत लम्बा सफ़र तय करना था। वे चलते रहे, चलते रहे फिर उन्होंने एक खेत पार किया। तब इवानुशका को ज़ोरों की प्यास लग आयी।

"प्यारी बहन अल्योनुशका, मुझे प्यास लगी है," उसने कहा।

"सब्र करो, प्यारे भाई, हम जल्द ही किसी कुएं के पास पहुंच जायेंगे।"

चलते चलते सूरज ऊंचा हो गया, धूप परेशान करने लगी, पसीना बहने लगा, मगर कुआं अब भी दूर था। अचानक उन्हें पानी से भरा हुआ गाय के खुर का एक निशान दिखाई दिया।

"प्यारी बहन अल्योनुशका, मैं यहां से पानी पी लूं?"

"नहीं प्यारे भाई, तू बछड़ा हो जायेगा।"

नन्हे इवानुशका ने बहन की बात मान ली और वे थोड़ी दूर और आगे बढ़ गये।

चलते चलते सूरज ऊंचा हो गया, धूप परेशान करने लगी, पसीना बहने लगा, मगर कुआं अब भी दूर था! तब वे पानी से भरे हुए घोड़ों के सुमों के निशान के पास पहुंचे।

"प्यारी बहन अल्योनुशका, क्या मैं यहां से पानी पी लूं?"

"नहीं, प्यारे भाई, तू बछेड़ा हो जायेगा।"

इवानुशका ने आह भरी और वे आगे चल दिये।

चलते चलते सूरज ऊंचा हो गया, धूप परेशान करने लगी, पसीना बहने लगा, मगर कुआं अब भी दूर था। तब वे पानी से भरे बकरी के खुर के निशान के पास पहुंचे।

"प्यारी बहन अल्योनुशका, मैं प्यास से मरा जा रहा हूं। यहां से पानी पी लूं?" इवानुशका ने पूछा।

"नहीं, नन्हे भाई, तू मेमना बन जायेगा।"

मगर इवानुशका ने अपनी बहन की बात न मानी और वहां से पानी पी लिया।

ऐसा करते ही वह मेमना बन गया...

अल्योनुशका ने अपने भाई को पुकारा, और इवानुशका की जगह उसके पीछे एक मेमना दौड़ता हुआ आया।

अल्योनुशका फूट-फूट कर रोने लगी। वह सुबकती हुई सूखी घास के ढेर की छाया में बैठी थी जब कि मेमना उसके इर्द-गिर्द फुदकता-फिरता था।

तभी अचानक एक सौदागर घोड़े की सवारी करता हुआ वहां से गुज़रा।

"तुम किसलिए रो रही हो, सुन्दरी?" उसने पूछा।

अल्योनुशका ने उसे अपनी मुसीबत बतायी। सौदागर ने कहा:

"रूपसी, मुझसे शादी कर लो। मैं तुम्हें सोने-चांदी से लाद दूंगा और यह मेमना भी हमारे साथ रहेगा।"

अल्योनुशका ने इस पर कुछ देर तक विचार किया और सौदागर से शादी करने के लिए राजी हो गयी।

वे दोनों सुख से रहने लगे। मेमना भी उनके साथ था। वह अल्योनुशका के साथ एक ही प्याले में से खाता पीता।

एक दिन सौदागर घर से वाहर गया हुआ था।

अचानक ही कहीं से एक राक्षसी वहां आ पहुंची। वह अल्योनुशका की खिड़की के नीचे खड़ी होकर उसे नदी-तट पर जा कर स्नान करने के लिए उकसाने लगी।

अल्योनुशका राक्षसी के पीछे पीछे चल दी। वहां पहुंचने पर राक्षसी उसके ऊपर चढ़ वैठी। उसने, उसकी गर्दन के गिर्द एक भारी पत्थर वांधकर उसे नदी में फेंक दिया।

तव राक्षसी ने अल्योनुशका का रूप धारण किया, उसके कपड़े पहने और उसके घर जा पहुंची। कोई भी यह अनुमान न लगा पाया कि वह राक्षसी है। यहां तक कि घर लौटने पर सौदागर भी यह न जान सका।

केवल मेमना जानता था कि क्या घटना घटी है। वह मुंह लटकाये इधर-उधर घूमता रहा और उसने खाने-पीने की कोई भी चीज़ छूई तक नहीं। सुवह-शाम वह नदी-तट पर जाता और यह गाता:

"खड़ा हुआ है नदी-किनारे
दीदी, भैया तुम्हें पुकारे
निकल नदी से वाहर आओ,
वहन अल्योनुशका, वाहर आओ।"

राक्षसी को इस वात का पता चल गया। अव वह मेमने को मार डालने के लिए अपने पति पर दवाव डालने लगी।

मेमने को मार डालने की बात सुन कर सौदागर को बेहद अफ़सोस होता। वह उसे बेहद चाहने लगा था। मगर राक्षसी मेमने को मारने के लिए सौदागर की लगातार आरज़ू-मिन्नत करती रही। अन्त में वह राजी हो गया।

"अच्छा तो मार डालो," उसने कहा।

राक्षसी ने बड़ी आग जलवायी, बड़े-बड़े पतीले गर्म करवाये और छुरियां तेज़ करवायीं।

मेमने ने समझ लिया कि उसका आख़िरी वक़्त क़रीब आ रहा है। इसलिए उसने अपने पिता-तुल्य सौदागर से कहा:

"मरने से पहले मुझे एक बार नदी पर हो आने की इजाजत दे दें। मैं अन्तिम बार नदी का पानी पीना चाहता हूं।"

"जाओ," सौदागर ने कहा।

मेमना नदी की तरफ़ दौड़ा। वह नदी-तट पर खड़ा हो कर भरी आवाज़ में पुकार-पुकार कर कहने लगा:

"दीदी अल्योनुश्का, प्यारी अल्योनुश्का,
बाहर आओ, बाहर आओ
तैर नदी से बाहर आओ।
आग जलायी उन लोगों ने,
कर लीं छुरियां तेज़, कड़ाहे उबल रहे हैं,
ले लेने को प्राण कि मेरे, जानी दुश्मन मचल रहे हैं।"

और अल्योनुशका न नदी में से जवाब दिया :

"भाई इवानुशका, प्यारे इवानुशका,
कैसे बाहर आऊं मैं, कैसे बाहर आऊं मैं।
कंधों से तो बंधा हुआ है पत्थर भारी,
नर्म दूब में उलझ रही, सारी की सारी।
बाधा पीली रेत कि मैं संकट की मारी।"

राक्षसी मेमने की खोज में गयी, परन्तु उसे कहीं न पा सकी। तब उसने एक नौकर बुलवाया और उससे यह कहा, "जाओ, जाकर मेमने को खोजो और उसे मेरे पास लाओ।"

नौकर नदी-तट पर गया और वहां उसने मेमने को तट पर इधर-उधर दौड़ते और दर्द भरी आवाज़ में यह कहते सुना :

"दीदी अल्योनुशका, प्यारी अल्योनुश्का
बाहर आओ, बाहर आओ
तैर नदी से बाहर आओ।
आग जलायी उन लोगों ने,
कर लीं छुरियां तेज़, कड़ाहे उबल रहे हैं,
ले लेने को प्राण कि मेरे, जानी दुश्मन मचल रहे हैं।"

और नदी में से एक आवाज़ सुनाई दी :

"भाई इवानुश्का, प्यारे इवानुश्का,
कैसे बाहर आऊं मैं, कैसे बाहर आऊं मैं।

कंधों से तो बंधा हुआ है पत्थर भारी,
नर्म दूब में उलझ रही, सारी की सारी।
बाधा पीली रेत कि मैं संकट की मारी।"

नौकर दौड़ता हुआ घर पहुंचा। नदी-तट पर उसने जो कुछ देखा-सुना था अपने मालिक से कह सुनाया।

सौदागर ने जब यह सुना तो बहुत से लोग साथ लेकर नदी-तट पर पहुंचा। उन्होंने नदी में एक रेशमी जाल डाला और अल्योनुशका को खींचकर बाहर निकाल लिया। उन्होंने उसकी गर्दन के गिर्द बंधा हुआ पत्थर खोला। उसे चश्मे के जल में स्नान करवाया और सुन्दर कपड़े पहनाये। अल्योनुशका फिर से ज़िन्दा हो गयी और अब वह पहले से भी कहीं अधिक सुन्दर हो गयी थी।

मेमने ने ख़ुशी से फूले न समाते हुए तीन क़लाबाज़ियां लगायीं और वह फिर से नन्हा मुन्ना इवानुशका बन गया।

उस दुष्टा राक्षसी को घोड़े की दुम से बांधकर खुले मैदान में छोड़ दिया गया।
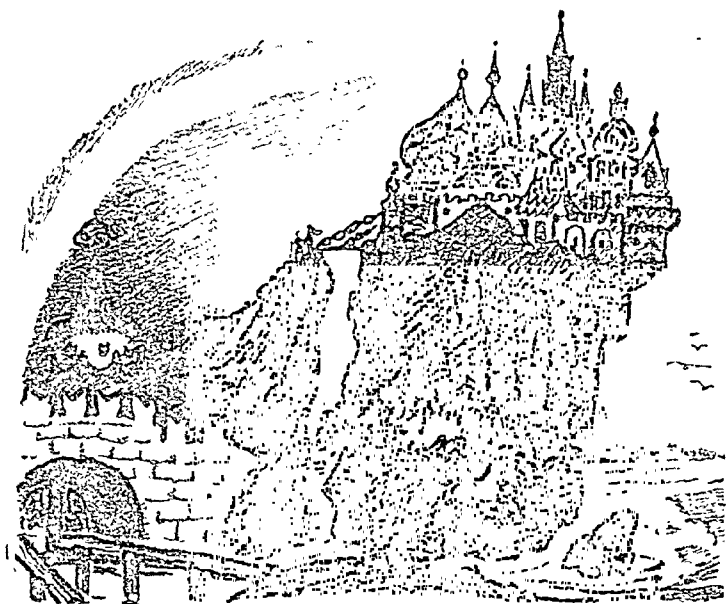
मेंढकी रानी

बहुत दिन पहले की बात है कि एक ज़ार था जिसके तीन बेटे थे। जब बेटे बड़े हो गये तो ज़ार ने उन्हें बुला कर कहा:

"मेरे प्यारे लड़को, मैं चाहता हूं कि तुम लोगों की शादी हो जाये, ताकि मरने से पहले मैं तुम्हारे बच्चों को, यानी, अपने पोतों को भी देख लूं।"

उसके बेटों ने जवाब दिया:

"बहुत अच्छा, पिता जी, हमें आशीर्वाद दीजिये। बताइये, हम किससे शादी करें?"

"तुम तीनों एक-एक तीर लेकर खुले मैदान में जाओ और वहां पहुंच कर तीर छोड़ो। जहां तुम्हारा तीर गिरेगा, वहीं तुम्हारी शादी होगी।"

सो तीनों लड़कों ने बाप को प्रणाम किया, एक-एक तीर लिया और खुले मैदान में चले गये। वहां उन्होंने अपना-अपना तीर धनुष पर चढ़ा कर छोड़ दिया।

सबसे बड़े लड़के का तीर एक जागीरदार के आंगन में जाकर गिरा और उसे जागीरदार की लड़की ने उठा लिया। मंझले लड़के का तीर एक सौदागर के आंगन में जाकर गिरा और उसे सौदागर की लड़की ने उठा लिया।

लेकिन सबसे छोटे लड़के का तीर आसमान की तरफ़ दूर उड़ गया और वह नहीं देख सका कि वह कहां जाकर गिरा है। इस लड़के का नाम था राजकुमार इवान। वह अपने तीर की तलाश में चला और चलता ही गया। आखिर वह एक दलदल के पास पहुंचा, जहां उसने क्या देखा कि एक मेंढ़की उसके तीर को मुंह में दबाये हुए एक पत्ते पर बैठी है। राजकुमार इवान ने उससे कहा:

"मेंढ़की, मेंढ़की, मुझे मेरा तीर लौटा दे!"

मेंढ़की ने जवाब दिया:

"मुझसे शादी करनी पड़ेगी!"

"यह तुम क्या कहती हो? मेंढ़की से मैं कैसे शादी कर सकता हूं?"

"मुझसे ही शादी करनी पड़ेगी। तुम्हारे भाग्य में यही लिखा है।"

राजकुमार इवान बहुत दुखी और निराश हुआ, मगर क्या कर सकता था बेचारा? वह मेंढ़की को उठा कर अपने घर ले आया। ज़ार ने तीन शादियां रचायीं। सबसे बड़े लड़के की शादी जागीरदार की बेटी से हुई, मंझले लड़के की सौदागर की बेटी से, और बेचारा इवान मेंढ़की से ब्याहा गया।

एक दिन ज़ार ने अपने बेटों को बुलाकर कहा:

"मैं यह देखना चाहता हूं कि तुम तीनों की बीवियों में से कौन सबसे अच्छा सीना-पिरोना जानती है। जाओ, उनसे कहो कि कल सुबह तक हरेक एक-एक क़मीज़ सी कर मुझे दे।"

तीनों बेटों ने बाप को प्रणाम किया और चले आये।

राजकुमार इवान घर लौटा तो बहुत दुखी था। जा कर एक कोने में बैठ गया। मेंढ़की फ़र्श पर फुदकती हुई उसके पास आयी और बोली:

"राजकुमार इवान, इतने दुखी क्यों हो? क्या कोई मुश्किल आ पड़ी है?"

"मेरे पिता जी चाहते हैं कि तुम कल सुबह तक उनके लिए एक क़मीज़ सी कर दो!"

मेंढ़की ने जवाब दिया:

"हिम्मत न हारो, राजकुमार इवान! जाओ, जाकर सो जाओ! रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

सो राजकुमार इवान सोने चला गया और मेंढ़की फुदकती फुदकती बाहर ओसारे में पहुंची। वहां उसने मेंढ़की की खाल उतार डाली और दुनिया की सब स्त्रियों से सुन्दर और सबसे बुद्धिमती वासिलीसा बन गयी।

उसने ताली बजा कर ज़ोर से कहा:

"मेरी दासियो और दाइयो, तैयार हो जाओ और संभल कर काम करो! कल सुबह तक तुम्हें ठीक वैसी ही एक क़मीज़ सी कर मुझे देनी है जैसी मेरे पिता जी पहना करते थे!"

राजकुमार इवान जब सुबह सो कर उठा तो मेंढ़की फिर फ़र्श पर फुदक रही थी, और मेज़ पर एक तौलिये में लिपटी हुई क़मीज़ रखी थी। राजकुमार इवान उसे देख कर बहुत खुश हुआ। वह क़मीज़ उठाकर अपने बाप के पास ले गया। उसने देखा कि उसके दो भाई भी एक-एक क़मीज़ लेकर आये हैं। जब सबसे बड़े लड़के ने अपनी क़मीज़ ज़ार के सामने फैला कर रखी तो ज़ार ने कहा:

"यह क़मीज़ तो मेरे किसी नौकर के लिए ठीक रहेगी।"

जब मंझले लड़के ने अपनी क़मीज़ फैला कर रखी तो ज़ार ने कहा:

"यह सिर्फ़ गुसलखाने में काम आ सकती है।"

अब राजकुमार इवान ने अपनी क़मीज़ ज़ार के सामने फैलायी। उसपर सोने और चांदी का सुन्दर क़सीदा कढ़ा हुआ था। ज़ार ने उसपर एक नज़र डालते ही कहा:

"हां, यह है क़मीज़ – त्योहार के दिन पहनने लायक़!"

बड़ा और मंझला भाई घर लौट गये। उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

"हम लोग राजकुमार इवान की बीवी पर वृथा ही हंसे थे – मालूम होता है, वह मेंढ़की नहीं, जादूगरनी है।"

ज़ार ने एक रोज़ फिर अपने बेटों को बुलाया:

"अपनी बीवियों से कहो कि कल सुबह तक मेरे लिए रोटी पका कर तैयार करें," उसने कहा। "मैं देखना चाहता हूं कि कौनसी बहू सबसे अच्छा खाना पकाती है।"

राजकुमार इवान घर लौटा तो फिर बहुत उदास था। मेंढ़की ने पूछा:

"इतने उदास क्यों हो, राजकुमार?"

"ज़ार चाहते हैं कि कल सुबह तक तुम उनके लिए रोटी पका कर तैयार कर दो," राजकुमार ने जवाब दिया।

"हिम्मत न हारो, राजकुमार इवान। जाओ, जाकर सो जाओ। रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अब ज़ार की जो दूसरी दो बहुएं थीं, उन्होंने पहले तो मेंढ़की का मज़ाक बनाया था, पर इस बार उन्होंने एक बुढ़िया

को यह देखने के लिए भेजा कि मेंढ़की रोटी किस तरह पकाती है।

लेकिन मेंढ़की चालाक थी। वह उनकी चाल समझ गयी। उसने आटा गूंधा और अलावघर का ऊपर वाला सिरा तोड़ कर सारा आटा सीधे उस सूराख़ में डाल दिया। बुढ़िया दौड़ती हुई गयी और उसने जो कुछ देखा था सब ज़ार की बहुओं से कह सुनाया। और उन दोनों ने भी वही किया जो मेंढ़की ने किया था।

उधर मेंढ़की फिर फुदकती हुई बाहर ओसारे में पहुंची और वहां वह बुद्धिमती वासिलीसा बन गयी, और ताली बजा कर उसने हुक्म दिया: "मेरी दासियो और दाइयो, तैयार हो जाओ और संभल कर काम करो! कल सुबह तक तुम्हें वैसी ही एक सफ़ेद और मुलायम रोटी पका कर मुझे देनी है जैसी मैं घर पर खाया करती थी।"

राजकुमार इवान सुबह सो कर उठा तो उसने देखा कि मेज़ पर एक डबल रोटी रखी हुई है। उसपर तरह-तरह के सुन्दर चित्र बने हुए हैं, दोनों तरफ़ कुछ विचित्र-सी आकृतियां बनी हुई हैं, और ऊपर दीवारों और फाटकों समेत राजधानी का चित्र अंकित है।

राजकुमार इवान की ख़ुशी का ठिकाना न था। उसने रोटी को एक तौलिये में लपेट लिया और अपने बाप के पास ले गया। उसके दोनों बड़े भाई भी उसी वक़्त अपनी अपनी

रोटी लेकर ज़ार के पास पहुंचे थे। उनकी बीवियों ने, जैसा उस बुढ़िया ने उन्हें बताया था, ठीक वैसे ही अपना आटा अलावघर में डाल दिया था और वह उसी शक्ल में जल-भुन कर बाहर निकल आया था। ज़ार ने पहले अपने सबसे बड़े लड़के की रोटी हाथ में ली, उसे देखा, और देख कर नौकरों के यहां भिजवा दिया। फिर उसने अपने मंझले लड़के की रोटी हाथ में ली, उसे देखा, और देख कर उसे भी वहीं भिजवा दिया। मगर जब राजकुमार इवान ने अपनी रोटी ज़ार के हाथ में दी तो उसने कहा:

"यह है जिसे सचमुच रोटी कहा जा सकता है। यह केवल त्योहार के दिन खाने के लायक़ है।"

और ज़ार ने अपने तीनों बेटों से कहा कि कल उसके यहां दावत है, उसमें वे अपनी बीवियों को साथ लेकर आवें।

राजकुमार इवान घर पहुंचा तो फिर शोक में डूबा हुआ था। मेंढ़की फुदकती हुई आयी और बोली:

"टर्र, टर्र, तुम इतने दुखी क्यों हो, राजकुमार इवान? क्या तुम्हारे पिता ने कोई सख़्त-सुस्त बात कह दी है?"

"मेंढ़की, मेंढ़की, मैं उदास कैसे न होऊं? पिता जी चाहते हैं कि मैं तुम्हें साथ लेकर दावत में जाऊं, लेकिन बताओ तो, तुम कैसे मेरी पत्नी के रूप में सबके सामने जा सकती हो?"

"हिम्मत न हारो, राजकुमार इवान," मेंढ़की ने कहा। "तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं बाद में आऊंगी। जब तुम

खटखट-फटफट का शोर सुनो तो डरना नहीं। कोई पूछे तो कहना कि मेरी मेंढ़की अपने बक्से में बैठ कर आयी होगी।"

सो राजकुमार इवान अकेला ही दावत में चला गया। उसके दोनों भाई अपनी बीवियों को साथ लेकर आये थे। उन्होंने अपने चेहरे खूब रंग-चुन रखे थे और वे बड़े सुन्दर कपड़े पहन कर आयी थीं। दोनों भाई राजकुमार इवान को बनाने लगे।

"कहो, अपनी बीवी को क्यों नहीं लाये? अरे, अपने रूमाल में बांध लाते उसे! भई, सचमुच यह सुन्दरी तुम्हें मिली कहां? सारी दुनिया के दलदल खोज मारे होंगे तुमने उसके लिए!"

ज़ार, उसके लड़के और उसकी बहुएं और सारे मेहमान खाना खाने के लिए बैठ गये। खाने की चीज़ें बलूत की लकड़ी की बनी मेज़ों पर चुनी हुई थीं जिनपर खूबसूरत मेज़पोश बिछे हुए थे। इतने में यकायक खटखट-फटफट का ऐसा शोर हुआ कि पूरा महल हिल उठा। मेहमान डर के मारे खाना छोड़ कर खड़े हो गये। लेकिन राजकुमार इवान ने सब को समझाया:

"डरो मत, दोस्तो, वह तो मेरी मेंढ़की है जो अपने बक्से में बैठ कर आ रही है।"

इतने में एक सोने का पत्तर चढ़ी गाड़ी, जिस में छः सफ़ेद घोड़े जुते हुए थे, बड़ी तेज़ी के साथ दौड़ती हुई महल के फाटक के सामने आकर खड़ी हो गयी। उसमें से उतरी बुद्धिमती वासिलीसा। उसने आकाश जैसे नीले रेशम की पोशाक पहन रखी थी जिस पर जगह-जगह तारे जड़े हुए थे, और उसके माथे पर एक

चांद चमक रहा था। वह उषा जैसी सुन्दर थी, बल्कि कहना चाहिए कि ऐसी सुन्दरी संसार में कभी पैदा ही नहीं हुई थी। उसने राजकुमार इवान का हाथ पकड़ लिया और उसे बलूत की लकड़ी की बनी उन मेज़ों की तरफ़ ले गयी जिन पर ख़ूबसूरत मेज़पोश बिछे हुए थे।

मेहमान आनन्द के साथ खाने-पीने लगे। बुद्धिमती वासिलीसा अपने गिलास से मदिरा पीती थी और जो कुछ उसमें बच जाता था उसे अपनी बायीं आस्तीन में उंडेल देती थी। फिर उसने हंस का थोड़ा-सा गोश्त खाया और हड्डियां अपनी दायीं आस्तीन में डाल दीं।

बड़े और मंझले राजकुमारों की बीवियों ने उसे यह करते हुए देखा तो उन्होंने भी उसकी नक़ल की।

जब खाना-पीना समाप्त हो गया तो नृत्य करने का समय आया। बुद्धिमती वासिलीसा राजकुमार इवान का हाथ पकड़ कर नाचने लगी। वह फिरकी की तरह चक्कर खा रही थी और नाच रही थी और हर आदमी देख-देख कर आश्चर्य कर रहा था। इतने में उसने बायीं आस्तीन हिलायी, और वाह! — एक झील दिखाई देने लगी। और फिर उसने अपनी दायीं आस्तीन हिलायी और सफ़ेद हंस झील पर तैरने लगे। ज़ार और सारे मेहमान आश्चर्यचकित रह गये।

फिर ज़ार की दूसरी बहुओं ने नृत्य आरम्भ किया। उन्होंने अपनी एक आस्तीन हिलायी तो मेहमानों पर शराब के छींटे

जा गिरे। और फिर उन्होंने दूसरी आस्तीन हिलायी तो पूरे हाल में हड्डियां ही हड्डियां बिखर पड़ीं, और एक हड्डी सीधे ज़ार की आंख में जा कर लगी। ज़ार गुस्से से आग-बबूला हो गया और उसने दोनों बहुओं को डांट-डपट कर भगा दिया।

इस बीच, राजकुमार इवान चुपचाप महल से निकल कर अपने घर दौड़ गया था। वहां उसने मेंढ़की की खाल पड़ी हुई देखी तो उसे उठा कर आग में फेंक दिया।

जब बुद्धिमती वासिलीसा घर लौटी तो मेंढ़की की खाल खोजने लगी: मगर वह होती तो मिलती। बहुत दुखी हो कर वह एक बेंच पर बैठ गयी और राजकुमार इवान से बोली:

"ओह राजकुमार इवान, तुमने यह क्या किया! तुम बस, तीन दिन और इन्तज़ार कर लेते तो मैं सदा-सदा के लिए तुम्हारी हो जाती। पर अब तो मुझे तुमसे विदा लेनी पड़ेगी। मुझे पाना चाहते हो तो नौ-तिया-सत्ताईस देश के परे दस-तिया-तीस राज्य में मेरी तलाश करना जहां कभी-न-मरनेवाला काश्चेई रहता है..."

यह कह कर बुद्धिमती वासिलीसा ने एक भूरी कोयल का रूप धारण किया और खिड़की के बाहर उड़ गयी। राजकुमार इवान बहुत देर तक रोता रहा। फिर उसने चारों दिशाओं को नमस्कार किया, और अपनी पत्नी, बुद्धिमती वासिलीसा की तलाश में चल दिया। वह कहां मिलेगी और वह किधर जा रहा था, उसे मालूम नहीं था। वह कितनी देर

तक चलता रहा यह कहना तो मुश्किल है, मगर इतना मालूम है कि उसके जूते फट गये थे और उसका कफ़्तान चिथड़े-चिथड़े हो गया था, और उसकी टोपी का बारिश-पानी से बुरा हाल हो गया था। चलते चलते उसे रास्ते में एक नाटा आदमी मिला जो बहुत ही बूढ़ा था।

"नमस्ते, वीर युवक," उस नाटे बूढ़े ने कहा। "तुम कहां जा रहे हो और किस इरादे से निकले हो?"

राजकुमार इवान ने अपनी मुसीबत उसे सुना दी।

"हाय, पर वह मेंढ़की की खाल तुमने क्यों जला दी, राजकुमार?" बूढ़े ने पूछा। "न तुमने उसे पहनाया था न तुम्हें उतारना चाहिए था। बुद्धिमती वासिलीसा जन्म से ही अपने पिता से भी अधिक ज्ञानी थी। इसलिए उसके पिता को इतना गुस्सा आया कि तीन बरस के लिए उसने उसे मेंढ़की बना दिया। पर अब क्या हो सकता है! ख़ैर, यह सूत का गोला लो और जिधर भी यह लुढ़कता जाये उधर ही बेख़ौफ़ चलते जाना!"

राजकुमार इवान ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और फिर सूत के उस गोले के पीछे-पीछे चलने लगा। गोला आगे-आगे लुढ़कता जाता था, राजकुमार उसके पीछे चलता जाता था। खुले मैदान में एक रीछ मिला। राजकुमार इवान निशाना लगा कर उसे मारने ही वाला था कि रीछ मनुष्य की आवाज में बोला:

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

राजकुमार इवान ने रीछ की जान बख़्श दी और आगे बढ़ा। यकायक उसने अपने सिर के ऊपर आसमान में एक बत्तख़ उड़ती देखी। उसने निशाना बांधा; पर इतने में बत्तख़ मनुष्य की आवाज़ में बोली :

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

उसने बतख़ की भी जान बख़्श दी, और वह आगे बढ़ा। रास्ते में एक ख़रगोश दौड़ता हुआ आ रहा था। राजकुमार इवान ने जल्दी से अपना धनुष कंधे से उतार कर फिर निशाना लगाना चाहा। मगर इतने में ख़रगोश मनुष्य की आवाज़ में बोला :

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

सो उसने ख़रगोश की जान भी बख़्श दी और वह आगे बढ़ा। रास्ते में एक नीला समुद्र मिला। राजकुमार ने देखा कि एक मछली समुद्र के किनारे पर पड़ी तड़प रही है।

"राजकुमार इवान," मछली ने कहा, "मुझ पर दया करो और मुझे उठा कर फिर नीले समुद्र में फेंक दो!"

सो राजकुमार ने मछली को उठा कर नीले समुद्र में फेंक दिया और वह समुद्र के किनारे-किनारे आगे बढ़ा। सूत का गोला लुढ़कते लुढ़कते एक जंगल के पास पहुंचा। वहां एक छोटा-सा

झोंपड़ा लट्टू की तरह घूम रहा था और उसके पैर मुर्गी के पंजों की तरह थे।

"नन्हे झोंपड़े, नन्हे झोंपड़े, पेड़ों की तरफ़ अपनी पीठ कर लो और मेरी तरफ़ अपना मुंह!"

झोंपड़े ने अपना मुंह राजकुमार की तरफ़ कर लिया और पीठ पेड़ों की तरफ़। राजकुमार इवान झोंपड़े के अन्दर चला गया। वहां अलावघर पर बाबा-यगा नाम की चुड़ैल लेटी थी। वह थी बुढ़िया ढड्डो और उसकी नाक थी ऐसी जैसी हो पेड़ की गांठ। उसने राजकुमार को देखा तो बोली:

"वीर युवक, तू मेरे पास किस लिए आया है? तू किसी काम के लिए जा रहा है या किसी काम से जी चुराकर भागा है?"

"बदमाश बुढ़िया!" राजकुमार इवान ने पलट कर जवाब दिया। "पहले मुझे कुछ खाने-पीने को दे और नहला-धुला और फिर पूछना अपने सवाल!"

सो बाबा-यगा ने उसे नहलाया-धुलाया, खाने को गोश्त और पीने को शराब दी और सोने के लिए बिस्तर लगा दिया। और तब राजकुमार इवान ने उसे बताया कि वह अपनी बीवी, बुद्धिमती वासिलीसा की तलाश में निकला है।

"मैं जानती हूं, मैं जानती हूं," बाबा-यगा ने कहा। "तुम्हारी बीवी अब कभी-न-मरनेवाले काश्चेई के कब्ज़े में है। उसे फिर से पाना बहुत मुश्किल है। काश्चेई का मुक़ाबला करना

बहुत कठिन है। उसकी जान एक सुई की नोक में रहती है; वह सुई एक अंडे में बन्द है; वह अंडा एक बत्तख़ के पेट में है; बत्तख़ एक ख़रगोश के पेट में है; ख़रगोश पत्थर के एक सन्दूक़ में बन्द है; सन्दूक़ बलूत के एक ऊंचे पेड़ के ऊपर रखा है। कभी-न-मरने वाला काश्चेई उस सन्दूक़ की अपनी आंख की पुतली की तरह हिफ़ाज़त करता है।"

राजकुमार इवान ने रात बाबा-यगा के यहां बितायी, और सुबह चुड़ैल ने उसे बलूत के उस ऊंचे पेड़ तक पहुंचने का रास्ता बता दिया। राजकुमार कितनी देर तक चलता रहा, यह बताना तो मुश्किल है, मगर चलते चलते वह बलूत के उस ऊंचे पेड़ के पास पहुंच गया। उसके ऊपर पत्थर का सन्दूक़ रखा था। मगर वह इतनी ऊंचाई पर रखा हुआ था कि उस तक पहुंचना नामुमकिन था।

इतने में रीछ दौड़ा-दौड़ा आया और उसने पेड़ को जड़ समेत उखाड़ कर गिरा दिया। संदूक़ धड़ाम से ज़मीन पर गिरा और गिर कर टूट गया। उसके अन्दर से एक ख़रगोश उछला और बड़ी तेज़ी के साथ एक तरफ़ को भाग गया। मगर दूसरे ख़रगोश ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ कर चीर डाला। ख़रगोश के पेट में से एक बत्तख़ निकली और उड़कर आसमान में चढ़ गयी। पर तभी दूसरी बत्तख़ उसके सिर पर जा पहुंची और एक ही झपट्टे में उसे नीचे गिरा दिया। बत्तख़ के पेट से अंडा गिरा और गिर कर नीले समुद्र में डूब गया।

यह देख कर राजकुमार इवान फूट-फूट कर रोने लगा। अब समुद्र में अंडे का कहां पता चलेगा? पर यकायक मछली अंडे को मुंह में लिए हुए आती दिखाई दी। राजकुमार इवान ने अंडे को तोड़ डाला और उसमें से सुई निकाल ली और फिर वह सुई की नोक को तोड़ने लगा। जितना ही वह उसे तोड़ता जाता था, उतना ही कभी-न-मरने वाला काश्चेई दर्द से तड़पता और चिल्लाता जाता था। लेकिन उसका तड़पना और चिल्लाना सब बेकार साबित हुआ। राजकुमार इवान ने सुई की नोक तोड़ डाली और उसके टूटते ही काश्चेई भी ज़मीन पर गिर कर मर गया।

राजकुमार इवान काश्चेई के सफ़ेद पत्थर के महल में गया। बुद्धिमती वासिलीसा दौड़ती हुई उससे मिलने को आयी और उसने राजकुमार के शहद जैसे ओंठों को चूम लिया। तब राजकुमार इवान और बुद्धिमती वासिलीसा अपने घर लौट गये और उनका बाक़ी जीवन बड़े सुख और शान्ति से बीता।
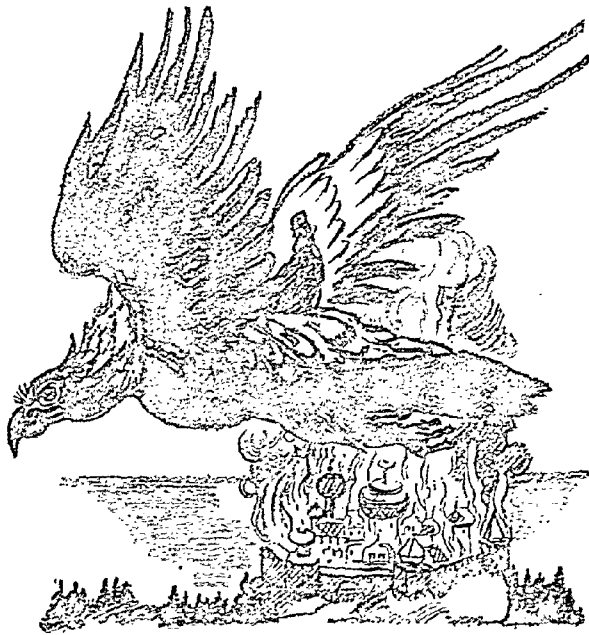
बुद्धिमती वासिलीसा

एक किसान ने रोश बोया और फ़सल इतनी अच्छी हुई कि उसे काटना मुश्किल हो गया। वह गड़े बांध कर घर ले गया, वहां उसने पीट-कूट कर अनाज निकाला और उसके कोठे रोश से ठसाठस भर गये। अनाज के कोठों को भरा देख कर उसने अपने मन में कहा: "अब मुझे दुनिया में किसी चीज़ की फ़िक्र नहीं है।"

तक लड़ते रहे। जीत का सेहरा बादशाह उक़ाब के सिर रहा और मैदान में उसके दुश्मनों की लाशों के ढेर लग गये। तब उसने अपने पक्षियों को अपने घर लौट जाने का हुक्म दिया और वह ख़ुद उड़ कर एक घने जंगल में चला गया। उसे गहरा ज़ख़्म लगा था जिससे बराबर ख़ून बह रहा था और उक़ाब बहुत कमज़ोरी और थकन महसूस कर रहा था। वह बलूत के एक बड़े पेड़ पर बैठ कर आराम करने लगा और सोचने लगा कि खोयी हुई ताक़त फिर से कैसे पायी जाये।

यह सब बहुत-बहुत बरस पहले की बात है। उस ज़माने में एक सौदागर और उसकी बीवी दोनों अकेले रहते थे। उनका जी ख़ुश करने के लिए कोई बच्चा नहीं था। एक दिन सुबह के वक़्त सौदागर ने अपनी बीवी से कहा:

"रात मुझे एक बुरा सपना दिखाई दिया। मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी चिड़िया हम लोगों के साथ रहने के लिए आयी है। वह एक पूरा भैंसा हड़प जाती है और एक नांद शराब एक ही घूंट में सटक जाती है लेकिन हम बहुत कोशिश करके भी अपना पिंड उससे न छुड़ा सके, और मजबूर हो कर हमें उसको खिलाना-पिलाना पड़ा। सोचता हूं, थोड़ा जंगल में टहल आऊं, शायद उससे मेरी तबीअत कुछ संभल जाये।"

सो अपनी बन्दूक़ उठा कर सौदागर जंगल में चला गया। कितनी देर तक वह चलता रहा यह तो कहना मुश्किल है, मगर आख़िर में वह बलूत के उस पेड़ के पास पहुंचा जिस पर उक़ाब

सौदागर का दिवाला निकाले दे रहा था। जब उक़ाब ने यह देखा तो उस ने सौदागर से कहा :

"भले आदमी, उस खुले मैदान में जा कर देखो, वहां बहुत से जानवर ज़ख़्मी और मरे हुए पड़े हैं। उनकी खाल उतार कर शहर में ले जाओ रोयेंदार खालें काफ़ी क़ीमत में बिकेंगी और उनसे जो रुपया आयेगा वह तुम्हारे और मेरे खाने-पीने के लिए काफ़ी होगा। और कुछ बच भी रहेगा।"

सौदागर खुले मैदान में गया और वहां उसने बहुत से ज़ख़्मी और मरे हुए जानवर पड़े हुए देखे। उसने उनकी खालें उतार डालीं और बेशक़ीमती रोयेंदार खालें शहर में बेचने के लिए ले गया और उनके बदले में उसे बहुत सारा रुपया मिला।

एक साल इसी तरह बीत गया। एक दिन उक़ाब ने सौदागर से कहा कि मुझे वहां ले चलो जहां बलूत के ऊंचे-ऊंचे पेड़ उगे हैं। सौदागर ने एक गाड़ी में घोड़ा जोता और उक़ाब को बैठा कर उस जगह ले गया। उक़ाब उड़ कर बादलों से भी ऊंचे जा पहुंचा और फिर बड़ी तेज़ी के साथ इस तरह नीचे उतरा कि उसकी छाती सीधे एक पेड़ से जा टकरायी। पेड़ के फट कर दो टुकड़े हो गये।

"नहीं, सौदागर," उक़ाब ने कहा, "अभी मेरी पुरानी ताक़त वापिस नहीं आयी है। अभी मुझे पूरे एक साल तक और खिलाना होगा।"

इस तरह एक साल और बीत गया। उक़ाब फिर उड़ कर काले बादलों से भी ऊंचे पहुंचा और वहां से एक पेड़ पर झपट्टा मारा। पेड़ के फट कर कई टुकड़े हो गये और ज़मीन पर गिर पड़े।

"अभी मुझे एक साल और खिलाना पड़ेगा, भले आदमी," उक़ाब ने कहा। "अभी मेरी पुरानी ताक़त वापिस नहीं आयी है।"

और इस तरह तीन साल, तीन महीने और तीन दिन बीत गये। तब उक़ाब ने सौदागर से कहा:

"मुझे फिर वहीं ले चलो जहां बलूत के ऊंचे-ऊंचे पेड़ उगे हैं।" और सौदागर उसे बलूत के ऊंचे पेड़ों के पास ले गया। इस बार उक़ाब उड़ कर पहले से भी अधिक ऊंचाई पर पहुंचा। फिर उसने सबसे बड़े पेड़ पर जो एक झपट्टा मारा तो फुंगल से लेकर जड़ तक पेड़ चकनाचूर हो गया और पूरा जंगल थरथर कांपने लगा।

"धन्यवाद, भले आदमी," उक़ाब ने कहा, "अब मेरी पुरानी ताक़त पूरी तरह वापिस आ गयी है। अपने घोड़े से उतर पड़ो और मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। मैं तुम्हें अपने घर ले चलूंगा और तुमने मुझ पर जितनी कृपा की है उस सबके लिए तुम्हें इनाम दूंगा।"

सौदागर उक़ाब की पीठ पर सवार हो गया, और उक़ाब नीले

समुद्र के ऊपर से उड़ता हुआ आकाश में अधिकाधिक ऊपर उठता गया।

"नीले सागर को देखो," उक़ाब ने सौदागर से कहा। "क्या बहुत बड़ा मालूम होता है?"

"पहिये जितना बड़ा मालूम होता है," सौदागर ने जवाब दिया।

उक़ाब ने झटका दे कर सौदागर को अपनी पीठ से गिरा दिया और इस तरह उसे मौत के भय से परिचित कराया। लेकिन उसके समुद्र में गिरने के पहले ही उक़ाब ने उसे फिर संभाल लिया। उसके बाद वह आसमान में और भी ऊपर उठ गया।

"नीले सागर को अब देखो; क्या बहुत बड़ा मालूम होता है?"

"अब तो वह मुर्ग़ी के अंडे के बराबर रह गया है।"

उक़ाब ने झटका देकर सौदागर को अपनी पीठ से गिरा दिया, लेकिन समुद्र में गिरने के पहले ही उसे फिर संभाल लिया। अब की बार वह सौदागर को लेकर आसमान में और भी ऊंचे चढ़ गया।

"नीले सागर को देखो, क्या बहुत बड़ा मालूम होता है?"

"अब तो वह पोस्त के दाने के बराबर रह गया है।"

उक़ाब ने तीसरी बार सौदागर को झटका देकर अपनी पीठ

से गिरा दिया, लेकिन समुद्र में गिरने से पहले ही उसे फिर सभांल लिया। उक़ाब ने उसे बीच में ही थाम कर कहा:

"क्यों, भले आदमी, अब तुम्हें पता लगा कि मौत का डर कैसा होता है?"

"हां," सौदागर ने कहा, "मैंने तो समझा था कि मेरा अन्तिम समय आ गया है।"

"जब तुमने अपनी बन्दूक़ मेरी तरफ़ तानी थी, तब मैं-ने भी यही समझा था।"

इसके बाद, सौदागर को लेकर उक़ाब समुद्र से भी दूर सीधे तांबे के राज्य की ओर उड़ चला।

"यहां मेरी बड़ी बहन रहती है," उक़ाब ने कहा। "हम लोग उसके मेहमान बन कर रहेंगे और वह तुम्हें बहुत-से तोहफ़े देगी, मगर तुम कुछ लेना मत, तुम सिर्फ़ तांबे की पेटी मांगना।"

यह कह कर उक़ाब ज़मीन से टकराया और टकराते ही एक सुन्दर नौजवान बन गया। दोनों ने एक चौड़े आंगन को पार किया। नौजवान की बहन ने उन्हें देखा तो बड़ी ख़ुशी के साथ उनका स्वागत किया।

"अहा, मेरे प्यारे भैया, भगवान का शुक्र है कि तुम सही-सलामत हो। तुमसे मिले तीन साल से ज़्यादा हो गये थे और मैंने तो समझ लिया था कि तुम अब नहीं रहे। बोलो, मैं तुम्हारी क्या ख़ातिर करूं? तुम्हारे लिए क्या मंगवाऊं?"

"मुझ से मत पूछो, प्यारी वहन, – मैं तो घर का ही आदमी हूं। इस भले आदमी से पूछो जिसने मुझे पूरे तीन साल तक अपने यहां रखा और खिलाया-पिलाया और भूखों नहीं मरने दिया।"

उसने उन दोनों को बलूत की लकड़ी की बनी एक मेज़ के सामने बैठाया जिस पर एक सुन्दर मेज़पोश बिछा हुआ था और राजसी ठाठ से उनकी दावत की। फिर वह उन्हें अपने खज़ाने में ले गयी और वहां उसने अपनी वेशुमार दौलत उन्हें दिखायी और सौदागर से कहा:

"देखो, यहां सोना, चांदी और तरह-तरह के बहुमूल्य हीरे-जवाहिरात रखे हैं, तुम्हारा जो मन करे सब उठा लो।"

"मैं न तो सोना-चांदी चाहता हूं और न ही हीरे-जवाहिरात," सौदागर ने जवाब दिया। "मुझे तो तुम तांबे की पेटी दे दो।"

"अच्छा, तो तुम यह चाहते हो! यह तो चांद को पकड़ने वाली बात है।"

बहन की धृष्टता भाई को बहुत बुरी लगी। उसने फिर तेज़ उड़ने वाले उक़ाब का रूप धारण कर लिया और सौदागर को उठा कर आसमान में उड़ गया।

"भैया, मेरे प्यारे भैया, लौट आओ!" बहन चिल्लायी। "मैं पेटी देने से भी गुरेज़ न करूंगी।"

"अब वह बात ख़त्म हो गयी, बहन।"

उसके बाद वह फिर आसमान में दूर उड़ गया।

"भले आदमी, जरा देखो कि तुम्हारे पीछे क्या दिखाई देता है और सामने क्या है?" उकाब ने कहा।

[illegible] ने मुड़ कर देखा और जवाब दिया:

"पीछे आग की लपटें उठ रही हैं और सामने फूल खिल रहे हैं।"

"वह तांबे का राज्य धू-धू करके जल रहा है, और फूल चांदी के राज्य में खिल रहे हैं जहां मेरी मंझली बहन रहती है। हम लोग उसके मेहमान बन कर रहेंगे। वह तुम्हें तरह-तरह के तोहफे देगी, लेकिन तुम कुछ लेना मत, सिर्फ चांदी की पेटी मांगना।"

जब वे किले के पास पहुंच गये तो उकाब जमीन से टकराया और टकराते ही फिर सुन्दर नौजवान बन गया।

"अहा, मेरे प्यारे भैया!" उसकी बहन ने कहा। "इधर कैसे भूल पड़े? और कहां-कहां घूम कर आ रहे हो? इतने दिन क्यों लगा दिये? और बोलो, मैं तुम्हारी क्या खातिर करूं?"

"मुझ से मत पूछो, प्यारी बहन। मैं तो घर का आदमी हूं। इस भले आदमी से पूछो जिसने मुझे पूरे तीन साल तक अपने यहां रखा, खिलाया-पिलाया और भूखों नहीं मरने दिया।"

उसने उन्हें बलूत की लकड़ी की बनी एक मेज के सामने बैठाया जिस पर एक सुन्दर मेजपोश बिछा हुआ था और राजसी ठाठ से उनकी दावत की। फिर वह उनको अपने खजाने में ले गयी:

"देखो यहां सोना-चांदी और बहुमूल्य हीरे-जवाहिरात रखे हैं—तुम्हारा जो मन करे सब उठा लो!"

"मुझे न तो सोना-चांदी चाहिए और न ही हीरे-जवाहिरात। मुझे तो तुम चांदी की पेटी दे दो!"

"अख़ाह! तो तुम यह चाहते हो! मुंह धो रखो, वह तो तुम्हें मिलने से रही!"

उसके भाई को यह बात बुरी लगी। उसने फिर पक्षी का रूप धारण कर लिया और सौदागर को उठाकर उड़ गया।

"भैया, मेरे प्यारे भैया, लौट आओ! मैं यह पेटी देने से भी गुरेज़ न करूंगी!"

"अब वह बात ख़त्म हो गयी, बहन!"

और उक़ाब फिर आसमान में बहुत ऊंचे उठ गया।

"भले आदमी, ज़रा देखो कि तुम्हारे पीछे क्या दिखाई देता है और सामने क्या है?" उक़ाब ने कहा।

"पीछे आग की लपटें उठ रही हैं और सामने फूल खिल रहे हैं।"

"वह चांदी का राज्य धू-धू करके जल रहा है, और फूल सोने के राज्य में खिल रहे हैं, जहां मेरी सबसे छोटी बहन रहती है। हम उसके मेहमान बन कर रहेंगे, लेकिन जब वह तुम्हें तोहफ़े दे तो कुछ लेना मत; सिर्फ़ सोने की पेटी मांगना।"

उड़ते-उड़ते उक़ाब सोने के राज्य के पास पहुंच गया। वहां पहुंच कर वह फिर सुन्दर नौजवान बन गया।

"अहा, मेरे प्यारे भैया," उसकी बहन ने कहा। "इधर कैसे भूल पड़े? और कहां-कहां घूम कर आ रहे हो? इतने दिन क्यों लगा दिये? और बोलो, मैं तुम्हारी क्या ख़ातिर करूं? तुम्हारे लिए क्या मंगवाऊं?"

"मुझ से मत पूछो, मैं तो घर का आदमी हूं। इस भले आदमी से पूछो जिसने पूरे तीन साल तक मुझे अपने यहां रखा और खिलाया-पिलाया और भूखों नहीं मरने दिया।"

उसने उन्हें बलूत की लकड़ी की बनी मेज़ के सामने बैठाया जिस पर एक सुन्दर मेज़पोश बिछा हुआ था और राजसी ठाठ से उनकी दावत की। फिर वह सौदागर को अपने ख़ज़ाने में ले गयी और तोहफ़े के तौर पर सोना, चांदी और बहुमूल्य हीरे-जवाहिरात देने चाहे।

"मुझे यह सब नहीं चाहिए," सौदागर ने कहा। "मैं तो सिर्फ़ सोने की पेटी चाहता हूं।"

"तो वही लो, भगवान करे यह तुम्हारे लिए सौभाग्य की चीज़ सिद्ध हो!" बहन ने कहा। "तुमने पूरे तीन साल तक मेरे भाई को खिलाया-पिलाया और उसे भूखों नहीं मरने दिया। अपने भाई की ख़ातिर मैं तुम्हें कोई भी चीज़ देने से गुरेज़ न करूंगी।"

सो कुछ दिन तक सौदागर वहीं सोने के राज्य में रहा और दावतें खाता रहा। पर आख़िर विदाई का समय आ ही गया।

"अच्छा, तो अब विदा!" उक़ाब ने उससे कहा। "और मेरी किसी बात का बुरा न मानना। मगर यह याद रखना कि जब तक तुम अपने घर न पहुंच जाओ, तब तक इस पेटी को न खोलना।"

सौदागर अपने घर की तरफ़ रवाना हो गया। वह कितने दिन तक चलता रहा यह तो कहना मुश्किल है, लेकिन कुछ समय बाद वह चलते चलते थक गया और उसने सोचा कि अब थोड़ी देर आराम कर लिया जाये। वह एक हरियाला मैदान देख कर रुक गया। यह जगह अधर्मी राजा के राज्य में थी। सौदागर बहुत देर तक बैठा सोने की पेटी को देखता रहा, फिर पता नहीं उसे क्या हुआ कि न चाहते हुए भी उसने पेटी खोल दी। और उसका खोलना था कि एक लम्बा-चौड़ा और आलीशान महल उसके सामने खड़ा हो गया और नौकरों की एक पूरी फ़ौज कहीं से आ गयी।

"आपका क्या हुक्म है? आपकी क्या इच्छा है?" नौकर कह रहे थे।

सौदागर ने उनसे खाने-पीने का सामान मांगा और जब वह खा-पी चुका तो सोने के लिए लेट गया।

अब अधर्मी राजा ने वह आलीशान महल अपनी ज़मीन पर खड़ा हुआ देखा तो उसने अपने दूतों को बुला कर उनसे कहा:

"जाओ, जाकर देखो कि मेरी इजाज़त के बिना किस बदमाश ने मेरी ज़मीन पर यह महल बनाया है। जाकर उससे

कहो कि अपनी ख़ैरियत चाहता है तो फ़ौरन नौ दो ग्यारह हो जाय!"

जब सौदागर को यह धमकी से भरा सन्देश मिला, तो उसे यह फ़िक्र पड़ी कि उस महल को फिर से पेटी में कैसे बन्द किया जाये? उसने बहुत सोचा, बहुत सोचा, मगर उसे कोई तरकीब न सूझी।

"मैं तो ख़ुद यहां से चला जाना चाहता हूं," उसने अधर्मी राजा के दूतों से कहा, "लेकिन मैं यह नहीं जानता कि जाऊं कैसे।"

दूतों ने लौट कर सौदागर ने जो कुछ कहा था उसका एक-एक शब्द अधर्मी राजा को सुना दिया।

"उससे कहो कि उसके अनजाने में उसके घर पर जो कुछ आया है, वह मुझे देने का वायदा करे तो मैं उसके महल को फिर से सोने की पेटी में बंद कर दूंगा।"

सौदागर बेचारा क्या करता! वह लाचार था। उसे वादा करना पड़ा कि उसके अनजाने में उसके घर पर जो कुछ आया है, वह उसे राजा को दे देगा। उसने सौगंध खायी कि वह अपने वायदे से कभी न डिगेगा। अधर्मी राजा ने उसके देखते देखते महल को फिर से सोने की पेटी में बन्द कर दिया। सौदागर उसे उठाकर फिर अपने रास्ते चल दिया।

वह कितने दिन बाद अपने घर पहुंचा यह कहना तो

मुश्किल है, लेकिन आखिर वह वहां पहुंच ही गया, और वहां उसे उसकी बीवी मिली।

"स्वागत है, प्रियतम," उसने कहा, "इतने दिन कहां मारे-मारे घूमते रहे?"

"जहां भी गया था, अब तो वहां से लौट ही आया हूं।"

"तुम्हारे पीछे भगवान ने हमारे यहां एक बेटा भेजा है।"

"अच्छा तो मेरे अनजाने में मेरे यहां यही आया है," सौदागर ने मन में सोचा और सोच कर उसे बड़ा दुख हुआ।

"तुम्हें किस बात की परेशानी है? क्या तुम्हें घर लौटने की ख़ुशी नहीं है?" सौदागर की बीवी ने उससे पूछा।

"नहीं, यह बात नहीं है," सौदागर ने जवाब दिया और उस पर जो कुछ बीती थी, सब उसने अपनी बीवी को सुना दी।

दोनों बहुत दुखी हुए, बहुत रोये-धोये, मगर बारह महीने कोई नहीं रो सकता। आख़िर सौदागर ने सोने की पेटी खोली, और खोलते ही एक लम्बा-चौड़ा और शानदार महल उनके सामने खड़ा हो गया। अपनी बीवी और बेटे के साथ सौदागर उस महल में रहने लगा और बड़ी हंसी-ख़ुशी और सुख-सम्पत्ति में उसके दिन बीतने लगे।

इस तरह दस साल से भी ज़्यादा गुज़र गये। सौदागर का बेटा बड़ा हो गया। अब वह एक सुन्दर और होशियार लड़का था।

एक दिन वह सुबह सो कर उठा तो बहुत उदास था। अपने बाप से बोला :

"पिता जी, रात को मैंने यह सपना देखा कि अधर्मी राजा ने मुझे अपने दरबार में हाज़िर होने का हुक्म दिया है। उसका कहना है कि हम लोग उससे बहुत दिन इन्तज़ार करा चुके हैं अब हमें खुद समझना चाहिए कि यह बात ठीक नहीं है।"

उसके मां-बाप ने यह सुना तो धाड़ मार कर रोने लगे। मगर क्या करते, उन्होंने अपने बेटे को आशीर्वाद दिया और उसे अज्ञात देशों को जाने की इजाज़त दे दी। लड़के ने एक ऐसी सड़क पकड़ी जो चौड़ी और सीधी थी। फिर वह खुले मैदानों और हिलोरे लेते हुए घास के मैदानों में से गुज़रा और उस वक़्त तक चलता ही गया जब तक कि एक घने जंगल में न पहुंच गया। वहां एक छोटे-से झोंपड़े के सिवा, जो कि उस वीराने में अकेला खड़ा था, और कुछ भी न दिखाई देता था। इस झोंपड़े का मुंह पेड़ों की तरफ़ था और पीठ सौदागर के बेटे, इवान की तरफ़ थी।

"नन्हे झोंपड़े, नन्हे झोंपड़े अपनी पीठ पेड़ों की तरफ़ कर लो और मुंह मेरी तरफ़!" उसने कहा।

जैसा उसने कहा था, झोंपड़े ने वैसा ही किया। उसने अपनी पीठ पेड़ों की तरफ़ कर ली और मुंह इवान की तरफ़ कर लिया।

सौदागर का बेटा, इवान झोंपड़े के अन्दर घुस गया। वहां

बैठी थी बुढ़िया ढड्डो–बाबा-यगा। बाबा-यगा ने उसे देखा तो बोली :

"ओहो, रूसी ख़ून! पहले कभी न मिला, आज दरवाज़े पर खड़ा! कहां से आया है? किधर जा रहा है?"

"छि, बुढ़िया चुड़ैल! एक बटोही का स्वागत करने का क्या तेरा यही ढंग है कि न खाने को पूछा, न पीने को और लगा दी सवालों की झड़ी!"

बाबा-यगा ने खाने-पीने का सामान निकाल कर मेज़ पर चुन दिया, और जब इवान खा चुका तो उसे सुला दिया। अगले दिन सुबह होने के पहले ही उसने इवान को जगा दिया और उसका हालचाल पूछने लगी। सौदागर के बेटे, इवान ने उसे शुरू से आख़िर तक पूरा हाल सुनाया और फिर कहा :

"दादी, मुझे यह बताओ कि अधर्मी राजा तक पहुंचने का क्या रास्ता है।"

"तुम बड़े भाग्यवान हो जो इधर निकल आये। न आते तो तुम्हारा सर्वनाश हो जाता। अधर्मी राजा से तुमने इतने दिन इन्तज़ार कराया, इसके लिए वह तुमसे बहुत नाराज़ है। तुम इसी सड़क पर चलते रहो, जब तक कि एक तालाब रास्ते में न मिले। वहां किसी पेड़ के पीछे छिप जाना और फिर इन्तज़ार करना। तीन कबूतर, जो असल में तीन सुन्दर कुमारियां हैं वहां उड़ती हुई आयेंगी। वे तीनों अधर्मी राजा की बेटियां हैं। तालाब के पास पहुंच कर वे अपने पंख खोल कर रख देंगी और कपड़े

उतार कर तालाब में नहाने लगेंगी। उनमें से एक के पंख चितकबरे होंगे। मौका देख कर उस के पंख छीन लेना और जब तक वह तुमसे शादी करने का वादा न करे, तब तक पंख वापिस न करना। इसके बाद सब ठीक हो जायेगा।"

सौदागर के बेटे, इवान ने बाबा-यगा से विदा ली और चुड़ैल की बताई सड़क पर चल पड़ा। वह चलता गया, चलता गया, जब तक कि उसे रास्ते में तालाब नहीं मिला। वहां पहुंच कर वह एक घनेदार पेड़ के पीछे छिप गया। थोड़ी देर बाद तीन कबूतर उड़ते हुए आये जिन में से एक के चितकबरे पंख थे। जमीन से टकराकर ये तीनों कबूतर सुन्दर कुमारियों में बदल गये। उन्होंने अपने पंख खोल कर रख दिये और कपड़े उतार कर नहाने लगीं। सौदागर का बेटा, इवान, देखता रहा। वह वहां रेंगते हुए गया और चितकबरे पंख चुरा लाया। इसके बाद वह खड़ा हो कर इन्तजार करने लगा कि देखे, अब क्या होता है? सुन्दर कुमारियां नहा कर पानी से बाहर निकलीं। दो ने तो अपने कपड़े पहन लिये, पंख फिर से बांध लिये और कबूतर का रूप धारण करके उड़ गयीं। लेकिन, तीसरी वहीं रह गयी। वह अपने पंख खोजती रही ।

उसने बहुत खोजा, बहुत खोजा, साथ ही वह कहती जाती थी:

"मेरे पंख किसने लिये हैं? बोलो! अगर तुम बूढ़े हो तो मैं तुम्हें अपने बाप के समान समझूंगी। अगर तुम अधेड़ हो तो

मैं तुम्हें अपना चाचा मानूंगी। और अगर तुम नौजवान और वीर हो तो मैं तुमसे शादी कर लूंगी।"

तब सौदागर का बेटा, इवान, पेड़ के पीछे से निकल आया।

"यह लो अपने पंख!" उसने कहा।

"मेरे मंगेतर, अब मुझे यह बताओ, कि तुम्हारे सगे-सम्बंधी कौन हैं और तुम कहां जा रहे हो?"

"मैं सौदागर का बेटा, इवान हूं और मैं तुम्हारे पिता, अधर्मी राजा, से मिलने जा रहा हूं।"

"और मेरा नाम बुद्धिमती वासिलीसा है," राजकुमारी ने कहा।

यह बुद्धिमती वासिलीसा राजा की सब से प्यारी बेटी थी और वह जितनी सुन्दर थी, उतनी ही चतुर भी। अपने मंगेतर को यह बता कर कि अधर्मी राजा के पास पहुंचने का क्या रास्ता है, वह फिर कबूतर बन गयी और उसी दिशा में उड़ गयी जिस दिशा में उसकी बहनें गयी थीं।

सौदागर का बेटा, इवान, राजमहल में पहुंचा। अधर्मी राजा ने उसे रसोईघर के उस कमरे में काम करने के लिए भेज दिया जहां बर्तन धोये जाते थे। इवान का काम था कि लकड़ी चीरे और पानी भर कर लाये। राजा के रसोइये का नाम था फूहड़राम। वह इवान से बहुत जलता था और राजा से उसकी तरह-तरह की शिकायतें किया करता था।

"अन्नदाता," फूहड़राम ने राजा से कहा, "सौदागर

"अच्छा," राजा ने कहा, "उसे हमारे सामने पेश करो!"

सौदागर के बेटे, इवान, को राजा के सामने पेश किया गया।

"यह तुम क्या डींग मारते हो कि एक रात के अन्दर एक पूरा जंगल काट कर गिरा सकते हो, जमीन जोत सकते हो, साफ़ खेत में गेहूं बो सकते हो, उसे पीट-कूट कर पीस सकते हो, और मेरे शादी नाश्ते के लिए समोसे तैयार कर सकते हो? अच्छा तो याद रखना कि यह सारा काम कल सुबह तक पूरा हो जाना चाहिए।"

सौदागर के बेटे, इवान ने बहुत कहा कि उसने ऐसी डींग कभी नहीं मारी थी, मगर वहां कौन सुनता था। राजा का हुक्म हो चुका था और अब तो उसे पूरा करना जरूरी था। वह राजा के यहां से लौटा तो उसका सुन्दर मुखड़ा एकदम उतर गया था।

राजा की बेटी, बुद्धिमती वासिलीसा ने उसे देखा तो बोली:

"तुम्हें किस बात की चिन्ता है?"

"तुम्हें क्या बताऊं? तुम कुछ नहीं कर सकतीं।"

"बताओ तो, शायद मैं कुछ कर सकूं।"

सो सौदागर के बेटे, इवान ने उसे बता दिया कि अधर्मी राजा ने उसे क्या क्या काम करने का हुक्म दिया है।

"अरे, इस में क्या रखा है! यह तो बहुत मामूली-सा काम है। असली काम तो आगे आयेगा। जाओ, सो जाओ! रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

रात के ठीक बारह बजे बुद्धिमती वासिलीसा उठी और महल की ड्योढ़ी पर जा कर उसने ज़ोर से चिल्ला कर किसी को बुलाया। एक मिनट के अन्दर चारों तरफ़ से अनेक कारकुन दौड़ते हुए आये और आते ही गये। मालूम होता था, उनका आना कभी रुकेगा ही नहीं। उनमें से कुछ पेड़ काट-काट कर गिराने लगे, कुछ पेड़ों की जड़ें ज़मीन में से उखाड़ कर निकालने लगे, और दूसरे लोग हल चलाने लगे। एक जगह वे बो रहे थे तो दूसरी जगह पर उन्होंने फ़सल काट कर उसे पीटना-कूटना भी शुरू कर दिया था। सारा जंगल ऐसा लगता था जैसे शहद की मक्खियों का छत्ता हो। सुबह तक अनाज पिस गया और समोसे भी तैयार हो गये। सौदागर का बेटा, इवान, अधर्मी राजा के नाश्ते के वक़्त समोसे लेकर पहुंच गया।

"शाबाश!" राजा ने कहा और हुक्म दिया कि इवान को शाही खज़ाने में से इनाम दिया जाये।

फूहड़राम रसोइये को अब सौदागर के बेटे, इवान, पर और भी गुस्सा आया और वह नयी शिकायतें लेकर राजा के पास पहुंचा।

"अन्नदाता," उसने राजा से कहा, "सौदागर का बेटा, इवान, डींग मारता है कि वह रात भर में इतना बढ़िया जहाज़ बना कर तैयार कर सकता है जो आसमान में उड़ा करेगा।"

"अच्छा, बुला कर लाओ उसे यहां!"

सौदागर का बेटा, इवान पेश किया गया।

"मैंने सुना है कि तुम मेरे नौकरों के सामने डींग मारा करते हो कि तुम रात भर में एक ऐसा अद्‌भुत जहाज़ बना सकते हो जो आसमान में उड़ा करेगा, मगर मुझ से यह बात छिपाते हो। देखो, याद रखो कि कल सुबह तक ऐसा जहाज़ बन कर तैयार हो जाये!"

सौदागर के बेटे, इवान, को बहुत चिन्ता हुई। वह मुंह लटकाये हुए भीतर आया। बुद्धिमती वासिलीसा ने उसे देखा तो बोली :

"तुम्हें किस बात की चिन्ता है? इतने दुखी क्यों हो?"

"दुखी कैसे न होऊं, जब अधर्मी राजा ने मुझे रात भर में एक उड़नेवाला जहाज़ तैयार करने का हुक्म दिया है?"

"अरे, इस में क्या रखा है! यह तो बहुत मामूली-सा काम है। असली काम तो अभी आगे आयेगा। जाओ, सो जाओ! रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

आधी रात हुई तो बुद्धिमती वासिलीसा उठ कर महल की ड्योढ़ी पर पहुंची और वहां ज़ोर से चिल्ला कर उसने किसी को बुलाया। एक मिनट के अन्दर चारों तरफ़ से बढ़ई दौड़ते हुए आये और वहां जमा हो गये। वे अपनी कुल्हाड़ियां लेकर फ़ौरन काम में जुट गये, और हर काम बड़ी मुस्तैदी से होने लगा, और सुबह तक सब कुछ तैयार हो गया।

"शाबाश!" राजा ने सौदागर के बेटे, इवान से कहा, "अब, चलो, ज़रा इस पर चढ़ कर सैर करें।"

दोनों जहाज़ पर सवार हो गये, फूहड़राम रसोइये को भी साथ ले लिया, और आसमान में उड़ चले। जब वे उस जगह के ऊपर से गुज़रे जहां राजा के जंगली जानवर बन्द थे तो रसोइया गरदन बाहर निकाल कर उन्हें देखने लगा। सौदागर के बेटे, इवान, ने झट से उसे धक्का दे कर नीचे गिरा दिया। और पल भर में जंगली जानवरों ने चीर-फाड़ कर उसके टुकड़े कर दिये।

"अरे!" सौदागर का बेटा, इवान चिल्लाया, "फूहड़राम नीचे गिर पड़ा है।"

"अच्छा हुआ!" राजा ने कहा, "कुत्ते की तरह जिया, कुत्ते की तरह मर गया!"

वे महल में लौट आये।

"सौदागर के बेटे, इवान, तुम बड़े होशियार हो," राजा ने कहा। "सो अब एक तीसरा काम और करना होगा तुम्हें। एक सांड़ घोड़ा है जिसे साधना नामुमकिन है। उसे साध कर दिखा दो तो मैं अपनी बेटी व्याह दूंगा तुमसे।"

"यह काम तो आसान है," सौदागर के बेटे, इवान ने मन में सोचा और खुश-खुश चला आया।

बुद्धिमती वासिलीसा ने उसे देखा तो सब हाल पूछा और सुन कर बोली:

"सौदागर के बेटे, इवान, तुम बड़े भोले हो। इस बार तुम्हें सचमुच मुश्किल काम मिला है। बहुत मुश्किल काम है यह, क्योंकि वह सांड़ घोड़ा असल में खुद राजा होगा। वह तुम्हें लेकर आसमान में उड़ जायेगा – जंगलों के ऊपर और तैरते हुए बादलों के नीचे, और वहां से तुम्हें घुमा कर इस तरह नीचे फेंकेगा कि तुम्हारी हड्डियां खुले मैदान में पत्थरों की तरह बिखर जायेंगी। तुम फ़ौरन लुहारों के पास जाओ और उनसे कहो कि तुम्हें डेढ़ मन का एक हथौड़ा बना दें, और जब तुम उस सांड़ घोड़े पर सवार हो तो खूब जम कर बैठना और इस हथौड़े से उसके सिर पर चोट करते रहना ताकि वह ज्यादा उछल-कूद न कर सके।"

अगले दिन साईस लोग एक बे-सधा सांड़ घोड़ा अस्तबल से निकाल कर लाये। उसके नथुनों से फुफकारें छूट रहे थे और

वह इतने ज़ोर से दुलत्ती चला रहा था और अपने पीछेवाली टांगों पर खड़ा हो-हो जाता था कि साईसों का उसे संभालना मुश्किल हो रहा था। सौदागर का बेटा, इवान, उसपर सवार हुआ नहीं कि घोड़ा उसे लेकर आसमान में उड़ गया – जंगलों के ऊपर और तैरते हुए बादलों के नीचे। वह हवा से भी ज़्यादा तेज़ उड़ा जा रहा था। उसका सवार खूब जम कर बैठा था और रह-रह कर अपने हथौड़े से घोड़े के सिर पर चोट करता जाता था। आख़िर घोड़ा थक गया और ज़मीन पर उतर आया। सौदागर के बेटे, इवान ने घोड़े को साईसों को सौंप दिया, थोड़ा आराम किया और फिर महल में पहुंच गया। जब वह अधर्मी राजा से मिला तो देखा कि उसके सिर पर पट्टियां बंधी हुई हैं।

"अन्नदाता, मैंने घोड़े को साध दिया है।"

"बहुत अच्छा, अब कल अपनी दुलहिन चुनने के लिए आना। अभी तो मेरे सिर में दर्द है।"

सो अगली सुबह बुद्धिमती वासिलीसा ने सौदागर के बेटे, इवान से कहा:

"मेरे पिता, राजा की तीन बेटियां हैं। वह हम तीनों को घोड़ियां बना देगा और फिर तुम से अपनी दुलहिन चुनने को कहेगा। ज़रा आंखें खोल कर चुनना। मेरी लगाम का धातु का एक बूटा थोड़ा धुंधला पड़ता हुआ दिखाई देगा। फिर वह हम लोगों को कबूतर बना देगा। हम लोग दाना चुनने लगेंगी, लेकिन मैं कभी-कभी एक पंख फड़फड़ा दिया करूंगी। उसके बाद

वह हम लोगों को एक-से रूप-रंग की तीन सुन्दर कुमारियों की शक्ल में सामने लायेगा—हम तीनों का एक-सा चेहरा होगा, एक-सा क़द, और हमारे बालों का रंग भी एक-सा ही होगा। लेकिन मैं अपना रूमाल हिला दूंगी, और उस इशारे से तुम मुझे पहचान लेना।"

जैसा उसने कहा था, वैसा ही हुआ। अधर्मी राजा तीन बिल्कुल एक-सी घोड़ियां बाहर निकाल कर लाया और उन्हें उसने एक पंक्ति में खड़ा कर दिया।

"लो, जिसे चाहो चुन लो!"

सौदागर के बेटे, इवान ने ख़ूब ध्यान से देखा तो उसे एक घोड़ी की लगाम पर धातु का एक बूटा कुछ धुंधला पड़ता हुआ दिखाई दिया। उसने वही लगाम पकड़ कर कहा:

"यह है मेरी दुलहिन।"

"तुमने ख़राब वाली चुनी है," राजा ने कहा, "फिर से चुनो।"

"नहीं, मेरे लिए तो यही ठीक है।"

"अच्छा तो अब दूसरी बार चुनो।"

राजा ने बिल्कुल एक-से तीन कबूतर बाहर निकाले और उनके चुगने के लिए थोड़ा-सा दाना डाल दिया। सौदागर के बेटे, इवान ने देखा कि एक कबूतर अपना एक पंख फड़फड़ा रहा है। उसने तुरन्त उसका पंख पकड़ लिया।

"यह है मेरी दुलहिन।"

"मुंह धो रखो, यह नहीं तुम्हारी दुलहिन। खैर, लो, तीसरी बार चुनो।"

राजा तीन सुन्दर कुमारियां बाहर लाया। तीनों रंग-रूप, हाव-भाव में बिल्कुल एक-सी थीं। सौदागर के बेटे, इवान ने देखा कि उनमें से एक अपने हाथ का रूमाल हिला रही है। उसने फ़ौरन उसका हाथ पकड़ लिया।

"यह है मेरी दुलहिन!"

अब अधर्मी राजा लाचार हो गया। उसने बुद्धिमती वासिलीसा को सौदागर के बेटे, इवान के साथ ब्याह दिया। बड़े ठाठ-बाट से उनकी शादी हुई।

थोड़ा या बहुत समय बीता, कि सौदागर के बेटे, इवान ने बुद्धिमती वासिलीसा को साथ लेकर अपने देश भाग चलने का निश्चय किया। सो दोनों ने अपने घोड़े कसे और आधी रात के वक़्त रवाना हो गये। अगले दिन सुबह ही अधर्मी राजा को उनके जाने का पता चला तो उसने अपने आदमियों को उनका पीछा करने के लिए भेजा।

बुद्धिमती वासिलीसा ने अपने पति से कहा: "ज़मीन से कान लगा कर मुझे बताओ कि तुम्हें क्या सुनाई पड़ता है।"

उसने ज़मीन से कान लगा कर सुना और सुन कर बोला:

"घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ आ रही है।"

बुद्धिमती वासिलीसा ने उसे तो तरकारियों के बग़ीचे में बदल दिया और ख़ुद एक पातगोभी बन गयी जो उस बग़ीचे

में लगी हुई थी। राजा ने जिन लोगों को उनका पीछा करने के लिए भेजा था वे ख़ाली हाथ लौट गये। उन्होंने जाकर राजा से कहा:

"अन्नदाता, हमें तो कुछ नहीं मिला। हां, एक जगह तरकारियों का एक बग़ीचा ज़रूर देखा था जिस में एक पातगोभी लगी हुई थी।"

"जाओ और वह पातगोभी उखाड़कर ले आओ! यह महज़ उस लड़की की एक चाल है।"

राजा के आदमी फिर उनके पीछे दौड़े और सौदागर के बेटे, इवान ने फिर ज़मीन से कान लगा कर सुना।

"घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ आ रही है," वह बोला।

बुद्धिमती वासिलीसा ख़ुद एक कुआं बन गयी और इवान को उसने सुनहरा बाज़ बना दिया। बाज़ कुएं पर बैठ कर उसमें से पानी पीने लगा। राजा के आदमी दौड़ते दौड़ते कुएं तक आये। वहां पहुंच कर सड़क ख़त्म हो जाती थी, सो वे लौट गये। जाकर राजा से बोले:

"अन्नदाता, हमें तो कुछ नहीं मिला। हां, खुले मैदान में एक कुआं ज़रूर था और उस कुएं पर एक सुनहरा बाज़ बैठा पानी पी रहा था।"

तब अधर्मी राजा ख़ुद उनके पीछे दौड़ा।

"अपना कान ज़मीन से लगा कर सुनो और मुझे बताओ

कि क्या सुनाई देता है," बुद्धिमती वासिलीसा ने अपने पति से कहा।

"अब तो पहले से बहुत ज़्यादा शोर मच रहा है।"

"यह तो मेरा बाप है जो इस बार ख़ुद हम लोगों के पीछे आया है। मेरी तो अक़्ल काम नहीं करती कि अब क्या करूं। कुछ समझ में नहीं आता," बुद्धिमती वासिलीसा ने कहा।

"मेरी समझ में भी कुछ नहीं आता।"

लेकिन वासिलीसा के पास तीन चीज़ें थीं—एक बुरुश, एक कंघा और एक तौलिया। उसे उन की याद आयी तो वह बोली :

"मेरे पास एक जादू है जो मेरे बाप, अधर्मी राजा, से हमारी हिफ़ाज़त करेगा।"

और उसने बुरुश को पीछे की तरफ़ हिलाया। उसका यह करना था कि एक ऐसा घना जंगल खड़ा हो गया जिसके पेड़ों के बीच में हाथ डालने की भी जगह नहीं थी और जो इतना बड़ा जंगल था कि उसकी परिक्रमा करें तो तीन साल लग जायें।

अधर्मी राजा ने जंगल को कुतरना शुरू किया। वह कुतरता गया, कुतरता गया, और आख़िर उसने जंगल के बीच में से पगडंडी बना ली और वह फिर उनके पीछे दौड़ पड़ा। दौड़ते दौड़ते वह उनके बिल्कुल नज़दीक पहुंच गया। अब उनके बीच एक हाथ से ज़्यादा की दूरी नहीं रह गयी थी। पर तभी बुद्धिमती वासिलीसा ने अपना कंघा पीछे की ओर हिलाया और यकायक

एक वड़ा भारी पर्वत वीच में खड़ा हो गया जिसे न तो चढ़ कर पार किया जा सकता था और न ही जिस का चक्कर काट कर आया जा सकता था।

अधर्मी राजा ने पहाड़ को खोदना शुरू किया। वह खोदता गया, खोदता गया, और आखिर उसने एक सुरंग खोद डाली और उसके ज़रिये वह पहाड़ के इधर निकल आया और फिर उनका पीछा करने लगा। तव वुद्धिमती वासिलीसा ने वह तौलिया पीछे की तरफ़ हिलाया और वीच में एक गहरा और वड़ा समुद्र पैदा हो गया। राजा अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ किनारे तक आया, मगर यह क्या? आगे तो रास्ता वन्द था! मजवूर होकर वह अपने घर लौट गया।

जव वुद्धिमती वासिलीसा के साथ सौदागर का वेटा, इवान अपने देश में पहुंच गया तो अपनी वीवी से वोला:

"मैं आगे वढ़ कर अपने मां-वाप को यह वता आता हूं कि तुम भी मेरे साथ आयी हो। तुम मेरे लिए यहां इन्तज़ार करना।"

"एक वात से पहले ही आगाह किये देती हूं," वुद्धिमती वासिलीसा ने कहा। "जव तुम घर पहुंच कर हरेक से गले मिलो, तो अपनी धर्म की मां से गले न मिलना। मिलोगे तो मेरे वारे में सव कुछ भूल जाओगे।"

सौदागर का वेटा, इवान घर लौटा तो इतना ख़ुश था कि वह हरेक से और अपनी धर्म की मां से भी गले मिला। नतीजा यह हुआ कि वह उसी क्षण वुद्धिमती वासिलीसा के वारे में सव

कुछ भूल गया और वह बेचारी वहां सड़क पर खड़ी उसका इन्तज़ार करती रही। वह इन्तज़ार करती रही, करती रही पर जब उसका पति उसे लेने नहीं आया तो बुद्धिमती वासिलीसा शहर में पहुंची और एक बुढ़िया औरत के यहां नौकरानी हो गयी। इस बीच सौदागर के बेटे, इवान ने शादी करने का फ़ैसला कर लिया था। सो उसने एक कुमारी से प्रेम करना आरम्भ किया। दोनों का ब्याह तय हो गया, और एक बड़ी शानदार दावत की तैयारी होने लगी।

बुद्धिमती वासिलीसा को इसका पता चला तो वह भिखारिन का भेस धर कर भीख मांगने के लिए सौदागर के घर पहुंची।

"एक मिनट रुक जाओ," सौदागर की बीवी ने कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक छोटा-सा समोसा बना देती हूं, क्योंकि ब्याह की दावत के लिए जो बड़ा समोसा बनाया गया है, उसे मैं नहीं काटना चाहती।"

"इस के लिए भी धन्यवाद, माता जी! मैं तो छोटा समोसा ही खा लूंगी," भिखारिन ने कहा। लेकिन ब्याह की दावत का समोसा पकाने के दौरान में जल गया, और छोटा समोसा बहुत बढ़िया पक कर तैयार हुआ। सौदागर की बीवी ने जला हुआ समोसा वासिलीसा को दे दिया और दावत में छोटा समोसा परोसा। जब लोगों ने समोसे को तोड़ा तो उसमें से कबूतरों का एक जोड़ा बाहर निकला।

कबूतर ने कबूतरी से कहा: "मेरा चुम्मा ले!"

"नहीं, जैसे सौदागर का बेटा, इवान बुद्धिमती वासिलीसा को भूल गया, वैसे ही तुम भी मुझे भूल जाओगे।"

और कबूतर ने कबूतरी से दोबारा और तिबारा कहा: "मेरा चुम्मा ले!"

"नहीं, जैसे सौदागर का बेटा, इवान बुद्धिमती वासिलीसा को भूल गया, वैसे ही तुम भी मुझे भूल जाओगे।"

तब सौदागर का बेटा, इवान होश में आया और समझा कि यह भिखारिन कौन है और उसने अपने मां-बाप से कहा:

"यह मेरी बीवी है।"

"अच्छा," उन लोगों ने कहा, "जब तुम्हारे पास पहले से ही एक बीवी है, तब उसी के साथ रहो।"

जिस लड़की का ब्याह होनेवाला था और नहीं हुआ, उसे उन लोगों ने बढ़िया-बढ़िया तोहफ़े दे कर उसके घर भेज दिया, और सौदागर का बेटा, इवान अपनी सच्ची प्रियतमा, बुद्धिमती वासिलीसा के साथ हंसी-ख़ुशी के साथ जीवन बिताने लगा। जब तक वे दोनों ज़िन्दा रहे, तब तक भाग्य की उनपर कभी कुदृष्टि नहीं हुई।

सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़

कहते हैं कि किसी ज़माने में, कहीं एक किसान रहता था। उसकी बीवी मर गयी और तीन बेटियां छोड़ गयी। बूढ़ा एक नौकरानी रखना चाहता था ताकि घर की देखभाल हो सके। मगर उसकी सबसे छोटी बेटी मारयुशका ने कहा:

"पिता जी, नौकरानी मत रखिये। मैं अकेली ही घर की देखभाल करूंगी।"

इस तरह मारयुशका ने घर की देखभाल करनी शुरू की। उसे बड़ी सफलता हाथ लगी। कोई ऐसा काम नहीं था जो वह न कर सकती हो, और वह जो कुछ भी करती वहुत अच्छी तरह करती। उसका पिता उसे वेहद प्यार करता और ऐसी समझदार और मेहनती वेटी पाने के लिए अपना भाग्य सराहता। मारयुशका थी भी बला की खूवसूरत। किन्तु उसकी दोनों वहनें वदसूरत थीं। वे ईर्षालु और लालची थीं। वे हमेशा वनाव-शृंगार में लगी रहतीं और वढ़िया से बढ़िया कपड़े पहनतीं। वे नये नये गाउनों से अपने को सजातीं और यथार्थ से कहीं अधिक सुन्दर दिखाई देने की कोशिश में सारा-सारा दिन वरवाद कर देतीं। मगर जल्द ही सभी चीज़ें उन के मन से उतर जातीं क्या गाउन, क्या शाल, और क्या ऊंची एड़ी के जूते।

एक दिन बूढ़ा आदमी वाज़ार के लिए रवाना होने लगा तो उसने अपनी वेटियों से पूछा :

"मैं तुम्हारे लिए क्या खरीद कर लाऊं, प्यारी वेटियो? तुम्हें कौन सी चीज़ पाकर खुशी होगी?"

"हमारे लिए दो वढ़िया रूमाल ख़रीद लाइये, पिता जी," बड़ी वेटियों ने कहा। "और यह ख़्याल रखिये कि उन पर वड़े बड़े सुनहरे फूल वने हों।"

किन्तु छोटी वेटी मारयुशका चुपचाप खड़ी रही। इसलिए पिता ने उससे पूछा :

"और तुम्हें क्या चीज़ पसन्द आयेगी, मेरी विटिया?"

"प्यारे पिता, मेरे लिए सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ का एक पंख ख़रीद लाइये।"

कुछ अर्से बाद पिता रूमाल ख़रीद कर लौट आया, मगर पंख उसे कहीं नहीं मिला।

कुछ समय बाद पिता फिर बाज़ार जाने के लिए तैयार हुआ।

"अच्छा, बेटियो, अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें बताओ," उसने कहा।

दोनों बड़ी बेटियों ने बड़े चाव से कहा:

"हम दोनों के लिए चांदी की नालें लगे हुए बड़े बूटों के जोड़े लेते आइये।"

मगर मारयुशका ने फिर से वही बात दोहरायी:

"प्यारे पिता, मेरे लिए तो सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ का पंख लाइये।"

पिता दिन भर बाज़ार में घूमता रहा। बूट तो उसने ख़रीद लिये मगर पंख कहीं नहीं मिला। वह पंख के बिना ही लौट आया।

और ऐसे ही वक़्त बीतता गया। वह तीसरी बार बाज़ार के लिए चला तो उसकी बड़ी दो बेटियों ने उससे कहा:

"हम दोनों के लिए एक एक नया गाउन ख़रीद लाइये।"

पर मारयुशका ने तो फिर वही बात दोहरायी:

"प्यारे पिता, मुझे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ का पंख ला दीजिये।"

उस दिन भी पिता सुबह से शाम तक बाज़ार में घूमता रहा, पर पंख न मिला। वह अपनी गाड़ी में नगर से बाहर आ गया। रास्ते में अचानक ही एक छोटे क़द के बूढ़े आदमी से उसकी भेंट हुई।

"नमस्कार, बड़े मियां!"

"नमस्कार भाई! किधर जा रहे हो?"

"वापस गांव को। मैं बड़ी परेशानी में हूं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूं। मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ का एक पंख ख़रीद कर लाने को कहा था, मगर मुझे वह कहीं नहीं मिला।"

"तुम्हें जिस पंख की ज़रूरत है, वह मेरे पास है और उस पर टोना किया हुआ है। पर क्योंकि तुम भले आदमी हो, इसलिए मैं वह तुम्हें दे देता हूं।"

बूढ़े ने पंख निकाला और इस भले आदमी को दे दिया। वह पंख बिल्कुल साधारण लगता था और किसान अपने घर की ओर गाड़ी हांकता हुआ मन में सोचने लगा: "यह मारयुशका के किस काम आयेगा?"

थोड़ी देर में बूढ़ा किसान घर पहुंचा और उसने वे उपहार अपनी बेटियों को दे दिये। बड़ी लड़कियों ने अपने नये नये गाउन पहन कर देखे और मारयुशका पर हंसती रहीं:

"तू पहले भी मूर्ख थी और अब भी मूर्ख ही है! इस पंख को अपने बालों में खोंस ले–तू बहुत सुन्दर लगने लगेगी!"

किन्तु मारयुशका ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह केवल उनसे दूर रही। रात को जब सभी लोग सो गये तो उसने पंख फ़र्श पर रखकर धीरे से कहा:

"मेरे प्यारे मनपसन्द दूल्हे, सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़, मेरे पास आओ!"

तभी एक बहुत सुन्दर युवक उसके सामने आ खड़ा हुआ। जब सुबह होने वाली थी तो वह फ़र्श से टकरा कर बाज़ बन गया। मारयुशका ने खिड़की खोल दी और बाज़ नीले आकाश में ऊंचा उड़ गया।

इस तरह तीन रातों तक वह उसका स्वागत करती रही। दिन के समय वह नीले आकाश में बाज़ बना उड़ता रहता और रात होने पर वह मारयुशका के पास लौट आता और सुन्दर युवक बन जाता।

किन्तु चौथे दिन दुष्टा बहनों ने उन्हें देख लिया और जो कुछ देखा था, अपने पिता से कह सुनाया।

"प्यारी बेटियो"–उसने कहा, "तुम्हारे लिए सिर्फ़ अपने काम से वास्ता रखना ही बेहतर होगा!"

"खैर,"–बहनों ने सोचा, "हम देखेंगी कि इसके बाद क्या होता है।"

उन्होंने खिड़की के चौखटे में तेज़ छुरियों की एक कतार लगा दी और समीप ही छिपकर तमाशा देखने लगीं।

थोड़ी देर बाद सुनहरे बाज़ प्रगट हुआ। वह खिड़की के पास आया पर मारयुशका के कमरे में प्रवेश न कर सका। वह वहीं फड़फड़ाता और खिड़की के शीशे से टकराता रहा, यहां तक कि उसकी सारी छाती छुरियों से ज़ख़्मी हो गयी। इधर मारयुशका मीठी नींद सो रही थी और कुछ भी न जान सकी। अन्त में बाज़ ने कहा:

"जिसे मेरी चाह हो, मुझे पा सकता है, पर इसके लिए काफ़ी क़ीमत देनी होगी। तुम मुझे तब तक नहीं पा सकोगी जब तक कि पहन पहन कर, लोहे के बूटों के तीन जोड़े न टूट जायें, लोहे की तीन टोपियां न फट जायें और लोहे की तीन छड़ियां न टूट जायें।"

मारयुशका ने यह सुना तो बिस्तर से कूद कर खिड़की की ओर लपकी। पर बाज़ तो तब तक जा चुका था। केवल उसके खून के निशान बाक़ी रह गये थे। मारयुशका फूट-फूट कर रो पड़ी। उसकी आंसू की बूंदों ने लाल रक्त को धो डाला। रो-रो कर वह पहले से भी अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी।

तब वह बाप के पास गयी और बोली:

"मुझे बुरा-भला मत कहिये पिता जी! मुझे घर छोड़ना ही होगा। मेरी मंज़िल दूर है, बहुत दूर। मुझे जाने की इजाज़त दें। अगर मैं ज़िन्दा रही तो आपसे अवश्य मिलूंगी। अगर मर गयी तो यह समझ लीजिये कि ऐसा होना ही था।"

अपनी प्यारी बेटी से जुदा होने की बात सोच कर बाप

का कलेजा फटने लगा। मगर अन्त में उसने उसे इजाज़त दे ही दी।

इस तरह मारयुशका चल दी। उसने लोहे के बूटों के तीन जोड़े, लोहे की तीन छड़ियां और तीन टोपियां बनवा लीं। और तब वह अपनी कठिन यात्रा के लिए, अपने प्यारे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ को पाने के लिए चल दी। वह खुले मैदानों में से गुज़री, घने जंगल लांघे, ऊंचे पर्वत पार किये। नन्हे नन्हे पक्षियों ने अपने मधुर गीतों से उसका मन बहलाया, निर्झरों ने अपने शीतल जल से उसका गोरा मुख धोया और घने जंगलों ने उसका स्वागत किया। मारयुशका को कोई हानि नहीं पहुंचा सकता था क्योंकि तमाम जंगली जानवर, भूरे भेड़िये, लाल लोमड़ियां, और भूरे रीछ सभी उसकी रक्षा के लिए दौड़ते हुए आते थे। अन्त में लोहे के जूतों का एक जोड़ा और एक छड़ी टूटी और एक टोपी फटी।

एक दिन वह एक जंगल के खुले मैदान में पहुंची और वहां उसने मुर्ग़ी के पंजे पर एक छोटी-सी झोंपड़ी खड़ी देखी जो लगातार घूमती जा रही थी।

"छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी," मारयुशका ने कहा, "अपनी पीठ पेड़ों की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर। मुझे भीतर आने दे ताकि मैं वहां बैठकर रोटी खा लूं।"

छोटी झोंपड़ी ने अपनी पीठ पेड़ों की ओर और मुंह मारयुशका की ओर कर लिया। वह भीतर चली गयी। वहां

उसने देखा कि बुढ़िया ढड्डो, बाबा-यगा, जिसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ, एक झाड़ू और एक छड़ी लिये हुए बैठी है। मारयुशका को देखते ही बाबा-यगा चिल्लायी: "उफ़्! रूसी ख़ून! सुन्दरी, किधर से आयी है? किधर जायेगी?"

"दादी अम्मां, मैं सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ की तलाश कर रही हूं।"

"ओ, लड़की! वह तो बहुत दूर है। तुम्हें नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार जाना होगा। एक दुष्ट जादूगरनी ने जो वहां की महारानी है, उसे जादू की शराब पिलाकर अपने वश में कर लिया है और मजबूर करके उससे शादी कर ली है। पर मैं तुम्हारी मदद करूंगी। यह सोने का छोटा अंडा और चांदी की तश्तरी ले लो। दस-तिया-तीस राज्य में पहुंच कर महारानी की नौकरानी हो जाना। दिन भर का काम खत्म होने पर इस चांदी की तश्तरी में सोने का छोटा अंडा रख देना। यह अपने आप घूमने लगेगा। अगर वे लोग इसे ख़रीदना चाहें तो बेचना मत। उनसे यह मांग करना कि वे तुम्हें सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़ देख लेने दें।"

मारयुशका ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और आगे चल दी। जंगल बहुत घने और अन्धकारपूर्ण हो गये। वह इतनी अधिक डर गयी कि उसके पांव मन-मन के भारी हो गये। तभी अचानक एक बिल्ला आया। वह उछल कर मारयुशका के पास पहुंचा और म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ में बोला:

"मारयुशका, डरो नहीं। आगे और भी अधिक बुरी हालत होगी, मगर तुम आगे बढ़ती जाना और मुड़कर नहीं देखना।"

बिल्ला उसके पैरों से अपनी पीठ रगड़ता हुआ वहां से ग़ायब हो गया। मारयुशका आगे बढ़ी। जैसे जैसे वह जंगल में आगे बढ़ती गयी, जंगल अधिक भयानक होता गया। मंज़िल दर मंज़िल वह चलती गयी, चलती गयी, और तब लोहे के जूतों का दूसरा जोड़ा और छड़ी टूट गयी तथा टोपी फट गयी। और शीघ्र ही वह मुर्ग़ी के पैर पर खड़ी हुई एक दूसरी छोटी झोंपड़ी के पास पहुंची। इसके चारों तरफ़ मज़बूत बाड़ बनी हुई थी और खूंटों पर चमकदार नर-मुण्ड टंगे हुए थे।

मारयुशका ने कहा:

"छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी, अपनी पीठ पेड़ों की ओर और मुंह मेरी ओर कर ले। मुझे भीतर आकर रोटी खा लेने दे।"

छोटी झोंपड़ी ने वैसा ही किया। उसने अपनी पीठ वृक्षों की ओर और मुंह मारयुशका की ओर कर लिया। मारयुशका भीतर चली गयी। और वहां उसने देखा कि बुढ़िया ढड्डो, बाबा-यगा, जिसकी नाक थी ऐसी जैसी पेड़ की गांठ, एक झाड़ू और छड़ी लिये बैठी है।

बाबा-यगा ने मारयुशका को देखा तो चिल्लायी:

"उफ़! रूसी खून! सुन्दर लड़की, कहां से आयी है? किधर जायेगी?"

"मैं सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ को ढूंढना चाहती हूं, दादी मां।"

"और तुम मेरी बहन से मिल आयी हो?"

"हां, दादी मां, मिल आयी हूं।"

"बहुत बेहतर, रूपसी, तब मैं तुम्हारी मदद करूंगी। लो यह चांदी का चौखटा और सोने की सूई। यह सूई अपने आप चलती है और लाल मखमल पर चांदी और सोने की कढ़ाई करती है। अगर वे इसे ख़रीदना चाहें तो बेचना मत – उनसे कहना कि वे तुम्हें सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़ देख लेने दें।"

मारयुशका ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और आगे चल दी। जंगल में तरह-तरह की धड़ाम-धड़ाम और धम-धम की आवाज़ें तथा सीटियां सुनाई देने लगीं और लटकती हुई खोपड़ियों से अद्भुत सी रोशनी निकलने लगी। वातावरण बेहद भयानक हो गया किन्तु तभी एक कुत्ता उछल कर उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"भों, भों, मारयुशका, डरो नहीं प्यारी, अभी और भी भयानक दृश्य देखने को मिलेंगे। मगर तुम चलती जाना और पीछे मुड़कर नहीं देखना।"

इतना कहकर वह ग़ायब हो गया। मारयुशका आगे ही आगे चलती गयी। जंगल भी अधिक से अधिक अन्धकारपूर्ण होता गया। उसके घुटने छिल-छिल जाते और आस्तीनें फंस-फंस जाती थीं... मगर मारयुशका आगे ही आगे बढ़ती गयी और उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वह बहुत चली या थोड़ा, दूर तक चली या नज़दीक तक ही, यह कहना मुश्किल है। लेकिन चलते चलते लोहे के जूतों का तीसरा जोड़ा और तीसरी छड़ी टूट गयी तथा लोहे की टोपी फट गयी। तब वह एक जंगल के बीच खुले मैदान में पहुंची। वहां उसने मुर्ग़ी की टांग पर टिकी हुई एक छोटी-सी झोंपड़ी देखी जिसके चारों ओर ऊंचा घेरा था और खूंटों पर, घोड़ों की चमकती हुई खोपड़ियां टंगी हुई थीं।

तब मारयुशका ने कहा:

"छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी, अपनी पीठ पेड़ों की ओर और मुंह मेरी तरफ़ करो।"

झोंपड़ी ने अपनी पीठ वृक्षों की ओर तथा मुंह मारयुशका की ओर कर लिया। वह भीतर गयी। वहां उसे बुढ़िया ढड्डो बाबा-यगा, जिसकी नाक थी ऐसी जैसी पेड़ की गांठ, एक झाड़ू और छड़ी लिये बैठी दिखाई दी।

बाबा-यगा ने मारयुशका को देखा तो बोली:

"उफ़्! रूसी खून! सुन्दर लड़की, कहां से आयी है? किधर जायेगी?"

"दादी अम्मां, मैं सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ की खोज में जा रही हूं!"

"उसे ढूंढना कुछ आसान काम नहीं है, सुन्दरी! पर मैं तेरी मदद करूंगी। लो यह चांदी की चर्खी और सोने की तकली। तकली को हाथों में थामने पर यह अपने आप कातना शुरू कर देगी और इसमें से जो धागा निकलेगा वह सुनहरा होगा।"

"धन्यवाद, दादी अम्मां।"

"अच्छा, अच्छा, इस धन्यवाद को बाद के लिए सम्भाले रहो, और अब मेरी एक और बात सुनो। अगर वे सोने की तकली ख़रीदना चाहें तो बेचना मत, बल्कि उनसे कहना कि तुम्हें सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़ देख लेने दें।"

मारयुशका ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और अपनी राह चल दी। जंगल सांय सांय और भांय भांय कर रहा था तथा सीटियों की आवाज़ें आ रही थीं। सभी ओर उल्लू चक्कर काट रहे थे। चूहे अपने बिलों से बाहर निकलकर मारयुशका की ओर दौड़-दौड़ कर आ रहे थे। तब अचानक एक भूरा भेड़िया सामने से दौड़ता हुआ आया और कहने लगा :

"डरो नहीं मारयुशका, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। पीछे मुड़कर नहीं देखना।"

वह भेड़िये की पीठ पर चढ़ गयी और आन की आन में कहीं की कहीं जा पहुंची। वे दूर दूर तक फैली हुई स्तेपी और मख़मल जैसे चरागाहों में से गुज़रे। उन्होंने मलाई के किनारोंवाले दरिया पार किये। और ऐसे ऊंचे पहाड़ों पर चढ़े जो बादलों को छू रहे थे। भेड़िये पर सवार मारयुशका जल्दी से आगे ही आगे बढ़ती गयी यहां तक कि वह एक बिल्लौरी महल के पास पहुंच गयी जिसके ओसारे पर नक्काशी की हुई थी और जिसकी खिड़कियां वेलबूटेदार थीं। उस समय महारानी ख़ुद खिड़की में से झांक रही थी।

"लो," भेड़िये ने कहा, "हम पहुंच गये हैं, मारयुशका। मेरी पीठ से नीचे उतर जाओ और महल में जाकर नौकरानी हो जाओ।"

मारयुशका नीचे उतरी। उसने अपनी छोटी-सी गठरी उठाकर भेड़िए को धन्यवाद दिया। तब उसने महारानी के पास जाकर प्रणाम किया।

"माफ़ कीजिएगा," उसने कहा, "मैं आपका नाम नहीं जानती। आपको कोई नौकरानी तो नहीं चाहिए?"

"हां, चाहिए तो," महारानी ने कहा, "मैं बहुत अर्से से एक नौकरानी की खोज कर रही हूं। पर मुझे ऐसी नौकरानी की ज़रूरत है जो कातना और बुनना जानती हो और कढ़ाई कर सकती हो।"

"मैं यह सब कुछ कर सकती हूं," मारयुशका ने कहा।

"तब भीतर आकर काम शुरू कर दो।"

इस तरह मारयुशका नौकरानी बन गयी। उसने सुबह से रात तक काम किया और तब चांदी की तश्तरी और सोने का छोटा अंडा निकाल कर कहा:

"सोने के अंडे, अपनी चांदी की तश्तरी में घूमो और मुझे मेरा प्यारा प्रेमी दिखाओ।"

सोने का अंडा उसी समय घूमने लगा और तभी फ़ीनिस्त बाज़ उसके सामने आ गया। मारयुशका उसे देखती रही, देखती रही और उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

"फ़ीनिस्त मेरे प्यारे सुनहरे वाज़, तुमने यह क्या किया? मुझ दुखिया को अपनी याद में आंसू बहाने के लिए छोड़ कर क्यों चले आये?"

महारानी ने यह सुन लिया और कहा:

"मारयुशका, मुझे अपना सोने का अंडा और चांदी की तश्तरी बेच दो।"

"नहीं," मारयुशका ने जवाव दिया, "ये वेचे नहीं जा सकते मगर, यदि आप मुझे सुनहरे फ़ीनिस्त वाज़ को देखने की इजाज़त दे दें तो इन्हें मुफ़्त प्राप्त कर सकती हैं।"

महारानी ने कुछ देर इस पर विचार करने के वाद कहा:

"ख़ैर, ऐसा ही सही। रात को जब वह सो जायेगा तो मैं तुम्हें उसे देख लेने दूंगी।"

रात होने पर मारयुशका उसके सोने के कमरे में गयी। वहां उसने सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़ देखा। उसका प्रियतम गहरी नींद सो रहा था और उसे किसी तरह भी जगाया नहीं जा सकता था। वह देखती रही, देखती गई, मगर उसका जी न भरा, आंखें तृप्त न हुईं। उसने उसके मधुमय ओंठ चूमे, उसे अपनी गोरी छाती से लगाया। मगर उसका प्यारा सोता रहा, जगा नहीं। सुबह हो गयी, मगर मारयुशका तव भी अपने प्यारे को जगा नहीं पायी...

दिन भर काम करने के वाद, सन्ध्या को वह अपना चांदी का चौखटा और सोने की सुई निकालकर कढ़ाई करने लगी। इधर सूई कढ़ाई कर रही थी, उधर मारयुशका कहती जाती थी:

"छोटे तौलिये, तुझ पर कसीदा हो जाये, कसीदा हो जाये। मेरा प्यारा फ़ीनिस्त बाज़ तुम से अपना मुंह पोंछेगा।"

महारानी ने छिपकर यह सुना और पूछा:

मारयुशका, मुझे अपना चांदी का चौखटा और सोने की सूई बेच दोगी।"

"मैं बेचूंगी तो नहीं," मारयुशका ने जवाब दिया, "मगर यदि तुम मुझे सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़ देख लेने दोगी तो मुफ़्त ही दे दूंगी।"

महारानी ने बहुत विचार किया और अन्त में कहा: "ख़ैर, ऐसा ही सही। आज रात को उसके कमरे में जाकर देख लेना।"

रात आयी और मारयुशका उसके सोने के कमरे में दाख़िल हुई। आज भी उसने अपने सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ को गहरी नींद सोते पाया।

"ओ मेरे प्यारे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़, उठो, जागो!"

मगर उसका फ़ीनिस्त पहले की भांति गहरी नींद सोया रहा। बहुत कोशिश करने पर भी मारयुशका उसे जगा नहीं पायी।

सुबह होने पर मारयुशका काम में लग गयी और उसने अपनी चांदी की चर्ख़ी तथा सोने की तकली बाहर निकाल ली। महारानी ने ये चीज़ें देखीं तो मारयुशका से बेच देने के लिए कहा। पर मारयुशका ने जवाब दिया:

"बेचूंगी तो नहीं, मगर यदि तुम मुझे फ़ीनिस्त बाज़ के साथ एक रात रह लेने दोगे तो ये चीज़ें मुफ़्त ही दे दूंगी।"

"ख़ैर, ऐसा ही सही," महारानी ने कहा और अपने मन में सोचा: "वह उसे जगा तो सकेगी नहीं।"

रात होने पर मारयुशका अपने प्रियतम के सोने के कमरे में दाख़िल हुई, मगर फ़ीनिस्त पहले की भांति गहरी नींद सो रहा था।

"ओ मेरे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ उठो, जागो!"

पर फ़ीनिस्त सोता रहा और नहीं जागा। मारयुशका ने बार बार जगाने की कोशिश की, मगर असफल रही। पौ फटने का समय समीप आ गया था। वह फूट-फूट कर रोने लगी:

"प्यारे फ़ीनिस्त बाज़ उठो, अपनी आंखें खोलो। अपनी मारयुशका को पहचानो, उसे छाती से लगा लो!"

तभी मारयुशका की आंखों से गर्म-गर्म आंसू की एक बूंद सुनहरे बाज़ के उघाड़े कंधे पर गिरी। आंसू की बूंद से उसका कंधा जल गया। सुनहरा बाज़ जगा। उसने अपनी आंखें खोलीं और मारयुशका को देखा। उसने उसे अपनी बाहों में लेकर चूमा।

"क्या यह सचमुच तुम्हीं हो, मेरी मारयुशका? तो तुमने लोहे के बूटों के तीन जोड़े और तीन छड़ियां तोड़ डालीं और लोहे की तीन टोपियां फाड़ दीं? आख़िर तुमने मुझे पा लिया। चलो, अपनी मातृभूमि को लौट चलें।"

"छोटे तौलिये, तुझ पर कसीदा हो जाये,
जाये। मेरा प्यारा फ़ीनिस्त बाज़ तुम से अपना मुंह

महारानी ने छिपकर यह सुना और पूछा:

मारयुशका, मुझे अपना चांदी का चौखटा
की सूई बेच दोगी।"

"मैं बेचूंगी तो नहीं," मारयुशका ने जवाब दिया, '
यदि तुम मुझे सुनहरा फ़ीनिस्त बाज़ देख लेने दोगी तो मु
ही दे दूंगी।"

महारानी ने बहुत विचार किया और अन्त में कहा: "ख़ैर, ऐसा ही सही। आज रात को उसके कमरे में जाकर देख लेना।"

रात आयी और मारयुशका उसके सोने के कमरे में दाखिल
हुई। आज भी उसने अपने सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ को गहरी
सोते पाया।

"ओ मेरे प्यारे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़, उठो,

मगर उसका फ़ीनिस्त पहले की भांति गहरी
रहा। बहुत कोशिश करने पर भी मारयुशका
पायी।

सुबह होने पर मारयुशका काम में लग गय
अपनी चांदी की चर्ख़ी तथा सोने की तकली वाहर निका
महारानी ने ये चीज़ें देखीं तो मारयुशका से वेच देने के
कहा। पर मारयुशका ने जवाव दिया:

"बेचूंगी तो नहीं, मगर यदि तुम मुझे फ़ीनिस्त बाज़ के साथ एक रात रह लेने दोगे तो ये चीज़ें मुफ़्त ही दे दूंगी।"

"खैर, ऐसा ही सही," महारानी ने कहा और अपने मन में सोचा: "वह उसे जगा तो सकेगी नहीं।"

रात होने पर मारयुशका अपने प्रियतम के सोने के कमरे में दाखिल हुई, मगर फ़ीनिस्त पहले की भांति गहरी नींद सो रहा था।

"ओ मेरे सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ उठो, जागो!"

पर फ़ीनिस्त सोता रहा और नहीं जागा। मारयुशका ने बार बार जगाने की कोशिश की, मगर असफल रही। पौ फटने का समय समीप आ गया था। वह फूट-फूट कर रोने लगी:

"प्यारे फ़ीनिस्त बाज़ उठो, अपनी आंखें खोलो। अपनी मारयुशका को पहचानो, उसे छाती से लगा लो!"

तभी मारयुशका की आंखों से गर्म-गर्म आंसू की एक बूंद सुनहरे बाज के उघाड़े कंधे पर गिरी। आंसू की बूंद से उसका कंधा जल गया। सुनहरा बाज़ जगा। उसने अपनी आंखें खोलीं और मारयुशका को देखा। उसने उसे अपनी बाहों में लेकर चूमा।

"क्या यह सचमुच तुम्हीं हो, मेरी मारयुशका? तो तुमने लोहे के बूटों के तीन जोड़े और तीन छड़ियां तोड़ डालीं और लोहे की तीन टोपियां फाड़ दीं? आखिर तुमने मुझे पा लिया। चलो, अपनी मातृभूमि को लौट चलें।"

उन्होंने घर की ओर सफ़र करने की तैयारी शुरू कर दी। महारानी ने यह देखा तो ढिंढोरचियों को यह आदेश दिया कि सभी जगह उसके पति की बेवफ़ाई का ढिंढोरा पीट आयें।

उसके राज्य के सभी राजा और सौदागर एक सभा करने के लिए और यह फ़ैसला करने के लिए कि सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ को क्या सज़ा दी जाये, इकट्ठे हुए। तब सुनहरे फ़ीनिस्त बाज़ ने इकट्ठे हुए लोगों को सम्बोधित किया:

"आप लोग ही इस बात का फ़ैसला करें कि मेरी पत्नी किसे होना चाहिए? वह जो मुझे प्यार करती है या वह जो मुझे बेचती है और मुझसे धोखा करती है?"

सभी को सहमत होना पड़ा कि सिर्फ़ मार्युश्का ही उसकी बीवी होने की हक़दार है।

इसके बाद वे अपने देश को वापस चले गये। वहां उन्होंने एक शानदार दावत की। उनकी शादी के मौक़े पर अनेकों तोपों की सलामी दी गयी और बहुत से बाजे बजे। उन्होंने जो दावत दी वह इतनी शानदार थी कि लोग उसे अभी तक याद करते हैं। इसके बाद वे दोनों लम्बे अर्से तक सुखी जीवन बिताते रहे।
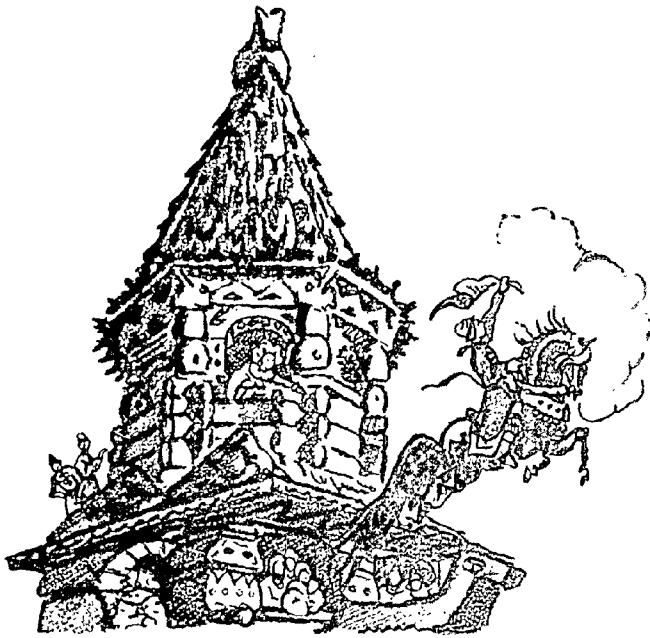
भूरा घोड़ा

बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक बूढ़ा रहता था। उसके तीन बेटे थे। दो बड़े बेटे घर के काम-काज की देखभाल करते थे, बड़े उदार और दानी थे। उन्हें सुन्दर कपड़े पहनने का भी बड़ा शौक़ था। मगर इवान जो सबसे छोटा था, उसमें कोई भी गुण नहीं था, निरा उल्लू था। वह अपना अधिकतर समय

अलावघर पर बैठकर बिता देता और केवल खुमियां इकट्ठी करने के लिए बाहर जंगल में जाता।

जब बूढ़े का मरने का वक़्त क़रीब आया तो उसने तीनों बेटों को अपने पास बुलाकर कहा:

"जब मैं मर जाऊं तो तुम लोग लगातार तीन रातों तक मेरी क़ब्र पर ज़रूर आना और मेरे खाने के लिए कुछ रोटी लाना।"

बूढ़ा मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। पहली रात सबसे बड़े भाई को क़ब्र पर जाना था लेकिन वह बड़ा सुस्त था या यों कहिये कि बड़ा डरपोक था और क़ब्र पर जाने को तैयार न था। इसलिए उसने बुद्धू इवान से कहा:

"अगर तुम आज मेरी जगह पिता की क़ब्र पर चले जाओ तो मैं तुम्हें केक ख़रीद दूंगा।"

इवान फ़ौरन राज़ी हो गया। उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क़ब्र पर जा पहुंचा। वह क़ब्र के पास बैठ गया और आगे घटने वाली घटना का इन्तज़ार करने लगा। आधी रात होने पर ज़मीन फट कर अलग हो गयी और बूढ़ा बाप क़ब्र से बाहर आकर बोला:

"कौन है? क्या तुम हो मेरे सबसे बड़े बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भूंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

और इवान ने जवाब दिया:

"यह मैं हूं, आपका बेटा इवान, पिता जी। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

तब पिता ने भर पेट रोटी खायी और अपनी क़ब्र में जा लेटा। इवान घर लौट आया और रास्ते में केवल खुमियां इकट्ठी करने के लिए ही रुका।

जब वह घर आया तो उसके सबसे बड़े भाई ने पूछा:

"पिता जी से भेंट हुई?"

"हां, हुई," इवान ने जवाब दिया।

"क्या उन्होंने रोटी खायी?"

"हां! उन्होंने भर पेट रोटी खायी।"

एक और दिन गुज़रा, और तब दूसरे भाई की बारी आयी। लेकिन वह भी या तो बेहद सुस्त था या इतना डरता था कि जाना नहीं चाहता था। इसलिए उसने इवान से कहा:

"वान्या, अगर तुम मेरी जगह चले जाओ तो मैं तुम्हें लाप्ती बनवा दूंगा।"

"ठीक है," इवान ने कहा, "मैं जाऊंगा।"

उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क़ब्र पर जाकर इन्तज़ार करने लगा।

आधी रात होने पर धरती फट कर अलग हो गयी। बुड्ढे बाप ने क़ब्र से बाहर आकर पूछा:

"कौन है? क्या तुम हो मेरे दूसरे बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल-चाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

और इवान ने जवाब दिया:

"मैं हूं, आपका बेटा इवान, पिता जी। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

तब पिता ने डटकर रोटी खायी और अपनी क़ब्र में लौट गया। इवान घर वापस चला आया। रास्ते में उसने केवल खुमियां इकट्ठी कीं। वह घर आया तो दूसरे भाई ने पूछा:

"पिता जी ने रोटी खायी?"

"हां, भर पेट खायी।"

तीसरी रात इवान की बारी थी। उसने अपने भाइयों से कहा:

"दो रातों तक मैं पिता जी की क़ब्र पर जाता रहा हूं। आज तुममें से कोई एक जाये। मैं घर पर रहकर आराम करूंगा।"

"नहीं," भाइयों ने जवाब दिया, "आज भी तुम ही जाओ। तुम तो इसके आदी हो चुके हो।"

"ख़ैर!" इवान राज़ी हो गया।

उसने कुछ रोटी ली और क़ब्र पर जा पहुंचा। आधी रात होने पर ज़मीन फटी और बूढ़ा बाप क़ब्र से बाहर आया।

"कौन है?" उसने कहा, "क्या तुम हो, मेरे तीसरे बेटे, वान्या? मुझे बताओ, रूस कैसा है? क्या कुत्ते भौंकते हैं या भेड़िये चिल्लाते हैं, या मेरे बेटे रोते हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया:

"मैं हूं पिता जी, आपका बेटा वान्या। और रूस में सब ओर शान्ति है।"

पिता ने भर पेट रोटी खायी और उससे कहा :

"केवल तुमने ही मेरे आदेश का पालन किया है, इवान। मेरी क़ब्र पर आते हुए सिर्फ़ तुम ही नहीं डरे। अब तुम ऐसा करना – खुले मैदान में जाकर पुकारना : 'भूरे घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!' जब घोड़ा तुम्हारे सामने आये तो उसके दायें कान में से दाखिल होकर बायें से बाहर आ जाना। तब तुम इतने सुन्दर युवक बन जाओगे, कि जैसा पहले कभी किसी ने देखा ही न हो। तब घोड़े पर सवार हो कर, जहां मन चाहे चले जाना।" इतना कह कर पिता ने उसे एक लगाम दी।

उसने वह लगाम ले ली और धन्यवाद दे कर घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुमियां इकट्ठी कीं।

वह घर आया तो उसके भाइयों ने पूछा :

"पिता जी से भेंट हुई, इवान?"

"हां, हुई!"

"क्या उन्होंने रोटी खायी?"

"हां, उन्होंने भर पेट खायी और मुझे क़ब्र पर न आने का आदेश दिया।"

अब, उन्हीं दिनों ज़ार ने देश के सभी भागों में डोंडी पिटवायी। सभी वीर युवकों और कुंवारे नवयुवकों को राजधानी में इकट्ठे होने के लिए कहा गया।

ज़ार की बेटी अनुपमा ने अपने लिए बारह स्तम्भों पर

बलूत के लट्ठों की बारह तहों की एक अटारी बनवाने का आदेश दिया था। और उसने सबसे ऊपर की मंज़िल की खिड़की में बैठकर उस आदमी की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया था जो अपने घोड़े से खिड़की तक उछल कर उसके होंठों पर चुम्बन की छाप लगायेगा। जीतनेवाला चाहे कुलीन हो, चाहे छोटी जाति का, ज़ार अपनी बेटी अनुपमा का विवाह उसी के साथ करेगा और उसे अपना आधा राज्य भी देगा।

यह ख़बर इवान के भाइयों ने भी सुनी। उन्होंने आपस में यह फ़ैसला किया कि वे भी अपनी अपनी क़िस्मत आज़मायेंगे।

उन्होंने अपने बढ़िया घोड़ों को ख़ूब जई खिलायी और अस्तबलों से बाहर लाये। उन्होंने अपनी चुनी हुई पोशाक पहनी और घुंघराले बाल संवारे। इवान ने अलावघर पर बैठे हुए अपने भाइयों से कहा:

"मुझे भी अपने साथ ले चलो, मेरे भाइयो! मुझे भी क़िस्मत आज़माने का मौक़ा दो।"

"तुम्हें साथ ले चलें! उल्लू हो तो! तुम यहीं अलावघर पर बैठे अच्छे लगते हो!" उन्होंने ठहाका लगाया। "अगर तुम हमारे साथ गये तो लोग तुम्हें देखकर हंसेंगे। तुम्हें तो यही चाहिए कि जंगलों में जाकर खुमियों की तलाश करो।"

उसके भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए। उन्होंने अपने टोपों के सिरे ऊपर करके सीटी बजायी, सिंहनाद किया और सरपट घोड़े दौड़ाते हुए धूल के बादल में विलीन हो गये। इवान

ने पिता की दी हुई लगाम उठायी और खुले मैदान में जा पहुंचा। पिता ने जैसे बताया था, उसने वैसे ही जोर से पुकारा :

"भूरे घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो।"

और लो! एक घोड़ा उसकी तरफ़ तेजी से आता हुआ दिखाई दिया। उसके पांव तले की धरती कांपती थी, उसकी नाक से शोले निकल रहे थे और कानों से धुएं के बादल। वह तेज घोड़ा इवान के पास आकर रुक गया और कहने लगा :

"हुक्म, मालिक?"

इवान ने घोड़े की गर्दन थपथपायी, उसे लगाम पहनायी और उसके दायें कान में प्रवेश कर बायें से बाहर आ गया। देखते ही देखते वह उषा-वेला के आकाश जैसा सुन्दर युवक बन गया। वह भूरे घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और जार के महल की तरफ़ चल दिया। भूरा घोड़ा अपनी दुम की फटकार के साथ पहाड़ियों को लांघता, घाटियों को फांदता, मकानों और पेड़ों पर से कूदता हुआ बढ़ता गया।

आखिर इवान जार के महल के आंगन में जा पहुंचा। उस समय महल के इर्द-गिर्द के मैदान लोगों से भरे पड़े थे। वहां ही बारह खम्भों पर बलूत के लट्ठों की बारह तहोंवाली अटारी थी। उस अटारी की खिड़की में राजकुमारी अनुपमा बैठी थी।

जार बाहर ओसारे में आया और उसने कहा :

"वीर युवको! तुम में से जो अपने घोड़े की पीठ से अटारी की खिड़की तक उछल कर मेरी बेटी के होंठ चूमेगा,

वही उससे शादी करेगा और उसे ही मैं अपना आधा राज्य भी दूंगा।"

राजकुमारी अनुपमा को पाने की इच्छा रखनेवाले, बारी-बारी से घोड़े पर सवार होकर आये, कूदे-फांदे, मगर अफ़सोस! खिड़की उनकी पहुंच से बहुत दूर थी। दूसरे लोगों के साथ इवान के दो भाइयों ने भी कोशिश की। वे आधी ऊंचाई तक भी न पहुंच सके।

अब इवान की बारी आयी। उसने अपना भूरा घोड़ा सरपट दौड़ाया, ललकारते और सिंहनाद करते हुए ऊपर को उछला और दो कम अन्तिम लट्ठे तक जा पहुंचा। वह एक बार फिर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाता हुआ आया, ऊपर को उछला और इस बार एक कम अन्तिम लट्ठे तक पहुंच गया। उसके लिए अब तीसरा और आखिरी मौक़ा बाक़ी था। इस बार उसने भूरे घोड़े को बहुत ही तेज़ दौड़ाया। घोड़ा हांफ रहा था और उसके मुंह से झाग निकल रहा था। आग की तेज़ लपट की भांति वह खिड़की के पास पहुंचा और ऊपर की ओर उछल कर उसने राजकुमारी अनुपमा के शहद जैसे मीठे होंठ चूम लिये। राजकुमारी ने अपनी मुहर की अंगूठी से उसके माथे पर निशान लगा दिया।

लोग चिल्लाये: "इसे पकड़ो! इसे रोको!"

लेकिन इवान और उसके घोड़े का कहीं पता न था।

वे तेज़ी से खुले मैदानों में पहुंचे। इवान भूरे घोड़े के बायें कान में दाख़िल होकर दायें से बाहर निकल आया और देखते

ही देखते वह पहले जैसा हो गया। भूरे घोड़े को वहीं छोड़ कर अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुमियां इकट्ठी कीं। वह मकान के भीतर गया, एक फटे कपड़े से उसने अपना माथा बांध लिया और पहले की भांति अलावघर पर चढ़कर लेट गया।

कुछ देर बाद उसके भाई आये। वे जहां गये थे और उन्होंने जो कुछ देखा था, सब बयान किया।

"राजकुमारी को चाहने वाले बहुत थे और बहुत सुन्दर भी," उन्होंने कहा। "लेकिन उनमें से एक तो बस, कमाल ही का था। वह अपने तूफ़ानी घोड़े से उछलकर राजकुमारी की खिड़की तक पहुंचा और राजकुमारी के होंठ चूमने में सफल हो गया। हमने उसे आते देखा, मगर जाते नहीं देखा।"

चिमनी के पासवाली अपनी जगह से इवान ने कहा:

"शायद वह मैं था – जिसे तुमने देखा था।"

उसके भाई गुस्से में आ गये और बोले:

"अरे बेवकूफ़, अपनी बकवास बन्द करो! वहां अलावघर पर बैठकर खुमियां खाया करो!"

तब इवान ने खोल दिया राजकुमारी की मुहर के ऊपर बंधा हुआ चिथड़ा। बस, फिर क्या था, तेज रोशनी से सारा घर जगमगा उठा। उसके भाई डरकर चिल्लाये:

"अरे बेवकूफ़, यह क्या कर रहे हो? मकान जला डालोगे!"

अगले रोज़ ज़ार ने बहुत बड़ी दावत की, जिसमें उसने अपनी सारी प्रजा बुलायी। उस दावत में जागीरदार और रईस, साधारण लोग, ग़रीब-अमीर, जवान-बूढ़े – सभी बुलाये गये।

इवान के भाई भी दावत में शामिल होने के लिए तैयार हुए।

"मुझे भी अपने साथ ले चलो, भाइयो," इवान ने प्रार्थना की।

"क्या?" वे हंसे। "जो भी तुम्हें देखेगा, हंसेगा। यहां बैठकर खुमियां खाओ।"

भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर चले गये और इवान उनके पीछे-पीछे पैदल ही चल दिया। वह ज़ार के महल में पहुंचा और दूर एक कोने में ही बैठ गया। राजकुमारी अनुपमा मेहमानों से भेंट करने लगी। वह सभी को हल्की शराब का एक जाम देती और यह देखती कि किसी के माथे पर उसकी मुहर तो नहीं लगी है।

इवान के सिवा वह सभी मेहमानों से मिल ली। इवान के पास पहुंचते ही राजकुमारी का दिल बैठ गया। इवान के सारे शरीर पर कालिख पुती हुई थी और बाल बिखरे हुए थे।

राजकुमारी अनुपमा ने पूछा:

"तुम कौन हो? कहां से आये हो? और तुम्हारा माथा इस चिथड़े से क्यों बंधा हुआ है?"

"मैं गिरकर ज़ख़्मी हो गया हूं," इवान ने जवाब दिया।

राजकुमारी ने चिथड़ा खोला तो सारा महल एक दम जगमगा उठा।

"यह मेरी मुहर है!" वह चिल्लायी। "यह रहा मेरा मंगेतर!"

ज़ार इवान के पास आया और उसे देखकर कहने लगा:

"अरे नहीं, राजकुमारी अनुपमा यह तुम्हारा मंगेतर नहीं हो सकता! यह तो निरा उल्लू है।"

इवान ने ज़ार से कहा: "मुझे अपना मुंह धोने की इजाज़त दो, ज़ार।"

ज़ार ने इजाज़त दे दी। इवान आंगन में पहुंचकर उसी भांति चिल्लाया जैसा कि उसके पिता ने सिखाया था:

"भूरे घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!"

और लो! तभी भूरा घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आता दिखाई दिया। उसके पैरों तले की ज़मीन कांप रही थी, उसकी थूंथनी से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। इवान उसके दायें कान में दाख़िल होकर बायें से बाहर निकल आया और एक बार फिर वह उषा-बेला के

आकाश जैसा सुन्दर बन गया। वह कितना सुन्दर था यह बयान के बाहर की चीज़ है।

महल में इकट्ठे हुए जब सभी लोगों ने उसे देखा तो दांतों तले उंगली दबा कर रह गए।

इसके बाद, उन दोनों की शादी हो गयी और ज़ार ने इस खुशी में एक बड़ी दावत की।
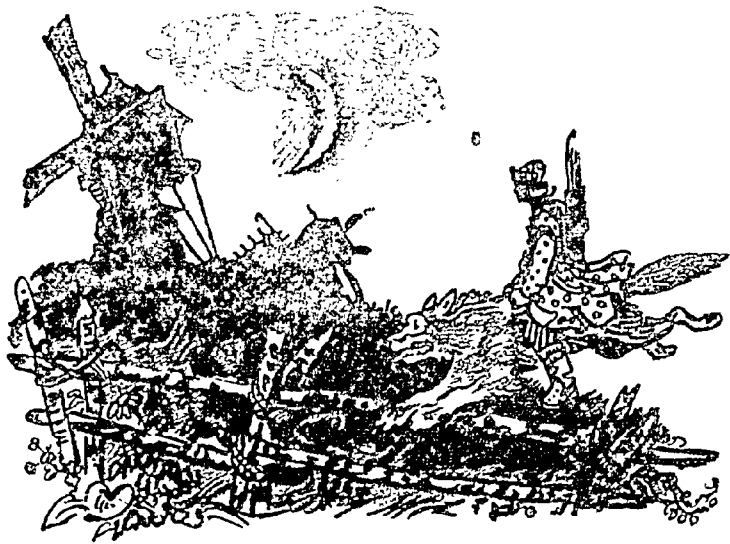
शाहज़ादा इवान और भूरा भेड़िया

किसी समय एक ज़ार रहता था, जिसका नाम बेरेन्देई था। उसके तीन बेटे थे। सबसे छोटे का नाम इवान था।

ज़ार के ख़ूबसूरत बाग़ में सेव का एक पेड़ था। इस पेड़ में सोने के सेब लगते थे।

ज़ार को एक दिन मालूम हुआ कि कोई वहां रात के समय आता है और उसके सोने के सेब चुरा ले जाता है। ज़ार को इसका बेहद दुख हुआ। उसने बाग़ में पहरेदार भेजे, मगर वे चोर को पकड़ने में असमर्थ रहे।

ज़ार तो जैसे दुख-सागर में डूब गया। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। उसके बेटों ने उसे दिलासा देन की कोशिश की:

"प्यारे पिता जी, दुखी मत हों। हम ख़ुद बग़ीचे की रखवाली करेंगे।"

सबसे बड़े बेटे ने कहा:

"आज मैं ख़ुद जाकर बग़ीचे की रखवाली करूंगा।"

वह बग़ीचे में गया और संध्या समय बहुत देर तक वहां घूमता रहा किन्तु उसे वहां कोई भी दिखाई न दिया। तब वह नर्म घास पर लेटे-लेटे सो गया।

सुबह होने पर ज़ार ने उससे पूछा:

"मेरे लिए कोई शुभ समाचार लाये? चोर का कुछ पता लगा?"

"नहीं पिता जी! मैंने रात भर पलक तक न झपकी, मगर मुझे वहां कोई भी दिखाई नहीं दिया।"

दूसरी रात, मंझला बेटा बग़ीचे की रखवाली के लिए गया। वहां जाकर वह भी सो गया। सुबह होने पर उसने भी बड़े भाई जैसा जवाब दिया।

अब सबसे छोटे बेटे की बारी आयी। जब शाहज़ादा इवान अपने पिता के बग़ीचे की रखवाली करने गया तो लेटना तो एक तरफ़, वह रात भर बैठा भी नहीं। आंखों में नींद महसूस होने पर वह शबनम से मुंह धो लेता और फिर से सचेत होकर पहरा देने लगता।

सहसा रात के सन्नाटे में इवान को बग़ीचे में रोशनी-सी दिखाई दी। धीरे-धीरे रोशनी तेज़ होती गयी और बग़ीचे की हर चीज़ जगमगा उठी। उस प्रकाश में उसने सेब के पेड़ पर एक अग्नि-पक्षी को बैठे देखा। वह सोने के सेबों पर चोंच मार रहा था।

शाहज़ादा इवान रेंगते हुए पेड़ के पास पहुंच गया और उसने पक्षी की दुम जा पकड़ी। मगर अग्नि-पक्षी ज़ोर से फड़फड़ाया और पकड़ से निकल कर उड़ गया। दुम का एक पंख शाहज़ादे के हाथ में रह गया।

अगली सुबह शाहज़ादा अपने पिता के पास गया।

"कहो, मेरे प्यारे वान्या, तुमने चोर पकड़ा?" ज़ार ने पूछा।

"प्यारे पिता जी, मैं उसे पकड़ तो न सका, मगर यह मालूम कर आया हूं कि वह है कौन। लीजिये, निशानी के रूप में यह पंख लाया हूं। पिता जी, आपके सेबों का चोर अग्नि-पक्षी है।"

ज़ार ने पंख ले लिया। इसके बाद वह खुश होकर खाने-पीने लगा। मगर फिर एक सुहावने दिन उसे अग्नि-पक्षी का ध्यान आया। उसने अपने बेटों को बुलाया और उनसे कहा:

"मेरे प्यारे बेटो, मैं चाहता हूं कि तुम अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर इस बड़ी दुनिया में घूम-फिर आओ। शायद तुम्हें किसी जगह अग्नि-पक्षी मिल जाये।"

बेटों ने अपने पिता को झुककर प्रणाम किया, अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए और चल दिये। सबसे बड़े बेटे ने एक राह पकड़ी, मंझले ने दूसरी और शाहज़ादे इवान ने तीसरी।

शाहज़ादा इवान बहुत चला या थोड़ा, दूर तक चला या नज़दीक ही यह कहना मुश्किल है। मगर एक गर्म दोपहरी में उसे इतनी अधिक थकावट महसूस हुई कि वह घोड़े से उतरा और थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गया।

न जाने वह बहुत देर तक सोया या थोड़ी देर तक मगर जब वह जागा तो देखा कि घोड़ा ग़ायब है। वह घोड़े की खोज में चल दिया। वह चलता गया, चलता गया और अन्त में उसे एक जगह घोड़े का पंजर पड़ा दिखाई दिया। साफ़ की हुई हड्डियों के सिवा कुछ भी बाक़ी न था।

शाहज़ादे इवान को बेहद दुख हुआ। बिना घोड़े के वह अपना सफ़र कैसे जारी रख सकता था?

"ख़ैर, कोई बात नहीं," उसने सोचा, "मुझे हिम्मत न हारनी चाहिए।"

वह पैदल ही चल दिया। चलते-चलते वह बिल्कुल थक गया और नर्म घास पर हताश और उदास होकर बैठ गया। अचानक ही, न जाने कहां से, एक भूरा भेड़िया दौड़ता हुआ उसके पास आया।

"तुम यहां इतने उदास और मुंह लटकाये क्यों बैठे हो, शाहज़ादे?" भूरे भेड़िये ने पूछा।

"उदास होने के सिवा चारा ही क्या है, भूरे भेड़िये? मैं अपना बढ़िया घोड़ा खो बैठा हूं।"

"तुम्हारे घोड़े को खानेवाला मैं ही हूं, शाहज़ादे इवान... पर, अब मुझे तुम पर बहुत दया आ रही है। घर से इतनी दूर तुम क्या कर रहे हो और कहां जा रहे हो?"

"पिता जी ने मुझे इस बड़ी दुनिया में अग्नि-पक्षी की खोज करने के लिए भेजा है।"

"छिः छिः उस घोड़े के सहारे तो तुम तीन बरसों में अग्नि-पक्षी के पास तक भी नहीं पहुंच सकते थे। केवल मैं ही यह जानता हूं कि अग्नि-पक्षी कहां रहता है। तो ऐसा ही सही – क्योंकि मैंने तुम्हारा घोड़ा खाया है, इसलिए मैं तुम्हारा सच्चा और वफ़ादार सेवक बनकर रहूंगा। मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मुझे कसकर पकड़ लो।"

शाहज़ादा इवान भूरे भेड़िये की पीठ पर चढ़ गया और भेड़िया बिजली की कौंध की भांति घड़ी भर में कहीं का कहीं जा पहुंचा। हरे जंगलों को लांघते, झीलों को पार करते हुए अन्त में वे एक ऊंचे क़िले के पास पहुंचे।

"जो कुछ मैं कहता हूं उसे ध्यान से सुनना और याद भी रखना, शाहज़ादे इवान," भूरे भेड़िये ने कहा। "बेखटके उस दीवार पर चढ़ जाना। डरने की कोई बात नहीं है। सौभाग्य से हम ऐसे समय यहां पहुंचे हैं जब सभी पहरेदार सो रहे हैं। बुर्ज के भीतर एक कमरे में तुम एक खिड़की देखोगे।

उस खिड़की में एक सोने का पिंजरा रखा हुआ होगा। उसी में अगिन-पक्षी दिखाई देगा। पक्षी को अपनी छाती से चिपटा कर छिपा लेना। मगर पिंजरे को छूने की भूल मत करना।"

शाहज़ादा इवान दीवार पर चढ़ गया। उसने बुर्ज की खिड़की में सोने का पिंजरा और पिंजरे में अगिन-पक्षी देखा। उसने पक्षी को बाहर निकाला और छाती से चिपटा कर छिपा लिया। मगर उसकी आंखें थीं कि पिंजरे पर टिक कर ही रह गयीं। टकटकी बांधे उसे देखता रहा। "अहा, कैसा सुन्दर सोने का पिंजरा है!" ललचायी नज़रों से उसे देखते हुए शाहज़ादे ने मन ही मन सोचा। "मैं इसे कैसे छोड़ दूं।" वह भेड़िये की चेतावनी भूल गया। ज्यों ही उसने पिंजरे को छुआ, कि क़िले में ज़ोर का शोरोगुल मच गया। तुरही और ढोल बजने लगे। पहरेदार जाग उठे और शाहज़ादे को पकड़कर ज़ार अफ़रोन के पास ले गये।

"तुम कौन हो और कहां से आये हो?" ज़ार अफ़रोन ने ग़ुस्से में भरकर पूछा।

"मैं शाहज़ादा इवान हूं—ज़ार बेरेन्देई का बेटा।"

"छिः, कैसी शर्म की बात है! शाहज़ादा और चोर!"

"मगर आपने अपने पक्षी को हमारे बग़ीचे से सेब क्यों चुराने दिये?"

"अगर तुमने ईमानदारी से मुझे यह आकर बता दिया होता तो मैं तुम्हारे पिता के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए पक्षी तुम्हें उपहार में दे देता। मगर अब मैं दूर-दूर तक तुम्हारे

परिवार की बदनामी करूंगा... लेकिन ख़ैर, अगर तुम मेरा एक काम कर दो तो तुम्हें क्षमा भी कर सकता हूं। दूर कहीं किसी राज्य में ज़ार कुसमान राज्य करता हैं। उसके पास एक घोड़ा है जिसके अयाल सुनहरे है। मुझे वह घोड़ा ला दो तो मैं तुम्हें इस पक्षी के साथ-साथ पिंजरा भी उपहार में दे दूंगा।"

शाहज़ादा इवान बेहद निराश होकर भूरे भेड़िये के पास लौट आया।

"मैंने तुम्हें पिंजरा छूने से मना किया था," भेड़िये ने कहा। "तुमने मेरी बात पर कान क्यों नहीं दिया?"

"मुझे बहुत अफ़सोस है, भूरे भेड़िये। मुझे क्षमा कर दो।"

"सिर्फ़ अफ़सोस ज़ाहिर करने से कुछ हाथ-पल्ले नहीं पड़ेगा। फिर से मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। जब ओखली में सिर दे ही दिया तो मूसलों का क्या डर।"

भूरा भेड़िया शाहज़ादे इवान को लेकर वहां से चल दिया। वे बहुत चले या थोड़ा, दूर तक चले या नज़दीक ही, यह कहना मुश्किल है, पर अन्त में वे उस क़िले के पास पहुंचे जहां सुनहरे अयाल वाला घोड़ा था।

"शाहज़ादे इवान, दीवार पर चढ़ जाओ। पहरेदार सो रहे हैं। अस्तबल में जाकर घोड़े को ले लो। मगर भूलकर भी लगाम को हाथ मत लगाना!"

शाहज़ादा इवान क़िले में जा पहुंचा। तमाम पहरेदार सो रहे थे। वह अस्तबल में गया। वहां उसे सुनहरे अयाल वाला

घोड़ा मिल गया। मगर वह लगाम को छुए बिना न रह सका। वह लगाम सोने की थी और उसमें क़ीमती हीरे जड़े हुए थे। जैसा बढ़िया घोड़ा था वैसी ही बढ़िया लगाम भी थी।

शाहज़ादे इवान ने जैसे ही लगाम को हाथ लगाया कि क़िले के भीतर एक कुहराम-सा मच गया। तुरहियां तथा ढोल वजने लगे और पहरेदार जाग उठे। वे उसे पकड़कर ज़ार कुसमान के पास ले गये।

"तुम कौन हो और कहां से आये हो?"

"मैं शाहज़ादा इवान हूं।"

"ज़रा ग़ौर करो, शाहज़ादा और घोड़े की चोरी! कैसी बेहूदा बात है! एक साधारण किसान भी ऐसा नीच काम करने से हिचकिचायेगा। ख़ैर, अगर तुम मेरा एक काम कर दोगे तो मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगा, शाहज़ादे इवान! ज़ार दालमात की एक बेटी है। उसका नाम मोहिनी येलेना है। उसे चुराकर मुझे ला दो। इसके बदले में मैं तुम्हें सुनहरे अयाल वाला घोड़ा और उसकी लगाम भी, उपहार में दे दूंगा।"

शाहज़ादा इवान पहले से भी अधिक परेशान होकर भूरे भेड़िये के पास पहुंचा।

"मैंने तुम्हें लगाम छूने से मना किया था, शाहज़ादे इवान!" भेड़िये ने कहा। "तुमने मेरी वात पर कान क्यों नहीं दिया?"

"मुझे वहुत अफ़सोस है, भूरे भेड़िये! मुझे क्षमा कर दो।"

"सिर्फ़ अफ़सोस ज़ाहिर करने से कुछ हाथ-पल्ले नहीं पड़ेगा। ख़ैर, फिर से मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

भूरा भेड़िया शाहज़ादे इवान को लेकर तेज़ी से चल दिया। चलाचल, चलाचल, वे ज़ार दालमात के राज्य में पहुंच गये। मोहिनी येलेना अपनी दाइयों और सेविकाओं के साथ क़िले के बग़ीचे में घूम रही थी।

"तुम्हें नहीं जाने दूंगा, इस बार मैं ख़ुद जाऊंगा," भूरे भेड़िये ने कहा। "तुम उसी तरफ़ लौट जाओ जिधर से हम आये हैं। जल्द ही मैं तुमसे वहां आ मिलूंगा।"

इस तरह शाहज़ादा इवान उधर ही लौट गया जिधर से वह आया था। भूरा भेड़िया दीवार फांद कर बग़ीचे में जा पहुंचा। उसने एक झाड़ी के पीछे छिपकर झांकना शुरू किया। वहां मोहिनी येलेना अपनी दाइयों और दासियों के साथ भ्रमण करती दिखाई दी। भ्रमण करते-करते येलेना अपनी दाइयों और दासियों से कुछ पीछे रह गयी। भूरा भेड़िया तो मौक़े की ताड़ में था ही – झटपट उसे जा पकड़ा। भेड़िये ने उसे अपनी पीठ पर लादा और पलक झपकते ही क़िले से बाहर हो गया।

शाहज़ादा इवान उसी रास्ते से वापस जा रहा था। अचानक ही उसे भूरा भेड़िया दिखाई दिया। उसकी पीठ पर मोहिनी येलेना थी। शाहज़ादे की ख़ुशी का कोई ठिकाना न था।

"जल्दी करो, तुम भी मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, वरना हो सकता है वे हमें पकड़ लें," भूरे भेड़िये ने कहा।

शाहज़ादे इवान और मोहिनी येलेना को अपनी पीठ पर लादे हुए भूरा भेड़िया जल्दी-जल्दी रास्ता तय कर रहा था। हरे जंगल, नीली झीलें और नदियां पीछे छोड़ता हुआ वह आगे निकल गया। वह बहुत दौड़ा या थोड़ा, दूर तक दौड़ा या नज़दीक तक – यह कहना मुश्किल है। आख़िर वे ज़ार कुसमान के राज्य में जा पहुंचे।

"तुम इतने चुपचाप और उदास क्यों हो, शाहज़ादे इवान?" भूरे भेड़िये ने पूछा।

"उदास न होऊं तो क्या करूं, भूरे भेड़िये? ऐसी अनुपम सुन्दरी से जुदा होने की बात सोचकर और यह ख़्याल करके कि मोहिनी येलेना को एक घोड़े के बदले में देना होगा दिल टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा है।"

"फ़िक्र मत करो। तुम्हें ऐसी अनुपम सुन्दरी से अलग न होना पड़ेगा! हम इसे कहीं छिपा लेंगे। मैं येलेना मोहिनी का वेश धारण कर लूंगा और तुम मुझे ज़ार के पास ले जाना।"

इस तरह उन्होंने मोहिनी येलेना को जंगल में एक झोंपड़ी में छिपा दिया। भूरे भेड़िये ने एक कलाबाज़ी लगायी और जब वह सीधा खड़ा हुआ तो लो! हूबहू मोहिनी येलेना! शाहज़ादा उसे ज़ार कुसमान के पास ले गया। ज़ार बहुत ख़ुश हुआ और उसने शाहज़ादे इवान के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

"दुल्हन ला देने के लिए मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूं, शाहज़ादे इवान। अब सुनहरे अयाल वाला घोड़ा और लगाम तुम्हारी है।"

शाहज़ादा इवान घोड़े पर सवार होकर मोहिनी येलेना के पास पहुंचा। उसने उसे घोड़े पर विठाया और वे वहां से चल दिये।

ज़ार कुसमान ने धूमधाम से विवाह किया और दिन भर नाच-रंग होता रहा। जब सोने का वक़्त हुआ तो वह मोहिनी येलेना को अपने साथ सोने के कमरे में ले गया। मगर ज्यों ही वह बिस्तर में लेटा तो उसे युवा पत्नी की जगह भेड़िये की थूंथनी दिखाई दी। ज़ार इतना अधिक डरा कि विस्तर से नीचे लुढ़क गया। भूरा भेड़िया कूदकर बाहर आ गया और वहां से भाग निकला।

भूरा भेड़िया शाहज़ादे इवान से जा मिला। उसने कहा:

"तुम किसलिए इतने उदास हो, शाहज़ादे इवान?"

"मैं उदास हुए बिना कैसे रह सकता हूं? सुनहरे अयाल वाले इस अमूल्य घोड़े को अगिन-पक्षी से कैसे वदलूं।"

"अपनी उदासी दूर करो, मैं तुम्हारे मदद करूंगा," भेड़िये ने कहा।

जल्द ही वे ज़ार अफ़रोन के राज्य में पहुंचे।

"इस घोड़े और मोहिनी येलेना को कहीं छिपा दो," भेड़िये ने कहा। "मैं सुनहरे अयाल वाला घोड़ा वन जाऊंगा और तुम मुझे ज़ार अफ़रोन के पास ले जाना।"

इस तरह उन्होंने मोहिनी येलेना और सुनहरे अयाल वाले घोड़े को जंगल में छिपा दिया।

भूरे भेड़िये ने एक कलाबाज़ी लगायी और सुनहरे अयाल वाला घोड़ा बन गया। शाहज़ादा इवान उसे ज़ार अफ़रोन के पास ले गया। ज़ार बहुत खुश हुआ और सोने के पिंजरे में बन्द अग्नि-पक्षी उसे दे दिया।

शाहज़ादा इवान जंगल की ओर लौट गया। मोहिनी येलेना को उसने सुनहरे अयाल वाले घोड़े पर अपने पीछे बिठाया, सोने का पिंजरा हाथ में लटकाया और घर की ओर चल दिया।

इसी बीच ज़ार अफ़रोन ने उस अद्भुत घोड़े को अपने पास मंगवाया। वह उसकी पीठ पर चढ़ने ही वाला था, कि वह भूरे भेड़िये में बदल गया। ज़ार इतना अधिक डरा कि जहां खड़ा था, वहीं गिर गया। भूरा भेड़िया वहां से दौड़ा और शाहज़ादे इवान से जा मिला।

"अच्छा, अब अलविदा," उसने कहा। "मैं अब और आगे नहीं जा सकता।"

शाहज़ादा इवान घोड़े की पीठ से नीचे उतरा, उसने तीन बार भूरे भेड़िये को प्रणाम किया और बार-बार धन्यवाद दिया।

"सदा के लिए अलविदा मत कहो। हो सकता है फिर कभी तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ जाये," भूरे भेड़िये ने कहा।

"मुझे इसकी फिर किसलिए ज़रूरत होगी?" शाहज़ादे इवान ने मन ही मन सोचा। "मेरी तो सभी इच्छाएं पूरी हो चुकी हैं।"

वह मोहिनी येलेना और अग्नि-पक्षी को साथ लेकर

सुनहरे अयाल वाले घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। अपने देश की सीमा में पहुंच कर, कुछ खाने-पीने के लिए वह थोड़ी देर के लिए रुक गया। उसके पास थोड़ी-सी रोटी थी। उसे खाकर उन्होंने चश्मे से ठण्डा पानी पिया। तब वे कुछ देर तक आराम करने के लिए लेट गये।

ज्यों ही शाहज़ादा इवान सोया उसके भाई वहां आ पहुंचे। वे अगिन-पक्षी की खोज में विदेशों में घूम आये थे और अब ख़ाली हाथ घर लौट रहे थे।

जब उन्होंने देखा कि शाहज़ादा इवान सभी कुछ ले आया है तो उन्होंने आपस में सलाह की:

"आओ अपने भाई इवान का काम तमाम कर डालें। तब तो उसकी सारी चीज़ें हमारी हो जायेंगी।"

बस, फिर क्या था, उन्होंने शाहज़ादे इवान को मार डाला। तब वे सुनहरे अयाल वाले घोड़े की पीठ पर सवार हो गये। उन्होंने अगिन-पक्षी का पिंजरा सम्भाला, मोहिनी येलेना को एक घोड़े पर बिठाया और उससे कहा:

"देखो, इस घटना की किसी को कानों-कान ख़बर न होने पाये।"

बेचारा इवान धरती पर मरा पड़ा था। पहाड़ी कौवे उसके सिर के चारों ओर मंडरा रहे थे। तभी अचानक भूरा भेड़िया वहां पहुंचा और उसने एक कौवे तथा उसके बच्चे को पकड़ लिया।

"कौवे, अगर तुम मुझे मृत और अमृत पानी ला दो तो मैं तुम्हारे बच्चे की जान बख़्श दूंगा।"

कौवा उड़ गया—वह इसके सिवा और कर भी क्या सकता था? भेड़िया उसके बच्चे को दबोचे रहा। कुछ देर बाद कौवा मृत और अमृत पानी लेकर लौट आया। भूरे भेड़िये ने मृत पानी को इवान के घावों पर छिड़का और वे भर गये। तब उसने उसपर अमृत छिड़का और वह फिर से ज़िन्दा हो गया।

"ओह, मैं तो गहरी नींद सोया रहा हूं," शाहज़ादे इवान ने कहा।

"हूं, गहरी नींद," भेड़िये ने कहा। "और अगर मैं न आता तो शायद कभी जागने की नौबत ही न आती। तुम्हारे अपने भाई तुम्हें मारकर और तुम्हारी सारी पूंजी लूट-कर चले गये हैं। जल्दी से मेरी पीठ पर चढ़ जाओ।"

उन्होंने बहुत तेज़ी से उनका पीछा किया और उन्हें रास्ते में ही जा पकड़ा। भूरे भेड़िये ने उनकी बोटियां-बोटियां नोच कर खेत में फेंक दीं।

शाहज़ादे इवान ने भूरे भेड़िये को झुककर प्रणाम किया और सदा के लिए उससे विदा ली।

तब शाहज़ादा इवान सुनहरे अयाल वाले घोड़े पर चढ़कर घर की ओर चला। वह अपने पिता के लिए अग्नि-पक्षी और

अपने लिए प्यारी-सी दुल्हन – मोहिनी येलेना को लेकर घर पहुंचा।

ज़ार बेरेन्देई बेहद खुश हुआ। उसने अपने बेटे से बहुत से प्रश्न पूछे। शाहज़ादे इवान ने बताया कि कैसे भूरे भेड़िये ने उसकी सहायता की और किस तरह उसके भाइयों ने उसे सोते हुए मार डाला था और किस तरह भूरे भेड़िये ने उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं।

यह सुनकर पहले तो ज़ार बेरेन्देई को दुख हुआ मगर शीघ्र ही वह इस दुख को भूल गया। शाहज़ादे इवान ने मोहिनी येलेना से शादी कर ली और वे बाद में भी सदा खुशी-खुशी जीवन बिताते रहे।

जाओ वहां-न जाने कहां. लाओ उसे-न जाने किसे

किसी जगह एक ज़ार राज्य करता था। वह अकेला और कुंवारा था। उसने एक तीरंदाज़ नौकर रखा हुआ था जिसका नाम अन्द्रेई था।

एक दिन तीरंदाज़ शिकार के लिए गया। वह दिन भर जंगलों में घूमता रहा, मगर एक भी शिकार हाथ न लगा। बहुत देर हो गयी थी, इसलिए निराश होकर वह

घर की ओर लौट चला। अचानक उसने एक पेड़ पर एक कबूतरी बैठी देखी।

"मैं इसी को क्यों न निशाना बनाऊं," उसने सोचा।

उसने तीर चलाया जो कबूतरी को बींध गया और वह पेड़ से नीचे धरती पर आ गिरी। अन्द्रेई ने उसे उठा लिया और उसकी गर्दन मरोड़ कर थैले में डालने ही वाला था कि कबूतरी इन्सानी आवाज़ में बोली:

"मुझे मत मारो, तीरंदाज़ अन्द्रेई। मेरी गर्दन मत मरोड़ो। मुझे ज़िन्दा घर ले जाओ और खिड़की में रख दो। मगर ध्यान रखना ज्यों ही मैं ऊंघने लगूं, मुझपर दायें हाथ से ज़ोर से, चोट करना। तुम्हारी क़िस्मत का सितारा चमक उठेगा।"

तीरंदाज़ अन्द्रेई अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पाया। "यह सब क्या है?" उसने सोचा। "यह तो बिल्कुल कबूतरी दिखाई देती है, फिर भी इन्सान की तरह बातचीत करती है।" वह कबूतरी को घर ले गया। उसे खिड़की में रखकर स्वयं पास खड़ा हो गया और उसके ऊंघने की प्रतीक्षा करने लगा।

धीरे-धीरे कबूतरी ने अपना सिर पंखों के बीच छिपा लिया और ऊंघने लगी। कबूतरी ने जैसे कहा था, अन्द्रेई ने वैसे ही किया। कबूतरी ज़मीन पर गिरी और गिरकर शाहज़ादी मारिया बन गयी। वह पौ फटते समय के आसमान-

सी सुन्दर थी। शायद ही कभी कोई ऐसी सुन्दरी धरती पर पैदा हुई होगी।

शाहज़ादी मारिया ने अन्द्रेई से कहा:

"तुमने मुझे पकड़ तो लिया अब अपने साथ रखने की भी व्यवस्था करो। मुझसे शादी कर लो। मैं तुम्हारी ईमानदार तथा प्यारी पत्नी बनकर रहूंगी।"

इस तरह मामला तय हो गया। तीरंदाज़ अन्द्रेई ने शाहज़ादी मारिया से शादी कर ली और वह तथा उसकी पत्नी बहुत खुश-खुश एक साथ रहने लगे। मगर तीरंदाज़ अब भी अपना कर्तव्य नहीं भूला। पौ फटते ही वह जंगल में जाता, जंगली मुर्गों का शिकार करता और उन्हें शाही रसोई में दे आता। इसी तरह कुछ समय बीत गया और तब एक दिन शाहज़ादी मारिया बोली:

"हम बहुत ग़रीबी का जीवन बिता रहे हैं अन्द्रेई।"

"हां, सो तो है ही।"

"अगर तुम सौ रूबल मांगकर मुझे उसके रेशमी धागे खरीद कर ला दो तो मैं कोई ऐसा उपाय करूंगी कि हमारी जिन्दगी सुधर जाये।"

अन्द्रेई ने वही किया जो शाहज़ादी ने कहा था। वह अपने दोस्तों के पास गया, एक रूबल किसी से मांगा, दो किसी से, तथा इसी तरह रक़म इकट्ठी करके उसने रंग-बिरंगे

रेशमी धागे खरीदे। वह उन्हें लेकर अपनी बीवी के पास पहुंचा। बीवी ने कहा:

"अब जाकर सो जाओ, रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह जरूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई जाकर सो गया और शाहज़ादी मारिया बुनने के लिए बैठ गयी। वह रात भर बुनती रही और उसने उन धागों की ऐसी दरी बनायी जैसी कि दुनिया ने पहले कभी न देखी थी। उस दरी पर सारे राज्य की तसवीर बनी हुई थी। उसमें नगर और गांव, वन और खेत, आकाश में उड़ते पक्षी, जंगली दरिन्दे, समुद्र में तैरती मछलियां और चमकते हुए सूरज-चांद – सभी दिखाई देते थे।

सुबह होने पर शाहज़ादी मारिया ने दरी अपने पति को दी और कहा:

"इसे सौदागरों की गली में जाकर बेच दो। मगर ख़्याल रखना कि तुम अपनी तरफ़ से कोई क़ीमत मत बताना, जो कुछ वे दें, वही ले लेना।"

अन्द्रेई ने दरी लेकर अपनी बांह में लटकायी और सौदागरों की दुकानों के सामने घूमने लगा।

उसी वक़्त एक सौदागर दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा और कहने लगा:

"भलेमानस, तुम इसकी क्या क़ीमत लोगे?"

"तुम सौदागर हो, तुम्हीं बता दो।"

सौदागर सोचता रहा, सोचता रहा, मगर वह कुछ फ़ैसला न कर सका। तब एक दूसरा सौदागर आया, उसके बाद तीसरा और फिर एक और। जल्द ही वहां सौदागरों की भीड़ लग गयी। वे सभी दरी को देख-देख कर हैरान होते रहे, पर क़ीमत का फ़ैसला न कर सके।

तभी ज़ार का सलाहकार अपनी गाड़ी में वहां से गुज़रा और भारी भीड़ देखकर उसके मन में जिज्ञासा हुई कि वह मामले की जांच करे। वह गाड़ी से बाहर आया। मुश्किल से भीड़ को चीरता हुआ वह आगे गया और कहने लगा:

"नमस्कार समुद्र-पार के सौदागरो! यहां क्या हो रहा है?"

"हम इस दरी की क़ीमत निश्चित नहीं कर पा रहे हैं," उन्होंने कहा।

ज़ार के सलाहकार ने दरी देखी तो ठगा-सा रह गया।

"सच-सच बताओ, ए तीरंदाज़! कहां से मिली तुम्हें यह अद्भुत दरी?" उसने पूछा।

"मेरी बीवी ने बुनी है," तीरंदाज़ ने जवाब दिया।

"और तुम इसकी कितनी क़ीमत चाहते हो?"

"मैं नहीं जानता। मेरी बीवी ने कहा था कि मैं वही क़ीमत ले लूं जो दी जाये।"

"तो ये रहे दस हज़ार रूबल, तीरांदाज़।"

अन्द्रेई ने रूबल लिये और दरी देकर घर चला गया।

ज़ार का सलाहकार महल में पहुंचा और उसने वह दरी ज़ार को दिखायी।

ज़ार अपनी आंखों के सामने सारे राज्य का चित्र देखकर दंग रह गया। कुछ देर के लिए तो मानो उसकी सांस चलनी बन्द हो गयी।

"तुम जो भी चाहो, कहो, मगर मैं तुम्हें यह दरी वापस नहीं दूंगा!" ज़ार ने कहा।

उसने बीस हज़ार रूबल मंगवाकर सलाहकार को सौंप दिये। सलाहकार ने रक़म ले ली और सोचा: "कोई बात नहीं, मैं अपने लिए इससे भी बेहतर दरी बनवा लूंगा।"

वह अपनी गाड़ी में सवार होकर नगर की उस छोटी-सी बस्ती में पहुंचा जहां तीरंदाज़ रहता था। उसने तीरंदाज़ अन्द्रेई की झोपड़ी खोज निकाली, और दरवाज़े पर दस्तक दी। शाहज़ादी मारिया ने दरवाज़ा खोला। ज़ार के सलाहकार का एक पांव दहलीज़ के ऊपर था और दूसरा वहीं नीचे ही जमकर रह गया। वह तो जैसे सकते में आ गया। उसकी ज़बान से एक शब्द भी नहीं निकल पाया और इतना भी भूल गया कि वह किसलिए आया है। उसके सामने एक ऐसी सुन्दरी खड़ी थी कि अगर वह ज़िन्दगी भर उसे देखता रहता तो भी शायद उसकी आंखों की प्यास न बुझती।

शाहज़ादी मारिया ने कुछ देर इन्तज़ार किया और जब वह एक शब्द भी न बोला तो उसने उसको कन्धे से पकड़कर

घुमा दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद सलाहकार ने अपने को सम्भाला और खोया-सा घर लौट आया। मगर उस दिन के बाद वह खाना-पीना भूल गया और हर समय तीरंदाज़ की पत्नी की याद में डूबा रहने लगा।

ज़ार ने देखा कि उसका सलाहकार परेशान रहता है तो उससे इसका कारण पूछा।

"आह, हुज़ूर, कुछ दिन हुए मैंने एक तीरंदाज़ की पत्नी देखी थी। यूं कहिये कि दिल निकालकर ले गयी। किसी तरह भी उसे अपने मन से निकाल नहीं पाता हूं। उसने तो मुझपर जादू-टोना-सा कर दिया है।"

तब ज़ार ने सोचा कि वह भी तीरंदाज़ की बीवी को देखेगा। उसने साधारण कपड़े पहने और नगर की उसी बस्ती में जा पहुंचा। उसने वह झोंपड़ी खोज ली जहां तीरंदाज़ अन्द्रेई रहता था और वहां पहुंचकर दरवाज़े पर दस्तक दी। शाहज़ादी मारिया ने दरवाज़ा खोला। ज़ार ने अपना एक पांव दहलीज़ पर रखा, मगर दूसरा वहीं नीचे ही गड़ा-सा रह गया। वह ठगा-सा रह गया। टकटकी बांधे उस परी को देखता रहा।

शाहज़ादी मारिया ने कुछ देर इन्तज़ार किया और जब वह कुछ भी न बोला तो उसने उसको कन्धे से पकड़ कर घुमा दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

ज़ार के दिल को भारी धक्का लगा। "मैं अकेला क्यों रहूं?" उसने सोचा। "मुझे तो ऐसी सुन्दर दुल्हन मिल सकती

है। इसे तो रानी होना चाहिए न कि तीरंदाज़ की बीबी।"

जब वह वापस महल में पहुंचा तो शैतान ने उसके दिमाग़ को आ घेरा। उसने तीरंदाज़ की बीबी छीन लेने का विचार किया। उसने अपने सलाहकार को बुलाया और कहा:

"अन्द्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का कोई तरीक़ा सोचो। मैं उसकी बीबी से शादी करना चाहता हूं। अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हें इनाम में नगर, गांव और सोना दूंगा। पर अगर मदद नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगा।"

सलाहकर बुरी तरह परेशान रहने लगा। तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का उसे कोई मार्ग न सूझा और इसलिए वह शराब पीकर अपना ग़म ग़लत करने के लिए एक शराबख़ाने में पहुंचा।

उसी शराबख़ाने में मांग-मांगकर शराब पीनेवाला एक शराबी कीड़ा, फटा कफ़्तान पहने हुए उसके पास आया और बोला:

"तुम किसलिए इस क़दर परेशान हो, सलाहकार?"

"जाओ यहां से, शराबी कीड़े।"

"मुझे दुतकारने के बजाय शराब का एक जाम पिलाओ और मैं तुम्हें कुछ नेक सलाह दूंगा।"

ज़ार के सलाहकार ने उसे शराब का एक गिलास दिया और उसे अपनी तकलीफ़ बतायी।

"तीरंदाज़ अन्द्रेई बहुत सीधा-सादा आदमी है," शराबी

कीड़े ने कहा। "अगर उसकी पत्नी भी भोली-भाली हुई तो उससे बहुत आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है। हमें कुछ ऐसी तरकीब सोचनी चाहिए जो उसकी भी समझ पर ताला डाल दे। जाओ, जाकर ज़ार से कहो कि अन्द्रेई को दूसरी दुनिया में यह मालूम करने के लिए भेज दें कि उसके स्वर्गीय पिता – बूढ़े ज़ार – का वहां क्या हाल-चाल है। अन्द्रेई वहां गया तो बस, वहीं का हो रहेगा।"

ज़ार के सलाहकार ने उस शराबी कीड़े को धन्यवाद दिया और उलटे पांव ज़ार के पास भागा।

"मैंने तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का एक रास्ता ढूंढ निकाला है, अन्नदाता!" उसने कहा।

इसके बाद उसने ज़ार को अपनी तरकीब बतायी। ज़ार बेहद खुश हुआ और उसने उसी समय अन्द्रेई तीरंदाज़ को बुलवा भेजा।

"सुनो अन्द्रेई," उसने कहा, "तुमने बहुत वफ़ादारी से आज तक हमारी ख़िदमत की है। अब मैं तुम्हें एक और ज़रूरी काम सौंपता हूं। दूसरी दुनिया में जाकर यह मालूम करो कि मेरे पिता जी का वहां कैसा हाल-चाल है। अगर तुम नहीं जाओगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

अन्द्रेई घर गया और परेशान हाल बेंच पर बैठ रहा।

"तुम इतने उदास क्यों हो? क्या कोई मुसीबत सिर पर आ पड़ी है?" शाहज़ादी मारिया ने पूछा।

अन्द्रेई ने उसे ज़ार का आदेश सुनाया।

"यह भी कोई परेशानी की बात है!" शाहज़ादी मारिया ने कहा। "बहुत मामूली काम है। असली काम तो अभी आगे आयेगा। जाकर सो जाओ, रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अगली सुबह अन्द्रेई ज्यों ही उठा, शाहज़ादी मारिया ने उसे सुखारी का एक थैला और सोने की अंगूठी दी।

"ज़ार के पास जाओ और उसे यह कहो कि वह तुम्हारे साथ अपने सलाहकार को भी दूसरी दुनिया में भेज दे, ताकि वह इस बात की गवाही दे सके कि तुम सचमुच ही दूसरी दुनिया में हो आये हो। अपने हमराही के साथ जाते हुए इस अंगूठी को अपने सामने फेंक देना। यह तुम्हें रास्ता दिखाती जायेगी।"

अन्द्रेई ने सुखारी का थैला और अंगूठी लेकर अपनी बीवी को अलविदा कहा। वह सलाहकार को साथ लेने के लिए ज़ार के पास पहुंचा। ज़ार इन्कार न कर सका। इस तरह वे दोनों वहां से रवाना हुए। अन्द्रेई ने अंगूठी नीचे फेंकी और वह सामने लुढ़कती हुई आगे-आगे जाने लगी। उस अंगूठी के पीछे-पीछे चलते हुए उसने खुले मैदान, दलदलें, झीलें और नदियां पार कीं। ज़ार का सलाहकार भी गिरता-पड़ता पीछे-पीछे चलता जाता था।

जब वे चलते-चलते थक जाते तो कुछ सुखारी खा लेते और फिर आगे चल देते।

वे बहुत चले या थोड़ा चले, बहुत दूर गये या थोड़ी दूर – यह कहना मुश्किल है, मगर अन्त में वे एक घने जंगल में पहुंचे। वे एक घाटी में उतरे। वहां जाकर अंगूठी ठहर गयी।

अन्द्रेई और ज़ार के सलाहकार ने वहां बैठकर कुछ सुखारी खाई। तभी उन्होंने क्या देखा कि बूढ़ा ज़ार जलाने की लकड़ी से भरा हुआ एक बड़ा-बड़ा ठेला खींच रहा है। बोझ से उसकी कमर दोहरी हुई जा रही थी और वह बुरी तरह हांफ रहा था। दो शैतान, एक दाईं ओर से दूसरा बाईं ओर से, उसे छड़ियों से मार-मारकर चला रहे थे।

"देखो," अन्द्रेई ने कहा, "वह ज़ार का मृत पिता तो नहीं है?"

"हां, हां, वही तो है," सलाहकार ने कहा।

"श्रीमान शैतानो," अन्द्रेई ने चिल्लाकर कहा, "उस मृतक को कुछ समय के लिए छोड़ दो, मैं उससे कुछ बातें करना चाहता हूं।"

"तुम्हारे ख़्याल में हमारे पास रुकने और इन्तज़ार करने का समय है?" शैतानों ने जवाब दिया। "यह लकड़ी कौन ढोयेगा? हम तो यह बोझ ढोने से रहे?"

"मेरे साथ यह एक आदमी है। अगर तुम चाहो तो यह उसकी जगह ले सकता है," अन्द्रेई ने कहा।

इस तरह शैतानों ने बूढ़े ज़ार को अलग करके उसकी जगह सलाहकार को ठेले में जोत दिया। तब उन्होंने उसे छड़ियां

लगानी शुरू की, एक ने बाईं ओर से दूसरे ने दाईं ओर से। सलाहकार दोहरा होकर पूरे जोर से ठेला खींचने लगा।

अन्द्रेई ने बूढ़े जार से पूछा कि उसकी जिन्दगी कैसी चल रही है।

"ओह, तीरंदाज अन्द्रेई," जार ने कहा, "उस दुनिया में मेरा बहुत बुरा हाल है! मेरे बेटे को मेरी याद दिलाना और कहना कि लोगों से बुरा बर्ताव न करे, वरना यहां आने पर उसकी भी मेरी जैसी बुरी हालत होगी।"

उनकी बातचीत अभी खत्म हुई ही थी कि शैतान खाली गाड़ी लिये वापस लौट आये। अन्द्रेई ने बूढ़े जार से विदा ली। सलाहकार भी उसके साथ हो लिया और वे दोनों घर की ओर चल दिये।

कुछ अर्से बाद वे स्वदेश लौटे और महल में गये। जार ने जब तीरंदाज को देखा तो गुस्से में आकर बौखला उठा।

"वापस किस तरह लौट आये?"

"मैं दूसरी दुनिया में आपके पिता से मिल आया हूं। उन्होंने आपके लिए अपना प्यार भेजा है और कहा है कि अगर आप उनकी भांति दूसरी दुनिया में अपनी दुर्गति करवाना नहीं चाहते तो लोगों से बुरा बर्ताव करना छोड़ दें।"

"और तुम यह साबित कैसे करोगे कि तुम दूसरी दुनिया में हो आये हो और मेरे पिता से मिल आये हो?"

"मैं यह बात उन निशानों की मदद से साबित कर सकता

हूं जो शैतानों की छड़ियों ने आपके सलाहकार की पीठ पर छोड़े हैं।"

ज़ार के लिए यह काफ़ी बड़ा सबूत था। इसलिए उसे अन्द्रेई को छोड़ना ही पड़ा। इसके सिवा वह कर भी क्या सकता था? तब उसने अपने सलाहकार से कहा:

"अगर तुम इस तीरंदाज़ से छुटकारा पाने की कोई दूसरी तरकीब नहीं खोजोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

सलाहकार को इस बार पहले से भी अधिक परेशानी हुई। वह शराबख़ाने में जाकर एक मेज़ पर बैठ गया और शराब लाने का आदेश दिया। तभी वह शराबी कीड़ा उसके पास आ पहुंचा और कहने लगा:

"क्या बात है, तुम इतने परेशान क्यों हो, सलाहकार? मुझे शराब का एक जाम पिलाओ। मैं तुम्हें कोई नेक राय दूंगा।"

सलाहकार ने उसे शराब का जाम दिया और अपनी तकलीफ़ बतायी।

"कोई फ़िक्र मत करो," शराबी कीड़े ने कहा। "अभी जाकर ज़ार से कहो कि तीरंदाज़ को यह काम करने के लिए कहे—यह एक ऐसा काम है जिसका करना तो एक तरफ़, सोचना भी मुश्किल है: तीरंदाज़ को नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार जाकर लोरी गानेवाला बिल्ला लाने के लिए कहा जाये।"

सलाहकार दौड़ता हुआ ज़ार के पास पहुंचा और उसे बताया कि वह किस तरह तीरंदाज़ से छुटकारा पा सकता है। ज़ार ने अन्द्रेई को बुलवाया।

"अच्छा अन्द्रेई, तुमने मेरी एक ख़िदमत तो की अब दूसरी भी करो। नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार जाकर लोरी गानेवाला बिल्ला लाओ। अगर नहीं लाये तो मैं अपनी तलवार से तुम्हारा सिर क़लम कर दूंगा।"

अन्द्रेई मुंह लटकाये घर पहुंचा। उसने अपनी बीवी को बताया कि ज़ार ने उसे नया क्या हुक्म दिया है।

"कुछ फ़िक्र मत करो," शाहज़ादी मारिया ने कहा। "बहुत मामूली काम है। असली काम तो अभी आयेगा। जाकर सो जाओ। रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई सो गया तो शाहज़ादी मारिया एक लुहार के पास पहुंची। उसने उसे लोहे की तीन टोपियां, एक संडासी और तीन छड़ियां बनाने के लिए कहा – एक लोहे की, दूसरी तांबे की और तीसरी टीन की।

अगले दिन मारिया ने अन्द्रेई को तड़के ही जगाया।

"ये तीन टोपियां, एक संडासी और तीन छड़ियां हैं – नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार चले जाओ। वहां पहुंचने से छः फ़र्लांग पहले तुम्हें बेहद नींद आयेगी – इसका कारण वह टोना होगा जो लोरी गानेवाला बिल्ला

तुम पर करेगा। मगर याद रखना तुम्हें सोना नहीं है। अपने हाथों को जोड़ लेना, पैरों को घसीटना और अगर जरूरत हो तो ज़मीन पर लुढ़कने लगना। अगर तुम सो गये तो समझो कि जान गयी, वह बिल्ला तुम्हें मार डालेगा।"

शाहज़ादी मारिया ने उसे बताया कि वह क्या करे, कैसे करे और तब उसे उसकी मुहिम के लिए विदा किया।

कहानी सुनने-सुनाने में तो देर नहीं लगती मगर काम करने में देर लगती है। अन्त में अन्द्रेई दस-तिया-तीस राज्य में पहुंचा। मंज़िल से छ: फ़र्लांग इधर ही उसे नींद आने लगी। उसने लोहे की तीनों टोपियां सिर पर ओढ़ लीं, हाथों को जोड़ लिया, पैरों को रगड़ा और फिर ज़मीन पर लुढ़कता भी रहा।

जैसे तैसे वह जागता रहा। अन्त में वह एक ऊंचे खम्भे के पास पहुंच गया।

लोरी गानेवाले बिल्ले ने अन्द्रेई को देखा तो लगा गुर्राने और खम्भे से सीधा उसके सिर पर झपटा। उसने पहली टोपी और फिर दूसरी भी तोड़ डाली और फिर तीसरी तोड़ने ही वाला था जब अन्द्रेई ने उसे संडासी से पकड़ कर नीचे गिरा दिया और छड़ियों से उसकी मरम्मत करने लगा। पहले उसने उसे लोहे की छड़ी से पीटा जो टूट गयी; फिर तांबे की छड़ी से खूब ख़बर ली तो वह भी टूट गयी। अन्त में वह टीन की छड़ी से उसे पीटने लगा।

टीन की छड़ी मुड़ जाती, मगर टूटने का नाम न लेती—

सिर्फ़ उसके शरीर के गिर्द घेरा डाल लेती। जिस समय अन्द्रेई उसे पीटता तो बिल्ला उसे पादरियों और पादरियों की बेटियों के बारे में काल्पनिक कहानियां सुनाता जाता। मगर अन्द्रेई तो जैसे कान में तेल डाले हुए था। वह पूरी ताक़त से उसे पीटता रहा।

लोरी गानेवाला बिल्ला अन्द्रेई की पिटाई की ताब न ला सका और यह देख कर कि उसका छलपूर्ण टोना भी बेकार था, वह गिड़गिड़ाने और प्रार्थना करने लगा:

"मुझे छोड़ दो, भले आदमी, तुम जो भी चाहोगे, मैं वही करूंगा।"

"मेरे साथ चलने को तैयार हो?"

"जहां भी तुम चाहो।"

अन्द्रेई बिल्ले को साथ लेकर घर की ओर चल दिया। अपने देश पहुंचकर बिल्ले को साथ लिए हुए वह ज़ार के महल में हाज़िर हुआ। उसने ज़ार से कहा:

"मैं आपका हुक्म बजा लाया हूं। यह लीजिये लोरी गानेवाला बिल्ला।"

ज़ार को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ।

"अच्छा, बिल्ले, मुझे अपनी ताक़त दिखाओ," उसने कहा।

इसपर बिल्ले ने अपने नाखून तेज़ करते हुए ज़ार की ओर देखना शुरू किया। वह ज़ार की छाती चीरकर

उसका धड़कता दिल बाहर निकालने के लिए तैयार हो गया।

ज़ार की तो सिट्टीपिट्टी गुम हो गयी।

"कृपया इसे शान्त करो, अन्द्रेई," उसने कहा।

अन्द्रेई ने बिल्ले को शान्त करके पिंजरे में बन्द कर दिया। तब वह शाहज़ादी मारिया के पास अपने घर गया। वे दोनों ख़ुशी से रहते रहे। मगर ज़ार के लिए तो घड़ी-घड़ी पल-पल भारी होने लगा। वह अपने दिल की रानी के बिना जिये तो कैसे? एक दिन फिर उसने सलाहकार को बुलवा भेजा।

"जैसे भी हो, अन्द्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने की कोई न कोई तरकीब निकालनी ही होगी। अगर ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

ज़ार का सलाहकार सीधा शराबखाने में पहुंचा। उसने उसी शराबी कीड़े को ढूंढा और उससे अपनी मुसीबत का हल बताने के लिए कहा। शराबी कीड़े ने शराब का जाम पिया, मूंछों पर हाथ फेरा और कहा:

"जाकर ज़ार से कहो कि अन्द्रेई तीरंदाज को 'जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे' के लिए भेज दे। यह काम अन्द्रेई कभी पूरा नहीं कर पायेगा और इसलिए कभी वापस नहीं लौटेगा।"

सलाहकार उलटे पांव ज़ार के पास दौड़ता हुआ गया और उसे सब कुछ ज्यों का त्यों जा बताया। ज़ार ने अन्द्रेई को बुलवा भेजा।

"तुमने मेरे दो काम तो कर दिये, अब तीसरा भी कर दो," उसने कहा। "'जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे।' अगर तुम यह कर दोगे तो मैं बहुत अच्छा इनाम दूंगा, अगर नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

अन्द्रेई घर गया और बेंच पर बैठकर रोने लगा।

"तुम रोते क्यों हो, मेरे प्यारे?" शाहज़ादी मारिया ने पूछा। "इस बार तो बहुत ही बड़ी मुसीबत आ पड़ी?"

"ओह," उसने कहा, "तुम्हारा रूप मेरी तबाही का कारण बनेगा। ज़ार ने मुझे 'जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे'—यह काम पूरा करने का आदेश दिया है।"

"अब यह वाक़ई मुश्किल काम है। पर ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम सो जाओ; रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

आधी रात होने पर शाहज़ादी मारिया ने अपनी जादू-टोनों की किताब खोली। उसने उसे बड़े ध्यान से शुरू से अन्त तक पढ़ा। किताब एक तरफ़ फेंककर वह सिर हाथों में थाम कर बैठ रही। किताब में इस काम को पूरा करने की कोई तरकीब नहीं थी। तब उसने ओसारे में जाकर अपना रूमाल हिलाया। सभी तरह के जानवर और परिन्दे झटपट वहां आ पहुंचे।

"जंगल के जानवरो और आकाश के परिन्दो!" उसने कहा। "जानवरो, तुम हर जगह घूमते हो, परिन्दो, तुम हर जगह

उड़ते-फिरते हो—शायद तुम मुझे यह बता सकते हो कि 'जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे।' यह मांग कैसे पूरी की जाये?"

जानवरों और पक्षियों ने जवाब दिया:

"नहीं, शाहज़ादी मारिया, हम तुम्हें यह नहीं बता सकते।"

शाहज़ादी मारिया ने फिर एक बार रूमाल हिलाया और जानवर तथा परिन्दे वहां से ऐसे ग़ायब हो गये जैसे वे वहां थे ही नहीं। रूमाल के तीसरी बार हिलाये जाने पर वहां दो देव प्रकट हुए।

"आप क्या चाहती हैं? आपकी क्या इच्छा है?"

"मेरे वफ़ादार नौकरो, मुझे महासागर के मध्य में ले चलो।"

देव शाहज़ादी मारिया को उठाकर महासागर में जा पहुंचे और गहरे पानी के बिल्कुल बीच में खड़ हो गये। वहां वे दो ऊंचे स्तम्भों की भांति खड़े हुए शाहज़ादी को अपनी बांहों में थामे रहे। शाहज़ादी मारिया ने रूमाल हिलाया। सभी मछलियां और रेंगनेवाले समुद्री जीव-जन्तु उसके पास आ गये।

"मछलियो और समुद्र के दूसरे तैरनेवाले जीव-जन्तुओ, तुम हर जगह तैरते-फिरते हो और सभी द्वीपों से परिचित हो—शायद तुम मुझे यह बता सकते हो कि 'जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे'—यह काम कैसे पूरा किया जाये?"

"नहीं, शाहज़ादी मारिया, हम तो इसके बारे में कुछ नहीं जानते।"

शाहज़ादी मारिया निराश हो गयी। उसने देवों से कहा कि उसे वापस घर ले चलें। वे उसे वापस घर ले गये और दरवाज़े पर छोड़ दिया।

अगली सुबह शाहज़ादी मारिया ने अन्द्रेई को सफ़र के लिए तैयार किया। उसने उसे सूत का एक गोला और क़सीदा किया हुआ एक तौलिया दिया।

"सूत के इस गोले को अपने सामने फेंक देना और जिधर यह जाये तुम भी उधर ही चलते जाना," उसने कहा। "और जहां भी तुम्हें हाथ-मुंह धोना पड़े तो मेरे दिये हुए तौलिये के सिवा कोई दूसरा तौलिया इस्तेमाल मत करना।"

अन्द्रेई ने शाहज़ादी मारिया को अलविदा कहा, चारों दिशाओं को प्रणाम किया और नगर के दरवाज़ों से बाहर निकल गया। उसने सूत का गोला अपने सामने फेंका। वह जिधर लुढ़कता अन्द्रेई भी उधर ही चलता जाता।

कहानी सुनने-सुनाने में तो देर नहीं लगती मगर काम करने में देर लगती है। वह बहुत से राज्यों और अपरिचित देशों में से गुज़रा। गोला लुढ़कता गया, लुढ़कता गया और धागा खुलता गया। होते होते वह मुर्ग़ी के सिर जैसा रह गया और अन्त में इतना छोटा हो गया कि दिखाई भी मुश्किल से देता। अन्द्रेई एक

जंगल में पहुंच चुका था जहां उसने मुर्गी के पांव पर खड़ी हुई एक छोटी-सी झोंपड़ी देखी।

"छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी, अपनी पीठ पेड़ों की तरफ़ और मुंह मेरी तरफ़ कर ले," अन्द्रेई ने कहा।

झोंपड़ी ने मुंह उसकी तरफ़ कर लिया। वह भीतर गया। वहां उसने पक्के बालोंवाली एक बूढ़ी ढड्डो देखी जो अपने सामने चरखी रखे, लिनेन कात रही थी।

"ओहो, रूसी खून! पहले कभी नहीं मिला, आज दरवाज़े पर खड़ा है। कौन है? कहां से आया है? किधर जायेगा? मैं तुम्हें ज़िन्दा भून डालूंगी, खा जाऊंगी और तुम्हारी हड्डियों पर सवारी करूंगी।"

"छिः छिः बाबा-यगा, एक मुसाफ़िर को खाने की बात कर रही है," अन्द्रेई ने कहा। "मुसाफ़िर दुबला और हड़ीला है। पहले गुसलख़ाने में चूल्हा जलाकर पानी गर्म करो, मुझे नहाने और गर्म होने दो, फिर खा लेना।"

तब बाबा-यगा ने नहाने का पानी गर्म किया। अन्द्रेई नहाया और अच्छी तरह गर्म हुआ। इसके बाद जिस्म पोंछने के लिए उसने अपनी पत्नी का दिया हुआ तौलिया बाहर निकाला।

"यह तौलिया तुम्हें कहां से मिला?" बाबा-यगा ने पूछा।

"इसपर जो क़सीदे का काम है, वह तो मेरी बेटी का किया हुआ है।"

"तुम्हारी बेटी मेरी बीवी है। यह तौलिया उसी ने मुझे दिया था।"

"ओहो, जमाई राजा, मैं तुम्हारा स्वागत करती हूं। मैं कैसे तुम्हारी आवभगत करूं?"

बाबा-यगा ने जल्दी-जल्दी हाथ-पांव हिलाये और सभी तरह के खाने और शराबें वग़ैरह मेज़ पर इकट्ठी कर दीं। अन्द्रेई ने कोई आपत्ति न की और खाने में जुट गया। बाबा-यगा उसके पास बैठकर पूछने लगी कि उसने शाहज़ादी मारिया से किस तरह शादी की और यह कि क्या वे दोनों ख़ुश-ख़ुश जीवन बिता रहे हैं या नहीं। अन्द्रेई ने उसे सब कुछ बताया और यह भी कि किस तरह ज़ार ने उसे 'जाओ वहां—न जाने कहां, लाओ उसे—न जाने किसे,'—यह कार्य पूरा करने का आदेश दिया है।

"दादी मां! काश, तुम मेरी कुछ मदद करो!" उसने कहा।

"ओ मेरे प्यारे जमाई, अचम्भे की यह बात मैंने तो कभी नहीं सुनी। इसे तो केवल एक बूढ़ी मेंढ़की जानती है जो तीन सौ वर्षों से दलदल में रह रही है। पर ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम सो जाओ; रात की बात कभी सच नहीं होती। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई सो गया और बाबा-यगा ने बर्च की टहनियों की दो झाड़ुएं लीं। वह उड़कर दलदल के पास पहुंची। वहां जाकर उसने ज़ोर से पुकारा:

"बूढ़ी मां-मेंढ़की, क्या तुम अभी भी ज़िन्दा हो?"

"हां, ज़िन्दा हूं।"

"तब फुदककर दलदल से बाहर आ जाओ।"

बूढ़ी मेंढ़की फुदककर दलदल से बाहर आयी तो बाबा-यगा ने कहा:

"तुम जानती हो 'जाओ वहां–न जाने कहां', यह–जगह कहां है?"

"जानती हूं।"

"तो मेहरबानी करके मुझे उसका पता दो। मेरे दामाद को 'जाओ वहां–न जाने कहां, लाओ उसे–न जाने किसे'–यह काम पूरा करने की आज्ञा दी गयी है।"

"मैं तो ख़ुद ही उसे वहां ले जाती, मगर क्या करूं मैं बहुत बूढ़ी हूं और वह जगह काफ़ी दूर है," मेंढ़की ने कहा। "अपने दामाद से कहो कि वह मुझे ताज़ा दूध के मर्तबान में डालकर जलते दरिया तक ले चले। वहां मैं उसे रास्ता बता दूंगी।"

बाबा-यगा बूढ़ी मेंढ़की को साथ लेकर उड़ती हुई घर पहुंची। उसने एक मर्तबान में ताज़ा दूध दुहकर मेंढ़की को उसमें डाल दिया। अगली सुबह उसने अन्द्रेई को जगाया।

"मेरे प्यारे जमाई, यह मर्तबान है और इसके अन्दर है मेंढ़की," उसने कहा। "कपड़े पहनकर मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ और जलते दरिया के किनारे जा पहुंचो। घोड़े को वहीं छोड़कर

तुम मर्तवान से मेंढ़की को बाहर निकाल लेना। वह तुम्हें रास्ता बता देगी।"

अन्द्रेई ने कपड़े पहनकर मर्तवान लिया और बाबा-यगा के घोड़े पर सवार हो गया। यह कहना मुश्किल है कि उसने बहुत देर तक घोड़े की सवारी की, या थोड़ी देर तक, मगर अन्त में वे जलते दरिया के किनारे जा पहुंचे। उस नदी को न तो कोई जानवर पार कर सकता था न ही कोई पक्षी उड़कर दूसरी तरफ़ जा सकता था।

अन्द्रेई घोड़े से नीचे उतरा तो मेंढ़की ने कहा:

"वीर युवक, मुझे मर्तवान से बाहर निकाल लो। हमें यह दरिया पार करना होगा।"

अन्द्रेई ने मेंढ़की को मर्तवान से बाहर निकालकर ज़मीन पर रख दिया।

"वीर युवक, अब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

"ओह, पर तुम तो इतनी छोटी हो, दादी मेंढ़की! मैं तुम्हें कुचल डालूंगा।"

"इसकी फ़िक्र मत करो। मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मुझे कस कर पकड़ लो।"

अन्द्रेई मेंढ़की की पीठ पर बैठ गया। मेंढ़की ने फैलना शुरू किया। वह फैलती गयी, फैलती गयी और अन्त में सूखी घास की एक गंजी के आकार की हो गयी।

"तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े हुए हो न?" उसने पूछा।

"हां, दादी मां।"

बूढ़ी मेंढ़की और फूलती गयी और इस बार वह सूखी घास के एक गंज जितनी ऊंची हो गयी।

"तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े हुए हो न?"

"हां, दादी मां।"

वह और फूलती गयी और इस बार अन्धेरे जंगल से भी बड़े आकार की हो गयी। तब एक ही छलांग में वह जलता दरिया लांघ गयी। पार जाकर वह फिर अपने असली रूप में आ गयी।

"इस रास्ते पर चलते जाओ, वीर युवक। कुछ दूर जाकर तुम्हें चबूतरे पर लकड़ी का एक मकान दिखाई देगा जो वास्तव में न तो घर है, न ही झोंपड़ा, न ही अन्न-भण्डार, बल्कि सभी का मिला-जुला रूप है। तुम भीतर जाकर अलावघर के पीछेवाले कोने में खड़े हो जाना। वहीं तुम पाओगे 'उसे—न जाने किसे'।

अन्द्रेई उस मार्ग पर चलता गया। वहां उसने एक पुराना झोंपड़ा देखा जो कि वास्तव में झोंपड़ा नहीं था। इसमें न तो कोई खिड़की थी न ही कोई ओसारा। इसकी जगह इसके चारों ओर एक ऊंचा घेरा बना हुआ था। वह भीतर जाकर अलावघर के पीछेवाले कोने में छिप गया।

थोड़ी देर बाद जंगल में भारी शोर और गड़गड़ाहट हुई। इसके फ़ौरन बाद वहां एक बौना आया जिसकी दाढ़ी थी एक हाथ लम्बी। अन्दर आते ही वह जोर से चिल्लाया:

"ए भाई नऊम, मैं भूखा हूं!"

उसके मुंह से शब्द निकलते ही वहां, न जाने कहां से, एक मेज़ हाज़िर हो गयी। उस मेज़ पर बीयर का एक ढोल, भुना हुआ बैल और एक छुरी दिखाई दी। एक हाथ लम्बी दाढ़ीवाला बौना, बैल के मांस के सामने बैठकर उसे तेज़ छुरी से काटने और लहसुन में मिलाकर जल्दी-जल्दी खाने और सराहने लगा।

वह सारे का सारा बैल खा गया और बीयर का ढोल पी गया।

"ए, भाई नऊम, जूठन साफ़ कर डालो!"

और तभी वहां से मेज़ इस तरह ग़ायब हो गयी जैसे कभी वहां थी ही नहीं। हड्डियां, ढोल सभी कुछ ग़ायब हो गया! अन्द्रेई ने बौने के जाने का इन्तज़ार किया। इसके बाद वह अलावघर के पीछे से बाहर आया। उसने हिम्मत करके आवाज़ लगाई:

"भाई नऊम, मुझे कुछ खाने के लिए दो..."

उसके ऐसा कहते ही न जाने कहां से एक मेज़ प्रकट हुई और उसपर सभी प्रकार के खाने, क़िस्म-क़िस्म की शराबें और अच्छी-अच्छी चीज़ें दिखाई दीं।

अन्द्रेई मेज़ पर बैठ गया और उसने कहा:

"बैठ जाओ, भाई नऊम, आओ हम दोनों एक साथ मिलकर खायें।"

आदमी तो दिखाई न दिया पर आवाज़ सुनाई दी:

"शुक्रिया, भले आदमी। बहुत बरसों से मैं यहां ख़िदमत

कर रहा हूं, मगर कभी रोटी का एक जला टुकड़ा तक भी खाकर नहीं देखा; और तुम मुझे अपने साथ मेज़ पर बैठने को कह रहे हो।"

अन्द्रेई बेहद हैरान हुआ। वहां कोई दिखाई न दिया तो भी खाने की चीज़ें वहां से इस तरह ग़ायब हो गयीं मानो किसी ने झाड़ू दे दिया हो। तरह-तरह की बढ़िया शराबें अपने आप गिलासों में भर जातीं और गिलास फुदककर मेज़ पर पहुंच जाते।

"भाई नऊम, मैं तुम्हें देखना चाहता हूं!" अन्द्रेई ने कहा।

"नहीं, मुझे कोई भी नहीं देख सकता। तुम सुनते हो मुझे, या फिर 'उसे—न जाने किसे'"

"भाई नऊम, क्या तुम मेरी सेवा करना पसन्द करोगे?"

"बेशक, पसन्द करूंगा। अगर कभी कोई भला आदमी था तो वह तुम हो।"

जब वे खाना ख़त्म कर चुके तो अन्द्रेई ने कहा:

"मेज़ हटाकर मेरे साथ चलो।"

झोंपड़े से बाहर आकर अन्द्रेई ने घूमकर पूछा:

"क्या तुम यहां हो, भाई नऊम?"

"हां, डरो नहीं। मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूंगा।"

कुछ देर बाद अन्द्रेई जलते दरिया के पास पहुंचा, जहां मेंढ़की उसका इन्तज़ार कर रही थी।

"कहो, वीर युवक," मेंढ़की ने पूछा, "क्या तुम मिले 'उसे—न जाने किसे?'"

"हां, दादी मेढ़की।"

"मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

अन्द्रेई उसकी पीठ पर चढ़ बैठा और मेढ़की ने फैलना शुरू किया। इसके बाद उसने छलांग लगायी और उसे जलते दरिया के पार ले गयी।

उसने दादी मेढ़की का शुक्रिया अदा किया और अपनी राह चल दिया। वह थोड़ी दूर चलता फिर घूमकर देखता और पूछता:

"तुम यहां हो, भाई नऊम?"

"हां, डरो नहीं। मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूंगा।"

अन्द्रेई चलता गया, चलता गया। अन्त में वह बहुत थक गया और उसके पांव में छाले पड़ गये।

"ओह प्यारे," उसने कहा "मैं बेहद थक गया हूं।"

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" भाई नऊम ने कहा। "मैं तुम्हें आन की आन में घर पहुंचा देता।"

उसी समय अन्द्रेई को लगा कि जैसे वह तेज़ हवा में उड़ रहा है। अब वह तेजी से पहाड़ों, जंगलों, शहरों और गांवों को लांघने लगा। जब वे गहरे समुद्र के ऊपर से उड़े जा रहे थे तो अन्द्रेई का दिल दहल गया।

"भाई नऊम, मैं कुछ आराम करना चाहता हूं!" उसने कहा।

हवा एकदम मन्द हो गयी और अन्द्रेई नीचे सागर की ओर

जाने लगा। मगर जहां पहले केवल नीली लहरें थीं, वहां अब उसे एक द्वीप दिखाई देने लगा। उस द्वीप में सोने की छतवाला एक महल नजर आया जिसके सभी ओर एक सुन्दर बगीचा था। भाई नऊम ने अन्द्रेई से कहा:

"खाओ, पियो, आराम करो और समुद्र पर अपनी नजर रखो। सौदागरों के तीन जहाज़ इधर से आयेंगे। उनका स्वागत करना और उन्हें खाने के लिए बुला लेना। उनकी खूब अच्छी तरह खातिर करना। सौदागरों के पास तीन अद्भुत चीज़ें हैं। मुझे उन चीज़ें से बदल लेना—घबराना नहीं मैं तुम्हारे पास लौट आऊंगा।"

बहुत समय गुज़रा या थोड़ा समय गुज़रा यह कहना मुश्किल है, पर अन्त में पश्चिम की ओर से तीन जहाज़ उधर आये। मुसाफ़िरों ने द्वीप, सोने की छतवाला महल और उसके चारों ओर सुन्दर बगीचा देखा।

"यह भी क्या कमाल है?" उन्होंने कहा। "बहुत बार हम इधर से गुज़रे हैं मगर नीली लहरों के सिवा कभी कुछ दिखाई नहीं दिया। चलो जहाज़ों को किनारे पर लगायें!"

तीनों जहाज़ों ने लंगर डाल दिये और तीनों सौदागर एक छोटी-सी नाव में बैठकर द्वीप की ओर चल दिये। अन्द्रेई तीरंदाज़ उनका स्वागत करने के लिए पहले से ही वहां उपस्थित था।

"स्वागत, प्यारे मेहमानो।"

सौदागर उस जगह को देखते जाते थे और अधिक से अधिक हैरान होते जाते थे। उन्होंने देखा कि महल के ऊपर की छत

आग की तरह दहक रही है। वृक्षों पर पक्षी चहचहा रहे हैं और मार्गों में अद्‌भुत जानवर फुदकते फिर रहे हैं।

"भले आदमी, हमें यह बताओ, यह दिमाग़ चकरा देने-वाला अजूबा यहां किसने बनाया है?"

"मेरे सेवक, भाई नऊम ने एक ही रात में बनाया है।"

अन्द्रेई मेहमानों को खाने के लिए महल में ले गया।

"ए, भाई नऊम, हमें कुछ खाने-पीने को दो!"

अचानक ही वहां, न जाने कहां से, एक मेज़ आ गयी जिसपर इन्सान के मनपसन्द तरह-तरह के खाने और शराबें रखी हुई दिखाई दीं। सौदागर तो हक्के-बक्के रह गये।

"भले आदमी, आओ हम कुछ अदला-बदली कर लें," सौदागरों ने कहा। "हमें अपना नौकर नऊम दे दो और बदले में हमारा जो भी अजूबा तुम चाहो ले सकते हो।"

"मैं तैयार हूं, मगर दिखाओ तो तुम्हारे अजूबे हैं कौनसे?"

एक सौदागर ने अपने कोट के नीचे से एक छड़ी निकाली। इस छड़ी को केवल इतना कहने की ज़रूरत होती है:

"फ़लां की ख़ूब मरम्मत करो!" और तभी छड़ी अपना काम शुरू कर देगी। वह हर आदमी की चाहे कितना ही बलवान क्यों न हो ख़ूब मरम्मत कर सकती है।

दूसरे सौदागर ने अपने चोग़े के नीचे से एक कुल्हाड़ा निकाला और उसका मुंह नीचे की ओर कर दिया। कुल्हाड़े ने काटने का काम शुरू कर दिया। ठक-ठक – एक जहाज़ तैयार

होकर सामने आ गया। ठक-ठक – पालों, तोपों और बहादुर मल्लाहों समेत दूसरा जहाज़ सामने आ उपस्थित हुआ। जहाज़ तैरने लगे, तोपों ने आग उगली और बहादुर मल्लाहों ने मालिक से आज्ञा देने को कहा।

उसने कुल्हाड़े का मुंह ऊपर की तरफ़ किया और देखते ही देखते जहाज़ ऐसे ग़ायब हो गये जैसे कि वे वहां कभी थे ही नहीं।

तीसरे सौदागर ने अपनी जेब से एक मुरली निकालकर बजायी। और देखते ही देखते वहां एक बड़ी सेना दिखाई देने लगी। इस सेना में पैदल और घुड़सवार सिपाही, बन्दूकें और तोपें सभी कुछ था। सेना एक साथ चलने लगी, बैंड बजने लगे, झण्डे लहराये और घुड़सवार घोड़े सरपट दौड़ाते हुए मालिक के सामने खड़े होकर आदेश की प्रतीक्षा करने लगे।

तब सौदागर ने मुरली को दूसरी तरफ़ से बजाया और हर चीज ग़ायब हो गयी।

"मुझे तुम्हारी ये अद्भुत चीज़ें पसन्द हैं," अन्द्रेई तीरंदाज़ ने कहा। "मगर मेरा अजूबा अधिक क़ीमती है। अगर तुम चाहो तो मैं अपने सेवक भाई नऊम को तुम तीनों की चीज़ों के बदले में दे सकता हूं।"

"क्या तुम बहुत अधिक क़ीमत नहीं मांग रहे हो?"

"बिल्कुल नहीं। इसकी या तो यही क़ीमत होगी या फिर कुछ भी नहीं।"

होकर सामने आ गया। ठक-ठक – पालों, तोपों और बहादुर मल्लाहों समेत दूसरा जहाज़ सामने आ उपस्थित हुआ। जहाज़ तैरने लगे, तोपों ने आग उगली और बहादुर मल्लाहों ने मालिक से आज्ञा देने को कहा।

उसने कुल्हाड़े का मुंह ऊपर की तरफ़ किया और देखते ही देखते जहाज़ ऐसे ग़ायब हो गये जैसे कि वे वहां कभी थे ही नहीं।

तीसरे सौदागर ने अपनी जेब से एक मुरली निकालकर बजायी। और देखते ही देखते वहां एक बड़ी सेना दिखाई देने लगी। इस सेना में पैदल और घुड़सवार सिपाही, बन्दूक़ें और तोपें सभी कुछ था। सेना एक साथ चलने लगी, बैंड बजने लगे, झण्डे लहराये और घुड़सवार घोड़े सरपट दौड़ाते हुए मालिक के सामने खड़े होकर आदेश की प्रतीक्षा करने लगे।

तब सौदागर ने मुरली को दूसरी तरफ़ से बजाया और हर चीज़ ग़ायब हो गयी।

"मुझे तुम्हारी ये अद्भुत चीज़ें पसन्द हैं," अन्द्रेई तीरंदाज़ ने कहा। "मगर मेरा अजूबा अधिक क़ीमती है। अगर तुम चाहो तो मैं अपने सेवक भाई नऊम को तुम तीनों की चीज़ों के बदले में दे सकता हूं।"

"क्या तुम बहुत अधिक क़ीमत नहीं मांग रहे हो?"

"बिल्कुल नहीं। इसकी या तो यही क़ीमत होगी या फिर कुछ भी नहीं।"

सौदागरों ने इसपर विचार किया। "हमें इस छड़ी, कुल्हाड़े और मुरली का क्या करना है? इनके बदले में भाई नऊम को ले लेना अधिक अच्छा होगा; तब हम रात-दिन, खा-पीकर मस्त पड़े रहेंगे। और सो भी बिना एक उंगली हिलाये।"

बस, सौदागरों ने अन्द्रेई को, छड़ी, मुरली और कुल्हाड़ा दे दिया। इसके बाद वे चिल्लाये:

"ए भाई नऊम, तुम हमारे साथ चलो! क्या तुम ईमानदारी से हमारी सेवा करोगे?"

"क्यों नहीं?" एक आवाज़ सुनाई दी। "मुझे तो सेवा ही करनी है, तुम्हारी या किसी दूसरे की।"

इसके बाद सौदागर अपने जहाज़ों में जा बैठे। वे खा-पीकर शोर मचाते रहे।

"आओ, भाई नऊम, जल्दी करो। हमारे लिए यह लाओ, वह लाओ!"

वे तबतक पीते रहे जबतक कि नशे में चूर नहीं हो गये और इसके बाद जहां बैठे थे वहीं सो गये।

तीरंदाज़ अन्द्रेई महल में अकेला बैठा हुआ दुखी होता रहा। उसने सोचा: "न जाने, वह मेरा वफ़ादार सेवक, भाई नऊम कहां गया?"

"मैं यहां हूं। तुम क्या चाहते हो?"

अन्द्रेई ख़ुश हुआ।

"क्या अब मेरे लिए अपनी मातृभूमि में, प्यारी पत्नी के

पास लौट जाना ठीक नहीं होगा? मुझे घर ले चलो, भाई नऊम!"

एक बार फिर से उसने अपने को हवा में उड़ते पाया। हवा के झोंके उसे उसके देश ले गये।

इधर सौदागर जब जागे तो उन्होंने थोड़ी शराब पीनी चाही।

"ए भाई नऊम!" वे चिल्लाये। "हमें कुछ खाने-पीने को दो, जल्दी करो!"

मगर वे व्यर्थ ही पुकारते और गला फाड़ते रहे। उन्होंने घूम-कर देखा तो द्वीप ग़ायब था। जहां द्वीप था वहां अब केवल नीली लहरें लहरा रही थीं।

सौदागरों को बहुत दुख हुआ। "ओह! कितना बुरा आदमी था वह! हमें इस तरह धोखा दे गया!" उन्होंने कहा। मगर वे कुछ भी तो न कर सकते थे। इसलिए वे अपने जहाज़ों के पाल खोलकर अपनी मंज़िल की तरफ़ चल दिये।

इतनी देर में अन्द्रेई तीरंदाज़ उड़ता हुआ घर पहुंचा और अपनी झोंपड़ी के पास, नीचे जा उतरा। मगर जहां पहले झोंपड़ी थी अब वहां जली हुई चिमनी के सिवा उसे कुछ भी दिखाई न दिया। वह मुंह लटकाये हुए नीले समुद्र के एक एकान्त स्थान पर पहुंचा। वहां बैठकर वह मन ही मन अफ़सोस कर रहा था कि तभी, न जाने कहां से, एक भूरी कबूतरी वहां उड़ती हुई आयी। वह ज़मीन से टकरायी और टकराकर उसकी प्यारी बीवी शाहज़ादी मारिया बन गयी।

उन्होंने एक दूसरे का आलिंगन किया और पूछना शुरू किया कि जुदा होने के बाद उनके साथ क्या-क्या बीती।

"जब से तुम गये हो मैं जंगलों और कुंजों में कबूतरी बन-कर उड़ती रही हूं," शाहज़ादी मारिया ने कहा। "ज़ार ने मुझे तीन बार बुलवाया, मगर मुझे वहां न पाकर उसने हमारे छोटे-से मकान को आग लगवा दी।"

"भाई नऊम, अगर हम नीले समुद्र के तट पर वीराने में एक महल खड़ा कर लें तो कैसा रहे?"

"क्यों नहीं, अभी पलक झपकते में तैयार हो जायेगा।"

और बिल्कुल वैसा ही हुआ। इससे पहले कि वे घूमकर देख पाते, महल तैयार हो गया। और वह ज़ार के महल से कहीं अधिक सुन्दर था। यह महल बड़े और हरे बग़ीचे के बीच था जिसमें तरह-तरह के पंछी, वृक्षों पर बैठे गा रहे थे तथा सभी प्रकार के अद्‌भुत जानवर पगडंडियों पर घूमते-फिरते थे।

तीरंदाज़ अन्द्रेई और शाहज़ादी मारिया महल के भीतर गये। वे खिड़की के नज़दीक बैठकर एक दूसरे की तरफ़ प्यार से देखते हुए बातचीत करने लगे। इसी तरह निश्चिन्त होकर उन्होंने एक, फिर दूसरा और तीसरा दिन बिताया।

तब ज़ार शिकार खेलता हुआ वहां आया और उसने नीले सागर के तट पर, जहां पहले कुछ भी न था, एक महल खड़ा पाया।

"किस उल्लू ने मेरी ज़मीन पर बिना मेरी अनुमति के यह महल बनाया है?" उसने कहा।

उसने पता करने के लिए अपने दूत भेजे। उन्होंने लौटकर ज़ार को बताया कि तीरंदाज़ अन्द्रेई ने वह महल बनाया है और उसमें अपनी युवा पत्नी शाहज़ादी मारिया के साथ रह रहा है।

ज़ार पहले से भी अधिक गुस्से में आया। उसने अपने दूतों को यह पता करने के लिए भेजा कि "क्या अन्द्रेई 'वहां – न जाने कहां' गया और 'उसे – न जाने किसे' लाया?"

दूत वहां पहुंचे और उन्होंने वापस आकर बतलाया:

"हां, अन्द्रेई तीरंदाज़ 'वहां – न जाने कहां' गया और 'उसे – न जाने किसे' ले आया।"

अब तो ज़ार गुस्से से पागल हो उठा। उसने अपनी सेना को समुद्र-तट पर जाकर महल नीचे गिरा देने का हुक्म दिया। और यह भी कहा कि तीरंदाज़ अन्द्रेई तथा शाहज़ादी मारिया को बेरहमी से मौत के घाट उतारा जाये।

अन्द्रेई ने देखा कि उनकी तरफ़ बड़ी भारी सेना बढ़ती आ रही है। उसने अपना कुल्हाड़ा बाहर निकाला और उसका मुंह नीचे की ओर कर दिया। कुल्हाड़े ने अपना काम करना शुरू किया। ठक-ठक – और समुद्र में एक जहाज़ खड़ा दिखाई देने लगा। ठक-ठक – इसके बाद दूसरा जहाज़ सामने आया। कुल्हाड़े ने सौ बार वैसा ही किया और समुद्र में सौ जहाज़ तैरते दिखाई देने लगे।

अन्द्रेई ने अपनी मुरली निकाल कर बजायी। बहुत से पैदल और घुड़सवार सैनिकों की एक सेना बन्दूक़ें और लहराते

झण्डे लिये सामने आ गयी। सेना के सरदार घोड़े दौड़ाते हुए उसके पास पहुंचे और आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। अन्द्रेई ने उन्हें लड़ाई शुरू करने का हुक्म दिया। अब क्या था, बैंड बजने लगे, ढोल ढमाढम करने लगे और दस्ते आगे बढ़ने लगे। पैदल सिपाहियों ने ज़ार की सेना के छक्के छुड़ा दिये और घुड़सवार घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए सैनिकों को क़ैदी बनाने लगे। सौ जहाज़ों के बेड़े ने अपनी तोपों का मुंह ज़ार के शहर की ओर मोड़ दिया।

ज़ार ने जब अपनी फ़ौज भागती देखी तो उन्हें डटे रहने की आज्ञा देने के लिए आगे आया। अब क्या था – अन्द्रेई ने अपनी छड़ी बाहर निकाली।

"अच्छा तो छड़ी, ज़ार की खूब मरम्मत करो।"

छड़ी कलाबाज़ियां खाती हुई ज़ार की तरफ़ बढ़ी। ज़ार के पास पहुंच कर उसने उसके माथे पर चोट की और वह उसी दम, दम तोड़कर दूसरी दुनिया में पहुंच गया।

तभी लड़ाई बन्द हो गयी। लोग नगर से बाहर आकर इकट्ठे हो गये और उन्होंने अन्द्रेई तीरंदाज़ से ज़ार बनने की प्रार्थना की।

अन्द्रेई को, भला, इसमें क्या एतराज़ हो सकता था! उसने एक शानदार दावत की और शाहज़ादी मारिया के साथ बहुत बरसों तक उस देश पर राज्य करता रहा।
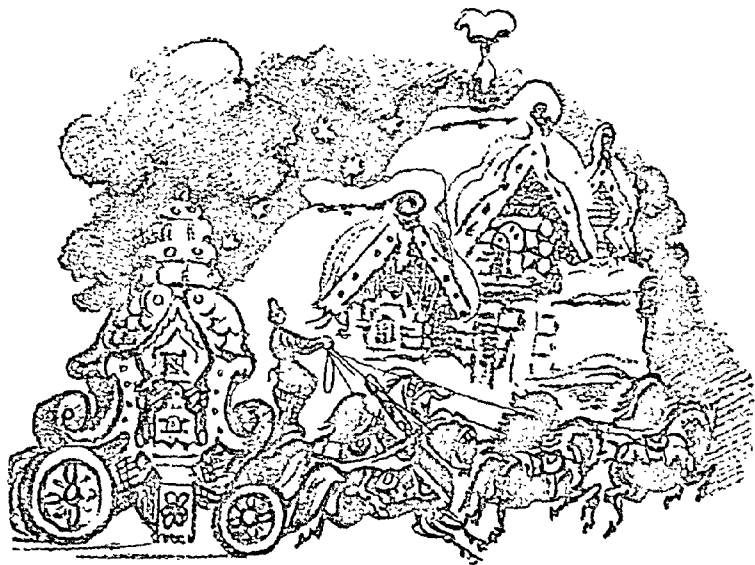
बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान

बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक बूढ़ा और उसकी बीवी रहते थे। बूढ़ा जंगली मुर्गों और दूसरे जानवरों का शिकार करता और इसी तरह उनकी गुज़र होती। वे बहुत बरसों तक ऐसा करते रहे, मगर कभी कोई दौलत जमा नहीं कर पाये। बुढ़िया मन ही मन कुढ़ती और दुखी होकर कहती:

"हमारी भी क्या बुरी ज़िन्दगी है! न कभी कुछ खाने-पीने को बढ़िया मिला न पहनने को। और फिर बच्चे भी तो नहीं हुए। बुढ़ापे में हमारी कौन सुध लेगा।"

"दुखी मत होओ, भलीमानस," बूढ़ा उसे दिलासा देता। जबतक मेरे हाथ पांव चलते रहेंगे, हम खाने-पीने के लिए काफ़ी जुटा लेंगे। फिर कल की फ़िक्र करना तो बिल्कुल बेकार है।"

वह ऐसा कहकर शिकार के लिए चला जाता।

एक रोज़ वह सुबह से शाम तक जंगलों में घूमता रहा, मगर एक भी शिकार हाथ न लगा। वह खाली हाथ घर नहीं जाना चाहता था पर करता भी तो क्या? सूरज तो डूबता जा रहा था यानी घर लौटने का वक़्त हो चुका था।

वह वहां से रवाना हुआ ही था कि उसे पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी और पास की झाड़ी में से एक अद्भुत और बड़ा ही सुन्दर पक्षी उड़ा।

मगर जबतक उसने निशाना बांधा, वह कहीं का कहीं जा पहुंचा।

"क्या बदक़िस्मती है," बूढ़े ने आह भरकर कहा।

जहां से वह पक्षी उड़कर आया था, उसने उस झाड़ी में झांककर देखा। वहां एक घोंसले में तैंतीस अण्डे पड़े थे।

"न से हां भली" उसने कहा।

उसने अपना कमरबन्द कसा और वे तैंतीस के तैंतीस अण्डे उसमें छिपा लिये। तब वह घर की ओर चला।

वह चलता गया, चलता गया। चलते-चलते उसका कमरबन्द ढीला हो गया और एक-एक करके उसके अण्डे नीचे गिरने लगे।

एक अण्डा गिरा और उछलकर उसमें से एक लड़का निकल आया, दूसरा अण्डा गिरा तो दूसरा लड़का निकल आया। इस तरह बत्तीस अण्डे गिरे और बत्तीस लड़के उछलकर बाहर आ गये।

मगर तभी बूढ़े ने अपना कमरबन्द और अच्छी तरह कस लिया और एक अण्डा—तैंतीसवां अण्डा भीतर ही रह गया। बूढ़े ने घूमकर देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। प्यारे-प्यारे बत्तीस छोकरे उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। सभी सिर से पैर तक बिल्कुल एक जैसे थे और सभी एक जैसी आवाज में बोले :

"क्योंकि आपने हमें पाया है, इसलिए आप हमारे पिता और हम आपके बेटे हैं। अब हमें घर ले चलिये।"

"आज का दिन मेरे लिए और मेरी बीवी के लिए कैसा सौभाग्य का दिन है।" बूढ़े ने सोचा। "इतने बरसों में एक भी बच्चा नहीं हुआ और अब इकट्ठे बत्तीस।"

वे घर आये और बूढ़े ने कहा :

"भलीमानस, इतने बरसों तक बच्चों के लिए आहें भरती रही हो न? लो, मैं आज तुम्हारे लिए बत्तीस बेटे लाया हूं, सभी बेहद प्यारे। आज मेज़ लगाकर इन्हें खाना खिलाओ।"

बूढ़े ने बुढ़िया को बताया कि उसे वे बेटे कैसे मिले हैं।

बुढ़िया तो जहां थी, वहीं खड़ी की खड़ी रह गयी। उसके मुंह से एक भी शब्द न निकल सका। कुछ देर इसी तरह खड़ी

रहकर उसने निश्वास छोड़ा और मेज़ लगाने के लिए इधर-उधर दौड़-धूप करने लगी। तभी बूढ़े ने कफ़्तान उतारने के लिए अपना कमरबन्द ढीला किया और तैंतीसवां अण्डा नीचे आ गिरा। तैंतीसवां लड़का भी उछल कर सामने आ खड़ा हुआ।

"तुम! तुम कहां से आ गये?"

"मैं छोटा इवान हूं, आपका सबसे छोटा बेटा।"

तब बूढ़े को याद आया कि उसने बत्तीस नहीं, वास्तव में तैंतीस अण्डे पाये थे।

"बहुत अच्छा, छोटे इवान, तो खाने के लिए बैठ जाओ।"

उन तैंतीस छोकरों ने बैठते ही मेज़ साफ़ कर डाली। और फिर भी वे मेज़ से न तो भूखे ही उठे थे और न ही पेट भर कर।

रात गुज़र गयी। अगली सुबह छोटे इवान ने कहा:

"पिता जी, आपको बेटे तो मिल गये, अब करने के लिए उन्हें कुछ काम भी दें।"

"मैं तुम्हें किस तरह का काम दूं, मेरे बेटो? हम न तो ज़मीन में हल चलाते हैं और न ही बोवाई करते हैं। और हमारे पास हल या घोड़े भी नहीं हैं।"

"ख़ैर, नहीं तो न सही, अब इसमें हो ही क्या सकता है," छोटे इवान ने कहा। "हमें काम की खोज में दूसरे लोगों के पास जाना होगा। अब आप लुहार के पास जाकर हमें तैंतीस दरांतियां बनवा दीजिये।"

जब बूढ़ा लुहार के पास तैंतीस दरांतियां बनवाने के लिए गया हुआ था तो छोटे इवान और उसके भाइयों ने तैंतीस दस्ते तथा तैंतीस जेलियां बना डालीं।

पिता के लुहार से लौट आने पर छोटे इवान ने वे औज़ार सभी को बांट दिये और कहा:

"आओ भाइयो चलें, चलकर काम ढूंढें। पैसा कमाकर अपनी गृहस्थी बसायेंगे तथा बूढ़े मां-बाप का पेट पालेंगे।"

तब भाइयों ने मां-बाप को नमस्कार किया और चल दिये किसी एक दिशा में। मंज़िल दर मंज़िल कूच करते हुए वे कबतक चले – बहुत देर तक या थोड़ी देर तक – यह कहना मुश्किल है। अन्त में वे एक बड़े शहर में पहुंचे। उस शहर के बाहर उन्हें ज़ार का कारिन्दा मिला। कारिन्दा उनके पास आया और कहने लगा:

"अरे, लड़को, तुम काम से लौट रहे हो या काम की तलाश में जा रहे हो? अगर तुम काम की खोज में हो तो मेरे साथ चलो। मेरे पास तुम्हारे लिए काम है।"

"और तुम्हारा वह काम है क्या?" छोटे इवान ने पूछा।

"बहुत मुश्किल नहीं," कारिन्दे ने जवाब दिया। "तुम्हें ज़ार के संरक्षित चरागाहों से घास काटकर सुखानी होगी। तब उन्हें पहले गंजियों, फिर गंजों में जमा करना होगा। तुम्हारा अगुआ कौन है?"

किसी ने जवाब न दिया तो छोटे इवान ने आगे बढ़कर कहा:

"हमें अपने साथ ले जाकर काम दिखाओ।"

वह कारिन्दा उन्हें ज़ार के संरक्षित चरागाहों में ले गया।

"इस काम के लिए तीन हफ़्ते काफ़ी होंगे?" उसने पूछा।

"अगर मौसम अच्छा रहे तो तीन दिन काफ़ी होंगे," छोटे इवान ने जवाब दिया।

ज़ार का कारिन्दा यह सुनकर बहुत ख़ुश हुआ।

"तो काम शुरू करो, लड़को," उसने कहा, "और ख़ुराक तथा तनख़्वाह की फ़िक्र मत करो; तुम्हें जो कुछ चाहिए सभी कुछ मिलेगा।"

छोटे इवान ने कहा:

"हमें भुने हुए केवल तैंतीस बैल और शराब की तैंतीस बाल्टियों की आवश्यकता होगी। हमें एक-एक कालाच भी चाहियेगा। इसके अलावा हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होगी।"

ज़ार का कारिन्दा चला गया। भाइयों ने अपनी दरांतियां तेज़ कीं और तेज़ी से काम करने लगे। उनकी रफ़्तार इतनी तेज़ थी कि हवा में एक सीटी-सी बज उठती। काम होता रहा और शाम होते तक सारी घास कट गयी। इतनी देर में ज़ार के रसोईघर से उनके लिए भुने हुए तैंतीस बैल, शराब की तैंतीस बाल्टियां और तैंतीस कालाच वहां पहुंचा दिये गये। उनमें से प्रत्येक ने आधा बैल खाया, आधी बाल्टी शराब की पी, आधा कालाच खाया तथा वे सभी पड़कर सो रहे।

दूसरे दिन, जब सूरज चमका, भाइयों ने घास सुखायी और गंजियों में इकट्ठी की। संध्या होते तक सूखी घास के बड़े-बड़े गंजे बन चुके थे। और फिर एक बार उनमें से हरेक ने आधे कालाच के साथ आधा बैल खाया, आधी बाल्टी शराब की पी। तब छोटे इवान ने अपने भाइयों में से एक को ज़ार के दरबार में भेजा।

"उनसे कहो कि आकर काम देख लें।"

भाई कारिन्दे को साथ लेकर लौट आया और थोड़ी देर बाद ज़ार भी अपने संरक्षित चरागाहों में पहुंचा। ज़ार ने सूखी घास के सभी ढेर गिने और चरागाहों का चक्कर लगाया। उसे घास का एक तिनका भी कहीं दिखाई न दिया।

"हां, तो प्यारे लड़को," ज़ार ने कहा, "तुमने घास अच्छी तरह काटी, सुखायी और ढेरों में इकट्ठी की है। काम बहुत जल्दी भी समाप्त किया है। इसके लिए मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं और इसलिए मैं तुम्हें सौ रूबल और शराब का चालीस बाल्टियोंवाला एक ढोल इनाम देता हूं। मगर अब तुम्हें एक और काम करना होगा। इस सूखी घास की निगरानी करनी होगी। हर साल कोई हमारी घास खा जाता है और हमें आज तक चोर का कुछ भी सुराग़-पता नहीं लगा।"

छोटे इवान ने जवाब दिया:

"हुज़ूर, मेरे भाइयों को घर जाने दें और मैं अकेला ही घास की रक्षा करूंगा।"

ज़ार को कोई आपत्ति न हुई। इसलिए बाक़ी भाई ज़ार के आंगन की ओर चल दिये जहां उन्हें बढ़िया खाने के अलावा पीने को काफ़ी शराब और रुपया भी मिला। इसके बाद वे घर की तरफ़ रवाना हो गये।

छोटा इवान, ज़ार के संरक्षित चरागाहों में वापस चला गया। ज़ार की सूखी घास की रखवाली करने के लिए वह रातों को जागता रहता, जब कि दिन के समय वह खाना-पीना और ज़ार के क्वार्टर में आराम करता।

अब धीरे-धीरे पतझड़ आ गया और रातें लम्बी तथा काली हो गयीं। एक रात इवान ने सूखी घास के एक ढेर में लेटने की जगह बनायी और वहां लेट गया। वह बिल्कुल चौकन्ना था। आधी रात के समय वहां बिल्कुल दिन की-सी रोशनी हो गयी। छोटे इवान ने बाहर झांककर देखा तो क्या पाया कि सुनहरे अयालवाली एक घोड़ी है। वह समुद्र में से कूदकर बाहर आयी और सीधी घास के ढेर की तरफ़ लपकी। उसके पांव तले की धरती कांप रही थी, उसके सुनहरे बाल हवा में लहरा रहे थे, उसकी नाक से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे।

वह घास के ढेर की तरफ़ आयी और घास में मुंह मारने लगी। चौकीदार इवान, मौक़ा देखकर उसकी पीठ पर चढ़ बैठा। सुनहरे अयालवाली घोड़ी जल्दी से वहां से मुड़ी और तेज़ी से ज़ार के चरागाहों में भाग चली। मगर छोटा इवान बायें हाथ

से अयाल थामे था और दायें हाथ में चमड़े का एक चाबुक लिए था। उस सुनहरे अयालवाली घोड़ी को दलदल और कीचड़ में से भगाते हुए उसने चाबुक से उसकी खूब खबर ली।

घोड़ी खूब जोर लगाकर उन दलदलों और पंकिल स्थलों में से सरपट दौड़ती रही। आखिर वह दलदल में धंस के रुक गयी।

रुकने पर उसने ये शब्द कहे:

"अच्छा छोटे इवान, तुमने बहुत दिलेरी का काम किया है जो मुझे पकड़कर मुझ पर सवारी की तथा मुझे अपने वश में कर लिया। अब मुझे मत मारो, और मत सताओ। मैं तुम्हारी वफ़ादार दासी बनकर रहूंगी।"

इवान उसे ज़ार के दरबार में ले गया और एक अस्तबल में उसे बन्द करके ज़ार के रसोईघर में जाकर सो रहा। अगले दिन वह ज़ार के पास गया और बोला:

"हुज़ूर, मैंने मालूम कर लिया है कि आपके चरागाहों की घास कौन खाता है। मैंने चोर को पकड़ भी लिया है। चलिये, चलकर उसे देखिये।"

ज़ार ने सुनहरे अयालवाली घोड़ी देखी तो उसकी खुशी का पारावार न रहा।

"बहुत खूब इवान," उसने कहा, "तुम यूं तो सब से छोटे हो मगर बुद्धि तुम्हारी बड़ी है। तुम्हारी वफ़ादारी से की गयी ख़िदमत के बदले में मैं तुम्हें अपना "मुख्य सईस" बनाता हूं।"

मैं तुम्हें मुख्य सईस से छुटकारा पाने का सही तरीक़ा वता दूंगा।"

सईसों ने उसे खुशी से शराव का गिलास दे दिया।

उस शराबी ने गिलास ख़त्म किया और कहा:

"हमारा ज़ार अपने आप वजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और तरह-तरह के खेल करनेवाला बिल्ला पाने के लिए वहुत बेचैन रहता है। बहुत से युवक अपनी इच्छा से उनकी खोज में गये और बहुत-से उन अजूबों की तलाश में भेजे गये। मगर कभी कोई लौटकर नहीं आया। अब तुम लोग ज़ार से जाकर कहो कि वड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने यह डींग मारी है कि वह ये चीज़ें बड़ी आसानी से ला सकता है। ज़ार उसे भेज देगा और वह बस, एक बार गया कि गया।"

सईसों ने शराबी कीड़े को शराब का एक और गिलास भेंट करके धन्यवाद दिया और वे सीधे ज़ार के मुख्य द्वार पर पहुंचे। वहां वे ज़ार के कमरे की खिड़की के नीचे खड़े होकर गप-शप करने लगे। ज़ार ने उन्हें वहां खड़ा देखा तो महल से बाहर आकर पूछा:

"भले लोगो, तुम क्या वातें कर रहे हो, क्या चाहते हो?"

"हुज़ूर, कुछ खास नहीं, वह वड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान है न; उसने यह डींग मारी है कि वह अपने आप वजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला विल्ला ला

सकता है। हम लोग उसी के बारे में यहां खड़े बहस कर रहे हैं। कुछ का कहना है कि वह ला सकता है और दूसरों का कहना है कि वह नहीं ला सकता।"

यह सुनकर ज़ार के चेहरे का रंग बदल गया और वह अपने हाथों पैरों में सिहरन-सी अनुभव करने लगा। "ओह," उसने सोचा, "काश, किसी तरह मुझे ये अजूबे मिल जायें! तब तो सभी ज़ार मुझसे जला करेंगे। मैंने भी इनके लिए कितने आदमी भेजे हैं मगर उनमें से कभी कोई लौटकर नहीं आया।"

उसी वक़्त उसने हुक्म दिया कि मुख्य सईस बुलाया जाये।

मुख्य सईस उस के सामने आते ही वह चिल्लाया:

"इवान, अभी इसी वक़्त यहां से रवाना हो जाओ और मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस तथा खेलनेवाला बिल्ला लाकर दो!"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने जवाब दिया:

"मगर, हुज़ूर, मैंने तो कभी इन चीज़ों का नाम तक नहीं सुना! आप मुझे किस जगह जाने के लिए कह रहे हैं?"

इस पर ज़ार गुस्से से आग बबूला होकर ज़मीन पर अपना पांव पटकने लगा।

"यह बहस किसलिए हो रही है? क्या तुम शाही हुक्म मानने को तैयार नहीं? तुम अभी यहां से चले जाओ। अगर तुम मुझे चीज़ें ला दोगे तो मैं तुम्हें इनाम दूंगा, वरना तुम्हारा सिर क़लम करवा दिया जायेगा।"

इवान मुंह लटकाये और दुखी दिल के साथ ज़ार के दरबार से चला आया। उसने सुनहरे अयालवाली घोड़ी को लगाम पहनानी शुरू की। घोड़ी ने पूछा :

"किसलिए इतने दुखी हो मालिक, क्या कोई बुरी बात हो गयी?"

"मैं कैसे ख़ुश हो सकता हूं जब कि ज़ार ने मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला बिल्ला लाने का हुक्म दिया है? मैंने तो उनके बारे में किसी से कभी कुछ सुना तक भी नहीं।"

"बस, अरे यह तो कुछ भी बात नहीं है।" सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा। "मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। हम बूढ़ी जादूगरनी बाबा-यगा के पास जाकर यह पूछेंगे कि ये अद्भुत वस्तुएं कैसे पायी जा सकती हैं।"

इस तरह इवान लम्बे सफ़र के लिए चल दिया। लोगों ने उसे घोड़ी पर चढ़ते तो अवश्य देखा, मगर कब वह दरवाजा पार कर गया, यह किसी ने नहीं देखा। घोड़ी दम भर में कहीं की कहीं जा पहुंची।

यह कहना मुश्किल है कि वह कब तक चलता रहा, थोड़ा चला या अधिक, पर आख़िरकार, वह एक ऐसे घने जंगल में पहुंचा जहां घुप अंधेरा था, रोशनी की झलक तक भी न थी। सुनहरे अयालवाली घोड़ी चलती चलती कमज़ोर हो गयी और ख़ुद इवान भी थक गया। मगर अन्त में वे जंगल के बीच

एक मैदान में पहुंचे। वहां उन्होंने मुर्गी के पंजे और तकली पर खड़ी हुई एक झोंपड़ी देखी। वह पूरब से पश्चिम की तरफ़ घूमती रहती थी। वहां पहुंचकर छोटे इवान ने कहा :

"छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी, अपनी पीठ पेड़ों की ओर और मुंह मेरी ओर कर ले। मैं नहीं रुकूंगा बरसों तक, ठहरूंगा केवल सुबह तलक।"

छोटी झोंपड़ी ने अपना मुंह उसकी ओर कर लिया। छोटे इवान ने अपनी घोड़ी एक खम्भे से बांध दी और सीढ़ियां चढ़कर दरवाजा खोला। वहां उसने बाबा-यगा जादूगरनी देखी। वह एक छड़ी और झाड़ू लिये बैठी थी। वह थी बुढ़िया ठड्डो और उसकी नाक थी ऐसी जैसी हो पेड़ की गांठ। उसका ऊखल-मूसल उसके पास पड़ा था।

बाबा-यगा ने अपने मेहमान को देखा तो चिल्लायी :

"ओह, रूसी खून पहले कभी नहीं मिला अब मेरे दरवाज़े पर खड़ा। कौन है? कहां से आया है? किधर जायेगा?"

"क्या इसी तरह तुम मेहमानों का स्वागत करती हो दादी? जब वह भूखा और ठिठुरा हुआ हो तो बातों से उसका दिमाग़ चाटती हो। अपने वतन, अर्थात रूस में, पहले खाने-पीने और गर्म होने दिया जाता है और तब उससे कौन और क्या पूछा जाता है।"

"ओ प्यारे," बाबा-यगा चिल्लायी, "इस बुढ़िया से नाराज़ मत होओ, वीर युवक। फिर तुम जानते हो हम रूस

में भी नहीं हैं। मगर तो भी मैं अभी सब कुछ ठीक किये देती हूं।"

वह जल्दी से उठकर काम में लग गयी। उसने मेज़ पर खाने-पीने की चीज़ें लगायीं, मेहमान को वहां बिठाया और तब नहाने की कोठड़ी में अंगीठी सुलगाने के लिए दौड़ गयी। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने गर्म पानी से स्नान किया। बाबा-यगा ने उसके लिए बिस्तर लगा दिया और वह लेटकर आराम करने लगा। वह जादूगरनी खुद उसके सिरहाने बैठकर पूछने लगी:

"मुझे बताओ, वीर युवक, कि तुम किधर जा रहे हो? क्या तुम यहां अपनी ख़ुशी से आये हो या किसी ने तुम्हें यहां आने के लिए मजबूर किया है?"

"मुझे ज़ार ने भेजा है," मेहमान ने जवाब दिया। "उसने मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला बिल्ला लाने का आदेश दिया है। दादी, मैं तुम्हारा बेहद शुक्रगुज़ार हूंगा अगर तुम मुझे यह वता दो कि उन्हें कहां पाया जा सकता है?"

"हां, बेटा, यह तो मैं जानती हूं कि ये चीज़ें कहां मिल सकती हैं, मगर इनका पाना बहुत मुश्किल है। बहुत से वीर युवक इनकी खोज में जा चुके हैं, मगर कभी कोई लौटकर नहीं आया।"

"अच्छा दादी, होनी तो होकर ही रहती है। पर ख़ैर, तो भी

तुम इस मुसीबत में मेरी मदद करो और मुझे यह बताओ कि मैं जाऊं कहां ?"

"ओह, प्यारे बेटे, मुझे तुम पर बहुत रहम आ रहा है। मदद करने के सिवा कोई चारा भी तो नहीं। तुम अपनी सुनहरे अयालवाली घोड़ी मेरे पास छोड़ जाओ, यहां वह सुरक्षित रहेगी और सूत का यह छोटा-सा गोला ले लो। कल जब तुम बाहर जाओ तो इसे ज़मीन पर फेंक देना और जिस तरफ़ यह लुढ़कता जाये, तुम भी उधर ही चलते जाना। यह तुम्हें मेरी मंझली बहन के पास ले जायेगा। उसे यह गोला दिखाना और वह जिस तरह भी कर सकती होगी, तुम्हारी मदद करेगी और जो कुछ जानती है, तुम्हें बतायेगी। इसके बाद वह तुम्हें हमारी सबसे बड़ी बहन के पास भेज देगी।"

अगले दिन उसने मुंह अंधेरे ही अपने मेहमान को जगाया, उसे खिलाया-पिलाया और इसके बाद उसे आंगन में विदा कर आयी। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और उससे विदा होकर अपने लम्बे सफ़र पर चल दिया।

कहना आसान, करना मुश्किल। गोला लुढ़कता रहा और इवान उसके पीछे पीछे चलता रहा।

वह एक दिन चला, फिर एक दिन और, फिर एक दिन और। इसी तरह चलते चलते वह एक छोटी-सी झोंपड़ी के पास पहुंचा जोकि चिड़िया के पंजे और तकली पर खड़ी थी। वहां जाकर गोला रुक गया। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने झोंपड़ी से

कहा: "छोटी झोंपड़ी, छोटी झोंपड़ी, अपनी पीठ पेड़ों की ओर कर ले और मुंह मेरी तरफ़।"

छोटी झोंपड़ी घूमी और इवान सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर गया। उसने दरवाज़ा खोला और वहां उसे एक कर्कश आवाज़ सुनाई दी:

"ओहो, रूसी खून! पहले कभी नहीं मिला, आज दरवाज़े पर खड़ा। कौन है? किधर से आया है? कहां जायेगा?"

तब बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने उसे सूत का गोला दिखाया और वह हैरानी से चिल्ला उठी:

"ओ मेरे प्यारे, तब तो तुम अजनबी न हो कर, मेरी बहन के भेजे हुए प्रिय मेहमान हो! तुमने तत्काल ही मुझे यह क्यों नहीं बता दिया?"

और इसके बाद उसने दौड़-धूप करके जल्दी से मेज़ लगायी। तरह-तरह के लजीज़ खाने और शराबें मेज़ पर सजायीं और उसे खाने के लिए आमंत्रित किया।

"जी भर कर खाओ-पिओ," बाबा-यगा ने कहा, "और आराम करने के लिए लेट जाओ। बाद में हम मतलब की बातचीत करेंगे।"

इस तरह बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने जी भर कर खाया-पिया और आराम करने के लिए लेट गया। जादूगरनी–मंझली बहन–उसके सिरहाने बैठकर अता-पता पूछने लगी। उसने उसे बताया कि वह कौन है, कहां से आया है और किस

उद्देश्य से अपने लम्बे सफ़र पर जा रहा है। तब बाबा-यगा ने कहा –

"वह जगह तो बहुत दूर नहीं है, मगर मैं यह नहीं कह सकती कि तुम वहां से ज़िन्दा भी लौट सकोगे। अपने आप बजनेवाली गुसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला बिल्ला, ये सभी चीज़ें मेरे भान्जे ज़मेई गोरीनिच की सम्पत्ति हैं। वह एक बहुत भयानक पिशाच है। बहुत से वीर युवक वहां गये मगर कभी कोई लौटकर नहीं आया। सभी उस पिशाच के शिकार हो गये हैं। वह हमारी सबसे बड़ी बहन का बेटा है और हमें उसे तुम्हारी मदद करने के लिए कहना होगा, वरना तुम कभी वापस नहीं लौटोगे। मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं कौवे को सन्देशवाहक के रूप में उसके पास भेजूंगी। अब तुम सो जाओ और अच्छी नींद लो, क्योंकि मैं तुम्हें कल सुबह ही जगा दूंगी।"

उस वीर युवक ने मीठी नींद ली और अगले दिन तड़के ही जाग उठा। उसने हाथ-मुंह धोया और बाबा-यगा की तैयार की हुई बढ़िया चीज़ें खाईं। तब बाबा-यगा ने उसे लाल ऊन का एक गोला दिया और मार्ग दिखाने के लिए बाहर ले आयी। वहां उन्होंने एक दूसरे को अलविदा कहा। गोला आगे-आगे लुढ़कता जाता था और बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान उसके पीछे-पीछे चलता जाता था।

वह सुबह से शाम तक चलता रहता और शाम से सुबह तक। जब थक जाता तो गोला उठा लेता और किसी झरने

के पास रोटी का टुकड़ा खाने और पानी पीने के लिए बैठ जाता। इसके बाद वह फिर से अपना सफ़र जारी कर देता।

तीसरा दिन ढलते ढलते ऊन का गोला एक बड़े मकान के पास जाकर रुक गया। यह मकान बारह स्तम्भ और बारह पत्थरों के ऊपर खड़ा था। मकान के चारों तरफ़ ऊंची चारदीवारी थी।

एक कुत्ता भौंका और बाबा-यगा, पहली चुड़ैल की सबसे बड़ी बहन, बाहर ओसारे की तरफ़ दौड़ी। उसने कुत्ते को चुप करवाया और कहा:

"आओ, वीर युवक, मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूं। मेरी बहन का भेजा हुआ सन्देशवाहक, जंगली कौवा, सन्देश देकर यहां से लौट चुका है। मैं तुम्हें तुम्हारी मुसीबत-परेशानी से निजात दिलाने की कोशिश करूंगी। अब तुम भीतर आ कर खाओ-पिओ और आराम करो।"

वह उसे भीतर ले गयी और खूब खिलाया-पिलाया।

"अब तुम्हें छिप जाना चाहिए—मेरा बेटा ज़मेई गोरीनिच जल्दी ही यहां आनेवाला है। जब वह घर लौटता है तो हमेशा ही उसका मिज़ाज बिगड़ा हुआ होता है और उसे ज़ोरों की भूख लगी होती है। मुझे डर लगता है कि कहीं वह तुम्हें ही न निगल जाये।" उसने तहखाने का द्वार खोला और कहा:

"वहां चले जाओ, छोटे इवान, और जब तक मैं न बुलाऊं वहीं बैठे रहना।"

अभी उसने तहखाने को बन्द किया ही था कि बहुत भयानक गड़गड़ाहट और ज़ोर का शोर सुनाई दिया। दरवाज़े अपने आप खुल गये और ज़मेई गोरीनिच इतने ज़ोर से भीतर आया कि दीवारें तक हिल गयीं।

"मुझे यहां रूसी खून की बू आ रही ! " वह गरजा।

"अरे नहीं बेटा, यहां रूसी खून कैसे हो सकता है। बरसों गुजरे यहां तो कभी किसी परिन्दे तक ने पर नहीं मारा। तुम खुद ही सारी दुनिया में घूम आये हो और यह बू भी अपने साथ लाये हो।"

इतना कहकर वह मेज़ पर खाना चुनने लगी। उसने तीन साल की उम्र का एक भुना हुआ बैल अलावघर से बाहर निकाला और एक बाल्टी शराब की लायी। वह शराब की पूरी बाल्टी एक ही सांस में पी गया और भुना हुआ बैल इस तरह निगल गया जैसे चख कर ही देख रहा हो। इसके बाद वह कुछ खुश-खुश दिखाई देने लगा।

"ओ मां, अब मैं हंसी-मजाक किससे करूं? ताश किस के साथ खेलूं?"

"मैं तेरे मन-बहलाव और ताश खेलने के लिए किसी को ला तो सकती हूं मगर डर लगता है कि कहीं तुम उसी का कुछ अहित न कर दो।"

"तो उसे यहां बुला लो, ओ मां, और कोई चिन्ता मत करो। मैं उसका कुछ नहीं बिगाड़ूंगा। मैं तो ताश की एक बाज़ी

लगाने के लिए, थोड़ा मन-बहलाव करने के लिए मरा जा रहा हूं।"

"अच्छा बेटा, अपने शब्द याद रखना," बाबा-यगा ने उत्तर दिया और तब उसने तहखाने का दरवाज़ा खोला।

"बाहर आ जाओ बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान! तुम घर के मालिक का सम्मान करते हुए उसके साथ एक बाज़ी ताश खेलो।"

वे दोनों मेज़ पर बैठ गये और ज़्मेई गोरीनिच ने कहा:

"इस तरह खेलें कि जीतनेवाला हारनेवाले को खा जाये।"

वे तमाम रात खेलते रहे और बाबा-यगा अपने मेहमान की मदद करती रही। सुबह होते तक छोटे इवान ने पहली बाज़ी जीत ली।

तब ज़्मेई गोरीनिच ने उसकी आरज़ू-मिन्नत की:

"वीर युवक, आज का दिन तो हमारे साथ और ठहरो ताकि मैं शाम को लौटकर हारी बाज़ी जीत सकूं।"

तब वह उड़कर वहां से ग़ायब हो गया। इसी बीच छोटे इवान ने प्यारी नींद ली और जब सो कर उठा तो बाबा-यगा ने उसे ख़ूब खिलाया-पिलाया।

सूरज डूबने पर ज़्मेई गोरीनिच घर लौटा। उसने भुना हुआ एक बैल खाया तथा शराब की डेढ़ बाल्टी पी। इसके बाद कहा: "अच्छा, आओ अब बाज़ी लगायें और मैं बाज़ी जीतकर अपने आप को लौटा लूंगा।"

मगर ज़्मेई गोरीनिच रात भर नहीं सोया था और दिन भर तमाम दुनिया भर में उड़ता रहा था, इसलिए वह जल्द ही ऊंघने लगा। बाबा-यगा की मदद से इस बार भी बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने बाज़ी जीत ली। तब ज़्मेई गोरीनिच ने कहा :

"अब तो मुझे ज़रूरी काम से जाना ही होगा और हम तीसरी बाज़ी आज शाम को खेलेंगे।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने अच्छी तरह आराम किया और ख़ूब सोया, जबकि ज़्मेई गोरीनिच दो रातों से नहीं सोया था और दुनिया भर में उड़ता-फिरता रहा था। वह बिल्कुल थका-मांदा घर लौटा। उसने एक भुना हुआ बैल खाया और शराब की दो बाल्टियां पीं। इसके बाद उसने मेहमान को बुलाया :

"बैठो, युवक, मैं बाज़ी जीतकर अपने आप को लौटा लूंगा।"

मगर वह इतना थका हुआ और उनींदा था कि वीर युवक ने तीसरी बाज़ी भी शीघ्र ही जीत ली।

ज़्मेई गोरीनिच बेहद डरा और घुटने टेक कर दया की भीख मांगने लगा :

"वीर युवक! मुझे खाना नहीं, मेरी जान मत लेना। तुम जो भी चाहोगे, तुम्हारी सेवा करूंगा!"

तब उसने अपनी मां के सामने घुटने टेके और उससे भी प्रार्थना की :

"मां इससे कहो कि मेरी जान बख़्श दे।"

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान तो ख़ैर चाहता ही यही था।

"बहुत बेहतर, ज़्मेई गोरीनिच, मैंने तीन बाज़ियां जीती हैं, यदि तुम मुझे तीन अजूबे – अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला बिल्ला दे दो तो मैं तुम्हारी जान बख़्श दूंगा।"

ज़्मेई गोरीनिच ख़ुशी से उछल पड़ा और अपने मेहमान तथा अपनी बूढ़ी मां बाबा-यगा को प्यार करने लगा।

"मुझे यह सौदा मंज़ूर है। बड़ी ख़ुशी से तुम ये चीज़ें ले सकते हो!" वह चिल्लाया। "मैं अपने लिए इनसे भी अच्छे अजूबे ला सकता हूं।"

इसके बाद उन्होंने एक बड़ी दावत की। ज़्मेई गोरीनिच ने छोटे इवान के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया और उसे भाई कहा। उसने उसे घर पहुंचा आने के लिए अपनी सेवा उपस्थित की।

"तुम्हें पैदल जाने और अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला बिल्ला ख़ुद उठाकर ले जाने की क्या ज़रूरत है? मैं तुम्हें जहां भी चाहो, घड़ी भर में ले जा सकता हूं।"

"यह बिल्कुल ठीक है बेटा," बाबा-यगा ने कहा। "अपने मेहमान को मेरी सबसे छोटी बहन, अपनी मौसी के पास ले जाओ। लौटते हुए अपनी मंझली मौसी से मिलना मत भूलना। तुम्हें उसे देखे एक मुद्दत हो गयी है।"

दावत ख़तम हुई और बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने वे अजूबे उठा लिये। तब उसने बाबा-यगा से विदा ली। इसके बाद ज़मेई गोरीनिच इवान को साथ ले कर नीले आकाश की ओर उड़ गया। एक घंटा बीतने से पहले ही वे सबसे छोटी बाबा-यगा की झोंपड़ी के सामने जा उतरे। मालकिन दौड़ कर बाहर ओसारे की तरफ़ आयी और उन्हें देख कर बेहद खुश हुई। बड़ी बुद्धिवाले इवान ने समय नष्ट नहीं किया और जल्दी से सुनहरे अयालवाली घोड़ी पर काठी डाली। तब उसने बाबा-यगा और उसके भांजे ज़मेई गोरीनिच से विदा ली और अपने देश की ओर चल दिया। मंज़िल दर मंज़िल, कूच करते हुए छोटा इवान घर पहुंचा। और सभी अजूबे भी सही-सलामत ले आया।

जब वह ज़ार के महल में पहुंचा तो उसी समय उसके बहुत से मेहमान आये हुए थे जिनमें तीन दूसरे ज़ार और उनके बेटे, तीन विदेशी बादशाह और उनके शाहज़ादे शामिल थे। इनके अलावा बहुत से मन्त्री और दरबारी भी वहां उपस्थित थे।

वीर युवक वहां पहुंचा और उसने वे अजूबे ज़ार को भेंट किये। ज़ार की खुशी का कोई ठिकाना न था!

"बहुत खूब, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान! इस बार तुमने मेरी बहुत बड़ी खिदमत की है। इसके लिए मैं तुम्हारी तारीफ़ करता हूं और तुम्हें इनाम भी देता हूं। अब तक तुम मेरे मुख्य सईस थे और आज से मैं तुम्हें अपना सलाहकार बनाता हूं।"

ज़ार के सामन्तों और मन्त्रियों ने नाक-भौं सिकोड़ी और लगे आपस में कानाफूसी करने।

"एक सईस हमारे साथ बैठेगा! हमारी तो नाक कट जायेगी! जाने इस ज़ार को क्या सनक सवार हुई है?"

मगर तभी अपने आप बजनेवाली गूसली ने एक धुन शुरू की, खेलनेवाला बिल्ला गाने लगा और हंस ने अपने नाच की ज़रा-सी झलक दिखायी। इसके बाद तो वह समां बंधा कि कुछ पूछो न! उन शाही मेहमानों में से कोई भी बैठा न रह सका, सभी उठकर नाचने लगे।

समय गुज़रता गया पर नाच जारी रहा। बादशाहों और ज़ारों के ताज उतर कर इधर-उधर जा गिरे और उनके शाहज़ादे तथा राजकुमार ख़ुशी से भरपूर, रूसी लोक-नाच नाचते रहे। मन्त्री और सामन्त पसीने से लथपथ हो कर हांफने लगे, मगर फिर भी नाचते रहे और नाचते रहे। अन्त में ज़ार ने हाथ हिलाकर प्रार्थना की:

"इसे बन्द करो, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान, इस तमाशे को बन्द करो! हम सब बुरी तरह थक गये हैं।"

तब उस वीर युवक ने इन तीनों अजूबों को एक थैले में बन्द कर दिया और सब कुछ शान्त हो गया।

सभी मेहमान जहां भी जगह मिली, औंधे हो गये। उन सब के दम फूले हुए थे और बुरी तरह हांफ रहे थे।

"क्यों प्यारे, कैसा मज़ा रहा, ख़ूब आनन्द आया न? क्या पहले कभी ऐसी मजेदार चीज़ देखी थी?" ज़ार ने डींग मारी। सभी विदेशी मेहमान मन ही मन ज़ार से ईर्ष्या करने लगे, जब कि ज़ार अपने मन में इतना खुश था जितना कि शायद ही कभी कोई हुआ हो।

"अब सभी ज़ार और बादशाह ईर्ष्या से जल मरेंगे।" उसने सोचा।

मगर उसके मन्त्री और सामन्त बड़बड़ाते और एक दूसरे से कहते रहे:

"अगर यही सिलसिला जारी रहा तो बहुत शीघ्र ही कोई गंवार-किसान इस राज्य का मुख्याधिकारी हो जायेगा। वह राज्य के सभी ओहदे अपने साथी गंवारों को दे देगा। और अगर हमने इस इवान से छुट्टी न पा ली तो वह हम उच्च कुलीन लोगों का जीना मुश्किल कर देगा।"

इसलिए अगले दिन मन्त्री और सामन्त इकट्ठे हुए और ज़ार के नये सलाहकार से छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगे।

वे सोचते रहे, सोचते रहे और आखिर एक बूढ़े सामन्त ने सलाह दी:

"हमें आवारा शराबी को बुलाना चाहिए। वह इस मैदान का पुराना खिलाड़ी है।"

आवारा शराबी भीतर आया और उसने प्रणाम करके कहा:

"श्रीमन् मन्त्री और सामन्तगण मैं यह जानता हूं कि आपने मुझे किसलिए याद किया है। अगर आप लोग मुझे शराब की आधी बाल्टी देने का वचन दें तो मैं आपको ज़ार के नये सलाहकार से छुटकारा पाने का तरीक़ा बता दूंगा।"

"बोलो," सामन्तों और मन्त्रियों ने कहा, "शराब की आधी बाल्टी तुम्हारी।"

अब उन्होंने उसे एक जाम भर कर दिया। शराबी ने उसे पीकर कहा:

"हमारे ज़ार को विधुर हुए चालीस बरस हो गये। तब से अब तक शाहज़ादी अल्योना को पाने की उसने बहुत बार कोशिश की है, मगर सदा असफल रहा है। तीन बार तो उसने उसके राज्य पर हमला भी किया है। बहुतेरे बेचारे सैनिक भी मारे गये हैं। मगर ताक़त से भी वह उसे नहीं पा सका है। ज़ार को सुझाव दो कि ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को लाने के लिए बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान को भेजे। एक बार जाकर वह लौटने का नहीं।"

मन्त्रियों और सामन्तों की जान में जान आयी और सुबह होने पर वे ज़ार के पास गये।

"बादशाह सलामत, ऐसा शानदार सलाहकार चुनकर आपने बड़ी अक़्लमन्दी का काम किया है। जो अजूबे वह लाया है, उनका लाना बड़ी टेढ़ी खीर था। मगर अब वह यह डींग मारता है कि शाहज़ादी अल्योना को भी चुरा कर ला सकता है।"

जब ज़ार ने सुन्दरी शाहज़ादी अल्योना का नाम सुना तो तख़्त से उछल पड़ा। उसके लिए बैठे रहना मुश्किल हो गया।

"वाह वाह! क्या बढ़िया ख़ुशख़बरी लाये हो तुम लोग!" वह चिल्लाया।" पहले से ही मुझे इसका ध्यान क्यों नहीं आया। सुन्दरी शाहज़ादी अल्योना के लिए तो ज़रूर इवान को ही भेजना चाहिए।"

उसने अपने नये सलाहकार इवान को बुलाया और कहा:

"अभी इसी वक़्त नौ-तिया-सत्ताईस देश और दस-तिया-तीस राज्य के लिए रवाना हो जाओ और मुझे सुन्दरी शाहज़ादी अल्योना लाकर दो।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने हैरान होकर कहा:

"मगर हुज़ूर, वह न तो अपने आप बजनेवाली गूसली है, न नाचनेवाला हंस और न ही खेलनेवाला बिल्ला है। उसे तो किसी थैले में भी बन्द नहीं किया जा सकता। बहुत संभव है, उसे यहां आना भी पसन्द न हो।"

मगर ज़ार ने ज़ोर ज़ोर से पैर पटके, दाढ़ी हिलायी और हाथ झटक कर कहा:

"मुझसे बहस मत करो! मैं कुछ नहीं सुनूंगा! जैसे भी हो उसे लाओ! अगर तुम सुन्दरी शाहज़ादी अल्योना को ले आते हो तो मैं तुम्हें एक शहर और उसके इर्द-गिर्द की सभी ज़मीन देकर मन्त्री नियुक्त कर दूंगा। अगर ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

ज़ार से जुदा होते समय बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान बड़ा उदास और चिन्ता में डूबा हुआ था। उसने सुनहरे अयालवाली घोड़ी पर काठी डाली तो घोड़ी ने पूछा:

"प्यारे मालिक, तुम इतने उदास और परेशान क्यों हो? क्या कोई मुसीबत सिर पर आ पड़ी है या दुर्भाग्य ने आ घेरा है?"

"कोई बड़ी मुसीबत तो नहीं, पर ख़ुश होने की बात भी नहीं। ज़ार ने मुझे हुक्म दिया है कि उसे सुन्दरी शाहज़ादी अल्योना लाकर दूं। वह ख़ुद पिछले तीन बरसों से उसे पाने की कोशिश कर रहा है, मगर हर बार निराश होकर ही रह गया है। उसे जीतने के लिए उसने तीन बार लड़ाइयां भी लड़ीं, मगर उसकी दाल न गली और अब उसे लाने के लिए मुझे जाने का हुक्म दिया है।"

"ओह, यह तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं," सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा। "मैं तुम्हारी मदद करूंगी और हम जैसे तैसे यह काम भी पूरा कर ही लेंगे।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने तैयार होने में बहुत देर न लगायी और तुरन्त ही वहां से चल दिया। उसे घोड़ी पर सवार होते तो लोगों ने देखा, मगर वह कब और कहां चला गया, यह कोई नहीं देख पाया।

वह कब तक इसी तरह चलता रहा, थोड़ा चला या बहुत यह कहना मुश्किल है, मगर अन्त में वह दस-तिया-तीस राज्य

में पहुंचा। वहां पहुंचकर उसने देखा कि मज़बूत चारदीवारी उसका रास्ता रोककर खड़ी है। मगर सुनहरे अयालवाली घोड़ी उस चारदीवारी को आसानी से फांद गयी। इवान अब ज़ार के ख़ास बग़ीचे में था। तब सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा:

"मैं सोने के सेबोंवाला पेड़ बन जाऊंगी और तुम मेरे पीछे छिप जाना। कल सुन्दरी शाहज़ादी अल्योना सैर के लिए यहां आयेगी और वह एक सुनहरी सेब तोड़ना चाहेगी। जब वह पास आये तो तुम मुंह ताकते खड़े मत रहना, बल्कि उसे पकड़ लेना। मैं पास ही तैयार खड़ी मिलूंगी। तुम ज़रा-सी भी देर मत होने देना। झटपट शाहज़ादी के साथ मेरी पीठ पर सवार हो जाना और हम यहां से चलते बनेंगे। याद रखना, कि ज़रा-सी भी चूक हुई कि हम दोनों की जान गयी।"

अगले दिन ख़ूबसूरत शाहज़ादी ख़ास बग़ीचे में सैर के लिए आयी। उसने सुनहरे फलोंवाला सेब का पेड़ देखा तो अपनी दाइयों, सेविकाओं और दासियों से कहा:

"ओह, देखो तो कैसा प्यारा सेब का पेड़ है! इसके सेब सोने के हैं! जब तक मैं एक सेब तोड़कर लौटूं, तुम सब यहीं खड़ी रहना।"

वह दौड़कर वहां पहुंची तो उसी वक़्त, जाने कहां से, बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान कूदकर सामने आ गया और उसने शाहज़ादी को कस कर पकड़ लिया। उसी दम वह सेब का पेड़ सुनहरे अयालवाली घोड़ी के रूप में बदल गया। घोड़ी

ज़ोर से पैर पटक कर उसे जल्दी करने का संकेत करने लगी। वह वीर युवक शाहज़ादी के साथ कूद कर काठी पर सवार हो गया और दाइयां, नौकरानियां और दासियां बस, उन्हें सवार होते ही देख सकीं।

औरतें ज़ोर से चीखीं तो पहरेदार दौड़ते हुए भीतर आये। मगर शाहज़ादी वहां कहीं नज़र न आयी। जब ज़ार ने यह सुना तो सभी तरफ़ तेज़ घुड़सवार उसकी खोज में भेजे। मगर वे सब अगले ही दिन ख़ाली हाथ लौट आये। उन्होंने अपने घोड़े ताबड़तोड़ दौड़ाये, मगर शाहज़ादी और उसके भगानेवाले की झलक तक न पा सके।

इसी बीच, छोटा इवान, - वीर युवक, अपनी घोड़ी को सरपट दौड़ाता हुआ बहुत से देश, झीलें और नदियां लांघ चुका था।

शुरू में तो शाहज़ादी अल्योना ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की मगर उसके बाद उसने यह कोशिश छोड़कर रोना शुरू कर दिया। वह थोड़ा रोती, फिर वीर युवक की ओर देखती, फिर थोड़ा रोती और तब फिर युवक को निहारती। दूसरे दिन उसने उससे बातचीत करनी शुरू की:

"अजनबी, तुम कौन हो और कहां से आये हो? तुम्हारी मातृभूमि कौनसी है? तुम्हारे सगे-सम्बन्धी कौन हैं और तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम इवान है, और लोग मुझे बड़ी बुद्धिवाला छोटा

इवान कहते हैं। मैं फ़लां-फ़लां ज़ार के राज्य का रहनेवाला हूं और मेरे मां-बाप किसान हैं।"

"तब मुझे यह बताओ, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान, कि क्या तुम मुझे अपने लिए भगाकर लाये हो या किसी दूसरे के लिए?"

"ज़ार के लिए। उसी ने मुझे ऐसा करने का आदेश दिया था," इवान ने कहा।

ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना ने अपने हाथ मले और चिल्लायी :

"मैं उस बूढ़े उल्लू से जीते जी कभी शादी नहीं करूंगी। वह तीन बरस तक मुझे पाने की कोशिश करता रहा, मगर नहीं पा सका। उसने हमारे राज्य पर तीन बार हमले किये और अपनी फ़ौज की बहुत-सी हानि भी की, मगर मुझे नहीं जीत सका। अब भी वह मुझे नहीं पा सकेगा!"

वीर युवक ये शब्द सुनकर बेहद ख़ुश हुआ। मगर मुंह से कुछ न बोला। मन ही मन सोचे बिना न रह सका: "अगर ऐसी बीवी मुझे मिल जाये तो कैसा रहे!"

धीरे-धीरे उसे अपने देश की सीमा दिखाई देने लगी। बूढ़े ज़ार ने ये सभी दिन खिड़की में बैठकर बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान के इन्तज़ार में गुज़ारे थे। जैसे ही वह वीर युवक नगर के पास पहुंचा, ज़ार अपने महल के दरवाज़े पर ही खड़ा होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। इवान मुश्किल से ही आंगन में पहुंचा

था कि ज़ार जल्दी से नीचे उतरकर आया। खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को उसने सहारा देकर घोड़ी से नीचे उतारा। फिर उसके गोरे हाथों को अपने हाथों में लेकर उसने कहा :

"कई बरसों से मैं तुम्हारे पास अपने दूत भेजता रहा हूं और तुम्हें पाने के लिए खुद भी आता रहा हूं मगर तुम हमेशा ही इन्कार करती रहीं। इस बार तो तुम्हें मुझसे शादी करनी ही होगी।"

अल्योना ज़रा मुस्करायी और उसने जवाब दिया :

"बादशाह सलामत, आप मुझे कुछ देर आराम करके सफ़र की थकान मिटाने दें और तब हम शादी की चर्चा करेंगे।"

अब क्या था—ज़ार ने जल्दी मचानी शुरू की। दाइयों, दासियों और नौकरानियों को बुलाकर पूछा :

"क्या हमारे प्रिय मेहमान के लिए कमरे सज गये हैं?"

"जी हुज़ूर, बहुत देर पहले से।"

"अच्छा तो सुनो, अब ये तुम्हारी रानी होंगी। इसलिए इनके सभी आदेश मानना और इस बात का ख़्याल रखना कि इन्हें किसी चीज़ की कमी न होने पाये।"

दाइयां, दासियां और नौकरानियां शाहज़ादी को उसके कमरों में ले गयीं। ज़ार ने बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान से कहा :

"बहुत खूब इवान! इस सेवा के बदले में मैं तुम्हें अपना प्रधान-मन्त्री बनाता हूं और तीन नगर तथा उसके इर्द-गिर्द की भूमि इनाम में देता हूं।"

एक दिन गुज़रा और तब दूसरा। ज़ार बेहद बेताब हो उठा। वह शादी करने के लिए तड़प रहा था। इसलिए उसने ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना से जाकर पूछा :

"दावत के लिए मेहमानों को किस दिन बुलाया जाये? गिरजे में हम किस दिन जायेंगे?"

मगर उसने जवाब दिया : "मेरी शादी कैसे हो सकती है जब मेरे पास मेरी शादी की अंगूठी और घोड़ा-गाड़ी ही नहीं है?"

"ओह, यह बात है," ज़ार ने कहा, "तो मेरे पास घोड़ा-गाड़ियों और अंगूठियों की कमी थोड़े ही है। बढ़िया से बढ़िया और चुनी हुई अंगूठियां और घोड़ा-गाड़ियां हैं। मगर यदि तुम्हें उनमें से कोई भी पसन्द न आये तो हम समुद्र पार से तुम्हारी मनपसन्द चीज़ें मंगवा सकते हैं।"

"नहीं, बादशाह सलामत, मैं अपनी शाही-गाड़ी के अलावा दूसरी किसी गाड़ी में गिरजाघर नहीं जाऊंगी और अपनी अंगूठी के सिवा कोई दूसरी अंगूठी पहनकर शादी नहीं करवाऊंगी।"

तो ज़ार ने पूछा :

"और तुम्हारी शादी की अंगूठी तथा शाही-गाड़ी कहां है?"

"मेरी अंगूठी मेरे सफ़री डिब्बे में है, मेरा सफ़री डिब्बा मेरी गाड़ी में है और मेरी गाड़ी बुयान द्वीप के समीप समुद्र की तह में है। और उन्हें मंगवाने से पहले शादी की बात न करना ही बेहतर होगा।"

ज़ार ने अपना ताज उतार कर सिर खुजलाया।

"मगर समुद्र की तह से तुम्हारी गाड़ी कैसे हासिल की जाये?"

"इससे मेरा सरोकार नहीं, जो भी चाहो करो।"

और वह झटपट अपने कमरे में चली गयी। ज़ार सोचने के लिए अकेला बैठा रह गया। वह सोचता रहा, सोचता रहा और अन्त में उसे बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान का ध्यान आया।

"एक वही है जो मुझे अंगूठी और गाड़ी लाकर दे सकता है!"

ज़ार ने उसी वक़्त छोटे इवान को बुलवाया और उससे कहा:

"मेरे वफ़ादार सेवक, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान, जो मैं कहता हूं उसे सुनो। तुम्हारे सिवा मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और खेलनेवाला बिल्ला कोई भी नहीं लाकर दे सकता था। ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को लाना भी किसी दूसरे के बस का काम नहीं था। मेरा तीसरा काम भी तुम्हीं कर सकते हो—मुझे अल्योना की शादी की अंगूठी और शाही-गाड़ी ला दो। अंगूठी उसके सफ़री डिब्बे में रखी है और सफ़री डिब्बा गाड़ी में रखा है तथा गाड़ी बुयान द्वीप के पास समुद्र की तह में पड़ी है। अगर तुम मुझे गाड़ी और अंगूठी ला दोगे तो मैं तुम्हें अपने राज्य के एक तिहाई हिस्से का मालिक बना दूंगा।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने कहा:

"मगर हुज़ूर, मैं कोई ह्वेल मछली तो हूं नहीं; अंगूठी और गाड़ी के लिए, भला, मैं किस तरह समुद्र की तह में पहुंच सकता हूं?"

ज़ार नाराज़ हो गया और पैर पटक कर चिल्लाया:

"यह बकबक बन्द करो! मैं यह सब कुछ सुनने को तैयार नहीं हूं! मेरा काम हुक्म देना है और तुम्हारा हुक्म बजा लाना। चीज़ें ले आओगे तो इनाम पाओगे, वरना सिर उड़ा दिया जायेगा।"

सो वह वीर युवक अस्तबल में पहुंचा। उसने सुनहरे अयालवाली घोड़ी पर काठी डाली तो उसने पूछा:

"क्या कहीं दूर के सफ़र की तैयारी है, मालिक?"

"यह तो मैं खुद नहीं जानता, मगर जो भी हो, मुझे जाना तो होगा ही। ज़ार ने मुझे शाहज़ादी की शाही-गाड़ी तथा अंगूठी लाने का हुक्म दिया है। अंगूठी उसके सफ़री बक्से में रखी है, बक्सा गाड़ी में और गाड़ी बुयान द्वीप के पास समुद्र की तह में। हमें ये चीज़ें लानी ही होंगी।"

सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा:

"यह काम पहलेवाले सभी कामों से मुश्किल है। यह जगह तो दूर नहीं, पर जान का खतरा ज़रूर है। मैं यह जानती हूं कि गाड़ी कहां है, मगर उसे पाना आसान नहीं। मैं समुद्र की तह में जाऊंगी और गाड़ी में जुतकर उसे बाहर खींच लाने की कोशिश करूंगी। अगर समुद्री घोड़ों के काबू न आ गयी तो बच

निकलूंगी, पर यदि उनके हत्थे चढ़ गयी तो न तुम मुझे ही कभी देख पाओगे और न ही शाही-गाड़ी को।"

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान सोचने लगा। वह सोचता रहा, सोचता रहा और आखिर उसे एक तरकीब सूझी।

तब वह ज़ार के पास गया।

"हुजूर," उसने कहा, "मुझे बैल की बारह खालें, राल सने बारह पूद* रस्से, राल के बारह पूद और एक कड़ाहे की ज़रूरत है।"

"जिस चीज़ की भी और जितनी भी ज़रूरत हो ले लो," ज़ार ने कहा। "केवल जल्दी करो।"

इस तरह युवक ने बैल की खालें, रस्से, और राल से भरे कड़ाहे एक ठेले में लादे, घोड़ी को उसमें जोता और वहां से चल दिया।

चलते चलते वे समुद्र-तट पर, ज़ार के संरक्षित चरागाहों के पास पहुंचे। यहां पहुंचकर उसने अपनी घोड़ी पर खालें लपेटीं और उन्हें रस्सों से बांध दिया।

"अगर समुद्री घोड़े तुम्हें देखकर तुमपर झपटें भी तो बहुत आसानी से खा न पायेंगे।"

उसने वे बारह की बारह खालें लगाकर उन्हें बारह पूद रस्सों से अच्छी तरह कस दिया। इसके बाद उसने राल गर्म की और बारह पूद राल का ऊपर से लेप कर दिया।

---

* पूद – सोलह किलोग्राम के बराबर होता है।

"अब मुझे समुद्री घोड़ों से डरने की जरूरत नहीं," सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा। यहां चरागाहों में बैठकर तीन दिन तक मेरा इन्तजार करो। अपनी इस गूसली को बजाते रहना और सोना नहीं।"

तब वह समुद्र में कूदी और पानी के नीचे गायब हो गयी।

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान अकेला ही समुद्र-तट पर बैठा रह गया। एक दिन गुजरा, फिर दूसरा और वह जागता रहा तथा अपनी गूसली बजाता हुआ समुद्र की ओर देखता रहा। मगर तीसरे दिन उसे बेहद नींद आयी और वह ऊंघने लगा। गूसली भी जागते रहने के लिए उसकी मदद न कर सकी। जब तक कर सका, उसने नींद के विरुद्ध संघर्ष किया, मगर अन्त में वह नींद से हार गया।

वह बहुत देर तक सोया या थोड़ी देर तक सोया यह कहना मुश्किल है कि तब उसने घोड़ी के सुमों की टाप सुनी। उसने सिर उठा कर देखा – क्या देखा? – कि उसकी घोड़ी कूद कर तट पर पहुंच गयी है और शाही-गाड़ी भी उसके साथ है। सुनहरे अयालवाले छः घोड़े उसके दायें बायें चिमटे हुए थे।

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान उसे मिलने के लिए लपका। सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा:

"अगर तुमने मुझे बैलों की खालों से ढांपकर उन्हें रस्सों से कस कर ऊपर से राल का लेप न किया होता तो तुम मुझे अब कभी न देख पाते। छः घोड़े एक साथ मुझ पर झपटे। नौ

खालें तो इन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर दीं और दो अन्य भी लगभग समाप्त हो गयी थीं। इन छः घोड़ों के दांत इन रस्सों और राल में इस बुरी तरह गड़ गये कि वे इन्हें अलग न कर पाये। पर ख़ैर, यह कुछ बुरा नहीं हुआ। ये घोड़े भी तुम्हारे काम आयेंगे।"

उस वीर युवक ने उन समुद्री घोड़ों के पैर रस्सी से बांधकर अपना चाबुक निकाला और उन्हें अक़्ल सिखाने लगा। वह उन्हें मारता जाता था और साथ-साथ कहता जाता था: "तुम मुझे अपना मालिक मानोगे या नहीं? मेरे आदेश का पालन करोगे या नहीं? अगर तुम नहीं मानोगे तो मैं तुम्हारी खाल उधेड़ कर तुम्हारे जिस्म भेड़ियों के आगे फेंक दूंगा।"

तब समुद्री घोड़ों ने घुटने टेक कर दया की भीख मांगनी शुरू की:

"वीर युवक, अब हमें और मत मारो, अधिक घायल मत करो, हम तुम्हारे हर हुक्म का पालन करेंगे और वफ़ादारी से तुम्हारी ख़िदमत करेंगे। जब कभी तुम पर कोई मुसीबत आयेगी तो हम तुम्हारी मदद करेंगे।"

तब इवान ने उन्हें पीटना बन्द कर दिया। उन सातों घोड़ों को गाड़ी में जोतकर जल्दी से ज़ार के मुख्य द्वार पर पहुंचा। इवान सुनहरे अयालवाली घोड़ी और समुद्री घोड़ों को अस्तबल में छोड़कर ज़ार के पास गया।

"बादशाह सलामत, शाही-गाड़ी हाज़िर है। वह तमाम दहेज समेत आपके आंगन में खड़ी है।"

ज़ार को इवान का शुक्रिया अदा करना भी याद न रहा। वह सीधा गाड़ी की तरफ़ दौड़ा। वहां जाकर उसने डिब्बा उठाया और उसे खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना के पास ले गया।

"अच्छा, खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना, मैंने तुम्हारी सभी इच्छाएं और मांगें पूरी कर दी हैं। यह रहा तुम्हारा डिब्बा और अंगूठी तथा शाही-गाड़ी बाहर खड़ी तुम्हारा इन्तजार कर रही है। अब कहो, शादी की रस्म किस दिन अदा हो और मेहमानों को किस दिन बुलाया जाये?"

मगर खूबसूरत शाहज़ादी ने जवाब दिया:

"शादी मैं जरूर करूंगी और हम जल्दी ही शादी की रस्म पूरी कर सकते हैं। मगर मैं नहीं चाहती कि शादी के दिन तुम इतने बूढ़े और खूसट दिखाई दो। लोग क्या कहेंगे? वे अवश्य ही हम पर हंसेंगे—'ज़रा इस बूढ़े खूसट को तो देखो, एक जवान लड़की से शादी कर रहा है! क्या यह इतना भी नहीं जानता कि एक बूढ़े की जवान पत्नी अपने पति के अतिरिक्त और सभी का स्वागत करती है?' और आप जानते हैं कि किसी की ज़बान तो बन्द नहीं की जा सकती—जितने मुंह उतनी बातें। उन्हें कोई चुप नहीं करवा सकता। अगर हमारी शादी करने से पहले आप जवान हो जायें तो फिर मामला बहुत अच्छा रहे।"

ज़ार ने जवाब दिया:

"मैं खुशी से जवान होना पसन्द करूंगा, मगर तुम्हें इसका

तरीक़ा वताना होगा। मेरे राज्य में तो कभी कोई ऐसे जवान हुआ नहीं।"

तव ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना ने उसे वताया :

"आप तांवे के तीन वड़े-वड़े कड़ाहों का प्रवन्ध करें। उनमें से एक को दूध से और वाक़ी दो को चश्मे के पानी से भरवायें। दूध के और पानी के एक कड़ाहे को ख़ूब गर्म करवाना चाहिए। जव वे उवलने लगें तो आप पहले दूध के कड़ाहे में कूदें, वाद में गर्म पानी के कड़ाहे में और इसके वाद ठंडे पानी के कड़ाहे में। जव आप अपने सारे शरीर को इन तीनों कड़ाहों में डुवोकर वाहर निकलेंगे तो वीस साल के युवक की भांति जवान और सुन्दर दिखाई देंगे।"

"मगर क्या मैं झुलस नहीं जाऊंगा?" ज़ार ने पूछा।

"हमारे राज्य में तो वूढ़े विल्कुल हैं ही नहीं। हर कोई ऐसे करता है और हमने तो कभी किसी को झुलसते नहीं देखा।"

सो ज़ार ने अल्योना के कहने के मुताविक़ सभी चीज़ें तैयार करवा लीं। मगर जव दूध और पानी के कड़ाहे उवलने लगे तो वह अपना इरादा पक्का न रख सका और डगमगा गया। वह कड़ाहों के गिर्द चक्कर लगाता रहा और तव अचानक ही उसने अपना माथा थपथपाया :

"मैं सोच क्या रहा हूं? पहले वड़ी वुद्धिवाले छोटे इवान को नहाने दो और तव मैं अपने वारे में देखूंगा। अगर सब ठीक रहा तो मैं भी डुवकी लगा लूंगा। अगर नहीं और वह झुलस

गया तो कोई रोनेवाला भी नहीं होगा। उसके सभी घोड़े मेरे हो जायेंगे और जैसा कि मैंने वचन दिया है, मुझे अपने राज्य का बंटवारा भी नहीं करना होगा।"

इसलिए उसने बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान को बुलवाया।

"हुज़ूर, आप क्या चाहते हैं? आपको यह न भूलना चाहिए कि मैं अभी सफ़र से लौटा हूं और मुझे आराम की ज़रूरत है।"

"मैं तुम्हें बहुत देर तक रुकने को नहीं कहूंगा — ज़रा इन कड़ाहों में डुबकी लगा लो और फिर जाकर आराम करो।"

इवान ने कड़ाहों में झांक कर देखा। एक दूध और दूसरा पानी का कड़ाहा तो उबल रहा था और केवल पानी का तीसरा कड़ाहा शान्त और ठंडा था।

"क्या आप मुझे ज़िन्दा उबालने की सोच रहे हैं, हुज़ूर?" उसने कहा। "मेरी वफ़ादारी से की गयी सेवाओं का क्या यही इनाम है?"

"ओह नहीं, वान्या! देखो न, अगर कोई इनमें नहाता है तो जवान और ख़ूबसूरत हो जाता है।"

"मगर हुज़ूर मैं तो अभी बूढ़ा नहीं हूं और मुझे अधिक जवान होने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

ज़ार गुस्से में आने लगा।

"अरे तुम भी कैसे झक्की हो! हमेशा बहस करते रहते हो! अगर तुम अपनी ख़ुशी से नहीं कूदोगे, तो या तो तुम्हें ज़बरदस्ती इनमें फेंकवा दूंगा या कोड़े लगवाऊंगा।"

मगर तभी ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना अपने कमरों से दौड़ती हुई बाहर आयी और मौक़ा देख कर किसी के जाने बिना वीर युवक के कान में यह फुसफुसा गयी:

"डुबकी लगाने से पहले सुनहरे अयालवाली अपनी घोड़ी और समुद्री घोड़ों को ख़बर कर दो। इसके बाद तुम निश्चिन्त होकर इनमें नहा सकते हो।"

अल्योना ने तब ज़ार से कहा:

"मैं यह देखने आयी थी कि क्या मेरे कहने के मुताबिक़ हर चीज़ तैयार हो गयी है या नहीं।"

वह यह कह कर कड़ाहों के पास गयी और उसने उनमें झांक कर देखा।

"जैसा मैंनें कहा था सब उसी तरह है," उसने कहा। "बादशाह सलामत अब आप इसमें नहा सकते हैं। मैं जाकर शादी के लिए तैयार होती हूं।"

इतना कहकर वह अपनी अटारी की ओर दौड़ गयी। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने ज़ार की तरफ़ देखकर कहा:

"ख़ैर, मैं आपको एक बार और, सो भी अन्तिम बार, खुश करूंगा। ज़िन्दगी में कोई भी दो बार तो मरता नहीं। मगर एक मौत को कोई धोखा नहीं दे सकता। सिर्फ़ इतनी मेहरबानी करें कि मुझे मेरी सुनहरे अयालवाली घोड़ी देख आने दें। हो सकता है कि उससे यह मेरी आख़िरी मुलाक़ात हो। हम दोनों ने एकसाथ बहुत-सा सफ़र किया है।"

"जाओ, मगर वहां बहुत देर नहीं लगाना।"

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान अस्तबलों में गया और वहां उसने अपनी घोड़ी तथा समुद्री घोड़ों को सब कुछ बताया।

"जब तुम तीन बार हमारा हिनहिनाना सुनो," उन्होंने कहा, "तब तुम डुबकी लगाना और मन में किसी बात का डर मत लाना।"

तब इवान ज़ार के पास वापस गया।

"मैं अब बिल्कुल तैयार हूं हुज़ूर," उसने कहा। "मैं इसी क्षण डुबकी लगाऊंगा।"

उसने घोड़ों का हिनहिनाना सुना – एक, दो, तीन और छपाका – वह वीर युवक गर्म दूध के कड़ाहे में कूद गया। तब वह बाहर निकलकर गर्म पानी के कड़ाहे में कूदा और अन्त में ठंडे पानी में। वह तीसरे कड़ाहे से पौ फटते समय के आकाश-सा सुन्दर बनकर बाहर निकला। उस जैसा सुन्दर युवक पहले कभी पैदा ही नहीं हुआ था।

ज़ार ने उसे देखा तो उसकी हिचकिचाहट भी जाती रही। वह मुश्किल से चबूतरे पर चढ़ा और दूध के कड़ाहे में कूद गया। और उसी में झुलस गया।

खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना जल्दी से बरामदे से नीचे आयी। शाहज़ादी ने इवान का हाथ अपने गोरे हाथों में ले लिया और अंगूठी उसकी उंगली में पहना दी। तब वह मन्द-मन्द मुस्कराती हुई बोली:

"तुम ज़ार के हुक्म से मुझे उठा लाये थे, मगर अब वह ज़िन्दा नहीं है। इसलिए तुम जैसा चाहो, कर सकते हो : अगर चाहो तो मुझे वापस छोड़ आ सकते हो या फिर अपने लिए रख सकते हो।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने उसके गोरे हाथों को अपने हाथों में ले लिया और दुलहिन कह कर उसकी उंगली में अपनी अंगूठी पहना दी।

तब उसने अपने मां-बाप और भाइयों को शादी की दावत में शामिल होने के लिए बुलाया।

थोड़ी ही देर में प्यारे-प्यारे बत्तीस युवक, उसके भाई, तथा उसके मां-बाप महल में आ पहुंचे।

शादी हुई और उसके बाद दावत। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने अपनी बीवी ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना के साथ हंसी-ख़ुशी की ज़िन्दगी बसर करनी शुरू की।
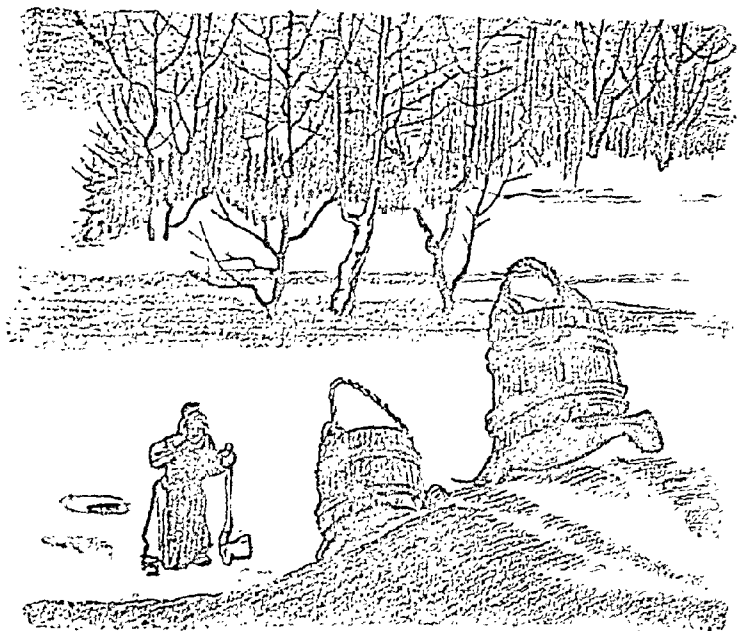
येमेला और मछली

एक समय की बात है कि एक बूढ़ा आदमी रहता था। उसके तीन बेटे थे, जिनमें से दो होशियार नौजवान थे और तीसरा, जिसका नाम येमेला था, बेवकूफ़ था।

दोनों बड़े भाई सदा काम में लगे रहते थे जबकि येमेला दिन भर अलावघर पर पड़ा रहता था। उसे किसी बात की भी फ़िक्र नहीं रहती थी।

एक दिन उसके दोनों भाई घोड़ों पर सवार होकर बाज़ार चले गये, और उनकी बीवियों ने येमेला से कहा :

"जाओ, थोड़ा पानी ले आओ, येमेला!" येमेला ने अलावघर पर लेटे-लेटे ही जवाब दिया :

"मैं नहीं जाता।"

"जाओ, येमेला, वरना तुम्हारे भाई तुम्हारे लिए बाज़ार से कोई उपहार नहीं लायेंगे।"

"अच्छा तो जाता हूं।"

तो येमेला अलावघर के ऊपर से नीचे उतरा; उसने जूते पहने, कफ़्तान बदन पर डाला और दो डोल और एक कुल्हाड़ी हाथ में लेकर वह नदी की ओर चल दिया।

नदी पर बर्फ़ जमी हुई थी। येमेला ने अपनी कुल्हाड़ी से उसमें एक बड़ा सूराख़ किया और दो डोल पानी निकाल लिया। फिर डोलों को बर्फ़ पर रख कर उसने झुक कर सूराख़ में झांका। वह झांकता रहा, झांकता रहा, और इतने में क्या देखता है कि एक श्चूका-मछली पानी में तैर रही है।

झट से उसने अपनी बांह पानी में डाल दी और वह देखिये, श्चूका उसके हाथ में थी।

"आज तो मछली का शोरबा मज़ा देगा," उसने ख़ुश होकर कहा।

पर जब यकायक श्चूका मनुष्य की आवाज़ में बोली तो येमेला दंग-सा रह गया। श्चूका ने कहा :

"मुझे छोड़ दो येमेला, मैं भी किसी रोज़ तुम्हारे काम आऊंगी।"

लेकिन येमेला ने उसकी बात हंसी में उड़ा दी।

"तुम क्या मेरे काम आओगी? नहीं, मैं तुम्हें अपने घर ले जाऊंगा और अपनी भाभियों से कहूंगा कि मेरे लिए मछली का शोरवा बना दें। तुम्हारा शोरवा ख़ूब मज़ा देगा।"

लेकिन श्चूका बार-बार उसके सामने गिड़गिड़ाने लगी:

"मुझे छोड़ दो, येमेला, और तुम जो भी चाहोगे मैं वही कर दूंगी।"

"अच्छा," येमेला ने जवाब दिया, "लेकिन तुम पहले यह साबित करो कि तुम मुझे धोखा नहीं दे रही हो।"

श्चूका बोली:

"बताओ, तुम अभी क्या चाहते हो?"

"मैं यह चाहता हूं कि मेरे डोल अपने आप घर चले जायें और रास्ते में एक बूंद पानी भी न गिरने पाये।"

"अच्छा, येमेला," श्चूका ने कहा, "जब कभी तुम्हें किसी चीज़ की इच्छा हो, बस, यह कह देना: 'हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो!' और फ़ौरन वैसा ही हो जायेगा।"

येमेला झट से बोला:

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! डोल अपने आप घर चले जायें।"

और सचमुच उसने देखा कि डोल मुड़ कर पहाड़ी पर चढ़ने लगे हैं। येमेला ने श्चूका को फिर पानी में डाल दिया और खुद डोलों के पीछे चला गया।

डोल गांव की सड़क पर चले जा रहे थे और गांववाले उन्हें देख-देख कर अचम्भे में डूब रहे थे। येमेला हंसता हुआ डोलों के पीछे पीछे चल रहा था। डोल चलते चलते सीधे येमेला के झोंपड़े में घुस गये और कूद कर बेंच पर जा टिके।

येमेला फिर अलावघर पर चढ़ कर लेट गया।

इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता और येमेला की भाभियों ने उससे कहा:

"वहां क्यों पड़े हो, येमेला? जाओ, हमारे लिए थोड़ी-सी लकड़ी चीर दो!"

"मैं नहीं जाता।"

"अगर तुम हमारा कहना नहीं मानोगे, तो तुम्हारे भाई तुम्हारे लिए बाज़ार से कुछ न लायेंगे।"

येमेला अलावघर के ऊपर से उठना नहीं चाहता था। तभी उसको उस श्चूका की याद आयी और उसने धीरे से कहा:

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! चल री कुल्हाड़ी, उठ और जाकर कुछ लकड़ी चीर दे, और लकड़ियो, घर के अन्दर चली आओ और कूद कर अलावघर में बैठ जाओ!"

और सचमुच उसने देखा कि कुल्हाड़ी बेंच के नीचे से झपटी और आंगन में जाकर लकड़ी चीरने लगी, और लकड़ियां

अपने आप झोंपड़े के अन्दर चली आयीं और कूद कर अलावघर में बैठ गयीं।

इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता और येमेला की भाभियों ने उससे फिर कहा :

"लकड़ियां ख़त्म हो गयी हैं, येमेला। जाओ, जंगल से कुछ लकड़ी काट लाओ!"

और येमेला ने अलावघर के ऊपर से अंगड़ाते हुए जवाब दिया :

"और तुम लोग किस मर्ज़ की दवा हो?"

"कैसी बात करते हो, येमेला," औरतों ने कहा। "जंगल जाकर लकड़ी काटना हम लोगों का तो काम नहीं है।"

"लेकिन मैं भी तैयार नहीं हूं," येमेला ने कहा।

"अच्छा, तो फिर तुम्हें कोई तोहफ़ा न मिलेगा," उसकी भाभियों ने कहा।

अब येमेला क्या करता। वह अलावघर के ऊपर से उतरा। उसने जूते पहने, कफ़्तान बदन पर डाला, और रस्सी और कुल्हाड़ी लेकर आंगन में चला आया। वहां पहुंच कर वह स्लेज-गाड़ी में सवार हो गया और फिर चिल्ला कर बोला :

"औरतो, फाटक खोलो!"

और उसकी भाभियों ने उससे कहा :

"मूर्ख कहीं के! स्लेज-गाड़ी में क्या कर रहे हो? उसमें अभी तुमने घोड़े तो जोते नहीं।"

"मुझे घोड़े नहीं चाहिएं।"

उसकी भाभियों ने फाटक खोल दिया, और येमेला ने धीरे से कहा :

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो। चल री स्लेज-गाड़ी, ज़रा जंगल की तरफ़।"

और सचमुच, स्लेज-गाड़ी ऐसी सनसनाती हुई फाटक के बाहर निकल कर दौड़ी कि घोड़े पर सवार होकर भी कोई उसका पीछा नहीं कर सकता था।

जंगल की सड़क शहर में से हो कर जाती थी और रास्ते में स्लेज-गाड़ी ने बहुत से लोगों को गिरा दिया और कुचल दिया। शहर के लोग चिल्लाये :

"पकड़ो उसे, रोको उसे।"

लेकिन येमेला ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह सिर्फ़ स्लेज-गाड़ी से और तेज़ चलने के लिए ही कहता रहा। जंगल में पहुंच कर उसने स्लेज-गाड़ी को रोक दिया और फिर वह बोला :

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो। चल री कुल्हाड़ी, उठ और कुछ सूखी लकड़ी काट दे, और लकड़ियों के गठ्ठो, तुम स्लेज-गाड़ी में चढ़ जाओ और अपने चारों ओर रस्सी लपेट लो।"

और सचमुच उसने देखा कि कुल्हाड़ी सूखी लकड़ियां काटने और चीरने लगी है और लकड़ियों के गट्ठे एक-एक करके स्लेज-गाड़ी में चढ़ते और रस्सी में बंधते जा रहे हैं। फिर येमेला ने कुल्हाड़ी को हुक्म दिया कि उसके लिए एक इतना भारी सोटा बना दे कि उठाना भी मुश्किल हो। इस सब के बाद वह गाड़ी पर सवार हो गया और बोला :

"हुक्म इचूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो। चल री स्लेज-गाड़ी, घर की तरफ़।"

और स्लेज-गाड़ी सचमुच बहुत तेज़ रफ़्तार के साथ चल पड़ी। येमेला फिर शहर के बीच से गुज़रा जहां उसने आते समय बहुत से आदमियों को अपनी गाड़ी के नीचे कुचल दिया था, और जहां वे सब लोग खड़े उसका इन्तज़ार कर रहे थे। उसके आते ही शहर के लोगों ने येमेला को पकड़ लिया और लगे उसको गालियां देने और पीटने।

यह देख कर कि वह बड़ी मुसीबत में फंस गया है, येमेला ने धीरे से कहा :

"हुक्म इचूका का, जैसा मैं चाहता हूं वैसा ही हो। चल रे सोटे इन लोगों को धुन।"

और सोटा गाड़ी से बाहर निकल कर लगा उन लोगों को पीटने। शहर के लोग भागते नज़र आये और येमेला घर लौट आया फिर अलावघर पर चढ़ कर लेट गया।

इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता, और

ज़ार को भी येमेला की करतूतों की ख़बर मिली। उसने अपने एक अफ़सर को भेजा कि येमेला का पता लगा कर उसे महल में लाये। अफ़सर येमेला के गांव में पहुंचा और उसके झोंपड़े में दाख़िल हो कर बोला :

"तू ही है मूर्ख येमेला?"

और येमेला ने अलावघर पर लेटे-लेटे ही जवाब दिया :

"हूं, तो क्या है?"

"जल्दी से कपड़े पहन कर तैयार हो जा, मैं तुझे ज़ार के महल ले चलूंगा।"

"मुझे नहीं जाना!" येमेला ने जवाब दिया।

अफ़सर को यह सुन कर बहुत ग़ुस्सा आया। उसने येमेला को एक चांटा मार दिया। तब येमेला ने धीरे से कहा :

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! निकल रे सोटे, ज़रा धुन इसको!"

और सोटा निकल कर अफ़सर को पीटने लगा और उसने उसे इतना पीटा, इतना पीटा कि अफ़सर का दम निकलते निकलते बचा।

ज़ार को यह जान कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि येमेला उसके अफ़सर के क़ाबू में नहीं आया, और अब की बार उसने अपना सबसे बड़ा मंसबदार भेजा।

"येमेला का पता लगा कर उसे मेरे महल में लेकर आओ, वरना मैं तुम्हारी गर्दन उड़वा दूंगा," ज़ार ने कहा।

उस बड़े मंसबदार ने बहुत-सी किशमिश और सूखे केक ख़रीदे और फिर वह उसी गांव में पहुंचा और उसी झोंपड़े में दाखिल हुआ। वहां उसने येमेला की भाभियों से पूछा कि येमेला को सबसे ज़्यादा क्या पसन्द है।

"येमेला चाहता है कि लोग उससे मीठे बोल बोलें।" उन्होंने कहा। "तुम अगर उससे नम्रता से बात करोगे और एक लाल कफ़्तान तोहफ़े के तौर पर देने का वादा करोगे तो वह कुछ भी करने को तैयार हो जायेगा।"

बड़े मंसबदार ने तब वह सारी किशमिश, आलूबुख़ारे और केक, जो वह अपने साथ लाया था, येमेला को दे दिये और उससे कहा :

"येमेला, भाई, यहां अलावघर पर क्यों पड़े हो? मेरे साथ ज़ार के महल चलो!"

"मैं जहां हूं वहां आराम से हूं," येमेला ने जवाब दिया।

"अरे येमेला, ज़ार तुम्हारी मिठाइयों और शराबों की दावत करेगा, चलो ज़ार के महल चलें।"

"मैं नहीं जाता।"

"लेकिन, येमेला, ज़ार तुम्हें एक सुन्दर लाल कफ़्तान तोहफ़े के तौर पर देगा और एक टोपी और एक जोड़ा जूतों का भी देगा।"

येमेला ने कुछ देर तक सोचा और फिर वह बोला :

"अच्छा, लेकिन तुम अकेले ही जाओ, मैं पीछे-पीछे आता हूं।"

मंसवदार अपने घोड़े पर सवार होकर चला गया। येमेला कुछ देर और अलावघर पर लेटा रहा, फिर उसने कहा :

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! चल रे अलावघर ज़ार के महल की तरफ़!"

और सचमुच झोंपड़े के चारों छोर चरमराने लगे, छत हिलने लगी, एक दीवार भरभरा कर गिर पड़ी और अलावघर ख़ुद-ब-ख़ुद बाहर निकल कर सड़क पर चलने लगा और सीधे ज़ार के महल की तरफ़ रवाना हो गया।

ज़ार ने खिड़की से देखा तो वह अचरज में डूब गया।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

बड़े मंसबदार ने जवाब दिया :

"यह येमेला है जो अपने अलावघर पर सवार होकर आपके महल की तरफ़ आ रहा है।"

ज़ार अपने छज्जे पर निकल आया और बोला :

"येमेला, मैंने तुम्हारी बहुत शिकायत सुनी है। मालूम हुआ है कि तुमने बहुत-से लोगों को अपनी गाड़ी के नीचे कुचल दिया है।"

"वे लोग मेरी स्लेज-गाड़ी के रास्ते में क्यों आये थे?" येमेला ने पूछा।

अब, उसी समय ज़ार की बेटी राजकुमारी मारिया महल की खिड़की से बाहर झांक रही थी। येमेला की उस पर नज़र पड़ी तो उसने धीरे से कहा :

"हुक्म रूचूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! ज़ार की बेटी मुझसे प्रेम करने लगे!"

और फिर उसने कहा :

"चल रे अलावघर, वापिस घर को!"

और अलावघर मुड़ कर सीधे येमेला के गांव पहुंच गया। वह झोंपड़े में दाखिल हुआ और फिर वहीं जाकर जम गया जहां वह पहले खड़ा था। और येमेला पहले की तरह ही अलावघर पर लेट रहा।

इस बीच, महल में रोना-धोना और चीख़-पुकार मची हुई थी। राजकुमारी मारिया येमेला के लिए रो-रोकर अंधी हुई जा रही थी। उसने अपने बाप से कह दिया कि वह येमेला के बिना जिन्दा नहीं रह सकती और अनुरोध किया कि उसे येमेला से विवाह करने की इजाज़त दे दी जाये। ज़ार बहुत परेशान और दुखी हुआ। उसने अपने बड़े मंसबदार से कहा :

"जाओ और येमेला को जिन्दा या मुर्दा यहां पकड़ कर ले आओ। खबरदार, इस काम को पूरा किये बग़ैर लौटे तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायेगी।"

बड़े मंसबदार ने खाने की बहुत-सी बढ़िया-बढ़िया चीज़ें और मीठी शराबें ख़रीदीं और सब सामान लेकर फिर येमेला

के गांव के लिए रवाना हो गया। और उसी झोंपड़े में घुस कर वह येमेला की शाही दावत करने लगा।

येमेला ने वह बढ़िया खाना पेट भर कर खाया और खूब शराब पी। यहां तक कि उसका सिर घूमने लगा और वह पड़ कर सो गया। तब मंसबदार ने सोते हुए येमेला को गाड़ी में डाला और घोड़े पर सवार होकर ज़ार के महल की ओर चल दिया।

ज़ार ने फ़ौरन हुक्म दिया कि एक बहुत बड़ा पीपा लाओ जिसमें लोहे के घेरे लगे हों। येमेला और राजकुमारी मारिया इस पीपे में बन्द कर दिये गये और पीपे को राल से रंग कर समुद्र में छोड़ दिया गया।

इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता, और जब येमेला जागा तो उसने चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा देखा। उसे यह भी लगा कि वह किसी संकरी-सी चीज़ में बन्द है। तब उसने कहा:

"मैं कहां हूं?"

और राजकुमारी मारिया ने जवाब दिया:

"क़िस्मत के मारे हैं हम लोग, येमेला, मेरे प्यारे! उन लोगों ने हमें एक राल लगे पीपे में बन्द करके नीले सागर में छोड़ दिया है।"

"और तुम कौन हो?" येमेला ने पूछा।

"मैं राजकुमारी मारिया हूं," जवाब मिला।

तब येमेला ने कहा:

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! चलो री तेज़ हवाओ, इस पीपे को सूखी ज़मीन पर पहुंचा दो और उसे पीले रेत पर टिक जाने दो!"

और सचमुच, तभी वड़ी तेज़ हवाएं चलने लगीं, समुद्र खौलने लगा, और पीपा सूखी ज़मीन पर पहुंच गया और जाकर पीले रेत पर टिका। राजकुमारी मारिया और येमेला उसमें से वाहर निकले और तब राजकुमारी मारिया ने कहा:

"येमेला, मेरे प्यारे, अव हम लोग कहां रहेंगे? हम लोगों के लिए एक झोंपड़ा तो ज़रूर वना दो।"

"मैं नहीं वनाता" येमेला ने जवाव दिया लेकिन राजकुमारी वहुत गिड़गिड़ायी, बहुत गिड़गिड़ायी और आख़िर येमेला ने कहा:

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! एक पत्थर का महल फ़ौरन बन जाये जिसकी छत सोने की हो!"

उसके मुहं से ये शब्द निकले नहीं थे कि सोने की छतवाला एक पत्थर का महल वन कर खड़ा हो गया। उसके चारों ओर एक हरा-भरा बाग़ था, जिसमें फूल खिल रहे थे और चिड़ियां चहचहा रही थीं। राजकुमारी मारिया और येमेला महल में दाख़िल हुए और खिड़की के पास जाकर वैठ गये।

राजकुमारी ने कहा:

"येमेला, मेरे प्यारे, तुम सुन्दर नहीं वन सकते क्या?"

और येमेला ने बहुत सोचा-विचारा नहीं, बल्कि फ़ौरन कहा :

"हुक्म श्चूका का, जैसा मैं चाहता हूं, वैसा ही हो! मै बहुत सुन्दर वीर युवक बन जाऊं!"

और सचमुच येमेला देखते देखते उषा जैसा सुन्दर युवक बन गया।

इसी समय ज़ार शिकार खेलने के लिए निकला और उसने रास्ते में एक ऐसा शानदार महल देखा जैसा उसने पहले कभी न देखा था।

"यह किस अहमक़ ने मेरी ज़मीन पर महल बनाने की जुर्रत की है?" उसने कहा और अपने दूतों को यह पता लगाने के लिए भेजा कि यह जुर्म किसने किया है।

ज़ार के दूत दौड़ते हुए महल के पास पहुंचे, खिड़की के नीचे खड़े हुए और येमेला को पुकार कर उससे पूछने लगे कि "तुम कौन हो?"

"ज़ार से जाकर कहो कि वह मुझसे मिलने यहां आये, तब मैं उसे खुद बताऊंगा कि मैं कौन हूं," येमेला ने जवाब दिया।

ज़ार ने वैसा ही किया जैसा येमेला ने कहा था। येमेला महल के फाटक पर उससे मिला, उसे महल के अन्दर ले गया और बैठा कर उसकी शाही दावत की। ज़ार खाता जाता था, पीता जाता था, और अचरज में डूबता जाता था।

"तुम कौन हो, वीर युवक?" आख़िर उसने पूछा।

"क्या आपको उस मूर्ख येमेला की याद है जो एक अलावघर पर चढ़ कर आपसे मिलने आया था?" येमेला ने कहा। "और क्या आपको याद है कि आपने किस तरह उसे अपनी वेटी राजकुमारी मारिया के साथ एक राल लगे पीपे में वन्द करा के समुद्र में डलवा दिया था? मैं वही येमेला हूं। अगर मैं चाहूं तो आपकी पूरी वादशाहत में आग लगा कर उसे नेस्तनावूद कर सकता हूं।"

ज़ार बहुत डर गया और येमेला से माफ़ी मांगने लगा।

"मुझ पर दया करो, येमेला," उसने कहा। "तुम मेरी वेटी से व्याह कर लो और मेरा राज-पाट ले लो।"

और तव ऐसी शानदार दावत हुई कि उसे देख कर दुनिया अचम्भे में रह गयी। येमेला का राजकुमारी मारिया के साथ विवाह हो गया और वह राज करने लगा और उसके वाद वे जव तक ज़िन्दा रहे उनका जीवन हंसी-खुशी में वीता।

और इस तरह ख़त्म हो गया मेरा क़िस्सा, जिसने सुना उसका हो भला।

निकीता खटीक

एक बार कीयेव शहर के पास एक अजगर कहीं से आ निकला और शहर के रहनेवालों से बहुत बड़ा कर वसूल करने लगा। हर घर को बारी-बारी से एक सुन्दर कुमारी उसके खाने के लिए देनी पड़ती। और इस प्रकार जो कुमारी भी उसके लिए भेजी जाती उसे अजगर खा जाता।

एक दिन ज़ार की बेटी की अजगर के यहां जाने की बारी आयी, और अजगर ज़ार-पुत्री को पकड़ कर अपनी खोह में घसी

ले गया। लेकिन वह इतनी सुन्दर थी कि अजगर ने उसे खाया नहीं, बल्कि अपनी बीवी बना लिया। जब अजगर किसी काम से बाहर जाता तो खोह के मुंह को लट्ठों से बन्द कर जाता ताकि ज़ार-पुत्री भाग न जाये।

मगर ज़ार-पुत्री के पास एक छोटा-सा कुत्ता था। जब उसने अपने बाप का घर छोड़ा तो यह कुत्ता उसके पीछे-पीछे चला आया था। यह छोटा-सा कुत्ता अब भी बड़ी वफ़ादारी के साथ ज़ार-पुत्री का काम किया करता था। ज़ार-पुत्री अपने मां-बाप के नाम ख़त लिख कर कुत्ते की गर्दन में बांध देती थी और कुत्ता दौड़ जाता था और फ़ौरन ख़त का जवाब ले आता था। एक दिन ज़ार और ज़ारीना ने अपनी बेटी को सन्देश भेजा कि उसे यह पता लगाना चाहिए कि अजगर से ज्यादा ताक़तवर दुनिया में कौन है।

इस रोज़ से ज़ार-पुत्री ऐसा व्यवहार करने लगी जैसे उसे अजगर से प्रेम हो। वह उससे बड़े प्यार के साथ बात करती थी। इस तरह वह चाहती थी कि अजगर अपना भेद उसे बता दे। पहले तो अजगर ने कुछ नहीं बताया, पर आख़िर उसने उसे बता ही दिया कि कीयेव शहर में निकीता नाम का एक खटीक रहता है, जो ताक़त में उससे भी बढ़कर है। ज़ार-पुत्री ने यह बात अपने बाप, ज़ार, को लिख भेजी कि कीयेव में रहनेवाले निकीता खटीक का पता लगा कर उसे ज़ार-पुत्री को छुड़ाने के लिए भेजें।

अपनी बेटी का सन्देश पाकर ज़ार ने निकीता खटीक का पता लगवाया और फिर वह ख़ुद उससे यह अनुरोध करने गया कि उसे अपनी मातृभूमि को पापी अजगर से मुक्त करना चाहिए और ज़ार-पुत्री को दासत्व से छुड़ाना चाहिए।

जब ज़ार निकीता के घर पहुंचा तो निकीता खालें पका रहा था और उस वक़्त उसके हाथ में बारह खालें थीं। ज़ार को देख कर वह डर से कांपने लगा, उसके हाथ थरथराने लगे और बारहों खालें फट गयीं। उसे जो डर लगा था और खालों के फट जाने से उसका जो नुक़सान हुआ था, उस पर निकीता को इतना ग़ुस्सा आया कि ज़ार और ज़ारीना के बहुत मिन्नत करने पर भी वह ज़ार-पुत्री को छुड़ाने के लिए जाने को तैयार नहीं हुआ।

तब यह तय हुआ कि जिन पांच हज़ार नन्हे-नन्हे बच्चों को पापी अजगर ने अनाथ बना दिया था, उन सब को इकट्ठा करके खटीक के पास भेजा जाये और बच्चे जाकर उससे रूस देश को इस दानव के अत्याचार से मुक्त कराने का अनुरोध करें।

अनाथ बच्चे निकीता के पास गये और उन्होंने आंखों में आंसू भर कर उसे अजगर से लड़ने जाने की प्रार्थना की। निकीता को उन अनाथों के आंसू देख कर बहुत दया आयी। उसने कोई तीन सौ मन सन राल से रंगा और उसे अपने बदन के चारों तरफ़ लपेट लिया जिससे कि अजगर के दांतों का उसके शरीर पर कोई असर न हो और उससे निपटने के लिए चल पड़ा।

निकीता अजगर की खोह पर पहुंचा, लेकिन अजगर खोह का मुंह अन्दर से वन्द करके बैठ गया था और वाहर नहीं निकलता था।

"वाहर निकल और खुले मैदान में मेरे सामने आ, वरना मैं तेरी खोह को मिट्टी में मिला दूंगा!" खटीक ने कहा, और फिर वह तुरन्त ही खोह का दरवाजा तोड़ने लगा।

जब अजगर ने देखा कि इस तरह उसकी खैर नहीं है तो वह खुले मैदान में निकीता का सामना करने के लिए वाहर निकल आया।

उनकी लड़ाई वहुत देर चली या कम देर चली यह तो वताना मुश्किल है, मगर आखिर अजगर हार गया और ज़मीन पर गिर कर दया की भीख मांगने लगा।

"मुझे मारो मत, निकीता खटीक," वह चिल्लाया, "दुनिया में कोई नहीं है जो तुमसे और मुझसे ज्यादा ताक़तवर हो। सो आओ धरती को वरावर-वरावर के दो हिस्सों में वांट लें, आधे में तुम रहना और आधे में मैं रहूंगा।"

"अच्छा, यही सही," खटीक राजी हो गया, "लेकिन पहले हम सीमा की रेखा खींच दें।"

तव निकीता ने डेढ़ सौ मन भारी एक लकड़ी का हल वनाया, अजगर को उसमें जोता, और ज़मीन पर हल से एक मेड़ वनाने लगा।

सीमा की रेखा कीयेव से लेकर कस्तूरियन सागर तक खींची गयी।

"अच्छा," अजगर बोला, "हम लोगों ने ज़मीन का वंटवारा तो कर लिया।"

"हां, वह तो कर लिया हम लोगों ने," निकीता बोला, "पर अब हम लोगों को समुद्र का वंटवारा भी कर डालना चाहिए, वरना तुम बाद में कहोगे कि मैंने तुम्हारा पानी ले लिया है।"

दोनों इसके लिए भी राज़ी हो गये, और जब अजगर समुद्र के बीचोंबीच पहुंचा तो निकीता ने उसे मार डाला और उसकी लोथ को समुद्र में डुबो दिया।

इस प्रकार, जब निकीता का पवित्र काम पूरा हो गया तो वह फिर खालें पकाने के लिए अपने घर लौट गया और उसने जो कुछ किया था उसका कोई इनाम भी नहीं लिया।
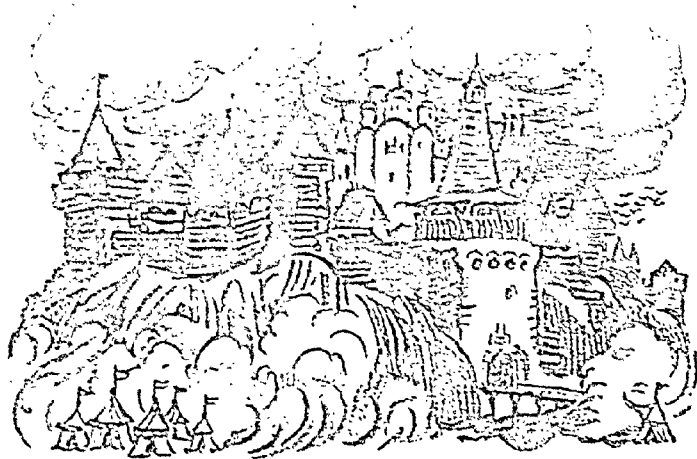
इल्या मूरोमवासी की पहली मुठभेड़

बहुत बहुत साल पहले की बात है कि मुरोम नामक शहर के पास, कराचारोवो नामक गांव में इवान तिमोफ़ेयेविच नाम का एक किसान रहता था। येफ़ोसीन्या याकोव्लेवना उसकी बीवी का नाम था और उनके इल्या नाम का इकलौता बेटा था।

एक रोज़, सफ़र की पूरी तैयारी करके इल्या अपने मां-बाप के पास गया और बोला:

"पिता जी और माता जी, मुझे इजाज़त दीजिये कि देश की राजधानी, कीयेव, जाकर राजा व्लादीमिर की सेना में

शामिल हो जाऊं। मैं अपनी मातृभूमि—रूस की बड़ी सचाई और दृढ़ता के साथ सेवा करूंगा, और अपने दुश्मनों से रूसी धरती को बचाऊंगा!"

इस पर उसके बाप, बूढ़े इवान तिमोफ़ेयेविच ने कहा:

"अच्छे कामों के लिए मैं तुझे आशीर्वाद देता हूं, पर बुरे कामों के लिए नहीं। सोने के या लाभ के लालच से नहीं, बल्कि देश में नाम कमाने के लिए और वीर योद्धा कहलाने के लिए हमारी मातृभूमि, रूस की रक्षा करना। मनुष्य का रक्त कभी वृथा न बहाना, और न ही कभी मांओं को आंसू बहाने के लिए मजबूर करना, और यह कभी न भूलना कि तुम धरती के बेटे, किसान हो।"

इल्या ने ज़मीन पर माथा टेक कर अपने मां-बाप को नमस्कार किया, और फिर अपने कत्यई-झबरे नामक घोड़े के ऊपर ज़ीन कसने के लिए चला गया। उसने पहले घोड़े की कमर पर एक ज़ीन-पोश डाला, फिर उसके ऊपर नमदे की पट्टी रखी, और नमदे के ऊपर चेर्कासी ज़ीन कसी जिसके बारह तंग रेशम के थे और तेरहवां लोहे का था जो दिखावे के लिए नहीं, बल्कि मज़बूती के लिए था।

अब इल्या के मन में यह विचार आया कि ज़रा अपने बल की परीक्षा ली जाये।

वह अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ ओका नदी के पास पहुंचा। उसके किनारे पर एक ऊंची पहाड़ी खड़ी थी। इल्या ने अपना

कंधा लगा कर जो धक्का दिया तो पहाड़ी नदी में जा गिरा। उससे ओका नदी का रास्ता रुक गया और उसे मजबूर हो कर अपने लिए दूसरा रास्ता बनाना पड़ा।

इल्या ने रोश की रोटी का एक टुकड़ा ओका नदी की धार में डाल कर कहा:

"नदी-माता, तूने मूरोमवासी इल्या को सदा अन्न-जल दिया, उसके लिए तुझे बहुत-बहुत धन्यवाद!"

वहां से चलने से पहले उसने अपनी मातृभूमि की थोड़ी-सी मिट्टी उठा कर अपनी जेब में रख ली और फिर घोड़े पर सवार होकर उसे चाबुक लगाया...

लोगों ने इल्या को घोड़े पर चढ़ते तो देखा, मगर यह कोई न देख सका कि वह किधर गया है। वे बस, इतना ही देख पाये कि मैदान में धूल की आंधी उठी हुई है।

इल्या का चाबुक खा कर कत्थई-झबरा पहले तो अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया और फिर एक ही छलांग में एक मील पार कर गया। जब घोड़े के खुर ज़मीन पर लगे तो पानी का सोता फूट पड़ा। इल्या ने बलूत का एक बड़ा भारी पेड़ काट कर गिरा दिया और उसके कुंदों से सोते के ऊपर एक चौखटा बना दिया, और उस चौखटे के ऊपर लिख दिया: "इवान नामक किसान का बेटा रूसी बहादुर इल्या यहां से गुज़रा था।"

पानी का वह सोता आज भी बलूत के कुंदों के चौखटे के बीच से बह रहा है और जब रात को भालू वहां शीतल जल

पीने के लिए जाता है तो उसके शरीर में दैत्य की-सी शक्ति भर जाती है।

और वहां से इल्या कीयेव शहर की ओर चल पड़ा।

उसने वह सीधी सड़क चुनी जो चेर्नीगोव नामक शहर के पास से गुज़रती थी। जब वह चेर्नीगोव शहर के पास पहुंचा तो उसे सुनाई दिया कि शहर की चहारदीवारी के इर्द-गिर्द शोर मचा हुआ है। बात यह थी कि हज़ारों तातारियों ने शहर को घेर रखा था। उनके घोड़ों की टापों से जो धूल उठ रही थी और उनके नथुनों से जो भाप निकल रही थी उसने धरती को मानों एक स्याह पर्दे से ढक दिया था और यहां तक कि आसमान में चमकता हुआ सूरज भी आंखों से ओझल हो गया था। तातारी फ़ौज की पांतें इतनी घनी थीं कि एक भूरा ख़रगोश भी उनके बीच से नहीं निकल सकता था, और न ही बाज़ उनके ऊपर से उड़ कर जा सकता था। शहर के अन्दर से रोने और कराहने की आवाज़ें आ रही थीं और मौत के घण्टे बज रहे थे। शहर के सभी लोग पत्थर के एक बड़े गिर्जाघर में इकट्ठे हो गये थे और वहां छाती पीट-पीट कर रो रहे थे, ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे और मरने की तैयारी कर रहे थे। उनकी निराशा का कारण यह था कि चेर्नीगोव को तीन तातारी सरदारों ने घेर रखा था और उनमें से हरेक के पास चालीस हज़ार फ़ौज थी।

यह देख कर इल्या के बदन में मानो आग-सी लग गयी। लगाम खींच कर उसने कत्थई-झबरे को रोका, बलूत के एक

"चेर्नीगोव-निवासियो, नमस्ते!" इल्या ने कहा। "यह रोना, गले मिलना, और अन्तिम नमस्कार करना क्यों हो रहा है?"

"रोने के सिवा हम और कर ही क्या सकते हैं जब तीन सरदारों ने चेर्नीगोव को घेर रखा है और उनमें से हरेक चालीस-चालीस हज़ार फ़ौज लेकर आया है? हमारे सिर पर मौत नाच रही है।"

"क़िले की चहारदीवारी पर चढ़कर उस मैदान की तरफ़ देखो जहां दुश्मन की फ़ौजें जमा थीं," इल्या ने कहा।

शहरवालों ने क़िले की चहारदीवारी पर चढ़ कर देखा तो सचमुच मैदान में तातारियों की लाशें इस तरह बिखरी हुई थीं जैसे ओले पड़ने के बाद खेत में अनाज की बालें बिखरी हों।

यह देख कर चेर्नीगोव के निवासियों ने झुक कर इल्या को नमस्कार किया और रोटी और नमक से उसका स्वागत किया और सोना-चांदी और हीरे-जवाहिर जड़ा कमख़्वाब उसे भेंट में दिया।

"वीर युवक, रूसी बहादुर, हमें बताओ तुम्हारे सगे-सम्बंधी कौन हैं? तुम्हारा बाप कौन है और तुम्हारी मां कौन है? तुम्हारा नाम क्या है? तुम यहीं पर, चेर्नीगोव में ही रहो, और हमारे सरदार बनना क़बूल करो। हम सब तुम्हारा हुक्म बजायेंगे, तुम्हारा आदर करेंगे, और तुम्हारे लिए खाने-पीने की कभी कमी न होने देंगे, और तुम बड़े ठाठ-बाट और सम्मान के साथ रहोगे।"

इल्या मूरोमवासी ने अपना सिर हिला कर कहा:

"चेर्नीगोव के निवासियो, मैं एक रूसी बहादुर हूं और मूरोम शहर के नज़दीक कराचारोवो नामक गांव के एक साधारण किसान का बेटा हूं। मैंने तुम्हें लाभ के लालच से नहीं आज़ाद किया है। मुझे सोना-चांदी कुछ नहीं चाहिए। मैंने तो रूसी मनुष्यों, सुन्दर कुमारियों, निरीह बच्चों और बुढ़िया माताओं को मुसीबत से छुड़ाया है। मैं तुम्हारा सरदार नहीं बनना चाहता और न ही धन-दौलत चाहता हूं। मेरी ताक़त ही मेरी दौलत है, और मेरा काम है रूस की सेवा करना और उसे दुश्मनों से बचाना।"

तब चेर्नीगोव-निवासियों ने इल्या से अनुरोध किया कि वह कम से कम एक दिन तो उनके साथ रहे और उनकी दावत का आनन्द उठाये। लेकिन इल्या इसके लिए भी राज़ी नहीं हुआ।

"भले लोगो, मैं ठहर नहीं सकता। रूस दुश्मनों के हमलों से कराह रहा है और मुझे जल्दी से जल्दी राजा व्लादीमिर के पास पहुंच जाना है। मुझे रास्ते के लिए थोड़ी-सी रोटी और प्यास बुझाने के लिए कुछ सोते का पानी दे दो और यह बता दो कि कीयेव जाने की सीधी सड़क कौन सी है।"

चेर्नीगोव के निवासी बहुत दुखी हुए और सोच में डूब गये।

"हाय इल्या मूरोमवासी, कीयेव जानेवाली सीधी सड़क तो घास से ढंकी हुई है। पिछले तीस साल से कोई उस सड़क से नहीं गया है।"

"क्यों, इसकी क्या वजह है?"

"उस सड़क पर रहमान के बेटे सीटीबाज़ डाकू का क़ब्ज़ा है। वह वहां स्मोरोदिनाया नदी के किनारे वलूत के तीन पेड़ों की नौ शाखाओं के ऊपर बैठा हुआ है। जब वह चिड़िया की तरह सीटी बजाता है और जंगली जानवर की तरह गरजता है तो सारे पेड़ ज़मीन पर झुक जाते हैं, फूलों की पंखुड़ियां झड़ जाती हैं, घास सूख जाती है, और आदमी तथा घोड़े मर कर गिर पड़ते हैं। एक दूसरी सड़क भी है – लेकिन बहुत घुमावदार। तुम इसी सड़क पर जाओ। हां, यह बात सही है कि कीयेव जानेवाली यह सड़क दो सौ मील और दूसरी सड़क साढ़े छः सौ मील लम्बी है।"

इल्या मूरोमवासी कुछ देर तक चुप रहा और फिर उसने अपना सिर झटक कर कहा:

"मैं बहादुर हूं। मुझे यह शोभा नहीं देता कि चक्करदार रास्ते से जाऊं और कीयेव की सीधी सड़क सीटीबाज़ डाकू के क़ब्ज़े में छोड़ दूं। मैं इस सीधी सड़क से ही जाऊंगा जिसपर तीस साल से कोई नहीं गया है।"

और यह कह कर इल्या कूद कर घोड़े पर सवार हो गया। उसने कत्थई-झबरे को एक चाबुक लगाया और वह पलक मारते ही आंखों से ओझल हो गया।
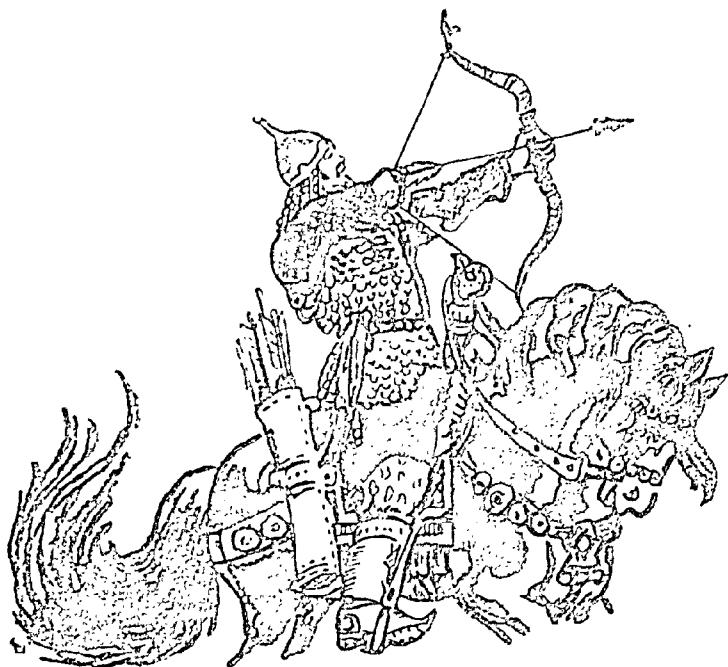
इल्या मूरोमवासी और सीटीबाज़ डाकू

इल्या मूरोमवासी अपने घोड़े को वहुत तेज़ दौड़ाता हुआ चला जा रहा था। कत्थई-झबरा एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी पर उछलता हुआ, नदियों, झीलों और घाटियों को फांदता जा रहा था।

आखिर वह ब्रांस्क नामक जंगलों में पहुंचा। वहां पहुंच कर कत्थई-झबरा चलता चलता रुक गया और आगे नहीं बढ़

सका। वहां चारों ओर दलदल ही दलदल थी और घोड़ा अपने पेट तक उसमें डूब गया था।

इल्या कूद कर नीचे उतर गया। अपने बायें हाथ से उसने कत्थई-झबरे को संभाला और दायें हाथ से बलूत के पेड़ों को जड़ समेत उखाड़-उखाड़ कर दलदल के ऊपर बिछा दिया और इस तरह लकड़ी के कुंदों की सड़क तैयार कर दी। यह सड़क बीस मील लम्बी है और भले लोग आज तक उसे इस्तेमाल कर रहे हैं।

इस तरह चलता हुआ आखिर इल्या स्मोरोदिनाया नदी के पास पहुंच गया।

इस नदी का पाट बहुत चौड़ा था और पहाड़ की एक चोटी से दूसरी चोटी तक लुढ़कती हुई वह जंगली जानवर की तरह गरज रही थी।

कत्थई-झबरा हिनहिनाया, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया, और फिर एक ही छलांग में नदी पार कर गया।

उस पार बलूत के तीन पेड़ों और नौ शाखाओं के ऊपर सोलोवेई नामक सीटीबाज़ डाकू बैठा हुआ था। बलूत के उन पेड़ों को न तो कोई बाज़ उड़ कर पार कर सकता था, न कोई जानवर भाग कर और न ही कोई सांप रेंग कर उनको पार कर सकता था। प्रत्येक प्राणी सीटीबाज़ डाकू से डरता था और कोई मरना नहीं चाहता था।

जब सोलोवेई ने घोड़े की टापों की आवाज़ सुनी तो बलूत

के पेड़ों के ऊपर थोड़ा उठ कर उसने एक भयानक
चिल्ला कर कहा:

"यह कौन बदमाश घोड़े पर चला जा रहा है, जानता नहीं है कि बलूत के इन पेड़ों से आगे आने की किसी को इजाज़त नहीं है? सीटीबाज़ डाकू की नींद में ख़लल डालने की यह किसने जुर्रत की है?"

और यकायक उसने चिड़िया की तरह सीटी बजायी, जंगली जानवर की तरह गरजा और सांप की तरह फुंकार मारी और उसका यह असर हुआ कि धरती थर्रा उठी, बलूत के दैत्याकार पेड़ कांपने लगे, फूलों की पंखुड़ियां झड़ गयीं, और घास सूख गयी। कत्थई-झबरा घुटनों के बल गिर पड़ा।

लेकिन इल्या अपनी ज़ीन के ऊपर चट्टान की तरह बैठा रहा और उसके सिर का एक बाल भी इधर से उधर नहीं हुआ। उसने रेशम का एक कोड़ा निकाल कर घोड़े की पीठ पर चाबुक लगाया।

"तू एक बहादुर का घोड़ा नहीं, भूसे का बोरा है। क्या इसके पहले तूने कभी चिड़िया की चीं-चीं या सांप की फूं-फूं नहीं सुनी थी? खड़ा हो जा अपने पैरों पर और ले चल मुझे सोलोवेई के घोंसले की तरफ़, वरना मैं तुझे भेड़ियों के सामने फेंक दूंगा।"

कत्थई-झबरे ने यह सुना तो उठ कर खड़ा हो गया और डाकू के घोंसले की तरफ़ दौड़ा।

सोलोवेई को इतना आश्चर्य हुआ कि वह घोंसले से अपना सिर निकाल कर देखने लगा।

23—2255

इल्या ने वक़्त नहीं खोया और फ़ौरन लोहे का बना एक छोटा-सा तीर, जो वज़न में अठारह-बीस सेर से ज़्यादा नहीं था, और एक धनुष निकाला।

धनुष की टंकार सुनाई दी, तीर छूटा, और सोलोवेई की दायीं आंख को छेदता हुआ उसके बायें कान से निकल गया।

सोलोवेई अपने घोंसले में से इस तरह ज़मीन पर गिरा जैसे अनाज का गठ्ठा गिरता है। इल्या ने उसे पकड़ कर कच्ची खाल के तस्मों से कसकर बांध दिया और अपनी बायीं रकाब से लटका दिया।

सोलोवेई इल्या को ताक रहा था, उसे सांस लेने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी।

"क्या ताक रहा है, डाकू? क्या इसके पहले तूने कभी कोई रूसी बहादुर नहीं देखा?"

"अरे, मेरा अब क्या होगा?" सीटीबाज़ डाकू चिल्लाया। "लगता है कि मैं किसी के मज़बूत हाथों में पड़ गया हूं, अब मेरी आज़ादी के दिन गये!"

इल्या, सीधी सड़क पर सरपट चला जा रहा था। रास्ते में सीटीबाज़ डाकू का घर मिला। उसका आंगन पांच मील लम्बा था, वह सात खम्भों पर टिका हुआ था। उसके चारों ओर लोहे की चारदीवारी थी और चारदीवारी के जंगले पर जगह जगह एक बहादुर का सिर टंगा हुआ था। और उस आंगन में सफ़ेद पत्थर का बना एक शानदार महल खड़ा था जिसके सुनहरे छज्जे आग की लपटों की तरह दमक रहे थे।

सीटीवाज़ की बेटी ने बहादुर के घोड़े को देखा तो वह चिल्ला कर बोली:

"हमारा पिता सोलोवेई राहमानोविच एक देहाती को अपनी रकाब से लटकाये हुए चला आ रहा है।"

डाकू की बीवी ने खिड़की से झांक कर देखा तो उसने अपने हाथ फेंक कर कहा:

"बेवकूफ़ लड़की, तू क्या बक रही है। वह तो गंवार-देहाती है जो तेरे प्यारे बाप, सोलोवेई राहमानोविच को अपनी रकाब से लटकाये हुए चला आ रहा है!"

यह सुन कर, डाकू की सबसे बड़ी लड़की पेल्का, दौड़ती हुई आंगन में गयी। वहां से उसने पचास मन भारी एक लोहे का तख़्ता उठाया और उसे इल्या मूरोमवासी पर फेंका। लेकिन इल्या. के होश-हवास दुरुस्त थे। उसने तख़्ते को बीच में ही अपने एक मज़बूत हाथ से पकड़ लिया और वापिस पेल्का पर फेंक दिया। वह जा कर पेल्का को लगा, जो उसी वक़्त गिर कर मर गयी।

सीटीवाज़ की बीवी इल्या के पैरों पर गिर पड़ी।

"बहादुर," उसने इल्या के सामने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "हमारा सोना, चांदी, हीरे-जवाहिरात, जितना तुम्हारा तेज़ घोड़ा ले जा सके सब ले जाओ, पर मेरे पति को छोड़ दो!"

इसका इल्या ने यह जवाब दिया:

"मैं पाप की कमाई नहीं लेता। तू मुझे जो कुछ देना चाहती है, वह रूसी ख़ून और बच्चों के आंसुओं से सना हुआ है। तुम लोगों की दौलत ग़रीब किसानों को लूट कर जमा हुई है। जब डाकू दूसरे के क़ब्ज़े में होता है, तब वह हमेशा बड़े मीठे बोल बोलता है, पर एक बार उसे छोड़ दो तो फिर ज़रूर कभी न कभी पछताना पड़ता है। नहीं, मैं सोलोवेई को अपने साथ कीयेव शहर ले जाऊंगा और वहां उसके बदले में मुझे जो रुपया मिलेगा उससे कलाची और क्वास ख़रीद कर खाऊंगा और पीऊंगा।"

इल्या ने अपना घोड़ा मोड़ा और कीयेव शहर की तरफ़ सरपट रवाना हो गया। सोलोवेई ख़ामोश था और उसके अंग निश्चल थे।

इल्या कीयेव शहर की गलियों में से होता हुआ राजा के महल के सामने पहुंचा। अपने घोड़े को उसने एक खम्भे से बांध दिया, सीटीबाज़ डाकू को रकाब से ही लटके रहने दिया, और ख़ुद महल के बड़े दीवानख़ाने में चला गया।

वहां राजा व्लादीमिर बैठा खाना खा रहा था और उसके चारों ओर मेज़ें पड़ी थीं जिनके सामने बहुत-से रूसी बहादुर बैठे हुए थे। इल्या अन्दर आया, उसने झुक कर नमस्कार किया, और फिर ड्योढ़ी पर ही रुक गया।

"नमस्ते, राजा व्लादीमिर और रानी अपराक्सीया! क्या आप लोग एक अजनबी को अन्दर आने देंगे?"

और सेअस्नी व्लादीमिर ने जवाब दिया.

"और सुनो, तुम कहां से आये हो, और तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारे सगे-सम्बंधी कौन लोग हैं?"

"मेरा नाम इल्या है। मैं मुरोम शहर के नजदीक कराचारोवो नामक गांव के एक किसान का बेटा हूं। मैं चेर्नीगोव से आनेवाली सीधी सड़क से आ रहा हूं, राजा। और मैं सीटीबाज़ डाकू को आपके लिए लाया हूं। वह बाहर आपके आंगन में मेरे घोड़े से बंधा है। क्या आप उसे देखना चाहेंगे?"

यह सुन कर राजा और रानी और सारे बहादुर एकदम उछल पड़े और इल्या के पीछे-पीछे जल्दी-जल्दी आंगन में पहुंचे और सब दौड़ कर कत्थई-सबरे के पास जमा हो गये।

और सचमुच वहां डाकू घोड़े की रकाब से इस तरह लटका हुआ था जैसे भूसे का बोरा लटका हो, और अपनी बायीं आंख से कीयेव शहर और राजा व्लादीमिर को देख रहा था।

"हां तो अब चिड़िया की तरह सीटी बजा कर और जंगली जानवर की तरह गरज कर ज़रा हम लोगों को भी सुनाओ!" राजा व्लादीमिर ने डाकू से कहा। लेकिन सीटीबाज़ डाकू ने अपना मुंह दूसरी तरफ़ फेर लिया। वह राजा की आज्ञा मानने को तैयार नहीं था।

"मुझे तुमने क़ैदी नहीं बनाया है, और इसलिए तुम मुझे हुक्म नहीं दे सकते," उसने मुंह बना कर कहा।

तब राजा व्लादीमिर इल्या मूरोमवासी की तरफ़ मुड़ कर बोला :

"इल्या इवानोविच, इससे कहो न!"

"बहुत अच्छा, राजा! लेकिन उसका अगर कोई बुरा नतीजा हो तो मुझे दोष न देना। मैं आपको और रानी को तो अपने किसानोंवाले कफ़्तान से ढंके देता हूं जिससे आपका कुछ बिगाड़ न होने पाये। और तुम, सोलोवेई राहमानोविच, जैसा तुमको कहा गया है, करो!"

"मैं सीटी नहीं बजा सकता," डाकू ने कहा, "मेरा गला सूखा हुआ है।"

"सीटीबाज़ को अठारह सेर मीठी शराब पिलाओ, और अठारह सेर कड़वी बियर, और अठारह सेर शहद की बहुत तेज़ शराब दो और साथ में नाश्ते के तौर पर गेहूं की एक कालाच भी दो, तब वह हमारे मनबहलाव के लिए सीटी बजा कर सुनायेगा।"

सीटीबाज़ को खाने-पीने का सामान दे दिया गया, और वह सीटी बजाने के लिए तैयार हो गया।

"लेकिन डाकू देखना," इल्या ने कहा, "अपनी पूरी ताक़त लगा कर सीटी न बजाना धीरे-धीरे सीटी बजाना और बहुत हल्के-से गरजना, नहीं तो याद रखना, तुम्हारी ख़ैरियत नहीं है!"

सीटीबाज़ ने इल्या का कहना नहीं माना। वह तो कीयेव शहर को नेस्तोनाबूद कर डालना चाहता था और राजा तथा

रानी और सारे रूसी बहादुरों को मार डालना चाहता था। उसने जितने ज़ोर से वह बजा सकता था, सीटी बजायी, बड़े ज़ोरों के साथ गरजा और बड़ी तेज़ फुफकार मारी!

बाप रे, कैसा शोर मचा!

मकानों की ऊपर की मंज़िलें डोल गयीं, छज्जे दीवारों से अलग जा पड़े, खिड़कियों के शीशे टूट गये, घोड़े अपने अस्तबलों से भाग गये, और सारे बहादुर ज़मीन पर गिर पड़े और उस से दूर हटकर चौपायों की भांति रेंगने लगे। राजा व्लादीमिर इल्या के कफ़्तान में छिपा हुआ कांप रहा था और डर से अधमरा हो गया था।

इल्या को बहुत ग़ुस्सा आया। "मैंने तुमको राजा और रानी का जी ख़ुश करने के लिए कहा था, और तुमने देखो, यह क्या कर डाला है," उसने डाकू से कहा। "अब, मैं तुम्हारा हिसाब साफ़ कर देता हूं। अब आगे तुम कभी किसी के मां-बाप को न रुला पाओगे, और न ही नववधुओं को विधवा और नन्हे बच्चों को अनाथ बना पाओगे। अब तुम कभी लूट-मार न कर सकोगे।"

और इल्या ने एक तेज़ तलवार निकाल कर सीटीबाज़ का सिर काट डाला। सीटीबाज़ डाकू का अन्त हो गया।

"धन्यवाद, इल्या मूरोमवासी!" राजा व्लादीमिर ने कहा। "मेरी फ़ौज में शामिल हो जाओ। तुम मेरे सबसे बड़े बहादुर होगे; और तुम्हें सब बहादुरों का सरदार नियुक्त किया जायेगा। जब तक तुम ज़िन्दा हो तब तक यहीं कीयेव में ही रहो!"

दोबरीन्या निकीतिच और ज़मेई गोरीनिच

एक बार कीयेव के नज़दीक एक विधवा रहती थी जिसका नाम ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना था। उसका दोबरीन्या नाम का एक बहादुर बेटा था। वह उसे बेहद प्यार करती थी। कीयेव में रहनेवाले सभी लोग उसकी प्रशंसा के गीत गाते थे। वह सुडौल, लम्बा और ख़ूबसूरत था। लड़ाई में दिलेरी से लड़ता और दावतों में ख़ूब हंसता-चहकता। उसने पढ़ा-पढ़ाया भी काफ़ी था। वह हाज़िरजवाब और गीतकार भी था। गूसली बजाना भी जानता

था। वह मधुर और भले स्वभाव का था, कभी किसी से कड़वी बात न कहता और किसी के साथ बुरा व्यवहार न करता। इसलिए लोग उसे रहमदिल दोब्रीन्या कहते थे।

गर्मी के एक दिन दोब्रीन्या के दिल में नदी में नहाने की बड़ी इच्छा हुई। वह अपनी मां, ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना के पास गया और बोला:

"मां, मुझे पुचाय दरिया के ठंडे पानी में नहाने की इजाज़त दो। मैं गर्मी से बहुत तंग आ गया हूं।"

ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना को बहुत परेशानी हुई और वह घर पर ही नहाने के लिए उसकी मिन्नत करने लगी:

"मेरे प्यारे बेटे दोब्रीन्या," उसने कहा, "पुचाय दरिया पर मत जाओ। यह बहुत खतरनाक और भयानक दरिया है। इसकी एक धारा से आग निकलती है, दूसरी से अंगारे और तीसरी से धुआं।"

"अच्छा मां," दोब्रीन्या ने जवाब दिया। "कम से कम मुझे घोड़े पर सवार होकर किनारे-किनारे घूमने और ताज़ी हवा लेने की अनुमति दे दो।"

ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना ने उसे ऐसा करने की अनुमति दे दी। दोब्रीन्या ने सवारी की तैयारी शुरू कर दी।

उसने सफ़र की पोशाक पहनी, सिर पर ऊंचा यूनानी हैट लगाया, अपना भाला, तीर-कमान, तेज़ तलवार और चाबुक उठाया।

वह अपने बढ़िया घोड़े पर सवार हुआ। उसने अपने नौजवान नौकर से साथ चलने के लिए कहा और सफ़र के लिए निकल पड़ा।

एक घंटा गुज़रा और फिर दूसरा मगर दोबरीन्या था कि घोड़ा दौड़ाता गया। गर्मी का सूरज उसके सिर के ऊपर तप रहा था। अपनी मां का आदेश भूलकर उसने घोड़े का मुंह पुचाय दरिया की तरफ़ मोड़ दिया।

दरिया की तरफ़ से ठंडी हवा का झोंका आया। दिल खिल उठा।

दोबरीन्या नीचे उतरा, घोड़े की लगाम युवक नौकर की तरफ़ फेंककर बोला:

"यहां ठहरो और घोड़े की निगरानी करो।"

तब उसने अपना यूनानी टोप और सफ़री पोशाक उतारी, अपने सभी हथियार घोड़े की पीठ पर रखे और ख़ुद दरिया में कूद गया।

"अजीब बात है कि मेरी मां ने पुचाय दरिया के बारे में ऐसी बातें कही हैं। यह बिल्कुल ख़तरनाक नहीं, बल्कि बरसाती डबरे की तरह शान्त है।"

दोबरीन्या के मुंह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि अचानक ही आकाश अन्धकारपूर्ण हो गया। आकाश में कहीं कोई बादल न था, और न ही वर्षा हुई, मगर गर्जन सुनाई दे रहा था। कोई तूफ़ान नहीं आया, किन्तु बिजली कौंध रही थी...

दोवरीन्या ने गर्दन ऊंची की तो सांपरूपी राक्षस ज़्मेई गोरीनिच को अपनी ओर तेज़ी से उड़कर आते देखा। वह बहुत भयानक राक्षस था। उसके तीन सिर, सात दुमें, लोहे के पंजे और तांबे के चमकते हुए नाखून थे। उसकी नाक से शोले और कानों से धुआं निकल रहा था।

राक्षस ने दोवरीन्या को देखा और गरजकर कहा:

"ओ, बड़े बूढ़ों का कथन था कि मैं दोवरीन्या निकीतिच के हाथों मारा जाऊंगा। मगर दोवरीन्या तो ख़ुद ही मेरे चंगुल में आ फंसा है। मैं उसके साथ जैसा भी चाहूं बर्ताव कर सकता हूं। मैं उसे ज़िन्दा खा सकता हूं या क़ैदी बनाकर गुफ़ा में ले जा सकता हूं। बहुत-से रूसी लोग मेरे ग़ुलाम हैं, केवल दोवरीन्या की ही कमी थी।"

दोवरीन्या ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया:

"ठहरो, अरे दुष्ट राक्षस, पहले तुम दोवरीन्या को अपने वश में कर लो, तभी अपनी जीत की डींग हांकना। दोवरीन्या अभी तक तो तुम्हारे हाथों में आया नहीं।"

दोवरीन्या कमाल का तैराक था। वह ग़ोता लगाकर नदी की तह में जा पहुंचा और पानी के नीचे तैरता रहा। फिर वह ऊंचे तट के पास बाहर आ गया और तेज़ी से अपने घोड़े की ओर लपका। मगर उसे अपने घोड़े का नामोनिशान तक न मिला। उसका युवा नौकर उसे ले उड़ा था। राक्षस की गर्जना सुनकर उसका दम निकल गया और जल्दी से घोड़े पर चढ़कर दोवरीन्या के हथियारों समेत वहां से रफ़ूचक्कर हो गया।

दोबरीन्या के पास राक्षस से लड़ाई करने के लिए दो ख़ाली हाथों के सिवा कुछ न था।

अब राक्षस गरजता हुआ दोबरीन्या पर लपका और चिनगारियों से उसका गोरा बदन झुलसने लगा।

उस बहादुर युवक का दिल भीतर ही भीतर तड़पने लगा।

उसने अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी, मगर कोई भी वस्तु उसे नज़र न आयी। यहां तक कि कोई डंडा या कोई पत्थर भी पास में पड़ा दिखाई न दिया। उसके सभी ओर पीली रेत और उस पर पड़े हुए उसके यूनानी टोप के अतिरिक्त और कुछ भी न था।

दोबरीन्या ने अपना टोप उठाकर उसे कुछ नहीं तो पांच पूद पीली रेत से भर लिया। उसने हाथ घुमाकर, टोप पूरे ज़ोर से ज़्मेई गोरीनिच पर दे मारा। ज़्मेई का एक सिर टूट कर गिर गया।

तब उसने अपनी पूरी शक्ति से राक्षस पर हमला किया। उसे ज़मीन पर चित करके उसके सीने पर चढ़ बैठा। वह उसके बाक़ी दो सिरों को भी तोड़ने ही वाला था जब ज़्मेई गोरीनिच ने गिड़गिड़ाते हुए कहा:

"ओ, अच्छे दोबरीन्या, बहादुर आदमी, मुझे छोड़ दो, मारो नहीं। मैं वचन देता हूं कि तुम्हारे सभी आदेश मानूंगा। मैं क़सम खाता हूं कि कभी तुम्हारे देश – महान और विस्तृत रूस – में नहीं आऊंगा, कभी किसी रूसी को क़ैदी नहीं बनाऊंगा।

सिर्फ़ मुझे जिन्दा छोड़ दो और मेरे बच्चों पर तरस खाओ।"

दोवरीन्या, राक्षस के धोखे में आ गया और यह सोच कर कि दुष्ट राक्षस ठीक कह रहा है, उसे छोड़ दिया।

राक्षस बादलों में उड़ता हुआ सीधा कीयेव की ओर गया और राजा व्लादीमिर के बगीचे में जा पहुंचा। उसी समय राजा व्लादीमिर की भांजी, कुमारी जबावा पुत्यातिश्ना, बगीचे में हवाख़ोरी के लिए आयी हुई थी।

ज़्मेई ने शाहज़ादी देखी तो बेहद ख़ुश हुआ। वह बादलों से उसकी ओर झपटा, और अपने तांबे के नाख़ूनों में उसे दबा कर सोरोचिन्सक पहाड़ों में उठा ले गया।

इसी बीच दोवरीन्या ने अपने नौकर को ढूंढ़ा और अपनी सफ़री पोशाक पहनने लगा। तभी अचानक आकाश में घटा-सी घिरी और गर्जना सुनाई दी। दोवरीन्या ने अपना सिर ऊपर उठाया तो ज़्मेई गोरीनिच को कीयेव की ओर से जबावा पुत्यातिश्ना को नाख़ूनों में दबाये आते देखा।

दोवरीन्या को बेहद दुख और परेशानी हुई। वह अपने घर बहुत उदास-उदास-सा लौटा और गुमसुम होकर एक बेंच पर बैठ गया।

उसे ऐसे उदास देखकर उसकी मां ने पूछा:

"मेरे प्यारे बेटे, किसलिए इतने उदास हो? तुम्हें क्या तकलीफ़ है दोवरीन्या?"

"मुझे कोई तकलीफ़ नहीं, मां," दोवरीन्या ने जवाब दिया। "और उदास भी मैं नहीं हूं। मगर मुझे घर पर रहना अच्छा नहीं लगता। मैं सोचता हूं अगर मैं कीयेव में राजा व्लादीमिर के महल में जाऊं तो अच्छा हो, क्योंकि आज वहां एक मज़ेदार दावत हो रही है।"

"कीयेव में मत जाओ दोवरीन्या," उसकी मां ने कहा। "राजमहल में मत जाओ। मेरा दिल कहता है कि तुम्हारे लिए वहां जाना अच्छा नहीं। अगर तुम चाहो तो हम अपने घर पर ही एक दावत कर सकते हैं।"

मगर दोवरीन्या ने मां की बात अनसुनी कर दी और वह कीयेव में राजा व्लादीमिर की तरफ़ रवाना हो गया।

कीयेव पहुंच कर वह सीधा राजा के कमरे में गया। मेज़ों पर क़िस्म-क़िस्म के खाने लगे हुए थे और पास ही मीठी शराब के ढोल भरे रखे थे। मगर सभी मेहमान सिर झुकाए बैठे थे, न तो कोई कुछ खा रहा था, न पी रहा था।

राजा अपने कमरे में इधर-उधर घूम रहा था। उसने अपने किसी मेहमान से खाना शुरू करने के लिए नहीं कहा। रानी मुंह ढके बैठी थी और वह दूसरों की तरफ़ देखती तक भी न थी।

तब राजा व्लादीमिर बोला:

"प्यारे मेहमानो, मैं जानता हूं कि आज की दावत बड़ी फीकी रहेगी। रानी बेहद दुखी है और मुझे भी कुछ कम ग़म

नहीं। ज़्मेई गोरीनिच, ख़ुदा उसे ग़ारत करे, हमारी प्यारी भांजी, कुमारी ज़बावा पुत्यातिश्ना, को उठा ले गया है। क्या तुम में कोई ऐसा है जो सोरोचिन्सक पहाड़ पर जाकर शाहज़ादी की तलाश कर सकता हो और उसे आज़ाद कराने की हिम्मत रखता हो?"

मगर नहीं! मेहमान एक दूसरे के पीछे मुंह छिपाने लगे। लम्बे क़दवाले दरमियाने क़दवालों के पीछे, दरमियाने क़दवाले नाटों के पीछे और नाटे अपना मुंह ढांप कर चुप्पी लगा गये।

अचानक एक बहादुर युवक अल्योशा पोपोविच मेज़ से उठा और उसने कहा:

"हे, महाप्रतापी राजा! मैं जो कहता हूं, उसे सुनिये। कल मैं बाहर मैदानों में था और पुचाय नदी के पास मैंने रहमदिल दोबरीन्या को देखा था। ज़्मेई गोरीनिच के साथ मैंने उसे मित्र की भांति बातचीत करते सुना और दोबरीन्या ने उसे अपना छोटा भाई कहा। राक्षस की गुफ़ा में दोबरीन्या को भेजिये। वही आपकी प्यारी भांजी को रिहा करा सकता है। यह तो निश्चित ही समझिये कि ज़्मेई गोरीनिच आपकी भांजी को बिना लड़ाई किये, अपने भाई को सौंप देगा।"

"दोबरीन्या ज़्मेई का भाई बन गया है!" राजा व्लादीमिर को यह जानकर दोबरीन्या पर बहुत गुस्सा आया। उसने दोबरीन्या की ओर मुड़कर कहा:

"अगर ऐसी बात है तो, दोबरीन्या, तुम अपने घोड़े पर सवार होकर जितनी जल्दी हो सके सोरोचिन्सक पर्वत पर पहुंचो। वहां जाकर तुम मेरी प्यारी भांजी ज़बावा पुत्यातिश्ना की तलाश करो और उसे क़ैद से रिहाई दिलवा कर यहां लाओ। अगर तुम उसके बिना लौटे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

दोबरीन्या वीर युवक अपना मुंह लटकाये हुए मेज़ से उठ कर बाहर आया, घोड़े पर सवार हुआ और घर की तरफ़ चल दिया।

उसकी मां उसे मिलने के लिए बाहर आयी। वह उसे देखते ही यह समझ गयी कि ज़रूर कोई बुरी बात हो गयी है। उसका चेहरा बहुत बदला हुआ था।

"मेरे बेटे दोबरीन्या, तुम्हें क्या तकलीफ़ है?" उसने पूछा। "किसलिए इतने उदास हो? ऐसी कौनसी मुसीबत आ पड़ी है? हो सकता है कि दावत में तुमसे कुछ बुरा बर्ताव किया गया हो? या तुम्हें शराब न दे कर उन्होंने प्याला आगे बढ़ा दिया हो, या तुम्हें तुम्हारे लायक़ सम्मान न दिया हो?"

"नहीं मां," दोबरीन्या ने जवाब दिया, "मुझसे कोई बुराई नहीं की गयी। उन्होंने मुझे दिये बिना शराब का प्याला भी आगे नहीं बढ़ाया और मुझे मेरे लायक़ स्थान भी दिया गया।"

"अगर ऐसी बात है तो तुम किसलिए मुंह लटकाये बैठे हो?"

"बात यह है कि राजा व्लादीमिर ने मुझे एक बड़ा भारी काम सौंपा है। मुझे सोरोचिन्स्क पर्वत पर जाकर ज़बावा पुत्यातिश्ना को खोजने और उसे ज़मेई गोरीनिच से मुक्त करवाने का आदेश किया गया है।"

ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना बहुत डरी, मगर फिर भी न तो उसने आंसू बहाये और न ही अपने को उदास होने दिया। वह यह सोचने लगी कि क्या करे।

"अभी जाकर सो रहो मेरे बेटे," उसने कहा। "आराम करके अपने को ताज़ा दम कर लो। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

दोब्रीन्या तभी जाकर सो रहा। नदी के तेज़ बहते पानी की तरह उसके खर्राटे सुनाई देने लगे।

मगर ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना जागती रही। वह एक बेंच पर बैठ गयी और रात भर सात रस्सियों का, सात अलग-अलग रंगों का सात पट्टियोंवाला एक चाबुक बनाती रही।

सूरज की पहली किरण के साथ उसने अपने लड़के को जगाया और कहा :

"उठो उठो, मेरे बेटे। कपड़े पहन कर जल्दी से पुराने अस्तबल में जाओ। तीसरी कोठड़ी का दरवाजा नहीं खुलेगा, क्योंकि वह आधे के लगभग गोबर में धंसा पड़ा है। मगर तुम अपनी पूरी ताक़त से उसे धकेल कर खोल लेना। उस कोठड़ी में तुम्हें तुम्हारे दादा का कत्थई घोड़ा दिखाई देगा। वह अपनी

इसी कोठड़ी में पिछले पन्द्रह वर्षों से घुटने-घुटने तक गोवर में खड़ा है। तुम उसे अच्छी तरह साफ़ करो, संवारो और खिला-पिला कर घर के ओसारे के पास लाओ।"

दोवरीन्या अस्तवल में गया। उसने दरवाज़े को जोड़ों से अलग करके कत्थई घोड़े को वाहर निकाला। वह उसे वरामदे में ले जाकर उस पर काठी सजाने लगा। उसने पहले उसकी पीठ पर एक कपड़ा रखा, उसके ऊपर नमदा विछाया तथा उसके वाद रेशम से काढ़ी गयी और सोने के काम से सजी हुई क़ीमती चेरकासी जीन लगायी। रेशम के वारह पट्टों से उसने कसकर जीन वांधी और फिर सोने की लगाम पहनायी। तव ममेल्फ़ा तिमोफ़ेयेवना घर से वाहर आयी और उसने दोवरीन्या को सात पट्टियों वाला चावुक दिया।

"जव तुम सोरोचिन्सक पहाड़ पर पहुंचोगे," उसने कहा, "उस समय ज़्मेई गोरीनिच कहीं गया हुआ होगा। तुम अपने घोड़े को सीधे उसकी गुफा की तरफ़ दौड़ाना और राक्षस-संपोलियों को घोड़े के सुमों के नीचे रौंद डालना। वे कत्थई घोड़े की टांगों से लिपट जायेंगे और तव तुम घोड़े के कानों पर चावुक लगाना। तव कत्थई घोड़ा उछलेगा और संपोलियों को अपनी टांगों से झटक कर अलग कर देगा और उन सभी को कुचल कर मार डालेगा।"

सेव के पेड़ से उसकी एक टहनी टूटी और सेव टूट कर अलग जा गिरा। इसी तरह प्यारी मां से उसका प्यारा

बेटा बिछुड़ कर ख़ूनी और भयानक लड़ाई लड़ने चल दिया।

लगातार होने वाली बरसात की भांति दिन गुज़रते गये और नदी के तेज़ बहाव की तरह हफ़्ते बीत गये। वह दिन चलता, रात चलता, धूप में चलता, चांदनी में चलता।

अन्त में दोबरीन्या सोरोचिन्सक पहाड़ पर पहुंचा।

राक्षस की गुफा पहाड़ की चोटी पर थी और पहाड़ के इर्द-गिर्द की सारी जगह संपोलियों से भरी पड़ी थी। वे कत्थई घोड़े की टांगों से लिपट गये और उसके सुमों को दांतों से काटने लगे। कत्थई घोड़े के लिए अब भागना सम्भव न रहा और वह घुटनों के बल गिरने ही वाला था कि दोबरीन्या को अपनी मां का आदेश याद आया। उसने सात रेशमी धागों का बना हुआ चाबुक निकाला और कत्थई घोड़े के कानों के बीच मारने और कहने लगा :

"ऊपर को उछलो, कत्थई घोड़े, और संपोलियों को अपनी टांगों से झटक कर अलग कर दो।"

चाबुक के हर प्रहार के साथ कत्थई घोड़े में नई शक्ति आती गयी। वह ऊंचा उछलने लगा और तेज़ी से पत्थरों को दूर दूर फेंकने और संपोलियों को कुचलने लगा। वह उन्हें अपनी टापों से मारने और दांतों से काटने लगा। इस तरह उसने उन भीस को कुचल कर मार डाला।

तब दोबरीन्या घोड़े से नीचे उतरा। उसने अपने दायें हाथ में तेज़ तलवार और बायें में गदा उठायी तथा राक्षस की गुफ़ाओं की ओर चल दिया।

दोबरीन्या के क़दम उठाते ही आकाश धुंधला हो गया और ज़ोर का गर्जन सुनाई पड़ा। पहाड़ का राक्षस ज़्मेई गोरीनिच, अपने नाख़ूनों में एक मुर्दा दबाये हुए तेज़ी से उड़ता हुआ उसकी तरफ़ आया। उसके जबड़ों से शोले और कानों से धुआं निकल रहा था। उसके तांबे के नाख़ून आग की तरह चमक रहे थे।

ज़्मेई गोरीनिच ने दोबरीन्या को देखा तो मुर्दे को नीचे फेंका और गरजा:

"दोबरीन्या, तुमने किसलिए अपना वचन तोड़ा है? किसलिए तुमने मेरे बच्चों को कुचल कर मार डाला है?"

"ओ, दुष्ट सांप!" दोबरीन्या चिल्लाया। "तुम मुझे कहते हो कि मैंने अपना वचन तोड़ा है? पहले यह बताओ कि तुम किसलिए कीयेव में गये थे? किसलिए तुम वहां से ज़बावा पुत्यातिश्ना को उठा लाये हो? तुम बिना लड़ाई किये उसे मुझे लौटा दो। तभी मैं तुम्हारा अपराध भूल सकूंगा।"

"कभी नहीं!" राक्षस गरजा। "ज़बावा पुत्यातिश्ना तो तुम्हें कभी नहीं मिलेगी! मैं उसे और तुम्हें भी खा जाऊंगा और सभी रूसियों को अपना क़ैदी बना लूंगा।"

दोबरीन्या के तन-बदन में आग लग गयी और वह राक्षस पर टूट पड़ा।

उन दोनों के बीच बड़ी भयंकर लड़ाई हुई।

सोरोचिन्स्क पहाड़ से चट्टानें नीचे लुढ़क गयीं, बड़े-बड़े बलूत वृक्ष जड़ से उखड़ गये और घास धंस कर जमीन के भीतर चली गयी...

वे पूरे तीन दिन और तीन रातों तक लड़ते रहे। जब ज़्मेई गोरीनिच का पल्ला भारी हो जाता तो वह दोबरीन्या को उठाकर आकाश की ओर फेंक देता। मगर फिर दोबरीन्या को चाबुक की याद आयी। उसने उसे बाहर निकाला और राक्षस के सिर पर मारने लगा। ज़्मेई गोरीनिच घुटनों के बल गिर पड़ा और दोबरीन्या बायें हाथ से उसे ज़मीन पर चित लेटाकर दायें हाथ से चाबुक मारता रहा। वह उसे रेशमी चाबुक से मारता रहा, मारता रहा कि राक्षस की ताक़त कम होती होती बिल्कुल खत्म हो गयी। तब दोबरीन्या ने उसके सारे सिर काट डाले।

राक्षस का काला रक्त ज़ोर से बहने लगा और वह पूरब से पश्चिम तक ज़मीन पर फैल गया। दोबरीन्या, कमर तक उसी रक्त से सन गया।

दोबरीन्या तीन दिन और तीन रातों तक राक्षस के ख़ून में कमर तक लथपथ होकर खड़ा रहा। उसकी टांगों में ख़ून जम गया और सर्दी ने उसके दिल पर असर करना शुरू किया। रूसी धरती राक्षस के रक्त की एक बूंद भी पीने को तैयार न थी।

दोबरीन्या ने अपनी मौत को पास आते देखा तो सात रंगों के रेशमी धागों से बना हुआ चाबुक बाहर निकाल कर भूमि पर ज़ोर से मारने लगा। मारते हुए वह बार-बार कहता :

"मां धरती, फटो और राक्षस का रक्त चूसो!"

धरती फट गयी और उसने राक्षस का रक्त चूस लिया।

दोबरीन्या निकीतिच ने कुछ देर आराम किया, नहाया-धोया, अपना कवच साफ़ किया। तब राक्षस की गुफ़ाओं की ओर रवाना हुआ।

सब गुफ़ाओं के दरवाज़े तांबे के थे, उनमें लोहे के खटके लगे थे और सोने के ताले लटक रहे थे।

मगर दोबरीन्या ने तांबे के दरवाज़े, ताले और खटके तोड़ डाले। तब वह पहली गुफ़ा में दाख़िल हुआ। गुफ़ा ज़ारों, राजाओं और राजकुमारों से भरी हुई थी। ये चालीस अलग अलग देशों और दिशाओं के रहनेवाले थे। मामूली सिपाही तो बेशुमार ही थे।

"विदेशी बादशाहो और अजनबी देशों के ज़ारो और मामूली सिपाहियो! मैं जो कहता हूं उसे सुनो! तुम बाहर निकल सूरज की रोशनी का मज़ा लो और अपने अपने देश लौट जाओ मगर रूसी बहादुर को कभी मत भूलना! उसकी मदद के बिना तुम उम्र भर राक्षस के क़ैदी रहते।"

एक एक करके वे सभी बाहर आये। उन्होंने दोबरीन्या को प्रणाम किया और कहा :

"ऐ रूसी बहादुर! हम तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे!"

दोबरीन्या आगे बढ़ता गया। एक के बाद दूसरी गुफ़ा खोलकर उसने राक्षस के सभी क़ैदी मुक्त कर दिये। इन लोगों में बूढ़े थे और नवयुवतियां थीं, बच्चे थे और बूढ़ी औरतें थीं, रूसी थे और विदेशी थे, मगर ज़बावा पुत्यातिश्ना नहीं थी।

ग्यारह गुफ़ायें पार कर लेने के बाद वह बारहवीं गुफ़ा में पहुंचा। ज़बावा पुत्यातिश्ना यहीं थी। वह एक गीली दीवार के साथ लटकी हुई थी और उसके हाथ सोने की ज़ंजीरों से जकड़े हुए थे। दोबरीन्या ने ज़ंजीरें काटकर शाहज़ादी को दीवार से नीचे उतारा। वह उसे अपनी बांहों में समेट कर गुफ़ा से बाहर, सूरज की रोशनी में लाया। धूप से उसकी आंखें चौंधियाने लगीं और उसने उन्हें बन्द कर लिया। ज़बावा दोबरीन्या की ओर भी नहीं देख सकी। तब दोबरीन्या ने उसे हरी घास पर लेटा कर खिलाया-पिलाया। उसने उसे अपने लबादे से ढक दिया और ख़ुद भी आराम करने के लिए लेट गया।

सूरज छिप गया तो दोबरीन्या जागा। उसने कत्थई घोड़े पर काठी डाली और शाहज़ादी को जगाया। दोबरीन्या ने शाहज़ादी ज़बावा को अपने आगे बिठाया और घोड़े पर सवार हो अपने सफ़र पर चल दिया। उनके गिर्द अनगिनत लोग खड़े थे। उन

सबने झुककर दोब्रीन्या को प्रणाम किया और अपने मुक्ति-दाता को बार-बार धन्यवाद दिया। तब वे जल्दी से अपने अपने देश की तरफ़ रवाना हो गये।

दोबरीन्या ने घोड़े का मुंह पीली स्तेपी की ओर मोड़ा। वहां से वह अपने घोड़े को एड़ लगाता हुआ ज़बावा पुत्यातिश्ना के साथ कीयेव की ओर चल दिया।

अल्योशा-पोपोविच*

उस दिन आसमान में एक नया और चमकता हुआ चांद निकला था, जब धरती पर गिरजा के एक बूढ़े पादरी लेओन्ति के घर एक महावीर बेटे का जन्म हुआ था। उसका नाम अल्योशा-पोपोविच रखा गया। यह नाम प्यारा था।

मां-बाप ने अल्योशा की खूब अच्छी देखभाल करनी शुरू की।

---

*पादरी, रूसी में पोप कहलाता है; पोपोविच है पोप का बेटा।

दूसरे बच्चे एक हफ़्ते में जितना बढ़ते, वह एक दिन में ही उतना बढ़ जाता। दूसरे एक साल में जितना बढ़ते, वह एक सप्ताह में उतना ही बढ़ जाता।

तब अल्योशा का नन्हे बच्चों के साथ घूमने और खेलने का समय आया। वह जिस भी बच्चे की बांह पकड़ता, बांह टूट जाती, जिस किसी की टांग छूता, टांग का भी बांह जैसा हाल होता।

जब अल्योशा बड़ा हो गया तो घोड़े की सवारी करने और खुले मैदानों में जाकर खेलने के लिए अपने माता-पिता के पास आशीर्वाद लेने गया। उसके बाप ने कहा :

"ओ मेरे बेटे, अल्योशा-पोपोविच, अगर तुम जाना ही चाहते हो तो जाओ। मगर यह ध्यान रखना कि वहां तुमसे अधिक बलवान भी होंगे। इसलिए तुम पारन के बेटे, मरीशको को, एक साथी के रूप में अपने साथ लेते जाओ।"

दोनों वीर युवक दो मज़बूत घोड़ों पर सवार होकर खुले मैदानों की तरफ़ चल दिये। धूल का एक बादल उठा और फिर देखते ही देखते वे आंखों से ओझल हो गये।

दोनों वीर युवक कीयेव शहर में पहुंचे। वहां पहुंच कर अल्योशा-पोपोविच सीधा सफ़ेद पत्थर के महल में राजा व्लादीमिर के पास गया। उसने विधि के अनुसार क्रास चिन्ह बनाया। एक विद्वान की भांति झुककर और चारों ओर घूमकर उसने राजा व्लादीमिर को प्रणाम किया।

राजा व्लादीमिर ख़ुद उनके स्वागत के लिए आया और उन वीर युवकों को अपने साथ भीतर ले गया। उसने उन्हें बलूत की मेज़ पर बिठाया और खिलाते-पिलाते हुए हाल-चाल पूछने लगा। वीर युवकों ने केक खाये और शराब पी।

तब राजा व्लादीमिर ने उनसे पूछा:

"वीर युवको, तुम कौन हो? दिलेर और बहादुर हो या राह चलते मुसाफ़िर?"

तब अल्योशा-पोपोविच ने जवाब दिया:

"मैं गिरजाघर के बूढ़े पादरी लेओन्ति का बेटा अल्योशा-पोपोविच हूं और यह मेरा साथी, पारन का बेटा, मरीशको है।"

अल्योशा-पोपोविच ने जी भर कर खाया-पिया और आराम करने के लिए अलावघर पर लेट गया, जबकि मरीशको खाने की मेज़ पर ही डटा रहा।

उसी समय राजा व्लादीमिर के पास एक दूसरा महावीर, ज़्मेई-राक्षस का बेटा, तुगारिन आया। तुगारिन ज़्मेयेविच राजा व्लादीमिर के पास, सफ़ेद पत्थरों के महल में पहुंचा। उसका बायां पांव अभी दहलीज़ पर ही था कि दायां पांव बलूत की मेज़ के पास जा पहुंचा। वह बड़े-बड़े घूंट पीता और रानी का आलिंगन करता, ख़ुद व्लादीमिर पर व्यंग करता और उसकी खिल्ली उड़ाता। वह अपने मुंह में एक तरफ़ एक और दूसरी तरफ़ दूसरी रोटी दबाता तथा अपनी ज़बान पर पूरा राजहंस

रख लेता। एक कचौड़ी से इन चीज़ों को पीछे की ओर धकेल कर एक ही बार निगल जाता।

ईंटों के अलावघर पर लेटे हुए अल्योशा-पोपोविच ने ज़्मेई-राक्षस के बेटे तुगारिन से कहा :

"मेरे बूढ़े पिता, गिरजाघर के पादरी लेओन्ति के पास एक बहुत बड़ी गाय थी। यह गाय बड़ी पेटू थी। वह पेटू-गाय शराब बनाने की जगह पर जाती और तलछट से भरे तमाम बड़े-बड़े कठौतों को साफ़ कर डालती। फिर एक बार वह पेटू-गाय झील पर गयी और झील का सारा पानी पी गयी। बस, वहीं उसका पेट फट गया। काश, आज इस मेज़ पर, ओ तुगारिन, तुम्हारा भी यही हाल होता!"

अल्योशा के ये शब्द सुनते ही तुगारिन का पारा चढ़ गया और उसने दमस्क इस्पात के बने हुए ख़ंजर से उस पर वार किया। अल्योशा-पोपोविच काफ़ी फुर्तीला था और इसलिए बलूत के एक स्तम्भ की ओट में होकर वार बचा गया। तब अल्योशा ने कहा :

"शुक्रिया, ज़्मेई-राक्षस के बेटे, बहादुर तुगारिन! तुमने मुझे अपना दमस्क इस्पात का ख़ंजर दे दिया है ताकि मैं तुम्हारी गोरी छाती चीर सकूं और तुमसे तुम्हारी आंखों की रोशनी छीन लूं।"

इतना सुनकर पारन का बेटा मरीशको, मेज़ से उठा और उसने तुगारिन को इतने ज़ोर से सफ़ेद पत्थर की दीवार में दे मारा कि खिड़कियों के शीशे चूर-चूर होकर नीचे आ गिरे।

तव मरीशको अल्योशा से वोला :

"वह दमस्क इस्पात का ख़ंजर तुम मुझे दे दो, अल्योशा-पोपोविच। मैं ही ज़्मेई-राक्षस के वेटे, तुगारिन की छाती चीरकर उसकी आंखों की रोशनी छीन लूंगा।"

मगर अल्योशा ने जवाव दिया :

"इन सफ़ेद पत्थरों के वने वड़े कमरों को गंदा मत करो, मरीशको। इसे वाहर खुले मैदान में जाने दो। वह वहुत दूर नहीं जा पायेगा। हम इससे कल खुले मैदान में मिलेंगे।"

अगली सुवह, पौ फटते ही पारन का वेटा मरीशको सोकर उठा और अपने तेज़ घोड़ों को तेज़ी से वहनेवाली नदी की ओर ले चला। वाहर आते ही उसने क्या देखा कि ज़्मेई-राक्षस का वेटा, तुगारिन आकाश में उड़ रहा है और अल्योशा-पोपोविच को वाहर आने के लिए ललकार रहा है। तव पारन का वेटा, मरीशको घोड़ों को दौड़ाता वापस आया और वोला :

"इस वात का फ़ैसला मैं ख़ुदा पर छोड़ता हूं, अल्योशा-पोपोविच, कि कल तुमने मुझे दमस्क इस्पात का ख़ंजर क्यों नहीं दिया। मैंने उस नीच की छाती चीरकर उसकी आंखों की रोशनी छीन ली होती। और अव हम उस तुगारिन का क्या विगाड़ सकते हैं? वह तो आकाश में उड़ रहा है।"

तव अल्योशा-पोपोविच ने अपना मज़वूत घोड़ा वाहर निकाला। उसने अपने घोड़े की ज़ीन को वारह रेशमी पेटियों से वांधा। ये पेटियां सजावट के लिए नहीं मज़वूती के लिए थीं। वह खुले

मैदान में पहुंचा तो उसने ज़्मेई-राक्षस के बेटे, तुगारिन को आकाश में उड़ते देखा।

अल्योशा ने आकाश की तरफ़ देखा और गरजते बादल से कहा:

"तुगारिन के घोड़े के पंखों को बरसात से भिगो डालो!" तभी काला बादल उमड़ा-घुमड़ा, बरसात हुई, घोड़े के पंख भीग गये और वह धरती पर आ गिरा। तब तुगारिन उसे मैदानों में दौड़ाने लगा।

ये दो पर्वत नहीं थे जो आपस में टकराये, ये अल्योशा और तुगारिन थे। वे एक दूसरे पर सोटे लेकर टूट पड़े, मगर सोटे टुकड़े-टुकड़े हो गये। तब वे बर्छियां लेकर एक दूसरे पर झपटे, मगर बर्छियां दोहरी तिहरी होकर रह गयीं। तब उन्होंने तलवारें पकड़ीं मगर उनकी भी धार कुंद पड़ गयी। सहसा अल्योशा-पोपोविच अपनी काठी से जई के पूले की भांति नीचे गिर पड़ा। तुगारिन खुश होकर चिल्लाया और वह अल्योशा पर वार करने के लिए बढ़ा। मगर अल्योशा उसका गुरू था। वह अपने घोड़े के पेट के नीचे छिपकर, दूसरी ओर से निकल आया। उसने दमस्क इस्पात के ख़ंजर से तुगारिन की छाती पर एक घातक वार किया। वह तुगारिन को घोड़े से नीचे धकेल कर चिल्लाया:

"ज़्मेई-राक्षस के बेटे, तुगारिन, दमस्क इस्पात का छुरा देने के लिए धन्यवाद। अब मैं तुम्हारी गोरी छाती चीरूंगा और आंखों की रोशनी छीनूंगा।"

तव उसने तुगारिन का अभिमानी सिर काटा और घोड़ पर सवार हो कर राजा व्लादीमिर की तरफ़ चल दिया। रास्ते में वह उस सिर से खेलता रहा। वह उसे ज़ोर से आकाश में ऊपर फेंकता और फिर अपनी तेज़ वर्छी की नोक पर थाम लेता।

राजा व्लादीमिर वेहद डरा।

"यह दुष्ट तुगारिन ही है जो साहसी अल्योशा-पोपोविच का सिर वर्छी पर लगाये हुए है। अब वह हम सभी रूसियों को क़ैदी बना लेगा।"

तब पारन का बेटा मरीशको वोला:

"कीयेव राज्य के महाप्रतापी राजा, आप कोई फ़िक्र न करें! अगर वह नीच कुत्ता तुगारिन धरती पर रहा और आकाश में नहीं उड़ा तो मैं उसका सिर अपनी दमस्क इस्पात की वर्छी से छलनी करूंगा। राजा व्लादीमिर धीरज धरो!"

तब, पारन के वेटे, मरीशको ने दूरवीन से देखा और अल्योशा-पोपोविच को पहचान लिया।

"मैं उस महावीर को उसकी साहसपूर्ण भाव-भंगिमा और शानदार चाल से पहचानता हूं। वह अपने एक मज़बूत हाथ से लगाम सम्भाले है, दूसरे से सिर को ऊपर उछालता और फिर वर्छी पर सम्भालता है। यह नीच तुगारिन नहीं, वल्कि अल्योशा-पोपोविच आ रहा है, और अपने साथ सांप-राक्षस के वेटे, तुगारिन का सिर ला रहा है।"
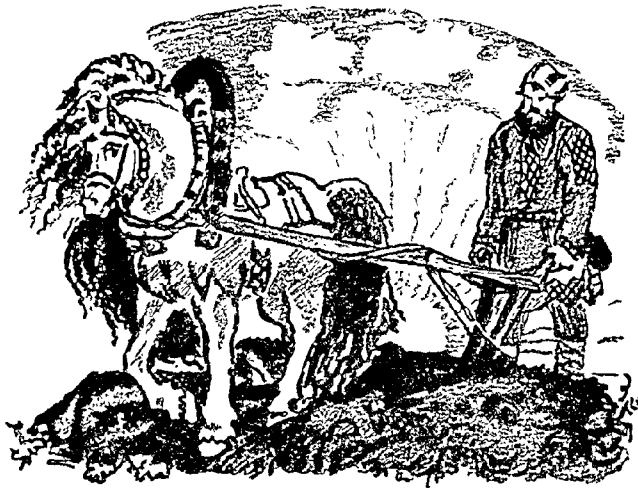
मिकूला हलवाहा

एक दिन बहुत सुबह का समय था और सूरज खूब चमक रहा था जब कि वोल्गा गुर्चेवेत्स ओरेखोवेत्स नामक सौदागरों के शहरों से कर और खिराज वसूल करने के लिए निकला।

उसके सिपाही अपने बढ़िया कत्थई घोड़ों पर सवार, उसके साथ चले जा रहे थे। चलते चलते वे खुले और चौड़े मैदान में पहुंचे और वहां उन्होंने एक हलवाहे को काम करते हुए सुना। वे सुन सकते थे कि वह हल चलाने के साथ-साथ सीटी भी बजाता जा रहा है। हल के फालों के छोटे-छोटे पत्थरों से रगड़

खाने की आवाज़ भी उनको सुनाई दे रही थी। मालूम पड़ता था, वह उनके बहुत नज़दीक ही कहीं पर था।

वोल्गा और उसके आदमी दिन भर अपने घोड़ों को दौड़ाते रहे, और रात होने को आ गयी, मगर वह हलवाहा अभी तक कहीं दिखाई नहीं दिया था। फिर भी उसके सीटी बजाने, और उसके लकड़ी के हल के चरचराने और हल के फालों के रगड़ खाने की आवाज़ें बराबर आ रही थीं।

जब तीसरा दिन भी ख़त्म होने को आ गया तो आख़िर वोल्गा और उसके आदमियों को हलवाहा नज़र आया। वह खेत जोत रहा था और पुकार-पुकार कर अपनी घोड़ी को आगे चलने के लिए कह रहा था। अपने हल से उसने ज़मीन में जो हलरेखाएं बनायी थीं, वे खंदकों जैसी गहरी थीं। वह एक बार हाथ घुमा कर बलूत के बड़े-बड़े पेड़ों को जड़ से उखाड़ देता था, और बड़ी-बड़ी चट्टानों और पत्थरों को अपने हल से इस तरह उठा कर एक तरफ़ फेंक देता था जैसे वे ज़रा-ज़रा से कंकड़ हों। और इतना श्रम करते हुए भी केवल उसके घुंघराले बाल ही हिलते-डुलते और उसके कंधों पर रेशम की तरह लहराते थे।

हलवाहे की घोड़ी बहुत मामूली ढंग की थी और उसका हल मेपल की लकड़ी का बना था और जोत रेशम की बनी थी। उसे देख कर वोल्गा को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने हलवाहे को नमस्कार करके कहा :

"ओ, भले आदमी, ज़मीन जोतनेवाले, नमस्ते!"

"नमस्कार, वोल्गा व्सेस्लाव्येविच। किधर का इरादा है?"

"मैं सौदागरों से कर और ख़िराज वसूल करने के लिए गुर्चेवेत्स और ओरेख़ोवेत्स नामक शहरों की तरफ़ जा रहा हूं।"

"अहा, वोल्गा व्सेस्लाव्येविच, उन शहरों के सौदागर तो सब डाकू हैं, डाकू। वे ग़रीब हलवाहों की खाल उतार लेते हैं और सड़क पर चलने के लिए चुंगी वसूल करते हैं। मैं एक बार कुछ नमक ख़रीदने के लिए गया था। मैंने तीन बोरे नमक ख़रीदा। हर बोरा पैंतीस मन का था। मैं उनको अपनी भूरी घोड़ी पर लाद कर घर लौट पड़ा। लेकिन सौदागरों ने मुझे चारों तरफ़ से घेर लिया और अपनी चुंगी मांगने लगे। मैं जितना उनको देता था, वे उतना ही और मांगते जाते थे। मैं बहुत परेशान हुआ और मुझे गुस्सा भी बहुत आया और मैं लगा अपना रेशमी कोड़ा निकाल कर उनको चुंगी देने। सौदागरों की यह हालत हो गयी कि उनमें से जो आदमी पहले खड़ा था वह अब केवल बैठ सकता है, और जो पहले बैठ सकता था, वह अब केवल लेट सकता है।"

उसकी बातें सुन कर वोल्गा को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने हलवाहे को प्रणाम करके कहा:

"अरे, ओ, धरती के बेटे, भले हलवाहे, तुम सच्चे बहादुर हो, मेरे साथ चलो और आज से मेरे साथी बन जाओ!"

"वह तो मैं ज़रूर बनूंगा, वोल्गा व्सेस्लाव्येविच! इन

सौदागरों को यह सिखाना जो है कि वे किसानों के साथ मनमानी नहीं कर सकते।"

तब हलवाहे ने हल की रेशमी जोतें खोल डालीं। वह अपनी भूरी घोड़ी को हल से खोल कर और उस पर सवार होकर वोल्गा और उसके आदमियों के साथ हो लिया।

वे काफ़ी तेज़ रफ़्तार से चले जा रहे थे और जब उन दो शहरों का रास्ता आधा तय हो गया तो हलवाहे ने वोल्गा व्सेस्लाव्येविच से कहा :

"हाय, एक काम हम लोगों ने अच्छा नहीं किया, हम हल को हलरेखा में छोड़ आये हैं। अपने कुछ सिपाहियों को भेजो कि हल को ज़मीन से निकाल कर और मिट्टी झाड़ कर रकीता की झाड़ी के नीचे दबा दें।"

वोल्गा ने अपने तीन आदमी इस काम के लिए भेज दिये।

उन लोगों ने हल को इधर मोड़ा, उधर घुमाया और बहुत ज़ोर लगाया, मगर वे उसे ज़मीन से न उठा सके।

तब वोल्गा ने अपने दस बहादुरों को हल को ज़मीन से निकालने के लिए भेजा। वे दस आदमी, यानी बीस हाथ थे, और उन्होंने हल को इधर मोड़ा, उधर घुमाया, मगर वे भी उसे उसकी जगह से न हिला सके।

अब तो वोल्गा खुद अपने सारे आदमियों को साथ लेकर लौट पड़ा और ये लोग संख्या में उन्तीस थे और उन्होंने मिलकर हल को चारों तरफ़ से पकड़ा और फिर अपनी पूरी ताक़त लगा

कर उसे खींचा और उठाया, मगर, नहीं, वे भी हल को नहीं हिला सके। वे ख़ुद ज़ोर लगाते लगाते घुटनों तक मिट्टी में धंस गये, लेकिन हल बाल बराबर भी टस से मस नहीं हुआ।

अब हलवाहा अपने घोड़े से उतरा और उसने एक हाथ से हल को थाम कर उसे ज़मीन से बाहर निकाल लिया। हल के फालों को उसने मिट्टी झाड़ कर साफ़ किया और फिर हल को ऊपर उठा कर रकीता की झाड़ी के उस तरफ़ फेंक दिया। हल इतना ऊंचा उछला जैसे बादलों को छूने जा रहा हो, और फिर रकीता की झाड़ी के उस तरफ़ जाकर गिरा और सीली मिट्टी में अपने दस्तों तक घुस गया।

यह काम करके तमाम बहादुर फिर आगे बढ़े और आख़िर वे गुर्चेवेत्स और ओरेख़ोवेत्स नामक शहरों के पास पहुंच गये। लेकिन इन शहरों के सौदागर बहुत चालाक और मक्कार थे। उन्होंने हलवाहे को देखते ही ओरेख़ोवेत्स नदी के बलूत की लकड़ी के बने पुल के कुंदे काट डाले।

वोल्गा के आदमी पुल पर पहुंचे ही थे कि बलूत के कुंदे टूट-टूट कर नीचे गिरने लगे। वोल्गा के बहादुर सिपाही डूबने लगे, वे भले लोग डूबने और मरने लगे, इन्सान और घोड़े सब नदी के गर्भ में विलीन होने लगे।

वोल्गा और मिकूला बहुत परेशान थे और उनको ग़ुस्सा भी बहुत आ रहा था। उन्होंने अपने बढ़िया घोड़ों को ज़ोर से एक चाबुक लगाया और एक ही छलांग में नदी को पार कर

गये। किनारे पर पहुंच कर उन नीच सौदागरों को उनके किये का दण्ड देने लगे।

मिकूला हलवाहा अपने कोड़े से सौदागरों की खबर ले रहा था और उनसे कहता जाता था:

"छिः, छिः सौदागरो, तुम बड़े लालची हो! एक किसान हैं जो शहरों को रोटी देते हैं, शहद की मीठी शराब से तुम्हारी प्यास बुझाते हैं और एक तुम हो जो किसानों को नमक तक नहीं देना चाहते।"

और वोल्गा अपने सोटे से सौदागरों को पीट रहा था और उसके जो वहादुर सिपाही और घोड़े नदी में गिर कर डूब गये थे, उनका बदला ले रहा था।

तब गुर्चेवेत्स के सौदागरों को अपने कुकर्मों के लिए पश्चाताप होने लगा और वे दया की भीख मांगने लगे।

"हमारे नीच कर्मों और धोखे-धड़ी के लिए क्षमा करो!" वे लोग बोले। "हमसे अपना ख़िराज लो और हलवाहों से कह दो कि अब वे शान्ति के साथ नमक खरीद सकते हैं, हम चुंगी का एक छदाम भी उनसे नहीं मांगेंगे।"

तब वोल्गा व्सेस्लाव्येविच ने बारह साल का ख़िराज वसूल किया और दोनों बहादुर घर लौट पड़े।

वोल्गा व्सेस्लाव्येविच ने हलवाहे से कहा:

"ओ, रूसी बहादुर, अब तो मुझे बताओ कि तुम्हारा और तुम्हारे बाप का क्या नाम है, ताकि मुझे मालूम हो कि मैं तुम्हें किस तरह पुकारा करूं।"

"मेरे साथ मेरे घर चलो, वोल्गा व्सेस्लाव्येविच," हलवाहे ने जवाब दिया। "तब तुम्हें पता चलेगा कि लोगों ने मुझे क्या नाम दे रखा है।"

दोनों बहादुर उस खेत में जा पहुंचे। वहां हलवाहे ने अपना हल फिर ज़मीन से निकाल कर उस पूरे खेत को जोता और जोत कर सुनहरा अनाज उसमें बो दिया।

उधर डूबते सूरज की किरणें आसमान में चमक रही थीं, इधर हलवाहे के खेत में अनाज की बालें सरसराने लगी थीं।

उधर अंधेरी रात घिर आयी, इधर हलवाहे ने फ़सल काट कर रख दी। सुबह को उसने उसे कूटा-पीटा, दोपहर को फटका, और खाने के समय तक पीस कर आटा तैयार कर लिया और उसे गूंध भी दिया। शाम के वक़्त उसने भले लोगों को ईमानदारी की दावत पर बुलाया।

लोगों ने समोसे खाये, घर पर तैयार की हुई शराब पी और सब ने हलवाहे की खूब तारीफ़ की।

भले लोगों ने कहा:

"हम तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं, ओ, मिकूला हलवाहे!"

रूसी शब्दों की व्याख्या

लीपा – सनोवर की क़िस्म का ऊंचा पेड़।

गूसली – वीणा से मिलता-जुलता पुराना रूसी बाजा।

रोश – जौ से मिलता-जुलता अनाज जिसकी काली रोटी बनती है। रूस में इसका बहुत प्रयोग होता है और यह सस्ता भी काफ़ी होता है।

क्वास – काली रोटी और तरह तरह के फलों से बनाया गया पेय। कभी कभी इसमें हल्की शराब जैसा नशा भी होता है।

कफ़्तान – चोगे के ढंग की पुरानी पोशाक।

श्चूका – रूसी नदियों में पायी जानेवाली वह मछली जो दूसरी मछलियां खाकर जीती है।

राकीता – एक छायादार रूसी पेड़।

सुखारी – टोस्ट की तरह के काली रोटी के सेंके और सुखाये हुए टुकड़े। यह बहुत समय तक खाने के काम आ सकते हैं।

लापती – क्रान्तिपूर्व के रूस में किसान जो जूते पहनते थे उन्हें 'लापती' कहा जाता था। यह वृक्ष की छाल के फ़ीतों से तैयार किये जाते थे और बहुत सस्ते होते थे।

सराफ़ान – बिना आस्तीन की लम्बी कमीज़ें जो रूसी औरतें पुराने समय में पहनती थीं।

कालाच – गेहूं की सफ़ेद गोल पाव-रोटी।

दोब्रीन्या – 'दोब्रो' धातु से बना हुआ एक शब्द जिसका अर्थ है 'भला'। एक विशिष्ट बहादुर रूसी वीर-गाथाओं का नायक जो अपने भले और परोपकारी स्वभाव के कारण 'दोब्रीन्या' कहलाता है।

संपादक

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, जूबोव्स्की बुल्वार,
मास्को, सोवियत संघ।